॥ श्री ॥

श्री गोपीजनवल्लभो विजयते तराम्

श्रीगुसांईजीके निजसेवक

दोसौबावन वैष्णवनकी वार्ता

पुष्टि दृढाव ग्रंथ और अनुक्रमणिकासहित

यह पुस्तक

पुष्टिमार्गीय श्रीवल्लभ-संप्रदायी वैष्णवनके

नित्य नैमित्तिक पठनार्थ

वैष्णव-रामदासजी गुरुश्री गोकुलदासजीने

(रणहरपुस्तकालय)

डाकोर

छपवायके प्रसिद्धकिया

संवत १९६० के फाल्गुन सुदि गोविंद द्वादसी

न्योछावर ३ रुपये

दोसोबावनवैष्णवनकेवार्ताकी अनुक्रमणिका.

इति अनुक्रमणिका समाप्त.

॥ श्री ॥

श्रीबालकृष्णायनमः ॥

श्रीअस्मत्गुरुचरणकमलेभ्यो नमोनमः॥

श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥

श्रीगुसांईजीके निजसेवक दोसौवावनवैष्णव तिनकी वार्ता॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गोविंदस्वामी सनाढ्य ब्राह्मण महावनमें रहते तिनकी वार्ता ॥

प्रथम गोविंददास आंतरी गाममें रहते ॥ तहां गोविंद-स्वामी कहावते ॥ और आप सेवक करते ॥ गोविं-ददास परम भगवद्भक्त नित्य याही रीतीसों रहते ॥ जो श्रीभगवत् चरणारविंदकी प्राप्ति कैसें होय ॥ याही बातकी तलासी करत रहते हते॥ एकसमय गोविंददास आंतरी गामते व्रजकों आये ॥ और महावनमें आयके रहे ॥ काहेतें जो यह व्रजधामहै ॥ इहां भगवत् चरणार-विंदकी प्राप्ति होयगी ॥ और गोविंदास कवि हते ॥ सो आप पद कर्ते॥ सो जो कोऊ इनके पद सीखकें श्रीगुसां-ईजीके आगें आयकें गावें ॥ तिनके ऊपर श्रीगुसांईजी प्रसन्न होते॥ सो गावनहारे गोविंदस्वामीके आगे आयकें कहते ॥ जो तुमारे पद सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न होंतहें ॥ ये बार्ता सुनि गोविंदस्वामीनें ऐंसो विचार कियो॥ जो श्रीगुसांईजीकूं मिलें तो ठीक॥ तब एकसमय श्रीगुसांईजीको सेवक महावन गयो हतो ॥ सो भगव-

दिच्छाते श्रीगुसांईजीके सेवकको और गोविंदस्वामीको मिलाप भयो ॥ वा वैष्णवकी गोविंदस्वामीकी आपसमें बात चीत भई ॥ जब गोविंदस्वामीनें कही के श्रीठाकुरजीको अनुभव कैसे होय ॥ जो मोकुं बहुत दिनसों या बातकी आतुरता है॥ तातें कहो ॥ तब वा वैष्णवनें गोविंदस्वामीकी आतुरता देखिके कह्यो ॥ जो आजकाल श्रीठाकुरजीकुं श्रीविठ्ठलनाथ श्रीगुसांईजीनें बसकररा-खेंहें॥ तातें श्रीठाकुरजी और ठौर कहुं जाय सकत नहीं॥ श्रीठाकुरजीतो श्रीगुसांईजीके हाथहें ॥ सो यह सुनके गोविंदस्वामीकुं अति आतुरता भई ॥ तब गोविंदस्वामीनें उन वैष्णवसों कही॥ जो मोकुं श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके पास लेचलो ॥ तब उहांसे उठे सो श्रीगोकुलमें आये तब श्रीगुसांईजी ठकुरानीघाट ऊपर संध्यातर्पण करत हते ॥ वा वैष्णवनें गोविंदस्वामीकुं श्रीगुसांईजीको दर्शन करायो ॥ गोविंदस्वामी दर्शन करिके मनमें समझें ये कर्ममार्गीय दीखतहें ॥ सो कहा कारण होयगो ॥ तब गोविंदस्वामीकुं देखके श्रीगुसांईजी बोले जो आवो गोविंदस्वामी बहुत दिनसूं देखे ॥ तब गोविंदस्वामीनें कही माहाप्रभु अबही आयोहूं ॥ तब गोविंदस्वामीनें अपने मनमें विचार कियो की ॥ आपने मोकुं कोई दिन देख्यो नहीं हें सो कैसे जान गये॥ यामें कछु कारण दीसतहै ॥ जब श्रीगुसांईजी मंदिरमें पधारे ॥ तब गोविंदस्वामीनें बीनति करी हे महाप्रभु मोकूं कृपाकरिके शरण लेओ ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कही न्हाय

आवो ॥ तब वे न्हाय आये ॥ तब श्रीनवनीतप्रिया-जीके संनिधिमें नाम निवेदन करायो ॥ तब गोविंदस्वा-मीकुं साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम कोटिकंदर्पलावण्यके दर्शन भये ॥ और सब लीलानको अनुभव भयो ॥ श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियाजीकी सेवा करके बाहिर पधारे ॥ तब गोविंदस्वामीनें बीनती करी ॥ जो आपतो कपटरूप दिखावत हो॥साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमरूप होयके वेदोक्त कर्म करत हो॥सो हम जैसेनकूं मोह होयहै॥जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी॥ जो भक्तिमार्गहै सो फूलको वृक्ष है॥ और क-र्ममार्गहै सो कांटनकी बारहै॥तासूं कर्ममार्गकी बारविना भक्तिमार्ग जो फूलको वृक्ष वाकी रक्षा नहोय ॥ ये सुन-के गोविंदस्वामी बहुत प्रसन्न भये ॥ गोविंददास ऐसें कृ-पापात्र भगवदीय भये॥ प्रसंग॥१॥सो गोविंददास महाव-नके टेकरापर रहते हते॥ और नये कीर्तन करके गावते हते॥ और उहां श्रीठाकुरजी सुनवेकुं पधारते हते ॥ जब उहां मदनगोपालदास कायथ कीर्तन लिखवेकुं आवते हते ॥ सो एकदिन श्रीठाकुरजीकुं गोविंदस्वामीनें कही ॥ इहांताई आप नित्य श्रम करोहो ॥ सो आपको गान सुनवेकी बहुत इच्छा दीखेहै ॥ आपकुं गानको अभ्यास है ॥ यातें आपकुं कछु गायो चहिये ॥ तब आपनें कछु गान कियो॥ तब गान सुनके श्रीस्वामिनीजी पधारी ॥ जब तालस्वर बरोबर बजावे लगे तब गोविंदस्वामी धन्य धन्य कहन लगे॥ और आपनें भाग्यकी सराहना करन लगे॥जब मदनगोपालदास कायथ बोले ॥ जो इहां कोई

आदमी तो दिसे नहीं है ॥ तुम कौनसूं बात करतहो ॥ तब गोविंदस्वामी कछु बोले नहीं॥ बात गुप्त राखी ॥ पाछे एक-दिन श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो श्रीठाकुरजी कैसे गावेंहें॥तव गोविंदस्वामीनें कही श्रीठाकुरजी बहोत आछे गावेंहें ॥ परंतु तालस्वर श्रीस्वामिनीजी बहोत आछो देत हें॥ये सु-नके श्रीगुसांईजी मुसकायके चुपहोय रहे ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ सो गोविंदस्वामी जब श्रीगोकुलमें रहते हुते ॥ सो उहां आंतरिगामसें पहले गोविंदस्वामीके सेवक हते सो श्री-गोकुल आये ॥ सो पूछत पूछत विनके पास गये ॥ जा-यके पूंछी जो गोविंदस्वामी कहां हें ॥ तब विननें कही गोविंदस्वामी मरगये ॥ तब तिनमेंसूं एक पहेचानतो हतो ॥ जब वानें कही आप क्यों हमारी हाँसी करोहो ॥ जब गोविंदस्वामीनें कही हमने स्वामीपनो छोडदियो॥ जासुं तुम ऐसे समझो जो मरगये हें॥जब विननें वीनती करी जो अब हम सेवक कौनके होंय ॥ जब गोविंदस्वा-मीनें विनकुं लेजायके श्रीगुसांईजीके सेवक कराये॥ सो गोविंदस्वामिके संग सो विनकुं भगवत्प्राप्ती भई ॥जिनके संगते सहज भगवत्प्राप्ती होवै विनकी कृपातें कहा नहोवै सब होवे ॥विनकी बात कहा कहिये ॥ प्रसंग ॥३॥ सो वे गोविंदस्वामी श्रीगोकुलमें रहते ॥ परंतु श्रीयमुनाजीमें पांव नहि देते ॥ श्रीयमुनाजकुं साक्षात् श्रीस्वामिनीजी अष्टसिद्धीके दाता जानते ॥ जैसो स्वरूप श्रीमहाप्रभू-जीनें यमुनाष्टकमें वर्णन कियोहे ॥ वैसे श्रीगुसांईजीकी कृपासे गोविंदस्वामी जानते हते जासुं श्रीयमुनाजीमें

पांव नही धरते हुते ॥ और श्रीयमुनाजीके दर्शन करते और दंडवत करते ॥ और पान करते सो एकदिन श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी गोविंदस्वामीकुं पकडके श्रीयमुनाजीमें नहायवे लगे॥ जब गोविंदस्वामीनें बीनती करी जो ये मलमूत्रको भर्यो देह श्रीयमुनाजी लायक नहीं है ॥ श्रीयमुनाजी साक्षात् स्वामिनी हैं ॥ जासूं ये अधम देहस्पर्शकरवे योग्य नहीं है ॥ और श्रीयमुनाजीकुं तो उत्तम सामग्री समर्पी चहीये ॥ ये सुनके श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी चुप कररहे ॥ सो वे गोविंदस्वामी ऐसो स्वरूप श्रीयमुनाजीको जानतहते ॥ प्रसंग॥४॥ श्लोक ॥ गागोपकैरनुवनंनयतोरुदारवेणुस्वनैःकलपदैस्तनुभृत्सुसख्यः ॥ अस्पंदनंगतिमतां पुलकस्तरूणांनिर्योगपाशकृतलक्षणयोर्विचित्रं ॥ या श्लोकको व्याख्यान श्रीगुसांईजी गोविंदस्वामीके आगे कहवे लगे ॥ जब कहते कहते अर्धरात्र बीती तब श्रीगुसांईजी पोढे॥गोविंदस्वामी घरकूं चले॥तब श्रीबालकृष्णजी तथा श्रीगोकुलनाथजी तथा श्रीरघुनाथजी तीनो भाई वैष्णवनके मंडलमें विराजत हते ॥ जब गोविंदस्वामीनें जायके दंडवत करी ॥ तब श्रीगोकुलनाथजीनें पूछे जो श्री गुसांईजीके इहां कहा प्रसंग चलतो हतो॥ जब गोविंदस्वामीनें ये श्लोकको सुबोधिनीजीको प्रसंग कह्यो ॥ फिर कह्यो आपको व्याख्यान आप करें यामें कहा केहेनो ॥ जाके स्वरूपको वेद हू नहीं जानसकें वाको व्याख्यान वे आपही करें तब होय॥ जब ऐसे कह्यो तब श्रीगोकुलनाथजीनें

दोनों भाइनसों कही जो गोविंदस्वामीनें श्रीगुसांईजीको स्वरूप कैसोजान्योहै॥और इनके ऊपर आपनें कैसी कृपा करी है सो इनके भाग्यको कहावर्णन करिये येकहिके श्री-गोकुलनाथजी चुपहोयरहे॥प्रसंग॥५॥ सो गोविंदस्वामी श्रीनाथजीके संग खेलते हते।सो एक दिन अपछरा कुंडसों गोवर्धनपर्वतऊपर होंयकें श्रीगोवर्धननाथजीके संग गोविंददास आवते हते॥ सो उहांसे राजभोगकी आरती भई ऐसी अवाज सुनी ॥ जब गोविंदस्वामीनें कहि श्रीनाथजी तो अबी आवतहैं॥ राजभोग कोननें अरोगे हैं॥ गोविंदस्वामीनेंजायके श्रीगुसांईजीसों बीनती करी॥ जब श्रीगुसांईजीनें दूसरो राजभोग सिद्ध करायके धरायो॥ और गोपालदासभीतरियानें श्रीगुसांईजीसों बीनती करी॥ जो एकदिन पूंछरीकी औरतें गोविंददास श्रीनाथजीके संग आवते मेनें देखे हते॥ जब श्रीगुसांईजीनें कही॥ जो कुंभनदास तथा गोविंदस्वामी तथा गोपिनाथदासग्वाल ये तीनो श्रीनाथजीके एकांतके सखाहै॥ सो इनकुं अधिकार श्रीमहा प्रभूजीनें दियोहै॥ ये बात सुनके गोपालदासजी बहुत प्रसन्न भये॥ और अपने मनमें कहेवे लगे॥ जो हम भितरियाभये तो कहा भयो॥ सो वे गोविंदस्वामी ऐसे भगवदीय कृपापात्र हते॥ प्रसंग॥ ६॥ सो एकदिन गोविंद स्वामी उत्थापनकेसमें श्रीनाथजीके दर्शनकुं गये॥ जब देखें तो श्रीनाथजीके पागके पेच खुल रहे हते॥ तब गोविंदस्वामीनें कही के पागके पेच क्यो खोलडारेहैं

॥ जब श्रीनाथजीनें कही तूं पागके पेंच संवारिदे ॥ तब गोविंदस्वामीनें भीतर जाइके पागके पेंच संवारदिये॥तब भीतरियानें श्रीगुसांईजीसोंकही॥जो गोविंददासनें अपरस छिवाय दीन्हीहै॥पाछें श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करि जो गोविंददाससें श्रीनाथजी नहीं छुआयजाय ॥ येतो श्रीनाथजीके संग सदैव खेलें हैं ॥ सो गोविंदस्वामी ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ ७ ॥ एकदिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीको शृंगार करत हते ॥ तब गोविंदस्वामी जगमोहनमें कीर्तन करत हते ॥ तब श्रीनाथजीनें गोविंददासकुं आठ कांकरी मारी ॥ जब गोविंदस्वामीनें एक कांकरी मारी॥तब श्रीनाथजी चमक उठे॥ जब श्रीगुसांईजीनें कही गोविंददास यह कहा कियो ॥ तब गोविंदस्वामीनें कही ॥ हे महाराज आपकोतो पूत औरको मूलीकर॥जो आठवखत मोकुं कांकरी मारी जब आप कछु नहीं बोले ॥ ये सुनके श्रीगुसांईजी चुपकरि रहे ॥ सो गोविंददासजीकुं ऐसो सखा भाव सिद्धभयो हतो ॥ प्रसंग ॥ ८॥ एकदिन गोविंददासकी बेटी देससेंसो आई॥ परंतु गोविंदस्वामी कोईदिन वा बेटीसुं बोले नहीं॥जब कान्हबाईनें कही जो बेटीसुं एकदिन तो बोलो ॥ तब विननें कही जो मनतो एकहै॥इतको लगाउं के उतको लगाउं फेर कछुदिन रहिके बेटी देसकुं जावे लगी ॥ जब वहु बेटिननें साडीचोली पठाई ॥ तब गोविंदस्वामीके मनमें दया आई ॥ जो गुरुके घरको अनप्रसादी लेवेगी तो याको बिगार होयगो ॥ वे गोविंदस्वामी कोईदिन बेटीसें

बोलते नहते ॥ तो परंतु दयाकेलियें बोले जो तूं ये लेवेगी तो तेरो बुरो होयगो ॥ जब बेटीनें कही मोकुं समज नहीं हती ॥ तो मोकुं तुम-नें बडी कृपा करिके रस्ता बतायो ॥ तब वे सब कपडा पाछें पठाय दिये ॥ बेटी अपनें घरकों गई ॥ सो वे गोविं-दस्वामी गुरुकी अंशसो ऐंसे डरपत हते ॥ प्रसंग ॥ ९ ॥ और फागनके दिन हते ॥ सो सेनभोग सरायकें श्रीगु-सांईजी बीडी अरु गावत हते ॥ तब गोविंदस्वामी धमार गावत हते ॥ सो धमार श्रीगोवरधनरायलाला ये धमार पूरी करेबिना गोविंदस्वामी चुप कर रहै ॥ जब श्रीगुसां-ईजीनें आज्ञा करी ॥ गोविंददास धमार पूरी करौ ॥ तब गोविंदस्वामीनें कही महाराज धमारतौ भाज गईहै ॥ वेतो घरमें जाय घुसे ॥ खेलतो बंद भयो अब कहा गावूं ॥ ये सुनके श्रीगुसांईजी चुप कर रहे ॥ पाछे बैठकमें पधारे ॥ जब एक तुक आपनें बनायके गोविंद स्वामीके नामकी वा धमारमें धरी ॥ वादिनसूं गोविंदस्वामीकी धमार लोकमें साढेबारह कहीजायहै ॥ सो गोविंदस्वामी ऐंसे कृपापात्र हते ॥ जो लीलाके दर्शन करिकें गान करते हते ॥ प्रसंग ॥ १० ॥ सो वे गोविंस्वामी महाबनके टेकरा-पर नित्य गान करते हते ॥ श्रीनाथजी नित्य सुनि-वेकुं पधारते हते ॥ और श्रीनाथजीसंग गानहूं करते हते ॥ और वे गोविंदस्वामी भगवल्लीलामें अष्ट सखा-नमें हते ॥ सो कोई समें श्रीनाथजी चूकते सो गोविंद-स्वामी भूल काढते ॥ और गोविंदस्वामी चूकते जब

लाये ॥ पाग पाछी दीनी ॥ वे गोविंददासकुं पाग बांध-
नकी ऐसी चतुराई हती ॥ प्रसंग ॥ १२ ॥ सो गोविंद-
दास नित्य जसोदाघाटपर जाय बैठते ॥ सो उहां
एकदिन एक वैरागी गायवे लग्यो ॥ सो राग तालस्वर
हीन हतो ॥ जब गोविंदस्वामीनें कही जो तुं मत गावे ॥
या गायिवेसों कहा होतहै ॥ तब वा वैरागीनें कही मैंतो
मेरे रामकों रिझावतहों ॥ जब गोविंदस्वामीनें कही राम
तौ चतुरशिरोमणीहै॥ सो कैंसे रीझेंगे ॥ जो तेरो साचो भा-
व होय तौ मनसें नाम लिये सो रीझेंगे॥ सो वे गोविंदस्वामी
ऐंसे निःशंक हते ॥ प्रसंग ॥ १३ ॥ सो एकदिन श्रीना-
थजी सामढाकके ऊपर चढिके विराजते हते ॥ और
दुरला बजावत हते और गोविंददास दूसरी टेकरीके ऊ-
पर बैठे देखत हते और वाही समय श्रीगुसांईजी न्हायकें
उत्थापन करवेके लियें श्रीगिरिराज ऊपर पधारे ॥ सो
श्रीनाथजीनें सामढाक पैंसुं देखे और उतावलसों कूदे
और वागाको दांवन फट गयो और लीर झाडपें रहि गई॥
तब श्रीगुसांईजीनें कैंवार खोलिके उत्थापन करे देखेंतो
वागाको दांवन फटयोहै ॥ जब मनुष्यनसों पूछी जो इहां
कोई आयो तो नहीं हतो ॥ तब सबनें नाहीं कही ॥ जब
आप विचार करवे लगे ॥ तब गोविंददासनें कही जो आप
या वातको विचार कहाकरेंहें ॥ लरिकाको सुभाव जानें
नहींहें जो बहुत चंचल है स्यामढाकपैंसूं कूदिके वागाको
दांमन फाडयोहै ॥ सो आप चलोतो दिखाऊं ऐंसे लीर
झाडके रहीहै ॥ जब श्रीगुसांईजी पधारके वा लीर उतारि

श्रीनाथजी शूल काढते ॥ श्रीनाथजी तथा गोविंदस्वामीके गान सुनिवेके लिये श्रीगोकुलनाथजी नित्य पधारते और एक मनुष्य बैठाय राखते ॥ जो श्रीगुसांईजी भोजन करवेकुं पधारें तब मोकुं बुलायलीजो ॥ एकदिन वा मनुष्यके मनमें ऐसी आई ॥ जो श्रीगोकुलनाथजी नित्य श्रीगुसांईजीसों छाने पधारतेहै ॥ एकदिन जो मै नबोलाऔं तो गुसांईजी सब जान जाएंगे ॥ जब श्रीगोकुलनाथजीतो नित्य जाते बंदहोय जाएंगे ॥ ये समझके वे मनुष्य एकदिन बुलायवे न गयौ ॥ जब श्रीगुसांईजी भोजनको पधारवे लगे ॥ तब सब लालजी आए ॥ श्रीगोकुलनाथजी न आए ॥ तब श्रीगुसांईजीनें दूसरे मनुष्यकुं आज्ञा करी जो गोविंदस्वामीके पास बहुमजी बैठेहैं तिनको बुलाय लाव ॥ जब दूसरो मनुष्य बुलाय लायो तब वे मनुष्य जो जानके बोलावे नही गयो हतो सो पश्चात्ताप करवे लग्यो ॥ जो श्रीगुसांईजी तो सब जानतेहै मैनें काहेको श्रीगोकुलनाथजीसों कुटिलता करि ऐसो पश्चात्ताप भयो ॥ सो वे गोविंदस्वामी ऐसे कृपापात्र हते ॥ जो तिनके संग श्रीनाथजी क्षणक्षण आयके बिराजते हते ॥ प्रसंग ॥ ११ ॥ वे गोविंदस्वामी पाग आछी बांधते हते ॥ सो टूक टूक पाग होती तब कोईकुं खबर न हती ॥ जब एकदिन एक ब्रजवासीनें गोविंदस्वामीकी पाग आछी जानके उतारलीनी ॥ तब गोविंदस्वामीनें कही सारे यें टूक संभारके धरराखियो काल तेरे घरकुं आयके लेजाउंगो ॥ वे ब्रजवासीनें

लाये ॥ तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीसों पूछी ॥ जो आपनें उतावल काहेकों करी ॥ तब श्रीनाथजीनें कही जो उत्थापनको समय भयोहतो ॥ और आप न्हायके पधारे हते जासूं उतावल भई ॥ वादिनतें ऐसो बंदोबस्त कर्यो॥ जो तीन वेर घंटानाद तथा तीन वेर शंखनाद करिके और वीस पल रहिके मंदिरके किंवार खोलके उत्थापन करनें ॥ सो वे गोविंददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते॥ ॥ प्रसंग ॥ १४ ॥ एकदिन आगरेसें अकबर पातशाहनें सुन्यो जो गोविंदस्वामी वहुत आछे गावतहें और निरपेक्षहें और निःशंकहें ॥ जब इनके मुखको राग कैसे सुन्यो जाय ॥ ये विचार करिके पातसाही वेष पलटकें श्रीगोकुलमें इकेले आए ॥ जब गोविंददास जसोदाघाटपर भैरव राग अलापत हते तब वा पातशाहनें वाहवा वाहवा करी ॥ जब गोविंददासनें कही ये राग छीगयो ॥ जब वानें कही जो मै पातशाहहूं जब विननें कही जो तुम पातशाहहो तो पातशाही करो ॥ परंतु ये रागतो तुमारे सुनवेसूं छिवाय गयो जब पातशाहनें विचार कर्यो एक देसको मैं राजा हूं और इनकोंतो त्रिलोकीको वैभव फीको लगेहै ॥ जासूं ये काहेकूं आपने हुकुममें रहेंगे ॥ ये विचारिके पातशाह चले गये ॥ और गोविंदस्वामीनें वादिनसूं भैरव राग गायो नहीं ॥ वे गोविंदस्वामी ऐसे टेकी भगवदीय हते ॥ प्रसंग ॥ १५ ॥ और वे गोविंदस्वामीके संग श्रीनाथजी नित्य वनमें खेलते ॥ और कोईदिन गोविंददासको घोडा करते और कोईदिन हाथी करते ॥ ऐसे

नित्य क्रीडा करते ॥ सो एकदिन श्रीनाथजीनें गोविंद-स्वामीकुं घोडो कन्यो हतो और ऊपर आप असवार भये हते ॥ सो गोविंदस्वामीनें घोडाकीसीन्याई लघु-शंका करी ॥ ये बातें एक वैष्णवनें देखी ॥ सोश्रीगुसांई-जीसों जायके कही ॥ जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जब गोविंदस्वामी हाथी घोडा होतेहै ॥ सो हाथी घोडाको स्वांग पूरो नकरें तो कैंसे होवै ॥ और इन बातनमें तुम मत पडो ॥ ये बात सुनके वे वैष्णव चुप करिगयो ॥ सो वे गोविंदस्वामी ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १६ ॥ एक-दिन गोविंदास श्रीगुसांईजीके संग मथुराजीमें केशवरा-यजीके दर्शनकुं गये ॥ तब उष्णकाल हतो ॥ और सब जरीको वागा जरीकी ओढनी देखके गोविंददासनें के-शवरायजीसों पूंछो जो नींकेतोहो ॥ सो सुनकें केशवरा-यजी मुसकाये ॥ जब श्रीगुसांईजीनें कही ॥ जो गोविंद-दास ऐसे नबोलिये ॥ तब गोविंददासनें कही महाराज मांदी मनुष्यको पोसाक पहेन्यो है जब कैसेनपूंछो जाय॥ ये सुनिके श्रीगुसांईजी चुपकररहे ॥ प्रसंग ॥ १७ ॥ और एकदिन श्रीनाथजीके राजभोग आवते हते ॥ तब भी-तरियासों गोविंदस्वामीनें कही जो राजभोग धरे पहिले मोकूं प्रसाद लेवाव ॥ जब भीतरियाननें थार पटिकदियो और श्रीगुसांईजीकूं पुकार करि॥ जब श्रीगुसांईजीनें गोवि-ददाससों पूछी यह कहा जब गोविंदस्वामीनें कही जो आ-प संगमें मोकुं खेलवेकूं लेजाएहै॥ और जो पाछे प्रसादले वेकूं रहिजाउं तो वनमें पाछे मोकुं श्रीनाथजी मिले नहींहै

जब कैसें करूं ये सुनके श्रीगुसांईजीनें ऐसी बंदोबस्त करी जो राजभोग आवेके समय गोविंददासकुं प्रसाद लेवावनो ऐसी भंडारीसों आज्ञा करि॥सो वे गोविंदस्वामी ऐसे कृपापात्र हते जिनबिना श्रीनाथजी रहि नहीं सक्ते ॥ प्रसंग ॥ १८ ॥ एक दिन श्रीनाथजी गोविंदस्वामी संग खेलते हते ॥ तव श्रीनाथजीके ऊपर दाव आयो ॥ तब उत्थापनको समय भयो ॥ तब श्रीनाथजी भागके मंदिरमें घुसगये ॥ तब मंदिरमें भीतर जायकें श्रीनाथजीकुं गीली मारि तब सेवक टहेलवाननें गोविंददासकुं धक्का मारके बाहर काढदिये और उत्थापन भोग धर्‌यो तब गोविंदस्वामी जायके रस्तामें बैठे और कहे जो अबि गायनके संग श्रीनाथजी ये रस्तापर आवेंगे और याको मार देउंगो पीछे श्रीगुसांईजी न्हायके मंदिरमें पधारे देखें तो श्रीनाथजी अनमनें होय रहेहै और उत्थापनकि सामग्री अरोगें नाहीहै तब श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीसों पूछे जो कैसेहो तब श्रीनाथजीनें कहि जो जहांसुधि गोविंददासकुं नहिंमनावोगे तहांसुधि मोकुं कछु भावेगो नहीं काहेतें मोकुं रस्ता चलेविना और वाके संग खेले बिना सरेगो नहिं ॥ अबि रस्तामें जाउंतो आन गिनती नकि मारदेवेगो याचिंताकेलियें मोकुं कछु भावै नहिं है गोविंददास आवेगो जब कछु भावेगो ये बात सुनके और श्रीनाथजीकी भक्तवत्सलता देखके श्रीगुसांईजीको हृदय भर आयो तब गोविंददासकुं बुलायके और मनायकें श्रीनाथजीसुं बीनति करि जो ये हाजिरहै अब आ-

पगयेहै तब श्रीनाथजीअरोगे सो वे गोविंददास ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १९ ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ ❀

गोविंददासकी बैन कान्हबाई हति तिनकी०

सो कान्हबाई श्रीनवनीतप्रियाजीकुं माथे पधरायके सेवा करत हती ॥ और श्रीठाकुरजी विनकुं अनुभव जताक- तहते ॥ हंसते और बोलते जो चाहिये सो मांगलेते ॥ और वे कान्हबाई जादिन श्रीगुसांईजीके घर सेवामें जाती जब रसोई न करती हती ॥ तब पातर लायके भोग धरती हती ॥ और वे कान्हबाई कछुक सामग्री घरमेंकर राखती हती ॥ जब श्रीठाकुरजी लरकानकी- न्याई मांगते तब वे देति॥ प्रसंग ॥ १ ॥ एकदिन कान्ह बाई श्रीठाकुरजीकुं देवका बेटीजीके पास पधरायके महाबनगई रातकुं आयसकी नहीं ॥ तब देवका बेटी- जीनें अपने श्रीठाकुरजी पोढाये तब कान्हबाईके ठाकु- रजीकुं पोढावते भूलगई हती ॥ जब कान्हबाईकुं श्रीठा- कुरजीनें महाबनमें जतायो जो देवका बेटीजी मोकुं पोढावतें भूल गई है ॥ सिंघासन पैं एकेलो बैठो डरपत हूं ॥ जब कान्हबाई रातकों उहांसे चली सो श्रीगोकुल आयके देवका बेटीजीकुं जगायके अपने श्रीठाकुरजीकुं पधरायके घर लेजायके पोढाए ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ एकदिन कान्हबाईसों श्रीगोकुलचंद्रमाजीनें कही कि मेरी शय्यामें कछु चुमतहे ॥ तब कान्हबाईनें जायके नारायणदास ब्रह्मचारीसों कही ॥ जो श्रीठाकुरजीकुं तो शय्या चुभेहै॥

जब नारायणदासनें शय्याकी गादी खुलाई तब रूईमेंसो वनोरा निकसे ॥ जादिनतें नारायणदास ब्रह्मचारी शय्याकी गादी अथवा रजाई नई भरावते जब अपणे हाथनसूं रूईके पेल देखके धरते ॥ सो वे कान्हबाई ऐसे कृपापात्र भगवदीय हती ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ एकदिन कान्हबाई श्रीगुसांईजीके घर श्रीनवनीतप्रियाजीके पालनेके दरशन करवेकुं गई ॥ जब जायके देखें तो श्रीनवनीतप्रियाजीतो अकेले झूंलेहे ॥ तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें कही जो कान्हबाई तूं मोकुं झुलाय ॥ तब कान्हबाई झुलावे बैठी ॥ जब श्रीगिरिधरजी पधारे तब कान्हबाईनें खीजकर कही ॥ जो तुमने श्रीठाकुरजीकुं इकेले क्यों छोडे तब श्रीगिरिधरजीनें कही जो अब कोई दिन नहीं छोडूंगो ॥ सो वे कान्हबाई ऐसी कृपापात्र हती ॥ प्रसंग ॥ ॥ ४ ॥ एकदिन श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीगिरिधरजीकुं यज्ञ करवेकुं पूंछो ॥ जो हमारी यज्ञ करवेकी इच्छा है तब कान्हबाई बोली जो यज्ञरूप श्रीगोवर्धनधरजी तुमारे माथे विराजेहै ॥ इनके सेवेसों सब यज्ञहोय जाएंगे ॥ ये सुनके श्रीगोकुलनाथजीनें यज्ञ करिवेको विचार बंद राख्यो सो वा कान्हबाईकी सब बालक ऐसी कान राखते हते ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ १ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक छीतस्वामीचौबे ति०

सो वे छीतस्वामी मथुरामें रहतेहते ॥ और मथुराजीमें पांच चौबे बडा गुंडा हते ॥ और ठगाई करते और छीत-

चौबे विन पांचनमें मुख्य हतो ॥ सो विननें विचार कऱ्यो जो कोई गोकुलमें जायहै सो श्रीविठ्ठलनाथजीके वस होय जायहै ॥ जासूं ऐसो दीसेहै जोश्रीविठ्ठलनाथजी जादू टोना बहोत जानेंहैं ॥ परंतु हमारे ऊपर टोना चले तब साँची मानें ये विचार पांचों चौबेननें कऱ्यो तब एक खोटो नारियल और खोटो रुपैया लेके पांचों चौबे श्रीगोकुल आये तब चार चोबेतो बाहर बैठरहे ॥ और मुख्य जो छीत चौबे हतो विनकुं भीतर पठायो ॥ सो वे छीत चोबानें खोटो नारियल तथा खोटो रुपैयाजायके भेट धऱ्यो तब श्रीगुसांईजीनें खवासलूं आज्ञा करी ॥ जो या रुपैयाके पैसा लेआव ॥ जब रुपैयाके पैसा आए और नारियल फोड्यो तब सुफेद गरी निकसी ॥ तब छीतस्वामी देखिके मनमें विचारी ॥ जो येतो साक्षात् ईश्वर हैं ॥ जब छीतस्वामीनें कही जो महाराज मोकुं शरण लेओ ॥ जब श्रीगुसांईजीनें छीतस्वामीकुं नाम सुनायो ॥ पाछे श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन करवेकुं गये ॥ भीतर देखें तो श्रीगुसांईजी बिराजेहैं ॥ और बाहिर आयके देखे तो बिराजें हैं जब छीतस्वामीनें विचारी जो श्रीगुसांईजीकी ईश्वरता जीवसों जानी नहीं जायहै ॥ जब वे चार चोबे बाहर बेठे हते विननें छीतस्वामीकुं बुलाये ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुमारे संगी बाहिर तुमकुं बुलावत हे सो तुम जाओ ॥ तब छीतस्वामीनें बाहर आयके चारौचौवानसे कही मोकुं टोना लगगयोहै तुम भाग जावो नहिंतो तुमकोलगजायगो ये सुनके चारों चौबे

भाग गये छीतस्वामीनें एक पद करिके गायो ॥ राग नट॥ भई अब गिरिधरसों पहेचान ॥ कपटरूपधरिछलवे-आयो पुरुषोत्तमनहिजान॥१॥छोटोवडोकछूनहिजान्यो-छायरह्योअज्ञान ॥ छीतस्वामिदेखतअपनायौश्रीविठ्ठल-कृपानिधान॥२॥ये पद सुनके श्रीगुसांईजी प्रसन्न भए॥ और छीतस्वामी रातकुं उहां सोय रहे फेर दूसरे दिन छीतस्वामीकुं श्रीगुसांईजीनें निवेदन करवाये॥ तब छीत-स्वामीकुं साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये ॥ और भगवल्लीलाको अनुभव भयो और श्रीगुसांईजी तथा श्रीठाकुरजीके स्वरूपमें अभेदनिश्चय भयो दोनो स्वरूप एकहै ऐसे जानन लगे तब छीत-स्वामी गोपालपुर श्रीनाथजीके दर्शनकुं गये ॥ उहां श्रीनाथजीके पास श्रीगुसांईजीकुं देखे ॥ जब बाहेर निकसके पूंछी जो श्रीगुसांईजी कब पधार्ये है ॥ तब उहांके लोगननें कही जो श्रीगुसांईजी तो गोकुल-बिराजेहै॥ जब छीतस्वामी उहांते श्रीगोकुलमें आयके श्रीगुसांईजीके दर्शन किये ॥ जब छीतस्वामीनें ये नि-श्चय कियो जो श्रीनाथजी तथा श्रीगुसांईजी एकही स्व-रूप है ॥ जबसूं छीतस्वामीजीनें "गिरिधरन श्रीविठ्ठल" ऐसी छापके बहुत पद गाए॥ सो वे छीतस्वामी ऐसे कृ-पापात्र भगवदीय हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ सो वे छीतस्वामी बीरबलके पुरोहित हते ॥ सो वे बीरबलके पास वर्सोंधी लेवेकुं गए तब सवारके समें छीतस्वामीनें यह पद गायो॥ " जेवसुदेव किये पूरण तप सोई फल फलित श्रीवल्लभ-

देहु" ॥ ये पद सुनके बीरबल बोले जो मैंतो वैष्णव हूं परंतु ये बात देशाधिपति सुनेंगे तो तुम कहा जवाब देओगे वे तो म्लेच्छ है ॥ तब छीतस्वामी बोले जो देशाधिपति पूछेंगे तो मै नीके जवाब देउंगो और मेरे मनसूं तो तूही म्लेच्छ है॥ आज पीछे तेरो मुख न देखूंगो ऐसे कहेके छीतस्वामी चले गए ॥ जब ये बात देशाधिपतीनें सुनी तब बीरबलसूं पूंछो जो तुमारे पुरोहित क्यों रिसाय गए ॥ तब बीरबलनें सब बात देशाधिपतिआगे कही ॥ ब्राह्मणलोग वृथा रिस बहुत करे है तब देशाधिपतीनें कही जो तुम और हम नावपें बेठे हते जब दीक्षितजीनें मोकुं आशिर्वाद दियो हतो तब मैनें मणी भेट करी हती वे मणी कैसी हती जो पांच तोला सोना नित्य देती हती ॥ सो वे मणी दीक्षितजीनें श्रीयमुनाजीमें पटक दीनी ॥ जब मेरे मनसें बडो गुस्सा लग्यो तब मैनें मणी पाछी मांगी ॥ तब दीक्षितजीनें श्रीयमुनाजीमेंसुं खोंच भरिके मणी काढी तब हमकुं कही तुमारी होयसो पहिचान लेओ ॥ जब हमकुं ये निश्चय भयो ये साक्षात् ईश्वरहे ईश्वरविना ऐसो कारज नहीं होयगो ये बात विचारकरतें तुमारे पुरोहितकी सब बात साचीहै सो तुमनें क्यों विचार न कऱ्यो ये बात सुनके बीरबल बहोत खिसानो भयो ॥ और कछु बोल्यो नहीं और ये बात श्रीगुसांईजीनें सुनी तब लाहोरके वैष्णव आये हते तिनसों आज्ञा करी जो छीतस्वामीकी खबर राखते रहियो जब छीतस्वामी बोले जो मैंनें वैष्णवधर्म विक्रय करवेकुं लियो नहीं है मेरेतो विश्रांत-

घाट है सो आपकी कृपासों सब चलेगो ॥ ये वात सुनके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ और एक-दिन विरबल देशाधिपतीसों रजालेके श्रीगोकुलमें जन्मा-ष्टमीके दर्शकुं आयो ॥ पाछे वेषपलटायके देशाधिपती हूं छानेछाने आयो ॥ तब जन्माष्टमीके पालनाके दर्शन करे ॥ मनुष्यनकी भीडमें ॥ तब देशाधिपतीकुं श्रीगुसां-ईजीविना और कोईनें पहिचान्यो नहीं ॥ तब छीतस्वामी कीर्तन करते हते॥ और श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियाजी-कुं पालना झुलावते हते ॥ तब छीतस्वामीनें ये पद गायो ॥ प्रियनवनीतपालनें झूलेश्रीविठलनाथ झुलावेहो ॥ कवहुं-कआपसंगमिलझूलै कवहुकउतरझुलावेंहो ॥ १ ॥ कवहुं-कसुरंगखिलोनालैलै नानाभांतिखिलावेंहो ॥ चकई फिर कनीलेविंगीटुझुणझुणहातवजावेंहो ॥ २ ॥ भोजनकरत थालएकझारीदोउ मिलखायखवावेंहो ॥ गुप्तमहारसप्रक-टजनाविप्रीतिनईउपजावेंहो ॥३॥ धन्यन्यभाग्यदासनि-जजनकेजिनयहदर्शनपाएंहो ॥ छीतस्वामीगिरिधरनश्री-विठलनिगमएककरगाएंहो ॥ ४ ॥ ऐसे दर्शन छीतस्वा-मीकुं भए ॥ और देशाधिपतीकुं हूं ऐसे दर्शन भए ॥ और मनुष्यनकुं साधारण दर्शन भए ॥ तब देशाधिपती च लेतब श्रीगुसांईजीनें गुप्तरीतिसुं देशाधिपतीकुं महाप्रसाद दिवाये ॥ तब देशाधिपती आगरे आये ॥ फेर दूसरे दिन वीरवलहूं आए ॥ तब देशाधिपतीनें बीरवलसूं पूछी जो कहा दर्शन किये ॥ तब बीरबलनें कही श्रीनवनीतप्रि-याजी पालना झूलते हते और श्रीगुसांईजी झुलावते हते॥

तब देशाधिपतीनें कही ये बात झूठी है ॥ श्रीगुसांईजी पालना झूलते हते और श्रीनवनीतप्रियाजी झुलावते हते॥ मोकुं ऐसे दर्शन भएहे ॥ और छीतस्वामी तुमारे पुरोहित ऐसे कीर्तनगावते हते॥ और मैं तेरे पास ठाडो हतो॥ तब बीरबलनें कही मोकुं ऐसे दर्शन क्यूं नही भये ॥ तब देशाधिपतीनें कही तुमकुं गुरुके स्वरूपको ज्ञान नहीहै॥ और तुमारे पुरोहित छीतस्वामी जिनकुं इन बातको अनुभव है ऐसेनसों तुमारी प्रीती नहीहै ॥ जब तुमकुं ऐसे दर्शन काहेकुं होवें॥सो वे छीतस्वामी ऐसे कृपापात्र हते॥ ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ ॥ वैष्णव ॥ २ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीकेसेवकचतुर्भुजदास कुंभनदासके बेटा तिनकी वार्ता–सो वे कुंभनदासजी श्रीनाथजीके संग खेलते हते ॥ सो एकदिन कुंभनदासकुं श्रीगोवर्धननाथजीनें चारभुजा धरिके दर्शन दिये ॥ वाहीदिन बेटाको जन्म भयो जासूं वा बेटाको नाम चतुर्भुजदास धर्‍यो ॥ ये बात कुंभनदासजीकी वार्तामें लिखीहै सो वे चतुर्भुजदासजी ११ दिनके भये ताही समय कुंभनदासजीनें श्रीगुसांईजीके पास लेजायके नाम सुनवाये और चतुर्भुजदास जब ४१ दिनके भये तब कुंभनदासजीनें श्रीगुसांईजीके पास लेजाय निवेदन करवाये ॥ वादिनतें चतुर्भुजदासमें श्रीनाथजीनें इतनी सामर्थ्य धरी जब इच्छा आवे तब मुग्धबालक होय जाय और इच्छा आवेतो बोलवे चालवे सब अलौकिक बातें करवें लग-

जाय जब कुंमनदासजी एकांतमें बैठे तब जतुर्भुजदास कुंमनदाससों भगवद्वार्ता करें और पूछें और पद गावें और जब लौकिक मनुष्य आयजाय तब चतुर्भुजदास मुग्धबालक बनजाय ॥ ऐसी सामर्थ्य श्रीनाथजीनें चतुर्भुजदासमें धरदीनी ॥ सो जब श्रीनाथजी इच्छा करते तब चतुर्भुजदासकुं साथ खेलवेकुं लेजाते ॥ और जैसी लीलाके दर्शनकरते तैसे पद गावते ॥ सो वे चतुर्भुजदास ऐसे भगवत्कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ सो एकदिन श्रीनाथजी एक ब्रजबासीके घर माखनचोरीकरवेकुं पधारे और चतुर्भुजदासजीकुं संगले पधारे ॥ और उहां एकब्रजवासीकी बेटीके चतुर्भुजदास नजर आये और श्रीनाथजीतो नजर नाहीं पडे ॥ और चतुर्भुजदास पकडाय गये सो विननें मार खाई ॥ पाछें चतुर्भुजदास श्रीनाथजीके पास गए ॥ जब चतुर्भुजदासजीनें कही जो महाराज मोकुंतो आछी मारखवाई ॥ श्रीनाथजीनें कही जो तेरेमें सामर्थ्य ओछी नहीं हती जब तू क्यों न भाग आयो ॥ सो वे चतुर्भुजदास श्रीनाथजीके अंतरंग लीलामध्यपाती हते ॥ तातें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ और जादिन चतुर्भुजदासजीकुं प्रथम लीलाको अनुभव भयो वादिनतें सर्व व्यापी वैकंठसंबंधीलीला सर्वत्र दर्शवे लगी॥ सो ये सामर्थ्य इनके भीतर श्रीगोवर्धननाथजीनें कृपाकरिके धरी जब कुंमनदासजीकूं पोढवेके दर्शन होते हते॥ तब कुंमनदासजी कीर्तन गायवे लगे॥ सो पद॥"वे देखो-बरतझरोखनदीपकहरिपोढेउंचीचित्रसारी"॥ सो इतनी-

तुक जब कुंमनदासजीनें गाई तब चतुर्भुजदासजी गायउठे सुंदरबदननिहारनकारनबहुतयतनराखेकरप्यारी॥ ये सुनिकें कुंमनदासजीनें निश्चय कर्यो जो इनकुं श्रीगुसांईजीकी कृपासों संपूर्ण अनुभव भयो ॥ सो बडी कृपा-मानके बहोत प्रसन्न भये॥जादिनतें चतुर्भुजदास कहुंजाते अथवा नहीं जाते अथवा अवार सवार आवते सो कुंमनदासजी कछू कहते नहीं ॥ ऐसो जानते जो श्रीनाथजीके संग खेलत होंयगे॥ सो चतुर्भुजदास ऐसे भगवत्कृपापात्र-भगवदीय हुते॥प्रसंग॥३॥ और एकदिन श्रीगोवर्धननाथजीके शृंगारके दर्शन चतुर्भुज दासजीनें कीने और श्रीगुसांईजी आरसी दिखावते हते॥तासमें चतुर्भुजदासजीनें ये पद गायो॥' सुभगशृंगारनिरखमोहनकोलेदर्पणकरपियहिदिखावें' आपुननेकनिहारियेबलिजाउंआजकीछबिकछूकहत न आवें॥ १॥ ता पीछे गोविंदकुंडऊपर श्रीगुसांईजी पधारे तब एकवैष्णवनें पूछ्यो जो महाराज चतुर्भुजदासजीनें आजकी छबि कछु बरनि न जावे ॥ एसे गायो और आपतो नित्य शृंगार करे हैं और आरसी दिखावेंहे॥ सो आजके पदको अभिप्राय कछु समझमें नहीं आयो॥ जब श्रीगुसांईजीनें कही सो चतुर्भुजदाससों पूंछियो॥ तब वा वैष्णवनें चतुर्भुजदाससों पूंछी ॥ जब चतुर्भुजदासजीनें औरभी पद गायो ॥ "सो पद ॥ माईरीआजऔरकालऔरछिनछिनप्रति और और" ॥ ये पद सुनिके वा वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसों पूंछयो जो भगवल्लीला तो नित्यहै और सर्वत्र है ॥ जब चतुर्भु-

जदासजीनें और और क्यों कही ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञाकरी ॥ भगवल्लीलामें विलक्षणपणो येईहै जो नित्य है और क्षणक्षणमें नूतन लागत है और लीलास्थ जीवनकूं और लीलाके दर्शनकरवेवारेनकूं क्षणक्षण नूतन लगतहै और नूतन रुचि उपजेहै ॥ सो गोपालदासजीनें गायोहै ॥ चौथे आख्यानमें पांचवी तुक ॥ एकरसनाकिमकहूंगुणप्रकटविविधविहार ॥ नित्यलीलानित्यनूतनश्रुतिनपासेपार ॥ ऐसी भगवल्लीला है ॥ ये सुनके वो वैष्णव वहोत प्रसन्न भयो ॥ और वे चतुर्भुजदास ऐसे कृपापात्र हते जो जिनको नित्यलीलाको अनुभव सर्वत्र होयगयो ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥ एकदिन श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल बिराजते और श्रीगिरिधरजीसों लेके सब बालक श्रीजीद्वार बिराजते हते ॥ तब उहां रासधारि आये तब श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीगिरिधरजीसों पूंछकें परासोलीमें रास करायो ॥ और रासमें खूब गान भयो ॥ जब चतुर्भुजदासजीसुं श्रीगोकुलनाथजीनें आज्ञा करी जो तुम कछु गावो ॥ तब चतुर्भुजदासजीनें कही जो मेरे सुनवेवारे श्रीनाथजी नहीं पधारे हैं जासूं मैं कैसे गाऊं ॥ जब श्रीगोकुलनाथजीनें कही जो श्रीनाथजी अबी पधारेंगे ॥ ये बात श्रीगोकुलनाथजीकी सत्य करवेकेलियें श्रीनाथजी जागके और श्रीगिरिधरजीकुं जगायके श्रीनाथजी परासोली पधारे और श्रीगिरिधरजी पधारे और चतुर्भुजदासकूं और श्रीगोकुलनाथजीकूं दर्शन भये ॥ और कोईकुं दर्शनभये नहीं ॥ तब श्रीनाथजीके दर्शन-

करकें चतुर्भुजदासजी गावे लगे ॥ जब अधिक सुख भयो रातहुं बढ गई और चतुर्भुजदासजीनें गायो सो पद ॥ अद्भुतनटभेखधरेयमुनातटश्यामसुंदरगुणनिधानगिरिवरधरनरासरंगराचें ॥ पद दूसरो ॥ प्यारीग्रीवाभुजमेलनृत्यतप्रियासुजान ॥ ऐसे ऐसे चतुर्भुजदासजीनें बहुत पदगाये जब रासभयो तब परम आनंदभयो ॥ फेर श्रीगिरिधरजीनें श्रीनाथजीकुं रातकेजगेजानके सवारे जगाए नहीं इतनेमें श्रीगुसांईजी गोकुलतें पधारे और पूंछी जो कहासमयहे ॥ जब श्रीगिरिधरजीनें कही जो श्रीनाथजी जागेनहीहे ॥ रातकुं रासमें जगे हते ॥ जब श्रीगुसांईजीनें कही जो श्रीनाथजीतो सदैव रास करेंहे और सदैव जगेंहे जासूं शंखनाद करावो॥जब शंखनादकरायके श्रीनाथजीकुं जगाए ॥ फेर श्रीगोकुलनाथजीकुं श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ॥ जो ऐसो आग्रह करिके श्रीनाथजीकुं पधरावने नहीं ॥ एतो सदैव अपनी इच्छातें रास करतहे जासूं बीनतीकरिके पधरावने नहीं ॥ वे चतुर्भुजदासजी ऐसे कृपापात्र हते के श्रीनाथजीके विना दूसरे ठिकानें गान नहीं करत हते ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥ एकदिन श्रीगुसांईजीनें चतुर्भुजदाससों आज्ञा करी जो अपछराकुंडऊपर जायके रामदासभीतरीयाकुं बुलायलावो और तुम फूल लेआवो तब चतुर्भुजदास जायके रामदासजीकुं बुलायके आप फूल वीनके आवते हते ॥ जब श्रीगोवर्धनपर्वतकी कंदरासूं बाहेर श्रीनाथजी श्रीस्वामिनीजी सहित पधारे और श्रीस्वामिनीजीनें मनमें ये विचार कर्‍यो

जो यह लीला कोई जानेनहींहे इतनेमें चतुर्भुजदासजीनें दर्शन करिके ये पद गायो ॥ " गोवर्धनगिरिसघनकंदरा-रैननिवासकियोपियप्यारी ॥ और दूसरो पद गायो ॥ " रजनीराजकियोनिकुंजनगरकीरानी" ये पद सुनके श्रीस्वामिनीजी प्रसन्न भई ॥फेर चतुर्भुजदासजी फूललेके श्रीगुसांईजीके पास गए ॥ सो वे चतुर्भुजदासजी ऐसे कृपापात्र हते जो श्रीनाथजीके तथा श्रीस्वामिनीजीके मनकीजानवेवारे भये ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥ सो चतुर्भुजदास-जीकी वहू एकदिन श्रीनाथजीके चरणारविंदमें पहुँचगई जब चतुर्भुजदासजीकुं सूतक आयो सूतकमें चतुर्भुज दासजी वनमें बैठके नित्य कीर्तन करते ॥ तब श्रीगोव-र्धननाथजी विनके चारों और दूर दूर खेले करते ॥ जब श्रीगोवर्धननाथजीनें आज्ञा करी जो चतुर्भुजदास तुम दूसरो विवाह करो ॥ जब चतुर्भुजदासनें कही जो जातमें कन्या नहीं मिलेहै जब श्रीनाथजीनें कही जो तुम धरेजा करो ॥ जब चतुर्भुजदासजीनें धरेजा कन्यो॥ तब श्रीगोवर्धननाथजी नित्य चतुर्भुजदाससों हांसी मस्करी करते ॥ सो चतुर्भुजदासजी ऐसे अंतरंग भगवदीय हते॥ ॥ प्रसंग ॥ ७ ॥ एक समय श्रीगुसांईजी परदेस पधारे हते तब श्रीगिरिधरजीकी ऐसी इच्छा भई जो श्रीनाथजीकुं मथुरामें अपने घर पधरावें तो ठीक ॥ जब श्रीनाथजीकी आज्ञा लैके फागनवदीषष्ठीकेदिनसैनपीछे श्रीनाथजीकुं मथुरा पधराए ॥ और फागनवद ७ केदिन बडो उत्सव मान्यो और जो कछु घरमें हतो सो सर्वस्व अर्पण कन्यो

और बेटीजीनें एक बीटी घर राखीहती ॥ बेटीजी बालक हते जासूं समझते नहीं हते॥ सो बिटीहू श्रीनाथजीनें मांगलीनी ॥ कारण जो श्रीगिरिधरजीनें सर्वस्व अर्पण करवेकी प्रतिज्ञा करीहती सो प्रतिज्ञा सत्यकरिवेकेलियें श्रीनाथजीनें बीटी मांगलीनी और नित्य चतुर्भुजदास गिरिराजजी ऊपर बैठके विरहके पद और हिलगके पद गायोकरते ॥ और श्रीनाथजी नित्य विनकुं संध्यासमें शयनकेसंग पधारते दर्शन देते॥ सो वैशाख सुदि त्रयोदशीके दिन चतुर्भुजदासजीनें ये पद संध्यासमें गायो'श्रीगोवर्धनवासीसांवरेलालतुमबिनरह्योनजायहो' या पदकी छेलीतुक श्रीनाथजीनें पधारतेंही सुनि तब करुणाव्याकुल भये और मनमें ये विचार कर्‍यो जो सर्वथा काल इहां पधारूंगो जासूं भक्तको दुःसह दुःख देखके श्रीनाथजीसें रह्योनगयो ॥ जब रात्र एकप्रहररही तब श्रीनाथजीनें वैशाखसुदि चौदसकेदिन श्रीगिरिधरजीकुं आज्ञा करी जो आज गोवर्धनपर्वतऊपर राजभोग अरोगुंगो जब श्रीगिरिधरजीनें मंगलाकरायके श्रीनाथजीकुं पधराए ॥ और पहेले मनुष्य पठायकें मंदिर खासा करायो और श्रीनाथजीकुं पधारते अवार होयगई ॥ जासूं राजभोग तथा शयनभोग एकसमयमें अरोगे॥वा दिनसूं आजदिनपर्यंत नृसिंघचतुर्दशीकेदिन श्रीनाथजी दोयसमें राजभोग अरोगेंहैं ॥ एकतो नित्यकेसमें और एक शयनभोगके संग ॥ वे चतुर्भुजदास श्रीनाथजीके ऐसे कृपापात्र हतेजो तिनविना श्रीनाथजीसों रह्यो

न गयो ॥ प्रसंग ॥ ८ ॥ एकसमय चतुर्भुज दास श्रीगुसांईजीकेसंग श्रीगोकुल गए और श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन करे और बाललीलाके तथा पालनेके कीर्तन करे ॥ और दर्शन करके फेर गोपालपुर आए जब कुंमनदासनें पूंछ्यो जो कहांगयोहतो ॥ तब विननें कही श्रीगोकुलगयो हतो ॥ जब कुंमनदासजीनें कही प्रमाणमें क्योंजाय पड्यो हतो ॥तब चतुर्भुजदासनें श्रीगुसांईजीसों पूछी जो प्रमाणप्रकर्णकीलीला और प्रमेयप्रकर्णकी लीलामें कितनो भेद है ॥ जब श्रीगुसांईजीनें कही जो भगवल्लीला सब एक समानहै॥ कुंमनदासजीकुं किशोरलीलामें बहोत आसक्ती है जासूं ऐसें बोले भगवल्लीलामें भेद समझनो नहीं और श्रीठाकुरजी विरुद्धधर्म आश्रयहें॥ एककालावच्छिन्न श्रीप्रभु सर्वत्र सबलीला करतेहैं ॥ ये सुनके चतुर्भुजदासजी बहोत प्रसन्न भए ॥ वे चतुर्भुदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनसूं श्रीगुसांईजी कछु गुप्त नहीं राखते हते॥ प्रसंग॥ ९॥ और चतुर्भुजदासजीके पाछें चतुर्भुजदासजीके बेटा राघोदास हते ॥ सो विनकूं भगवल्लीलाको अनुभव भयो जब राघोदासजीनें धमार गाई ॥ सो धमार॥ 'एचलजाएंजहांहरिक्रीडतगोपिनसंगा' ॥ ये धमारकी जब दस तुक भई तब राघोदासकी देह छूटी ॥ सो भगवल्लीलामें प्रवेश भयो ॥ तब राघोदासजीकी बेटीनें डेढतुक धरके धमार पूरी करी॥ वे चतुर्भुजदास तथा विनके बेटा विनकी बेटी ये सब ऐसें कृपापात्र हते ॥ तातें इनकीवार्ता कहांताईलिखिये ॥ ॥ प्रसंग ॥ १० ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥

वल्लीलामें मन मग्न होयगयो ॥ अनेकलीलानको अनु-
भव होवे लग्यो ॥ भरे घरके चोरकी सीनाई मोहित
भये ॥ ऐसें करते सवारो होयगयो ॥ कछु सुद्धिरही-
नहीं ॥ तब श्रीगुसांईजी पधारकें नंददासजीके कानसें
कही कें नंददासजी उठो दर्शनकरो ॥ जब नंददासजी
उठके ठाढे भये तब नंददासजीनें उठके श्रीगुसांईजीके
दर्शन करके ये पद गायो ॥ 'प्रात समय श्रीवल्लभसुत-
कोउठतहिंरसनालीजियेनाम' ॥ इत्यादिक पद गायके ॥
श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन करे ॥ दर्शन करत मान्नही
भगवल्लीलाकी स्फूर्ती भई जब पालनेको पद गायो ॥
'बालगोपालललनकोंमोदभरीयशुमतिहुलरावत ॥ इत्या-
दि भगवल्लीलासंबंधी बहुत पद नये करकें गाये ॥ सो नं-
ददासजीके ऊपर श्रीगुसांईजीनें ऐंसी कृपा करी तब सब-
ठिकानेनसों विनको मनखीचकें श्रीप्रभुनमें लगाय
दीनो ॥ सो वे क्षत्रीकी वहू जिनसों नंददासजीको मन
लग्यो हतो सो वे क्षत्रीकी वहू नंददासजीकुं रस्तामें
पांच सात वार नित्य दीखती हती ॥ परंतु नंददासजी
वाकी आडी देखतेही न हते॥ऐंसें श्रीगुसांईजीकी कृपातें
ऐंसो मनको निरोधहोयगयो हतो॥जासूं इनके भाग्यकी
बडाई कहा कहिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ तापाछें श्रीगुसांईजी
श्रीजी द्वार पधारे ॥ सो नंददासजीकुं आज्ञा करकें संग
लेगये ॥ तब नंददासजीनें जायकर श्रीगोवर्धननाथ-
जीके दर्शन करे ॥ सो साक्षात् कोटिकंदर्पलावण्यपूर्णपु-
रुषोत्तमके दरशन भये ॥ सो दर्शन करकें नंददासजी

वहुत प्रसन्न भये ॥ और नंददासजीकूं किशोरलीलाकी स्फूर्ती भई ॥ तव उत्थापनको समय हतो ॥ सो श्रीगु- सांईजीकी आज्ञा पायकें यह पद गायो ॥ 'सोहतसुरंगदु- रंगीपागकुरंगललनाकेसेलोयनलोने' ॥ यह पद गायकें अपनें मनमें नंददासजीनें वडे भाग्य माने ॥ फिर सं- ध्याआरतीसमय दर्शन करे ॥ तव ये पद गाये ॥'वनते- सखनसंगगायनकेपाछेपाछे आवतमोहनलालकन्हाई' ॥ ॥ १ ॥ वनतेआवतगावतगोरी ॥ २ ॥ देखसखीहरिको- वदनसरोज ॥ ३ ॥ घरनंदमहरकेमिसहीमिसआवतगो- कुलकीनारी ॥ ४ ॥ याभांतसूं नंददासजीनें इत्यादि अ- नेक पद गाये ॥ सो नंददासजी कोईदिन श्रीगिरिराजजी रहते कोई दिन श्रीगोकुल आवते ॥ जिनकूं संसार ऐसो फीको लागतो ॥ जैसे मनुष्यकूं उल्टी देखके वुरो लगे ॥ जासूं वे औरठिकाने जाते नहीं हुते ॥ और श्रीमहाप्रभुजी और श्रीगुसांईजी और श्रीगिरिराजजी और श्रीयमुना- जी और श्रीव्रजभूमी इनको स्वरूप विचार्यो करते ॥ प्रभुनके दूसरे अवतारन पर्यंत कोई ठिकाने विनको मन नहीं लागतो हुतो ॥ जासूं विननें श्रीस्वामिनीजीके स्वरूपवर्णमें कह्योहै॥ 'चलीयेकुंवरकान सखीभेषकीजे'॥ या पदमें कह्योहै॥शिवमोहेजिनवेमोहनीजेकोई ॥ प्यारी- केपायनआजआनपरेसोई ॥ ऐसी दृष्टी जिनकी ऊंची हती॥ प्रसंग॥२॥ सो वे नंददासजी व्रज छोडके कहुं जो नहीं हुते ॥ सो नंददासजीके वडे भाई [illegible] नामसूं न काशीमें रहते हुते ॥ सो विननें [illegible] भेजो ॥ तव नंददास-

सांईजीके सेवक भयेहैं ॥ जब तुलसीदासजीके मनमें ये आई कें नंददासजीनें पतिव्रताधर्म छोडदियोहै आपनेतो श्रीरामचंद्रजी पती हुते॥ सो तुलसीदासजीनें ये विचारकें नंददासजीकुं पत्र लिख्यो॥ जो तुम पतिव्रताधर्म छोडकें क्यों तुमनें कृष्ण उपासना करी ॥ ये पत्र जब नंददास-जीकुं पहुंचो तब नंददासजीनें बांचके ये उत्तर लिख्यो॥ जो श्रीरामचंद्रजीतो एकपत्नी व्रतहैं सो दूसरी पत्नीनकुं कैसे संभारसकेंगे एकपत्नीहुं बरोबर संभार न सके ॥ सो रावण हरलेगयो और श्रीकृष्णतो अनंत अबलानके स्वामीहैं और जिनकी पत्नी भये पीछे कोई प्रकारको भय रहे नहीं है ॥ एककालावच्छिन्न अनंतपत्नीनकुं सुख-देतहैं ॥ जासूं मैंने श्रीकृष्णपती कीनेहैं ॥ सो जानोगे ॥ ये पत्र जब नंददासजीको लिख्यो तब तुलसीदासकुं मि-ल्यो तब तुलसीदासजीनें बाचके बिचार कियो कें नंद-दासजीको मन वहां लगगयोहै ॥ सो वे अब आवेंगे नहीं ॥ सो इनकी टेकहमसूं अधिकीहै॥ हमतो अयुध्या छोडके काशीमें रहेहें ॥ और नंददासजीतो व्रजछोडके कहीं जाय नहीं हैं ॥ इनकी टेक हमारी टेकसूं बडीहै ॥ सो वे नंददासजी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हुते ॥ प्रसंग ॥ ॥ ३ ॥ सो एकदिन नंददासजीके मनमें ऐसी आई ॥ जो जैसे तुलसीदासजीनें रामायण भाषा करीहै ॥ सो हमहूं जीके दर्शन [illegible]वतभाषाकरें ये बात ब्राह्मण लोगननें सुनी रुषोत्तमके दरशन मिलकें श्रीगुसांईजीके पास गये ॥ सो " जो श्रीमद्भागवतभाषा होयगो

तो हमारी आजीविका जाती रहेगी ॥ तब श्रीगुसांईजीनें नंददासजीसुं आज्ञा करी ॥ जो तुम श्रीमद्भागवत भाषा मतकरो और ब्राह्मणनके क्लेशमें मत परो ॥ ब्रह्मक्लेश आछो नहीं है और कीर्तन करकें व्रजलीला गाओ॥ जब नंददासजीनें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मानी ॥ श्रीमद्भागवतभाषा न कर्‍यो ॥ ऐसो श्रीगुसांईजीकी आज्ञाको विश्वास हतो ॥ ऐसे परमकृपापात्र भगवदीय हते ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥ सो नंददासजीके बडे भाई तुलसीदासजी हते ॥ सो काशीजीतें नंददासजीकूं मिलवेकेलिये व्रजमें आये ॥ सो मथुरामें आयके श्रीयमुनाजीके दर्शन करे पाछे नंददासजीकी खबर काढकें श्रीगिरिराजजी गये उहां तुलसीदासजी नंददासजीकुं मिले ॥ जब तुलसीदासजीनें नंददासजीसुं कही कें तुम हमारे संग चलो ॥ गाम रुचे तो अयोध्यामें रहो ॥ पुरी रुचे तो काशीमें रहो ॥ पर्वत रुचे तो चित्रकूटमें रहो ॥ वन रुचे तो दंडकारण्यमें रहो॥ ऐसे बडेबडे धाम श्रीरामचंद्रजीनें पवित्र करेहै ॥ तब नंददासजीनें उत्तर देवेकुं ये पद गायो सो पद ॥ जोगिरिरुचेतोवसोश्रीगोवर्धनगामरुचेतोवसोनंदगाम॥ नगररुचेतोवसोश्रीमधुपुरीसोभासागरअतिअभिराम॥१॥ सरितारुचेतोवसोश्रीयमुनातटसकलमनोरथपूरणकाम ॥ नंददासकाननरुचेतोवसोभूमिवृंदावनधाम ॥ २ ॥ यह पद सुनके तुलसीदासजी बोले जो ऐंसी कोनसो पाप है ॥ जो श्रीरामचंद्रजीके नामसूं न जाय ॥ जासूं तुम श्रीरामचंद्रजीकूं भजो ॥ तब नंददास-

जीनें एक कीर्तनमें उत्तर दियो ॥ सो पद ॥ कृष्णनामसज-बतेंमेंश्रवणसुन्योरीआलीभूलीरीभवनहोंतोबावरीभईरी॥ भरभरआवेंनयनचितहुंनपरेचैनसुखहुंनआवेवैनतनकी-दशाकछुऔररहीरी ॥ १ ॥ जेतेकनेमधर्मव्रतकीनेरीमेंब-हुविधअंगोअंगभईमेंतोश्रवणमईरी ॥ नंददासप्रभुजाके-श्रवणसुनेयहगतिमाधुरीमूरतकेधोंकैसीदईरी ॥ २ ॥ ये पद सुनके तुलसीदास चुप रहे ॥ जब नंददासजी श्रीना-थजीके दर्शन करवेकूं गये ॥ तब तुलसीदासहुं उनके पीछें पीछें गये ॥ जब श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन करे तब तुलसीदासजीनें माथो नमायोनहीं॥ तब नंददासजी जान गये ॥ जो ये श्रीरामचंद्रजीबिना और दूसरेकूं नहीं नमेहे ॥ जब नंददासजीनें मनमें बिचारकीनो यहां और श्रीगोकुलमें इनकुं श्रीरामचंद्रजीके दर्शन कराऊं ॥ तब ये श्रीकृष्णको प्रभाव जानेंगे ॥ जब नंददासजीनें श्री-गोवर्धननाथजीसों बीनतीकरी ॥ सो दोहा ॥ आजकी-सोभाकहाकहूंभलेबिराजेनाथ ॥ तुलसीमस्तकतबनमें-धनुषबाणलेय्योहाथ ॥ ये बात सुनकें श्रीनाथजीकों श्री-गुसांईजीकी कानतें विचार भयो ॥ जो श्रीगुसांईजीके सेवक कहें सो हमकुं मान्यो चाहिये ॥ जब श्रीगोवर्ध-ननाथजीनें श्रीरामचंद्रजीको रूप धरके तुलसीदासजीकुं दर्शनदिये ॥ तब तुलसीदासजीनें श्रीगोवर्धननाथजीकुं साष्टांग दंडवत करी ॥ जब तुलसीदासजी दर्शन करके बाहिर आये ॥ तब नंददासजी श्रीगोकुल चले जब तुल-सीदासजीहूं संग संग आये तब आयके नंददासजीनें श्रीगुसांईजीके दर्शन करे ॥ साष्टांगदंडवत करी और

तुलसीदासजीनें दंडवत करी नहीं ॥ और नंददासजीकुं तुलसीदासजीनें कही कें जैसे दर्शन तुमनें वहां कराये वेसेंही यहां कराओ ॥ जब नंददासजीनें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी ये मेरे भाई तुल्सीदासहे ॥ श्रीरामचंद्रजी-विना औरकुं नहीं नमेंहे तव श्रीगुसांईजीनें कहीकें तुल-सीदासजी बेठो ॥ जब श्रीगुसांईजीके पांचमेंपुत्र श्रीरघु-नाथजी वहां ठाढे हुते ॥ और विन दिननमें श्रीरघुना-थजीको विवाह भयो हतो ॥ जब श्रीगुसांईजीनें कही रघुनाथजी तुह्मारे सेवक आयेहे ॥ इनकुं दर्शन देवो तव श्रीरघुनाथलालजीनें तथा श्रीजानकीवहूजीनें श्रीराम-चंद्रजीको तथा श्रीजानकीजीको स्वरूप धरकें दर्शन दिये ॥ साक्षात् दर्शन भये ॥ तव तुलसीदासजीनें साष्टां-गदंडवत करी ॥ याहीतें श्रीद्वारकेशजीनें मूलपुरुषमें ॥ गायोहे ॥ "हेतुनिजअभिधानप्रकटेतातआज्ञामानके" ॥ और तुलसीदासजी दर्शन करके बहुत प्रसन्न भये ॥ और पद गायो ॥ "वरणोंआवधिगोकुलगाम" ॥ ये पद गायके तुलसीदासजी बिदा होयके अपनें देशकुं गये ॥ सो वे नंददासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगव-दीय हते ॥ जिनके कहेतें श्रीगोवर्धननाथजीकुं तथा श्री-रघुनाथजीकुं श्रीरामचंद्रजीको स्वरूप धरके दर्शन देणे-पडे ॥ जासूं इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ वार्ता सं-पूर्ण ॥ ॥ वैष्णव ॥ ४ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक नागजीभाई साठोदरा ना-गर तिनकी वार्ता ॥ नागजीभाई श्रीमहाप्रभुजीके पास

सेवक होवेको गए॥ जब श्रीमहाप्रभुजी विचारे जो नागजीद्वारा सृष्टी वहोत अंगीकार होयगी ॥ और नागजीभाईके संगते दैवीजीव प्रभुनके सन्मुख होएंगे ॥ और पुष्टिमार्गके सिद्धांतके पात्र नागजीभाईहे ॥ और इनकोवंश बहुतवर्षपर्यंत चलेगो ॥ जासूं ये लालजीकी शरण जांएंतो बहुत आछो ॥ जासूं श्रीमहाप्रभुजीनें आज्ञा करी जो तुम लरकाके सेवक होवो ॥ तब नागजीभाई श्रीगुसांईजीके सेवक भए सो वे नागजी ऐसेंकृपापात्र भगवदीय हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ और वे नागजी गोधरागामके देसाई हते ॥ और कछुकारणसुं सरकारमें आजीविका बंदभई हती सो वे नागजीभाई बडे संकोचमें आयगये इतनेमें नागजीभाईकी बेटीको विवाह आयो ॥ सो वे बात खंभातके वैष्णवननें सुनी ॥ सहजपालडोशी तथा माधवदासदलाल तथा जीवापारिख नागजी भाईके स्नेही हते ॥ सो विननें नागजीकीबेटीके विवाहकी खबर सुनी ॥ जब विननें दसहजार रुपैया गोधरामें नागजीकुं पठाये ॥ सो वे रुपैया नागजीभाईकुं पहुंचे ॥ तब नागजीभाईनें विचार कर्यो जो ये द्रव्यतो वैष्णवनकोहे ॥ और वैष्णवननेंतो मोकुं वैष्णवसंबंधसों पठायोहे॥जासूं ये द्रव्य लौकिकमें नहीं खरचाय तो आछो ॥ आपदा कालतो चार दिनमें मिटजायगो ॥ जब वे द्रव्यकी सोनामोहर लेके एकलाकडीमें भरके अडेलको चले ॥ जब रस्तामें एक वैष्णवडोकरी रहती हती वा डोकरीकुं श्रीठाकुरजीनें स्वप्नमें आज्ञा करि ॥ जो काल नागजी कासिदको वेष-

घरि आवेंगे तिनकुं तुम प्रसाद लेवाईयो ॥ जब दूसरे-दिन परदेसिनके उतारामें वा डोकरीनें नागजीभाईकुं ढूंढपाए ॥ तब वा डोकरीनें कही जो मैं तुमारी ज्ञातीकी हूं और श्रीगुसांईजीकी सेवक हूं जासूं मेरेघर प्रसाद लेवेकुं चलो तब नागजीभाईनें नाहीं कही ॥ तब नाग-जीभाई उहांसे चले॥ जब दो मजिल गये तब श्रीठाकु-रजीने स्वप्नमें आज्ञा करी जो तुमनें वा डोकरीके घर प्रसाद क्योंनलियो ॥ वा डोकरीकुं मैनें आज्ञा करी हती तब नागजी फिरके वा डोकरीके घर प्रसादलेवेकेलिएं पा-छे आयके उहां तीनदिन रहे ॥ और वा डोकरीकुं कही जो तुमकुंश्रीठाकुरजीनें आज्ञा करी हती सो मोकुं क्यों न कही ॥ तब वा डोकरीनें कही जो तुमतो श्रीठा-कुरजीके अंगहो मैं इन बातनमें कहासमझूंहूं. तब ना-गजी ये सुनके और डोकरीकी नम्रता देखके बहुत प्रसन्न भये॥ फेर उहांतें नागजी अडेलगाममें आये ॥ और श्री-गुसांईजीके दर्शन करे॥ और वे लाठी भंडारीकुं दीनी और कही जो ये लाठी बैष्णवननें दीनीहै सो श्रीगुसांईजीकुं दीजिये ॥ ये कहेके नागजीभाई व्रजमें गये और पाछें भंडारीनें लाठी श्रीगुसांईजीके आगें खोली तब द्रव्य नि-कस्यो ॥ और नागजीभाईतो तीनमहिना श्रीनाथजी-द्वारमें रहे॥ और पाछें ते गोधरामें सब पंचननें हाकमसों कहेके नागजीभाईकी आजीविका खुली कराई ॥ और चड्यो द्रव्य लेके नागजीभाईकी बेटीको विवाहकरदियो जब नागजीभाई गोधरामें आए तब दसहजाररुपैया

खंभातनें पठाय दिये ॥ तब खंभातके वैष्णवननें विचार कर्‍यो जो ये द्रव्यतो नागजीभाईकुं हमनें वैसेंही दियो-हतो सो अब कैसें लियोजाय ॥ जब वे द्रव्य खंभातके वैष्णवननें श्रीगुसांईजीके पास भेजदिये ॥ सो वे नाग-जीभाई ऐसे भगवदीय और अनुभवी हते ॥ श्रीगुसांई-जीके स्वरूपमें ऐसे आसक्त हते जो वर्षमें गोधरासूं दो-वार जरूर दर्शनकुं आवते ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ एकदिन वे नागजीभाईकुं गोधराके हाकमनें राजनगर पठायो ॥ पातशाहके पास जागीर वढाईवेके लियें और दोयहजार रूपैया खरचवेकुं दिये ॥ तब वे नागजीभाई राजनगर आये सो उहां एक चीर दक्षणको अति सूक्ष्म देख्यो ॥ सो हजाररूपैयामें लेके श्रीगोकुल गए ॥ और जायकें श्रीगुसांईजीकुं चीर भेट कर्‍यो ॥ और फेर राजनगर आए देशाधिपतीकुं मिलकरकें पांचगुणी जागीरको पट्टावढ-वायलिये ॥ फेर गोधरा जायके हाकिमकुं खबर दीनी ॥ हाकिम ये बात सुनके बहुत प्रसन्न भयो और एक महा-लके पांच महाल भए ॥ तादिनतें आजसूधी गोधरापंच-महाल कह्योजायहै ॥ सो नागजीभाईको स्नेह प्रभुनमें निष्काम हतो ॥ और लौकिककुं तुच्छमानते हते ॥ और विनके लौकिककार्य प्रभु आपसोंआप सिद्ध करते ॥ ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ और एकसमय श्रीगुसांईजी द्वारिका प-धारे हते ॥ नागजीभाई राजनगरसों आंब लेके द्वारिका पहुंचे ॥ और श्रीगुसांईजीके दर्शन करिकें आंबनकी वी-नती करी ॥ जब श्रीगुसांईजीनें कही श्रीरणछोडजीके मं-

दिरमें पहुंचायेदेवो ॥ जब नागजीनें आंब पहुंचायके दू-
सरे आंब मनुष्यकुं पठाय राजनगरसों फेर मंगवाये ॥
तब श्रीगुसांईजीकुं वीनति करी जो ये आंब आपके डे-
रामें रणछोडजीकुं पधरायके अंगीकार करावें ॥ जब श्री-
गुसांईजीको डेरो राम लक्ष्मणजीके मंदिरकेपास हतो ॥
जब उहां श्रीगुसांईजीनें श्रीरणछोडजीकुं पधरायके आंब
भोगधरे और नागजीभाईकुं साक्षात् श्रीरणछोडजीके
दर्शन भये ॥ जबतें श्रीगुसांईजीकी बेठक वा ठिकाणे
भई ॥ और उहां श्रीगुसांईजीके मनमें ऐंसी आई ॥ जो
ऐंसें आंब श्रीनाथजीअरोगें तो ठीकहे ॥ जब नागजी-
भाईनें श्रीगुसांईजीके मनकी जानी तब उहांसूं नागजी-
भाई चले सो राजनगरसूं आंब लेके श्रीनाथजी तथा श्री-
नवनीतप्रियाजीके इहां आंब पहुंचायके फेर राजनगरसों
दूसरे आंब लेके सो घाघाघुरघट गाममें श्रीगुसांईजीकुं
मिले ॥ और श्रीगुसांईजीकुं उहांके सब समाचार कहे
और पत्र आगे धरे ॥ जब श्रीगुसांईजी मनमें विचारि
जो नागजीविना मेरे मनकी कोन जाने ॥ तब नागजी-
भाई सों कही जो तुमारो कहा मनोरथहे ॥ जब नागजी-
भाईनें वीनती करी जो महाराज श्रीनाथजीकुं इहां पध-
रायके आंब भोगधरें जब मोकुं दर्शन होवें ॥ तब मेरो
चित्त प्रसन्न होय तब श्रीगुसाईजीनें वैसेही दर्शन नागजी-
भाईकुं करायेमा सो वे नागजीभाई ऐसे कृपापात्र हते॥ और
श्रीगुसांईजीनें विनमें ऐंसी सामर्थ्य धरी हती ॥ जोचाहें
जितनो बोझ उठाय लेतें और चाहें जितनो रस्ता चलें

जाते ॥ दसदिनको रस्ता होय तहां एकदिनमें पहुंचजाते ॥ वे नागजीभाई ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥ एकसमें नागजीभाई अडेलकूं चले सो रस्तामें श्रीजीद्वार आये ॥ तब रामदासनें कही जो नागजीभाई थोडेदिन इहां रहिके सेवा करो ॥ तब नागजीभाई उहां सेवामें न्हाए ॥ जब श्रीगुसांईजीकुं एक श्लोक लिखपठाये ॥ सो श्लोक ॥ सरसिकुशेशयमप्यास्वादितुमागच्छतो लिनो मार्गे ॥ यदिकनककमलपानेनासीत्तोषःकिमन्येन ॥ १ ॥ जब अडेलमें वे पत्र श्रीगुसांईजीकुं पोहोंच्यो तब श्रीगुसांईजीनें दोय श्लोक लिखपठाए ॥ श्लोक ॥ नाम्रकुशेशयमानसमर्थयसेयत्प्रियोमधुपः॥ तस्मिंस्त्वुष्टतोपोदुस्थेदौस्थ्यंहिनिरुपमस्नेहात् ॥ १ ॥ यद्यलिरपिनिरुपधिभावःस्वभावतःसमागच्छेत् ॥ निरवधितोषोस्यापिप्रभवेदेवेतिकिंवाच्यं ॥ २ ॥ ये श्लोक वाचिकें नागजी बहोत प्रसन्न भये ॥ और अडेलजाय फिर श्रीगुसांईजीके दर्शन किये ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥ और एकसमें नागजीनें गोधरातें श्रीगुसांईजीकुं पत्र लिखे ॥ वामें लिख्यो जो श्रीसुबोधिनीजी तथा निबंध तथा अणुभाष्य और श्रीमहाप्रभूजीके करे भये ग्रंथनको आशय थोडेमें समझ पडे सो लिख पठावेंगे ॥ तब श्रीगुसांईनें दोय श्लोक लिख पठाए ॥ ॥श्लोक॥श्री वल्लभाचार्यपथिप्रगाढंप्रेमैवचास्त्यव्यभिचारहेतुः ॥ तत्रोपमुक्तानवधोक्तभक्तिस्तत्रोपयोगोऽखिलसाधनानाम् ॥ १ ॥ यःकुर्यात्सुंदराक्षीणांभवनेलास्यनर्तने॥ तासां भावनयानित्यंसहिसर्वफलानुभाक् ॥ २ ॥ तब ये

श्लोक ॥ वांचके नागजीभाईकुं सगरो सिद्धांत स्फुरित भयो ॥ सो वे नागजीभाई ऐंसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक कृष्णभट्ट हते तिनकी०

श्रीमहाप्रभूजीके सेवक पद्मारावलसाचोराब्राह्मण तिनके बेटा कृष्णभट्टजी हते सो श्रीगुसांईजीके सेवक भए ॥ जब श्रीगुसांईजीनें श्रीमद्भागवत सुबोधिनीटीकासहित कृष्णभट्टकुं पढाए ॥ तब पुष्टिमार्गीय सिद्धांत सब विनके हृदयमें आयो॥ और जैंसे पद्मारावलकुं श्रीमहाप्रभूजीकी कृपातें पुष्टिमार्गीय सिद्धांत स्फुरितभयो हतो ॥ तैंसे विनके बेटा कृष्णभट्टजीकुं भयो और नित्य प्रति सुबोधिनीजी की कथा कहते ॥ सो एकदिन कृष्णभट्टजी व्रजमें गये ॥ विनके संग एक कुनवी वैष्णव गयो ॥ और श्रीगुसांईजीके तथा श्रीनाथजीके दर्शन करे ॥ जब कुनवी वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी ॥ जो कृष्णभट्ट कथामें ऐंसे कहेते हते ॥ जो श्रीगिरिराजजी धातुमय रत्नखचित हैं ॥ और गोविंदकुंड दूधसों भऱ्योहे ॥ सो ऐंसे दर्शन क्यों नहींहोवेहें ॥ ये बात सुनके श्रीगुसांईजीनें विचार कऱ्यो जो मेरे सेवक कृष्णभट्टकी वाणी मिथ्या नहोवे सत्यभईचहिये ॥ जासुं श्रीगुसांईजीनें वा कुनबीको दिव्यनेत्र दिये ॥ और जैंसे दर्शन कृष्णभट्टनें कहे हते तैंसेही श्रीगिरिराज तथा गोविंदकुंडके कराए ॥ सो वे कृष्णभट्टजी ऐंसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ एकसमय कृष्णभट्टजी श्रीनाथजीके भीतरियामें न्हाए और सब

सेवा करन लागे और चरणस्पर्श न करे तब एकदिन श्रीनाथजीनें आज्ञा करी जो कृष्णभट्ट चरणस्पर्शकरो ॥ तब कृष्णभट्टनें वीनती करी जो लीलाके दर्शन होंवें तो चरणस्पर्श करूं ॥ तब श्रीनाथजीनें आज्ञा करी जो लीलाकेदर्शन देहांतरमें होवेंगे ॥ ये सुनके कृष्णभट्टजी उदास होय गए ॥ जब श्रीगुसांईजीनें पूंछी ॥ जो कृष्णभट्ट उदास कैसें भएहो ॥ तब कृष्णभट्टनें कही जो श्रीनाथजीनें चरणस्पर्शकी आज्ञा करी है ॥ और लीलाके दर्शनकी नाही कहीहै ॥ जब श्रीगुसांईजीनें कही श्रीनाथजीतो बालकहैं तुम क्यों उदास भए ॥ इतनो कहेके श्रीगुसांईजीने कृष्णभट्टकोहाथ पकडके चरणस्पर्श कराए ॥ और श्रीनाथजीकी लीलाके दर्शन कराए ॥ तब कृष्णभट्टजी बहुत प्रसन्न भए और ये निश्चय किये श्रीनाथजीतो श्रीगुसांईजीके वशमेंहैं ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ और एकदिन कृष्णभट्टजीनें उज्जेनमें वसंतपंचमीको उत्सव कन्यो सो वा दिन वसंतपंचमी हती नहीं ॥ जब श्रीनाथजी खेलके गिरिराजऊपर पधारे तब गुलालभरे॥दर्शनरामदासभीतरीयाकूं भये जब रामदासनें श्रीगुसांईजीसों पूंछी जो श्रीनाथजीकुं कौननें खिलाएहैं ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कही जो कृष्णभट्टनें वसंतपंचमीजानके खेलाएहैं ॥ तब रामदासनें वीनती करी जो कृष्णभट्टजीतो भूलिगये ॥ परंतु श्रीनाथजी क्यौंखेले॥ तब श्रीगुसांईजीनें कही जो श्रीनाथजीतो भक्तनके वशहैं॥ जो भक्त जैसो मनोरथ करे वाको वैसो अंगिकार करें हैं ॥ सो वे कृष्णभट्टजी ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ और

एकसमें कृष्णभट्टजी श्रीगोकुल आये हते ॥ जब एकांतमें चाचाहरिवंशजीसों भगवद्वार्ता करवे लगे ॥ तब उहां सोंधेकी सुगंध आई ॥ जब कृष्णभट्टजीनें कहि ये सुगंध कहांसों आईहे ॥ तब चाचाजीनें कही जो वे छैलआए होंएंगे ॥ जिनकुं तुमविना रह्यो नहिंजायहे ॥ सो वे कृष्णभट्टजी ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनके पीछे श्रीनाथजी फिरत डोलत हते ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥ एकसमें श्रीगुसांईजी उज्जेन पधारे सो कृष्णभट्टजीके घर डेरा किये ॥ और उहांके ब्राह्मण सब मिलकें श्रीगुसांईजीके पास आयके प्रश्न कर्‍यो ॥ जो तुमारे सेवक कृष्णभट्टजी वेदोक्तकर्म नहीं करेंहें और अष्टप्रहर सेवा करेंहे ॥ जब विनकूं श्रीगुसांईजीनें उत्तर दियो ॥ सो श्लोक ॥ मत्कर्मकुर्वतांपुंसांकर्मलोपोभवेद्यदि ॥ तत्कर्मतेप्रकुर्वंतित्रिंशत्कोटयोमहर्षयः ॥१॥ "और कहे भोरभए जानिये" ॥ तब ये सुनके ब्राह्मण बोले जो भोरभए कैसो जान्यो जायगो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कहि जहां रात्र होवेहै तहांदिनके पदार्थ सूझें नहींहें ॥ जब तुमारे अंतःकरणमें उजारो होयगो और मायारूपी रात्र मिटेगी तब देखोगे ॥ सो गीतामें कह्योहे ॥ श्लोक ॥ यानिशासर्वभूतानांतस्यांजागर्तिसंयमी ॥ यस्यांजाग्रतिभूतानिसानिशापश्यतोमुनेः ॥ १ ॥ ऐसें जब सुन्यो तब विन ब्राह्मणनको संदेह मिटगयो ॥ सो वे कृष्णभट्ट ऐसे कृपापात्रहते ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥ सो वे कृष्णभट्टजी सदैव उज्जेनमें रहते हते ॥ और गुजरातके तथा दक्षिणके वैष्णव उज्जेन होयके श्रीगोकुल जाते हते

॥ और विनसूं मिलके सब वैष्णव प्रसन्न होत हते ॥ और कृष्णभट्टजी वैष्णवनपर कैसी प्रीती राखत हते जो वैष्णव विनके ईहां गांठडी धरते वा वैष्णवकी गांठडीमें छाने छाने दूधघरको प्रसाद बांध राखते ॥ तब ये मनमें समझते ॥ जो वैष्णवनको रस्तामें भूख लगेगी तब येलेवेंगे इनकूं श्रम नहीं होयगो ॥ ऐसी वात्सल्यता वैष्णवनके ऊपर राखते हते ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥ एकसमें श्रीगुसांईजीनें श्रीगोकुलसुं कासिदपठायके कृष्णभट्टकुं बुलवायो जब कृष्णभट्टजी उज्जेनसों चले ॥ तब नित्य स्वप्नमें कृष्णभट्टके सेव्य श्रीठाकुरजी आयके कहते जोतुमबिना मोकुं रह्यो नहींजायहे ॥ जब कृष्णभट्टजी रस्तामेंसो एकमनुष्यकुं पत्र देके नित्य आपनें घर पठावते और पत्रमें येही लिखते जो श्रीठाकुरजी प्रसन्नहोंवें सोई करियो ॥ परंतु श्रीगुसांईजीके मिलेविना कृष्णभट्टजी पाछे न गए ॥ जब कृष्णभट्ट श्रीगोकुल पहुंचे तब श्रीगुसांईजीके दर्शन करे॥ जब श्रीगुसांईजीनें कही जो तुमनेंश्रीठाकुरजीकी आज्ञा क्यों नमानी ॥ तब कृष्णभट्टनें वीनती करी जो महाराज श्रीठाकुरजीतो आपके वश्य हें ॥ और आपनें हमकुं श्रीठाकुरजी दिखाएहें॥ जासूं राजकी आज्ञा कैसे लोपकरीजाय ॥ ये बात सुनके श्रीगुसांईजी चुपकरीरहे ॥ वा कृष्णभट्टकुं श्रीगुसांईजीके आज्ञापर ऐसो विश्वास हतो॥ प्रसंग ७॥ एकदिन उज्जेनके वैष्णव सब भेलेहोयके कृष्णभट्टसों पूछे ॥ जो श्रीठाकुरजी कैसे प्रसन्नहोवेंहें ॥ तब कृष्णभट्टनें कही जो श्रीठाकुरजीतो स्वामिनीजीकी

कृपातें प्रसन्नहोवेंहैं ॥ याहीतें श्रीस्वामिनी स्तोत्रमें श्रीठाकुरजीकी प्रसन्नताकेलियें श्रीगुसांईजीनें द्वादशप्रकारकी प्रार्थना करीहै ॥ और द्वादशप्रकारके दास्यभाव वर्णन करेहै ॥ ये सुनके वैष्णव बहोत प्रसन्नभये गीतगोविंदमें श्रीठाकुरजीनें कहीहै॥अधरसुधारसमुपनयभामिनी जीवय मृतमिवदासं॥त्वयि विनिहितमनिशंविरहानलदग्धवपुषमविलासं ॥ और नंददासजीनें कहीहै ॥ श्रीवृषभानुसुता-पद-अंबुज जिनके सदासहाय॥यहरसमग्नरहतजे-निसदिन तिनपर नंददासबलिजाय॥ प्रसंग॥ ८॥एकदिन नागजीभाई गोधरातें उज्जेनमें आए तब कृष्णभट्टसुं मिले और महाप्रसाद लेके भगवद्वार्ता करवे लगे ॥ सो एकांतमें भगवद्वार्ता करत करत देहानुसंधान भूलगए॥ सो सातदिवस पीछेंदेहकी सुध आई ऐसें करतकरत नागजीभाई वहुत दिनउहां रहे ॥ सो कोई समें तीन दिन कवहु सात दिन देहानुसंधान छूट जाय॥ सो वे कृष्णभट्ट तथा नागजीभाई ऐसे भगवद्रसमें मग्न हते ॥ प्रसंग ॥ ९ ॥ कृष्णभट्ट एकसमय श्रीगोकुल गये सो रस्तामें विनकी देहछूटी विनके बेटा गोकुलभट्ट उनकुं चिंता भई ॥ जो श्रीगोकुल न पहुंचे और घरमें भी न रहे फेर उनको अग्निसंस्कार करिके उज्जेनमें पाछे आये ॥ और जादिन कृष्णभट्टकी देह छूटी वाहि समय श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकौ शृंगारकरके चौकमें पधारे हते तब कृष्णभट्टजीकुं देखे ॥ जब कृष्णभट्टनें साष्टांगदंडवत करी तब श्रीगुसांईजीनें पूंछयो जो तुम कब आये ॥ जब कृष्णभट्टनें वीनति करी

जो राजकीकृपातें अबी आयोहुं ॥ जब श्रीगुसांईजी गो-
पीवल्लभ भोग धरिके बाहेर पधारे ॥ फेर पूछवे लगे जो
कृष्णभट्ट कहांहैं ॥ तब रामदासभीतरीयानें कही जो कृ-
ष्णभट्टतो मंदिरमें जाते देखे परंतु बाहेर निकसते काहू-
नें देखें नहीं ॥ जब श्रीगुसांईजीनें एक पत्र लिखायके
उज्जेनमें मनुष्य पठाये ॥ सो मनुष्यनें गोकुलभट्टकुं पत्र
दिये ॥ सो बांचके बहुत प्रसन्न भये ॥ जब गोकुलभट्टनें
श्रीगुसांईजीकुं वीनती पत्र लिखे जो अमुक समय अमुक
दिवस कृष्णभट्टकी देह छूटीहै ॥ ये पत्र श्रीगुसांईजी वां-
चके कहे जो कृष्णभट्टजी ऐंसेही हते ॥ जिनके संग श्री-
नाथजी खेलतहते ॥ सो वे या रीतीसूं भगवल्लीलामें प्राप्त
होवें यामें कहा आश्चर्य है ॥ सो वे कृष्णभट्टजी ऐंसे कृ-
पापात्र हते ॥ तातें इनकी वार्ता कहांताई लिखीजाय ॥
॥ प्रसंग ॥ १० ॥ वार्तासंपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक चाचाहरिवंशजी ति०

सो चाचाहरिवंशजी क्षत्री हते विनकुं श्रीगुसांईजीनें
आज्ञा करी ॥ जो श्रीनाथजीको अभिप्राय पुष्टिमार्ग ब-
ढायवेको है ॥ जासूं तुम परदेसनमें जाय हमारी आ-
ज्ञासूं सबको नाम सुनावो और वैष्णव जो भेट काढे
सो लेआवो तब चाचाहरिवंशजी गुजरात आए ॥ सो
राजनगरकेपास असारवा गाम है ॥ तहां माईला कोठा-
रीके घरमें रहे ॥ सो उहांते भेट उगायके खंभातमें
माल लेवेकेलियें गए ॥ सो उहां गाममें पूंछी जो भले
आदमी कौनहैं ॥ तब माधवदास दलालनें कही जो स-

हजपालदोसी भले आदमी हैं॥ जब माधवदासदलालके साथ सहजपालदोसीके ईहां जाय सब माल लियो सो उत्तम ते उत्तम वस्तु लीनी ॥ और जीवापारिखके उपरकी हुंडी लाएहते सो माधवदास दलालकुं दीनी और कही जो इनके मोलको दाम सब चुकायके बचेसो नारायणसरपें हमारो डेरा है ॥ तहांपहुंचाय दीजियो॥ जब माधवदासजी वो द्रव्य लेके विनके डेरापर पहुंचावन गए ॥ तब माधवदासनें विनको आचारक्रिया देखके विस्मय भये ॥ तब माधवदासजीनें विचार कऱ्यो जो ये कोई महापुरुषहें ॥ तब माधवदासनें कही जो तुमारो धर्म हमकूं सिखावो ॥ तब चाचाजीनें विनकुं नाम सुनाये ॥ जब माधवदास सब रीतभांति सीखिके सहेजपालदोसी तथा जीवापरिखसूं कही जो येतो बडेमहत्पुरुषहें ॥ ये बात सुनके वे दोनो जने चाचाजीके पास नाम पाए॥ जब खंभातसूं वे तीनो जने चाचाजीके साथ श्रीगोकुल आए॥ तब आयके श्रीगुसांईजीके पास निवेदन करवाए ॥ तब श्रीनाथजीके दर्शन करिके बहुत प्रसन्न भये॥ सोवे चाचाजी ऐंसे कृपापात्र हते॥ प्रसंग ॥ १ ॥ फेर चाचाजी एकदिन गुजरातके परदेसकुंगए॥ सो रस्ता सूलिगये ॥ सो भीलनके गाममें गए उहां कूंवापर एक स्त्री जलभरत हती वा स्त्रीनें विनके आचारविचार देखिके अपनें घरकुं लेगई ॥ और विनके पास नाम पायो और सबरीतभांतसूं भोग धरिवे लगी ॥ चाचाजीनें विनसूं पूंछो जो तुमारे घरके पुरुष कहां गएहें॥ तब विननें कही जो चो-

रीकरवेकुं गएहें हमारो येही धंधो है ॥ तब चाचाजीनें कही जो ये धंधो आछो नहीं हैं ॥ जब वा स्त्रीनें वीनती करी जो आप इहां रहिके विनकूं वैष्णवकरिके फेर तुम जाओ तब चाचाजी उहां रहगए तब वा बाईको बेटा गामको मुखी हतो वानें चाचाजीके दर्शनकरतमात्रही वाको चित्त लौकिकमेंसूं निकसके प्रभुनके चरणारविंदमें लग्यो॥सो सूरदासजीनें गायोहै॥सो पद॥"जादिन संत-पाहुने आवें। तीरथकोटीस्नानकरनफलदर्शनही तें पावें" ॥ जासूं या भीलको मन झट फिरगयो ॥ तब आखो-गाम वैष्णव भयो ॥ जब चाचाजी विनकुं सब सेवाकी रीति सिखायके उहांसे बिदा भए ॥ तब वे भील चोरी-को धंधो छोडिके खेती करवे लगे॥ जब रस्तामें चाचा-जीकुं स्वप्नमें श्रीनाथजीनें आज्ञा करी ॥ वे भील आ-चार क्रिया आछी पालेहें परंतु भोगचाखके धरेंहें सो मोकूं नित्य भीलनकी जूठन लेनीपरे है जासूं विनको तुम शिक्षा आछीतरहसूं दीजियो॥जब चाचाजी फिरके वा गाममें आय दोमहीना रहेके सेवाकीरीती और आ-चारधर्म सब पक्को करायो और सब रीति सिखायके श्री-गुसांईजीकी भेट लेके गए॥ सो वे चाचाजी ऐंसे कृपा-पात्र हते ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ एकसमें चाचाहरिवंशजी श्रीगो-कुलतें उज्जेनकुं चले सो रस्तामें क्षत्रीवैष्णवके घर आए॥ वा क्षत्रीवैष्णवनें चाचाजीके मुखसे भगवद्वार्ता सुनके संसारमेंसूं आसक्ति काढडारी ॥ तब चाचाहरिवंशजीकुं वा वैष्णवनें कहि जो ये सर्वस्व श्रीगुसांईजीके पास ले-

जावो चाचाजीनें कही जो मैं उज्जेनकुं जायके आउंगो ॥ जव पाछे आयके लेजाउंगो तव चाचाजी उज्जेनकुं आए कृष्णभट्टसूं बात करी तव कृष्णभट्टनें कही वे क्षत्रीतो अनाचारीहें तव चाचाजीनें कही ॥ जिनकी संसारमें आसक्ति नहींहे विनकों आचारविचारको कहाकामहे ॥ फेर चाचाजी वा क्षत्रीवैष्णवके घर आए॥ तव वा वैष्णवनें सब द्रव्य श्रीगुसांईजीकी भेट कन्यो ॥ जब चाचाजी तीनहजार रुपैयालेगए॥ और दोसोरुपैया वा वैष्णवकुं जोरसूं देगए व्यवहार चलाइवेकुं वे चाचाजी ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनके संगसूं हजारों वैष्णवनकी संसारासक्ति छूटगई हती ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ एकसमें श्रीगुसांईजी परदेश पधारे हते रस्तामें एकगाम आयो ॥ वा गाममें वैष्णव कोई न हतो ॥ तव श्रीगुसांईजीनें कही चाचाजी ये रस्ता नहिं निकसे होयंगे ॥ सो चाचाजी ऐसें कृपापात्र हते ॥ जों रस्ता निकसते और जिनलोगनसूं प्रसंग पडतो विनकों मन श्रीप्रभुनमें लगाय देते ॥ ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥ और एकसमें चाचाहरिवंशजी श्रीनाथजीके लियें श्रीगोकुलमेंसुं सामग्री लेवेंको गये॥ सो सामग्री एक वैष्णवके माथे पधरायके श्रीगोकुलते चले ॥ जब यमुनाजीके घाटपर आए तव नाव नहीं हती सांझ होयगई हती ॥ जब चाचाजीनें विचार कन्यो जो सवारे छेघडी रात रहेंगी तव ये सामग्री चहियेगी और रातकुं सिद्ध भई चहिये ॥ और गोपालपुरतो दसकोस दूर हैसो कैसे पोहोंचेंगे॥ ये विचारके वा वैष्णवसों कही जो मैं य-

मुनाजीके ऊपर चलूंहूं जहां मैं पांव धरिके उठाऊं जा ठिकाणे तुम पांव धरत आईयो ॥ तब चाचाहरिवंशजी श्रीयमुनाजीके ऊपर चलवे लगे और भगवन्नाम लेवे लगे॥ जब वे वैष्णव पिछाडी भगवन्नाम लेत चल्यो ॥ तब वा वैष्णवनें मनमें विचार कर्‍यो ॥ जो चाचाजी भगवन्नाम लेतेहें ॥ और मैं भगवन्नाम लेतहुं इनके पग ऊपर पग काहेको धरुं॥ जब दूसरे ठिकाने पग धरवे लग्यो ॥ तब यमुनाजीमें डूबवे लाग्यो ॥ तब चाचाजीनें आयके वाको हाथ पकरके पार लेगए॥ जब चाचाजीने कही मैंजा ठिकाणेसूं पांव उठाए तुमने वही ठिकाणे क्यों नहींधरे ॥ वानें कही मैं भगवन्नाम लेतहुं तुमहु भगवन्नाम लेतेहो ॥ जब चाचाजीनें कही मेरी सुनिहे तेरी अब सुनेंगे ॥ सो वे चाचाजी ऐसे कृपापात्र हते तिनकी प्रभूनें सुनी हती ॥ प्रसंग ॥ ५॥ एकदिन श्रीगुसांईजी लघुशंका करके पधारे ॥ सो चाचाजीसों भगवद्वार्ता करने लगे सो ऐसें रसावेश भये जो आखीरात चलीगई ॥ हाथमेंसे नीचे झारी धरिवेकी सुध न रहि ॥ और चाचाजीकुं तो तीनदिन सुधि रसावेश रह्यो ॥ वे ऐसें भगवद्रसके पात्र हते ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥एकदिन चाचाजी गिरिराज ऊपर गए ॥ और शंखनादकी तैयारी हती ॥ चाचाहरिवंशजीकुं ऐसो अनुभव भयो की श्रीनाथजी निर्भर निद्रामें हें ॥ तब शंखनाद होवे न दियो ॥ सब भीतरिया ठाडे रहे ॥ दोघडीपीछे श्रीगुसांईजी पधारे ॥ जब शंखनाद कराए तोहूं श्रीनाथजी जागे नहीं ॥ तब सूरदासजीनें कीर्तन

गायो ॥ सो पद ॥ "कौनपरीनंदलालैंवान ॥ प्रातसमय-जागनकीविरियांसोवतहैपीतांवरतान" ॥ ये पद सुन-श्रीनाथजी जागे ॥ सो चाचाजीऐंसे कृपापात्र हते ॥ जिनकी कान श्रीगुसांईजी राखते ॥ और जिनकूं श्रीठाकुरजीकी कृतीकी सब शुध रहेती ॥ प्रसंग ॥ ७ ॥ एकदिन श्रीगुसांईजी शय्यामंदिरमें पधारते हते ॥ जब श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीकी आडि देखवे लगे ॥ तब चाचाजीनें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो श्रीनाथजीतो आपकी ओर चितवें हें ॥ और आप भीतर कैंसे पधारतेहो ॥ तव श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो श्रीनाथजीतो वालकहें ॥ परंतु सेवातो करी चहिये ॥ जव श्रीगुसांईजी सेवा करवेको पधारे ॥ सो वे चाचाजी ऐंसे कृपापात्र हते ॥ जिनकुं श्रीनाथजीकी घडीघडीकी खवर पडती हती ॥ प्रसंग ॥ ८ ॥ और एकदिन चाचाजीकुं ठोकर लगी हती ॥ जब दुःखीहोय वैठरहे हते ॥ तब रुक्मिणी वहूजीके आगे वात निकसी हती ॥ श्रीगुसांईजीनें कही जो सब वैष्णव हमारे अंगहें ॥ तब रुक्मिणी वहूजीने कही चाचाजी कौनसो अंगहें ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो हमारे नेत्र हें ॥ जो देखो चाचाजी दुःखीहे तो हमारे नेत्र दूखेंहें ॥ सो वे ऐंसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ ९ ॥ एकसमें चाचाहरिवंशजीकुं आज्ञा करी जो तुम परदेसकुं जाओ ॥ तव चाचाजीनें कही हमकुंतो आपके दर्शन विना रह्यो नहिं जाय जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जहां तुम जावेगे तहां हम तुमकुं नित्य दर्शन देवेंगे ॥ वाको कारण ये हतो जो

श्रीगुसांईजीकुं आसुरव्यामोहलीला करनी हती तासुं चाचाजी तासमें ईहां होएंगे तो इनको देह न रहेगो ॥ जब श्रीगोकुलनाथजी तथा श्रीरघुनाथजी तथा यदुनाथजी तथा घनश्यामजी इनकुं स्वमार्गीय ग्रंथनकी परिपाटी कौन बतावेगो ॥ श्रीगिरिधरजीकुं तो सेवामेंसों अवकाश नहींहै ॥ ये विचार करके श्रीगुसांईजीनें चाचाहरिवंशजीकुं परदेस बिदा कियो तब चाचाहरिवंशजी गुजरात गए ॥ ता पाछे श्रीगुसांईजीनें आसुरव्यामोहलीला दिखाई ॥ जब चाचाजीनें गुजरातमें ये बात सुनी तब तत्क्षण मूर्छित होय गये ॥ जब श्री नाथजीनें आयके चाचाजीसों कही ॥ जो हाल तुमारो पृथ्वी ऊपर रहेनो है मेरी ऐसी आज्ञाहै जब चाचाजीनें अपनो देह राख्यो ॥ तब चाचाजी व्रजमें आयके सब बालकनके पासतें सुबोधिनीजी सुनवेके मिष करके पढावते ॥ कारण वे चाचाजी ज्ञातीके क्षत्री हते ॥ सो ब्राह्मणकुलकुं कैसे पढावे ॥ जासूं सुनवेके मिषतें सब बालकनकुं पढाए॥ सो वे ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनकुं श्रीगुसांईजी मार्गकी परिपाटी बतावेकेंलीयें पृथ्वीपर छोडगये ॥ जैसें श्रीमहाप्रभुजी दामोदरदास हरसानीकुं परिपाटी बतावेकेलीयें छोडगये हतें याहीतें श्रीगुसांईजीनें शृंगाररसमंडनग्रंथमें कह्यो है ॥ श्लोक ॥ यस्मात्सहायभूतौदामोदरदासहरिवंशौ ॥ विठ्ठलरचितमिदंशृंगाररसमंडनंपूर्णम् ॥ १ ॥ या श्लोकमेंतें ऐसो निश्चय होवेहै जो दामोदरदासजी तथा चाचाहरिवंशजीको अधिकार एक सरीखो है वे चाचाजी

पृथ्वीऊपर एकसो पचीस वर्षके आसरे रहे हते ॥ जिनकुं काल कछू बाधा करसक्यो नहीं ॥ प्रसंग ॥१०॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक मुरारीदास हते तिनकी०

॥ सो मुरारीदास गौडदेशमें नारायणदासके पास नौकरी करवेकुं गए ॥ जब नारायणदासनें मुरारीदासकुं काम बतायो ॥ सो मुरारीदासको बहोत आच्छो काम देखकेदस रुपैया महिना करे ॥ तब मुरारीदासनें कही जो मैं आठ रुपैया महिना लेऊंगो सवा पहेर दिन चढे आऊंगो और छे घडी दिनरहते जाऊंगो ॥ तब नारायणदासनें ये बात कबूल राखी ॥ जब मुरारीदास चाकरी करनेलगे ॥ और मुरारीदासके माथे श्रीबालकृष्णजी विराजते हते ॥ और सानुभाव जनावत हते ॥ औरजो चाहे सो मांगते ॥ और बालककीन्याई सब मांगते॥सो एक दिन नारायणदासनें ऐसो विचार कर्यो जो अवारे आवेंहैं॥औरवेग जाएंहें॥ सो कहा कारण होयगो ॥ तब नारायणदास विनके पाछे छाने जायके विनके घरमें छिप रहे और विनकुं सब सेवा करते देखी ॥ और श्रीठाकुरजी सों वातें करते देखे ॥ फिर नारायणदासजी दूसरे दिन एकांतमें मुरारीदाससों कही जो हम तुमारे घर काल सब रीती देखीहै ॥ जासूं तुम हमकों सेवक करों ॥ जब विनकी बहुत नम्रता देखके मुरारीदासने कही जो हमतो श्रीगुसांईजीके सेवकहें ॥ तुमहुं श्रीगुसांईजीके सेवक होवो ॥ तब नारायणदासनें मुरारीदासके पास वीनती पत्र श्रीगुसांईजीको लिखायके

आदमी पठाय श्रीगुसांईजीकुं पधराए जब नारायणदास तथा विनकीस्त्री श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ और भगवत्सेवा करवे लगे ॥ और जैसे मुरारीदाससों श्रीठाकुरजी बातें करते हते ॥ तैसे नारायणदाससूं करनलगे ॥ सो मुरारीदास ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनके संगतें नारायणदासहूं वैष्णव भए सो संगकरियेंतो ऐसेनको करिये ॥ जिनके संगसों आपनमें भगवद्धर्म आवें॥ वार्तासंपूर्ण ॥ ॥ वैष्णव ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गौडदेशके निवासीनारायणदास पादशाहके दिवाण हते तिनकी० ॥

एकसमें श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथरायजीके दर्शनकुं पधारे ॥ और वस्तु जो संगमें हती सो सब खटला भेटकर दिये ॥ येबात नारायणदासनें घर बैठे वाहीक्षण जानी ॥ सो श्रीजगन्नाथरायजीनें जताई ॥ जब नारायणदासनें दूसरो खटला तथा अस्वारी वैसीही तैयार करके पठाई॥ ॥ और मनुष्यनसुं कही पुरुषोत्तमक्षेत्रके बाहर डेरा करो॥ जब श्रीगुसांईजी पधारें तब खबर दीजीयो ॥ तब मनुष्य खटलालेके पुरुषोत्तमक्षेत्रसुं बाहिर जायके डेरा कीये ॥ जब श्रीगुसांईजी पधारे तब वा खटलामें सामान धरके और सब बालक तथा वहू बेटी सहित नारायणदासके घर पधारे ॥ जब नारायणदासनें श्रीगुसांईजीकूं सर्व समर्पण मनसुं कऱ्यो मुखसूं बोले नहीं ॥ मनमें ऐसें जानी जो बोलूंगोतो श्रीगुसांईजी नाहीं करेंगे ॥ तापाछें जब श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे तब नारायणदासनें मनुष्यके

संग सब द्रव्य पठाय दीये सो वे नारायणदास ऐसे कृपा-पात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ एकसमय नारायणदासनें श्रीगु-सांईजीकुं वीनती पत्र लिखके पठाए ॥ जब श्रीगुसांईजी गौडदेशमें पधारे ॥ जब गांम बाहिर नारायणदासजी श्री-गुसांईजीकुं पधरायवे आये तब नारायणदासजी श्रीगुसां-ईजीके चरणारविंदके दर्शन करतही मुर्च्छा खायगये ॥ और भगवल्लीलाके दर्शन भये हते तासूं भगवल्लीलामें प्र-वेश करने लगे जब श्रीगुसांईजीनें विचारे जो हालतो इ-नकूं इहां कारज बोहोत करनेहें और हाल लीलामें प्रवेश करिवेकूं ढीलहे ॥ ये विचारिकें श्रीगुसांईजीनें नारायणदा-सके कानमें कह्यो जो उठो अबी ढीलहें तब नारायणदा-सजी सुनकें उठिबेठे ॥ और श्रीगुसांईजीकूं घरमें पधरा-यके ले गये ॥जब श्रीगुसांईजी सेवालेकें पाछे अडेल पधारे सो वे नारायणदासजीको ऐसो श्रीगुसांईजीकी आज्ञापर विश्वास हतो जो भगवल्लीलामेंप्रवेश करनेमें ढील करी ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ एकसमय नारायणदासनें श्रीगुसांईजीकुं पत्र लिख्यो जो मोकुं सत्संग नहीहें ॥ ये पत्र श्रीगुसांईजी वाचिकें चाचाहरिवंशजीकुं आज्ञा करी जो तुम नारायण-दासके पास जावो ॥ तब चाचाजीनें वीनती करी जो आ-पके दर्शनविना कैसे रह्यो जायगो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुमकुं सर्व ठिकानें सदैव दर्शन देउंगो जब चाचाजी नारायणदासके पास आये ॥ जब नारायणदा-सजीकुं मारगकी रीति बताई और वैष्णवनके उतरिवेके-लीयें न्यारो घर करायो और श्रीठाकुरजीके सेवाके लीयें

न्यारे मंदिर कराये और नारायणदासजी तथा विनकी स्त्री चाचाजीके संगतें भगवत्सेवा करनेलगेओर चाचाजी तथा नारायणदासजी भगवद्वार्ता करवे बैठते ॥ तब दोय दिन तीन दिन सूधी देहानुसंधान भूलि जाते ॥ ऐसे करत करत बोहोत दिन बीते ॥ जब चाचाजीनें श्रीठाकुरजीसों वीनती करी ॥ जो नारायणदास लीलाके दर्शन करिकें मूर्च्छित होय जांयहें॥ और हालकारजतो बोहोत करनेहें॥ जब श्रीठाकुरजी नारायणदासजीकों याही देहसों लीलाको अनुभव करावन लगे फेर जब लीलाके दर्शन करते तब मूर्च्छा नहीं आवती सो वे चाचाजीकी वीनतीसुं और श्रीगुसांईजीकी कानतें श्रीठाकुरजीनें अती कृपा करी ता पीछें चाचाजी उहांसुं श्रीगोकुल आये॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ सो वे नारायणदासजीकी स्त्री भगवत्सेवा करती हती जब वैष्णव आवते तब सबकी टहल करती, कोई दिन चार ठगननें वैष्णवको वेश धरकें नारायणदासके घरसें आय रहे जब नारायणदास राजद्वार गये हते ॥ तब उन ठगननें वीरांकुं भगवद्वार्ता सुनाई तब वीरांकुं भगवद्रसको आवेश आयो सो मूर्छा आयगई जब उन ठगननें वीरांके गलामें फांसी डारके गहेना उतार लीनें सो लेगये रस्तामें नारायणदासजी मिले तब नारायणदासजीनें कही जो हमसों बिदा भये विना तुम कैसें जाओहो ऐसे कहिके नारायणदास उनकोंपाछे फिरायलेगये जब नारायणदास अपने घरमें गये सो स्त्रीकों मृतक भई सुनी जब नारायणदासजी देखेतो वह स्त्री भगवद्रसके आवेषमें

हती जब नारायणदासनें विनके गलामेंसूं फांसी काढ
डारी और लोगनकूं कही जो यह मरी नहीं है झूठी बात-
हैं नारायणदासनें मनमें जानी जो मरीकहूंगो तो कोई
वैष्णवनको संग नहीं करेगो तब नारायणदासनें स्त्रीकुं
चरणामृत देके जीवति करी तब वे ठग नारायणदासके
पांवनपरे और कहि हमकुं वैष्णव करो तब नारायणदा-
सनें कहि तुम श्रीगुसांईजीके पास श्रीगोकुलमें जायके
वैष्णव होवो तब नारायणदासने महाप्रसादलेवायके श्री-
गुसांईजीके ऊपर पत्र लिखदियो सोवे नारायणदासजीनें
वैष्णवनको दोष न देख्यो ॥ जगतमें वैष्णववेषकी निंदा
नहोवे तेंसे कन्यो सो वे नारायणदास ऐंसे कृपापात्र हते
॥ प्रसंग ॥ ४ ॥ और एकसमय श्रीगुसांईजी गौडदेशमें
पधारे हते जब नारायणदासके घर विराजे हते ॥ सो
नारायणदास श्रीगुसांईजीकी सेवामें हते ॥ तब राजद्वा-
रमें जायवे आयवेको बनतो नहीं हतो तब पात्साहनें
ऐंसो हुकुम दियो जो नारायणदास जहांसूधी तुह्मारे
गुरु इहां रहें तहांसूधी तुम सेवा करो सो श्रीगुसांईजीकी
कृपातें वा म्लेच्छको मन ऐंसो फिर गयो और एकदिन
पातशाहनें कही जो नाराणयदास हमहूं तुह्मारे गुरूके द-
र्शन करेंगे तुम हमारी आडीसों वीनती करो जब ना-
रायणदासजी आपकूं वीनती करिकें और पात्साहकूं घर
लेगये और श्रीगुसांईजीके दर्शन कराये और वर्षके वर्ष
पात्साह नारायणदासके घर जाते ॥ और नजराना लेते
हते सो वाहीदिन नारायणदासनें पात्साहकेआगें लाख-

रुपैयां धरे जब पातशाहनें कही मैं नजराना लेवे नहीं आ-
योहूं ॥ दर्शन करवेकुं आयोहूं ॥ और ये द्रव्य अब तुम
श्रीगुसांईजीकुं भेट करौ औरकोई दिन तुमारे पास अब
नजराना नहीं लेऊंगो ॥ और ये साक्षात् कन्हैयालालहैं
इनकी प्रसादीवस्तु कछु हमकूं चहिये ॥ जब श्रीगुसांई-
जीनें प्रसादी उपरणा दियो तब वह उपरणा पात्साह स-
दैव माथे ऊपर बांधे रहते और जब श्रीगुसांईजी पधार-
वेको विचार करते तब नारायणदासजीकूं मूर्च्छा आय-
जाती जब श्रीगुसांईजीनें चाचाहरिवंशजीकूं कही जो तुम
इनकूं संयोग शृंगाररसको उपदेश करौ और संयोगकी
वार्ता सुनाओ और हम इनकूं नित्य दर्शन देवेंगे और
विप्रयोगकी वार्ता इनकुं मत सुनावो ॥ संयोगरसके अ-
नुभवविना भगवत्सेवा नहिं होवेहैं ॥ जब चाचाजीके सं-
गतें विनकुं संयोगरसको अनुभव भयो और भगवत्सेवा
करनेलगे और राजकारभारकुंहूं भगवत्सेवा मानवे लगे ॥
सो जितनी कृती संसारव्यवहारकी हती सो वाकुं भगव-
त्सेवा मानकें करते सब ठिकाने उनकुं भगवदनुसंधान-
स्फूर्त भयो वे नारायणदासजी ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग
॥ ५ ॥ एकदिन नारायणदासके घर श्रीगोपीनाथजीके
बेटीजी सत्यभामाजी श्रीजगन्नाथरायजीके दर्शन करके
पाछें आवते पधारे हते ॥ सो नारायणदासको आग्रह दे-
खके उहांकछुक दिनबिराजे सो नारायणदासके घरके
पास जेलखानो हतो ॥ जेलखानामें जो लोग पातशाह-
को कर नहीं भरसकते हते सो बंदीखानामें पडे हते ॥ और

बहोत दुःखी हते ॥ और बडी पुकारें करते हते ॥ विनकी पुकार सुनके सत्यभामा बेटीजीनें ऐसो विचार कर्‍यो ये लोग दुःखीहें सो इनको दुःख भागेबिना में भोजन नकरुंगी ॥ तब बेटीजी भोजन करे बिना पधारवेकी तैयारी करी ॥ जब नारायणदासजीनें नाहीं कही ॥ जब सत्यभामावेटीजीनें आखोदिन भोजन न कर्‍यो ॥ तब गामर्में जितने वैष्णव हते तिनने प्रसाद लियो नहीं ॥ सब वैष्णव भूखे रहे ॥ यह बातकी खबर पातशाहकूं पडी जब पातशाहकुं पडी जब पातशाहनें नारायणदासजीसूं पूंछ्यो तब नारायणदासजीनें सब समाचार कहे ॥ जब पातशाहनें कही जो बेटीजीको पचीसहज्जार रुपैया भेट धरके भोजन करवेकी विनती करो ॥ तब बेटीजीनें ये बात सुनके कहि जो पातशाहकुं कहो जो पचीसहज्जार रुपैया मोकूं नहीं चहीये ॥ इन केदिनको माफ करके छोडो ॥ तब ये बात पातशाहके आगें नारायणदासनें कही जब पातशाहनें कही जो ऐसे त्यागी बेटीजी महाराजकी आज्ञा में माथेपर नहीं चढावूंगो तो हमारो बुरो होयगो ॥ जासूं सब केदिनकूं पातशाहनें छोडदिये तब बेटीजीनें भोजन करे सो नारायणदास ऐसे वैष्णव हते ॥ जिनके संगसूं पातशाहकी बुद्धी ऐसी निर्मल रहेती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक कायथ विठलदास ति०

सो वा विठ्ठलदासनें गौडदेशमें जायके परगनो इजारे लियो॥ सो परगनेमें टोटो गयो तब गौडदेशके पातशा-

हके दिवान नारायणदासनें विठ्ठलदासकूं बंदीखानें दिये तब विठ्ठलदासकूं नित्य मार दिवावते ॥ सो विठ्ठलदास कैसे हते नित्य मार खाते परंतु वैष्णवता प्रकट न करी ॥ फेर विठ्ठलदासजी हिसाब चुकायके बंदीखानेतें छुटे ॥ तब श्रीगुसांईजी गौडदेशमें पधारे तब नारायणदास दर्शनकूं गए विठ्ठलदासहूं दर्शनकुं गए ॥ जब श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो विठ्ठलदास इतने दिन कहां हते ॥ तब विठ्ठलदासनें कही जो याहीदेशमें रहूंहूं ॥ पाछे श्रीगुसांईजी भोजनकरके विठ्ठलदासकुं प्रसादलेवेकी आज्ञा करी ॥ जब विठ्ठलदासजीनें कपडा उतारे ॥ जब विनके शरीरपर मार बहोत पडी हति ॥ जासुं विनकी देह बहुत बिगडरही हती ॥ जब विठ्ठलदासकुं श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो तुमकुं कहाभयो है ॥ जब विठ्ठलदासनें वीनती करी जो महाराज देहको दंड देहही सुक्तेहै ॥ तब नारायणदासनें वीनती करी॥ महाराज इनकुं मैनें मार देवाईहे मैनें इनकुं वैष्णव जान्यो न हतो ॥ सो अपराध आप क्षमा करेंगे ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कही जो वैष्णव नहीं जान्यो परंतु जीवतो हतो वैष्णवकुं जीवमात्र ऊपर दया राखी चहिये ॥ और जिनके मनमें दया और विवेक और धैर्य और भगवदाश्रय नहींहै विनके चित्तमें भगवदावेष नहीं होवेहैं ॥ देखो विठ्ठलदास कैसे धीरजवान हैं ॥ जो इतनो कष्ट पायके दुःख सहन किये ॥ परंतु वैष्णवता गुप्त राखी ऐसेनकेवश्य श्रीठाकुरजी रहतेहै ॥ ये कहिकें श्रीगुसांईजी चुप कर रहे जब नारायणदास विठ्ठलदासके पास एकांतमें जायके अपरा

ध क्षमा कराए॥ और अब इहां रहोतो बहुत आछोहै तब विठ्ठलदासनें कही जो तुम मेरी वैष्णवता जानगयेहो।अब यादेसमें नहीं रहुंगो ॥ सो विठ्ठलदास ऐसे कृपापात्र भगवदीयहते जिननें इतनो दुःखपायकें वैष्णवपनो गुप्त राख्यो ॥ जासुं इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक भैयारूपमुरारी क्षत्रीतिनकी वार्ता

एकदिन श्रीगुसांईजी गोविंदकुंड ऊपर संध्या करते हते॥ सो भैयारूपमुरारी उहां सिकार करते करते आए ॥ सो विनके एक हाथमें बाज हतो ॥ सो विननें श्रीगुसांईजीकुं दूरसो देखे सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भए ॥ तब शिकार छोड दियो और श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो मेरी तो ये दशा है ॥ जब श्रीगुसांईजीनें कही जबसुं जागे तबही सवार ॥ ये सुनके भैयारूपमुरारी हाथ जोडके ठाढे भए ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कही स्नानकर आवो तब न्हायके सन्मुख ठाढे भए ॥ तब श्रीगुसांईजीनें विनकुं नाम सुनायो और श्रीनाथजीके संनिधान समर्पण करायो ॥ और भोजन करके महाप्रसादकी पातर धराई ॥ तव रूपमुरारीनें महाप्रसाद लियो फेर एकदिन रूपमुरारीनें श्रीगुसांईजीकुं पूंछी जो मैं आपके चरणस्पर्श करूं परंतु मेरे करेकर्म मोकुं याद आवेंहें जासूं मेरो मन शंकेहें तब श्रीगुसांईजीनें कही अब तुम वैष्णव भए तुमारो नयो जन्मभयो जासूं तुम नित्य अपरसमें न्हायके चरणस्पर्श भलेही करो सो वे रूपमुरारी ऐंसे कृपापात्र हते ॥

जिनको मन दर्शनमात्रही तें प्रभुके चरणारविंदमें लग्यो ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक कायथ पितापुत्र हते तिनकी वार्ता ॥ सो विननें एक परगना इजारे लियो हतो तब विनकुं वीसहजार रूपैया टूटे जब पातशाहनें विनको बंदीखानेमें राख्यो विननें पुरोहितकुं देसमें पठायो सो पुरोहित विनके घरके दागीना बेचके दो हजार रुपैया लिये और तीनहजार एक ब्राह्मणसों करज लेके पांच हजार रुपैय्या विनकुं लायदिये तब विननें विचार कर्यो जो इन रुपैयानसूं छूटेंगे तो नहीं जासूं ये दो हजारतो श्रीगुसांईजीकुं भेट पठाय देवें और ब्राह्मणको करज आपने ऊपर रहेगो तो ब्राह्मण ऋण बाधा करेगो जब विननें तीन हजार रुपैया पाछें ब्राह्मणको पठाय दिये और दोहजार श्रीगुसांईजीकुं भेट पठाये॥सो पुरोहित लेके श्रीगुसांईजीके पास गयो ॥ जब श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो वे पितापुत्र कहांहैं तब विन पुरोहितनें कही वेतो बंदीखानेमें हैं ॥ जब श्रीगुसांईजीनें चाचाहरिवंशजीकुं बीरबलके पास पत्र देके दिल्ली पठाए॥ तब चाचाहरिवंशजी आयके बीरबलके इहां उतरे ॥ और पितापुत्रके पास मनुष्य पठायो ॥ वा मनुष्यनें श्रीगुसांईजीको आशिर्वाद कह्यो और पत्र दियो वा पत्रके संग बीरबलको पत्र हतो सो वे बापबेटाननें बीरबलको पत्र बाँचके छिपाय राख्यो ॥ वा पत्रको अभिप्राय ये हतो ॥ श्रीगुसांईजी वीसहजार रुपैयाके जामिन पड़ेंगे तो आपनो धर्म न रहेगो और बंदीखानेंमें जो र-

हेंगे तो धर्म रहेगो ये विचारके वीरबलको पत्र छिपाय राख्यो और वा मनुष्यसों कहि जो पत्र खोवाय गयोहै तब वा ब्रजवासीनें चाचाजीसों कहि जो वीरबलको पत्र खोवाय गयोहे तब चाचाजीनें मनमें विचार कियो जो पत्र खोयगयो तो कहाभयो श्रीगुसांईजीके प्रतापतें सब कार्य सिद्ध होयंगे तबये विचारके चाचाजीनें वीरबलसों कहि जो श्रीगुसांईजी वीसहजार रुपैयाके जामिन पडेंगे इन वापवेटानकुं छुडाय देवो॥ तब वीरवलनें कहिं मैं श्रीगुसांईजीको दास हूं मेरे पास द्रव्य है सो श्रीगुसांईजीकोहै मैं जामिन पडुंगो तब वीरवलनें पातशाहकों कहके छुडाय दीये और परगनोंमें पठाये फेर वापवेटानें कमायके द्रव्य भर दीयो सो वे वापवेटा श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते॥ जिननें वंदीखानो कबूल राख्यो और धर्म न छोड्यो॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव॥ १२॥ * ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक कृष्णदासहते तिo ॥

सो वे कृष्णदास एक म्लेच्छके पास परगनेमें हते ॥ सो जो वैष्णव आवतो विनको रुपैया देके खत लिखाय लेते॥ और वेपार करावते तब रुपैया तीस हजार टूटे जब कृष्णदासकुं म्लेच्छनें बंदीखानेमें राखे॥ तब कृष्णदासको पुरोहित सब खत म्लेच्छकुं देवे लग्यो जब कृष्णदासनें विचार कियो ये तो मेरो सब धर्म जायगो॥ और सब वैष्णवनकुं कष्ट होयगो॥ और एकलो मैंहीं कष्ट भुकुंगो तो चिंता नहीं॥ ये विचारके कृष्णदासनें सब खत जराय दिये जब दूसरे दिन म्लेच्छनें कृष्णदासकूं बुलायके कही

जो तुमारे पास कछु होयतो देओ ॥ तिननें कही हमारे पास कछु नहींहैं ॥ जब म्लेच्छनें कृष्णदासकूं सिरपाव देके और परगनमें पठायो ॥ और धीरेधीरे सब रुपैया भरदिये सो वे कृष्णदासजी ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिननें बंदीखानो भुक्त्योपण वैष्णवनको कष्ट न परवे दियो तासूं श्रीप्रभुननें म्लेच्छकी बुद्धी फेर डारी ॥ वार्तासंपूर्ण॥ ॥ वैष्णव ॥ १३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गोपालदास सेगलक्षत्री तिनकी वार्ताः–सो वे गोपालदास श्रीनंदगाममें रहते सो श्रीनंदमें श्रीगुसांईजी पधारे जब गोपालदासनें श्रीगुसांईजीकुं अपने घरमें उतारे ॥ और सर्वस्व जो घरमें हतो सो सब अर्पण करदियो और फेर एक म्लेच्छकी चाकरी करवे लगे ॥ और वा म्लेच्छको द्रव्य गोपालदास वैष्णवनमें खरच करते रहते ॥ जब वा म्लेच्छकुं लोगननें कही याकुं चाकरीसूं काढदेवो ॥ ये नित्य कथा कीर्तनमें द्रव्य खरचडारे हैं ॥ तब म्लेच्छनें कहीजो याके भाग्यसों मेरो द्रव्य दिन दिनबढ़तो जायहै और ये कछु संसारव्यवहारमें खरचे नाहीं है ॥ जासूं इनको कैसे काढयोजाय ॥ सो वे गोपालदास ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनके संगतें म्लेच्छकी बुद्धी निर्मल रहेतीहती ॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव १४

श्रीगुसांईजीके सेवकहरिदासबनियातिनकी०

सो वे हरिदासबनिया मेरता गाममें रहते ॥ वा गाममें एकही वैष्णव हते ॥ और वा गामको राजा जैमल हतो सो स्मार्त धर्ममें हतो ॥ और एकादशी पहेली करते हते॥

और जैमलराजाकी बेनको घर हरिदासबनियाके सामें हतो ॥ सो जब श्रीगुसांईजी हरिदासके घर पधारे हते तब जैमलकी बेनकुं बारीमेंसूं श्रीगुसांईजीके साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तमके दर्शन भए ॥ जब जैमलकी वेननें पत्रद्वारा श्रीगुसांईजीकों वीनती लिखके पत्रद्वारा सेवक भई ॥ काहेतें वे पडदामेंसे बहार नहीं निकसते जासूं पत्रद्वारा सेवक भये ॥ फिर एकदिन जैमलजीनें ऐंसो हुकुम कर्‍यो जो गाममें जो दूसरी एकादशी करेगो वाकुं दंड करूंगो ॥ जब जैमलकुं हलकारानें खबर करी जो हरिदासनें दुसरी एकादशी करीहै ॥ जब हरिदासजीकुं बुलायो ॥ और कही जो हरिया तेंने दूसरी एकादशी क्यों करी ॥ तब हरिदासनें कही अरे जैमल्ला हमारी खुसी ॥ जब जैमलकुं बडो क्रोध भयो ॥ और क्रोधावेशतें सुध भूल गयो और तरवार खेंचके हरिदासजीकुं मारवे दोर्‍यो और जैमलराजाकी कचेरीमें ऐंसो हुकुम हतो जो मेरे हुकुम विना जो कछू करेगो वाकुं शिक्षा करूंगो ऐंसी वाकीरीत हती ॥ जासूं हरिदासजीकुं कोई पकडवे न उठयो ॥ जब जैमलकुं तलवार खेंची देखके हरिदास बाहेर भागे ॥ जब वे जैमल पाछे दोडयो जबहरिदास जैमलकी वेनके घरमें घुस गए॥ तब वेभी पाछें तलवार लेके गए तब जैमलकी बेननें जैमलकुं देखके कहेवे लगी जो तूं वैष्णवकुं मारेगो तो अपराध पडेगो और ये तो मेरो बडो भाई है और तूं छोटो भाई है जासूं याके पांवनपर ॥ नहीं तो तोकुं अपराध पडेगो ॥ और आपने बाप दादा सब

नरकमें जाएंगे ॥ फेर वैष्णव माहात्म्यके श्लोक बा बाई-
नें जैमलकुं सुनाए॥भगवद्वचनम्॥मत्तोमद्भक्तभक्तेषुप्रीति-
रभ्यधिकाभवेत् ॥ तस्मान्मद्भक्तभक्तश्च पूजनीयोवि
शेषतः ॥ १ ॥ अध्वश्रांत मविज्ञात मतिथिंक्षुत्पिपा
सितम् ॥ योनपूजयतेभक्तया तमाहुर्ब्रह्मघातकम् ॥
॥ २ ॥ मद्वंदनाच्छतगुणं मद्भक्तस्यतुवंदनम् ॥ म
द्भोजनाच्छतगुणंमद्भक्तस्यतुभोजनम् ॥ ३॥ बृहन्नारदीये॥
योविष्णुभक्तान्निष्कामान्भोजयेच्छ्रद्धयान्वितः ॥ त्रिः
सप्त कुलमुद्धृत्य सयातिहरिमंदिरम् ॥४ ॥ विष्णोःप्रसाद-
माकांक्षन् वैष्णवान्परितोषयेत् ॥ अन्यथावासकामोसौ-
नैवकेनापितुष्यति ॥ ५ ॥ पूजनाद्विष्णुभक्तानांपुरुषार्थो-
स्तिनेतरः ॥ तेषुचद्वेपतःकिंचिन्नास्तिनाशनमात्मनः ॥
६ ॥ वस्त्रालंकारभूषाद्यै र्योभागवतमर्चयेत् ॥ भूष्यतेत-
स्यवंशोपिश्रीवृद्धिः पुत्रपौत्रकैः ॥ ७ ॥ अंगसंवाहनाद्यैश्च-
तांबूलैर्व्यजनैस्तथा ॥ तोषयेद्भगवद्भक्तंतुष्यतेचजनार्दनः
॥ ८ ॥ श्रीमद्भागवते॥ बाध्यमानोपिमद्भक्तो विषयैरजि-
तेंद्रियः ॥ प्रायः प्रगल्भयाभक्त्याविषयैर्नाभिभूयते ॥ ९
॥ श्रीमद्भगवद्गीतायाम् ॥ अपिचेत्सुदुराचारोभजते माम-
नन्यभाक् ॥ साधुरेवसमंतव्यःसम्यग्व्यवसितोहिसः॥१०
॥स्कंदपुराणे ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रोवायदिवेतरः ॥
विष्णुभक्तिसमायुक्तोज्ञेयः सर्वोत्तमोत्तमः॥ ११॥ दुराचा
रोपिसर्वाशी कृतघ्नोनास्तिकःपुरा ॥ समाश्रयेदादिदेवं-
श्रद्धयाशरणंहियः ॥१२॥ हारीतस्मृतौ ॥ भगवद्भक्तिदीपा-
ग्निदग्धदुर्जातिक ल्मषः ॥ श्वपचोऽपिबुधैः श्लाघ्योनवे-

दाढयोपिनास्तिकः ॥१३॥ पाराशरस्मृतौ ॥तदीयाराधनं-पुण्यंवक्ष्यामिमुनिसत्तमाः ॥ यदन्वेषणमात्रेणसर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ नातःपरतरंपुण्यंत्रिषुलोकेषुविद्यते ॥ १४ ॥ सर्वकामप्रदंपुंसामत्यंतातिशयंहरेः॥ तस्मात्परतरंश्रेयो-नास्तिसत्यंब्रवीम्यहम् ॥ १५ ॥ सकृत्संपूजनंतेषां मुक्ति-दंपापिनामपि ॥ सहस्रवार्षिकीपूजाविष्णोर्भगवतोहरेः॥ सकृद्भागवताचार्याः कलांनार्हतिषोडशीम् ॥ १६ ॥ सकृ-त्संपूजितेपुण्येमहाभागवतेगृहे॥ आकल्पकोटिपितरःपरि-तृप्तानसंशयः ॥ १७ ॥ यथातुष्यतिदेवेशोमहाभागवता-र्चनात् ॥ तथानतुष्यति हरिर्विधिवत्स्वार्चनादपि ॥१८॥ षष्टिवर्षसहस्राणि विष्णोराराधनेफलम् ॥ सकृद्वैष्णवपूजा यांलभतेनात्रसंशयः॥ १९ वैष्णवोयद्गृहेभुंक्तेतस्यभुंक्तेहरिः स्वयम् ॥ हरिर्यस्य गृहेभुंक्तेतस्यभुंक्तेजगत्त्रयम् ॥ २० ॥ अंबरीषाख्यानेदुर्वासाप्रतिभगवद्वाक्यम् ॥ अहंभक्तपराधी नोह्यस्वतंत्रइवद्विज ॥साधुभिर्ग्रस्तहृदयोभक्तैर्भक्तजनप्रि यः ॥ १ ॥ नाहमात्मानमाशासेमद्भक्तैः साधुभिर्विना ॥ श्रियंचात्यंतिकींब्रह्मन्येषांगतिरहंपरा ॥ २ ॥ ये दारागा रपुत्राप्तान्प्राणान्वित्तमिमंपरम्॥ हित्वामांशरणंयाताःकथं तांस्त्यक्तुमुत्सहे ॥ ३ ॥ मयिनिर्बद्धहृदयाःसाधवःसमदर्शि नाः ॥ वशीकुर्वंतिमांभक्त्यासत्स्त्रियः सत्पतिंयथा ॥ ४ ॥ मत्सेवयाप्रतीतंचसालोक्यादिचतुष्टयम्॥ नेच्छंतिसेवया पूर्णाःकुतोऽन्यत्कालविप्लुतम् ॥ ५ ॥ साधवोहृदयंमह्यंसा धूनांहृदयंत्वहम् ॥ मदन्यत्तेनजानंतिनाहंतेभ्योमनागपि ॥ ६ ॥ एवंधर्मैर्मनुष्याणामुद्धवाऽऽत्मनिवेदिनाम् ॥ मयि

संजायतेभक्तिःकोऽन्योऽर्थोऽस्यावशिष्यते ॥ ७ ॥ दशम-स्कंधेउत्तरार्धेभगवद्वाक्यम् ॥ नह्यम्मयानितीर्थानिनदेवामृच्छिलामयाः॥ते पुनंत्युरुकालेनदर्शनादेवसाधवः॥८॥ नाग्निर्नसूर्योनचचंद्रतारकानभूर्जलंखंश्वसनोथवाङ्मनः॥उपासिता भेदकृतोहरंत्यघंविपश्चितोघ्नंतिमुहूर्तसेवया ॥९॥ यस्याऽऽत्मबुद्धिः कुणपेत्रिधातुकेस्वधीःकलत्रादिषुभौमइज्यधीः ॥ यत्तीर्थबुद्धिः सलिलेनकर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेषुसएवगोखरः॥१०॥ ये सुनके जब जैमलजी शास्त्रके ज्ञाता हते जब कहन लगे जो या शास्त्रको अभ्यास कहांसों कियोहै॥ तब वा बाईनें कही मेरे बडे भाई हरिदाससों सीखीहों ॥ तब जैमलनें कही ये तेरो बडो भाई कैसे ॥ जब वा बाईनें कही ये श्रीगुसांईजीके सेवक पहिले भए और मैं पाछे सेवक भई ॥ जासूं ये मेरे बडे भाई हैं ॥ और मेरे प्राणसूं प्रिय हैं ॥ जब जैमलनें कही जो ये तेरे घर नित्य आवेहै कहा ॥ तब वा बाईने कही जो ये नित्य भगवत्सेवा करवे आवेहै सो तूं चल दर्शन कर तलवार नीचे धरदे ॥ श्रीठाकुरजीके सन्मुख तलवार नहीं आवेहै ॥ तब वा बाईनें जैमलजीकुं ऐंसे कहिकें और हाथ पकडकें तलवार नीचे धरायके श्रीठाकुरजीके सन्मुख लेगई ॥ और दर्शन करत मात्र क्रोध उतर गयो ॥ और बुद्धि निर्मल होयगई जैसे सूर्य उदय भयेतें कमल प्रफुल्लित होयहै तैसे जैमलजीको हृदयकमल प्रफुल्लित होयगयो ॥ और कहेवे लग्यो जो हरिदासजीसूं मेरे अपराध क्षमा करावो और मोकूं वैष्णव करो जब वा बाईनें जैमल-

जीको न्हवायके हरिदासके पास अपराध क्षमा करायके जैमलजीकुं बैठायो॥ और कही जो आज इहां महाप्रसाद लेओ॥ तब जैमलजीनें महाप्रसाद लियो ॥ इतनेमें श्रीगुसांईजी द्वारकासों फिरते पधारे और हरिदासजीके घर खबर पठाई ॥ जब ये बात सुनके हरिदासजी जैमलजीकुं संग लेके श्रीगुसांईजीके दर्शन करिवेकुं गए॥ और जैमलजी उहां वैष्णव भए॥ और सब कुटुंब सहित गाम सहित जैमलजी वैष्णव भए॥ तब सब लोकनकुं बडो आश्चर्य भयो जो जैमलतो हरिदासकुं मारवे गएहते सो वैष्णव होयकें घर आए॥ वे हरिदास ऐसे टेकके वैष्णव हते जैमलजीसों न डरे जैमलके सन्मुख उत्तर दिये ॥ ॥प्रसंग॥ १ ॥ वे हरिदासकी एक बेटी हती सो हरिदासनें पुरोहितसों कही याकी सगाई करि आवो ॥ तब वह पुरोहित जैन धर्मीकुं धनाढ्य जानके वनके लोभसों सगाई करि आयो ॥ जब हरिदास सुनके कछु बोले नहीं॥ और पुरोहितसों कही द्रव्य और बेटी लेजायके तुम विवाह करिदेवो तब वा पुरोहितनें हरिदाससों द्रव्य लेके विवाह करदियो ॥ और बेटीकुं परभारे बिदा करदीयो सो वे हरिदास ऐसे टेकके भगवदीय हते॥ जिननें लौकिकनिंदा सहन करि परंतु जैनधर्मीको मुख न देख्यो ॥ वे ऐसे भगवदीय हते॥ प्रसंग ॥२॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १५ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक हरिदासकी बेटी ति०

जब वे पुरोहित हरिदासकी बेटीकुं परनायके सासरामें धरिगयो॥ वाको नाम कृष्णाबाई हती सोवा कृष्णाबाईनें

सासराके घरको अनाचार देखके ये विचार कियो जो अन्नजल न लेनो और देहत्याग करनो ॥ जासूं वानें तीन-दिनसूधी अन्न जल लियो नहीं ॥ जब वाकी सासको स्व-भाव दयायुक्त बहुत हतो जासूं वाकुं दया आई ॥ जब वाकी सासूनें कही वहू तूं क्यों खावे नहींहैं ॥ जब वा कृ-ष्णानें कही मैं मेरे हाथसूं करके लेउं दूसरेके हाथको जल हूं न लेउं ॥ जब वाकी सासूनें वासों कही तूं तेरे हाथसे जल भरलायके रसोई कर और बासन वहूनें कहे सो सब सासूनें मगाय दीने ॥ जब वा वहूनें रसोई करके भोग धर्यो और भोग सरायके एक पातर अपनी करलीनी और सब महाप्रसाद विनकुं हठायदीनो ॥ सो महाप्रसाद लेतमात्रही विनकी बुद्धी निर्मल भई ॥ जब वे घरमें वा कृष्णाकी सराहना करवे लगे ॥ और वे कृष्णा गाम बाहेर कुवा हतो जहां नित्य जल भरनेकुं जाती हती ॥ वा कुवापर एक वैष्णव विनकुं मिल्यो ॥ जब वासू हरिदासजीकी पहेचान काढी ॥ तब वैष्णव नित्य कु-वापर वा बाईको भगवत्स्मरण करते ॥ वे कृष्णा विन-सों भगवत्स्मरण करेविना प्रसाद न लेती और जादिन वे कुवापर न मिलते जब विनके घर जायके भगवत्स्मरण कर आवती ॥ काहेतें जो श्रीमहाप्रभुजीनें आज्ञा करीहै नवरत्नग्रंथमें ॥ "निवेदनंतु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः," ॥ यातें नित्य भगवत्स्मरण करेविना प्रसाद लेती न हती ॥ एकदिन वे वैष्णव कोई गाम गये हते सो तीन दिनमें आए ॥ जब वा कृष्णानें तीन दिन सूधी प्रसाद न लियो

हतो ॥जब वा कृष्णाकुं सासूनें कही तूं प्रसादकी पातर नित्य क्यों गायकुं देवेहें ॥ और लेत क्यों नहीं हें॥ तब वा कृष्णानें कही एक मेरो गुरुभाई नित्य कुवापर मोकुं मिलेहें ॥ और जब न मिले तब वाके घर जायके भगवत्स्मरण करआउंहूं ॥ सो अब तीन दिन भये मिले नहिं जासूं महाप्रसाद न लियो ॥ सो वे सासू वाको साच देखके बहोत प्रसन्न भई ॥ और कहेवे लगी मैं तेरे संग चलुं मोकुं वा वैष्णवको घर दिखावेगी ॥ तब वा सासूको वा वैष्णवके घरलेगई ॥ जब वे वैष्णव तीन दिनमें फेर घर आयो हतो जब वा कृष्णानें वा वैष्णवसों भगवत्स्मरण कर्‍यो ॥ जब वाकी सासू वैष्णवकुं हाथ जोरिके कहेवे लगी ॥ जो ये तीन दिनसूं भूखीहै ॥ और तुम कृपाकरिके हमारे घर नित्य आयके याकुं भगवत्स्मरण करजावो तो मैं तुमारो बडो उपकार मानुंगी ॥ और कछु तुमारे संगसों मेरो आछो होयगो ॥ जब वा वैष्णवनें नित्य आयवेकी हां कही॥ जबतें नित्य वाके घर जायके भगवत्स्मरण करते॥जबतें वा कृष्णाकी सासू और सासरा और धणी और सब घरके वा वैष्णवकुं पेहचानेव लगे और वा वैष्णवकुं कहेवेलगे जो तुमारो धर्म हमकुं समझावो और हम सब तुमारे शिष्य होंएंगे जब वानें कही हमारे धर्ममें तो सब श्रीगुसांईजीके सेवक होवेहें ॥ जब वाकी सासूनें कही जो वे श्रीगुसांईजी कहांरहेहें इहां कैसे पधारें सो तुम उपाय करो द्रव्यतो हमारे इहां बहोत है ॥ तुम कहो सो मैं खरचूंगी ॥ जब वा वैष्णवनें पत्र लिखायके

कासिद पठायो ॥ तब श्रीगुसांईजी उहां पधारे और वे सब सेवक भए और विनके संगसों सब गामके वनियां-हूं वैष्णव भए ॥ सो वे हरिदासकी बेटी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र हती जिनके संगसूं सब गाममें वैष्णव भये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ श्रीगुसांईजी उहांते द्वारका पधारे और एकदिन वा कृष्णाकी सासूनें रसोई करी ॥ जब वा कृष्णाकुं बडो ताप भयो जो अब मोसों भगवत्सेवा छूटी और रसोई करवेकेसमें श्रीठाकुरजी आयके मोकुं सिखावते और इच्छा आवती सो सामग्री करावते और सब बालभाव जनावते ॥ सो वे सुख मोकुंतो न मिलेगो ये विचारके बहुत विप्रयोग करवे लगी ॥ विनको ताप श्रीठाकुरजी सही न सके जब वाकी सासूकुं श्रीठाकुरजीनें स्वप्नमें जताएजो मोकुं कृष्णाके हाथकीरसोई बहुत आछी लगेहे ॥ जासूं तुम दूसरी सेवा करो ॥ फेर दूसरे दिन वाकृष्णाकूं सासूनें कही जो रसोई तुम करो मैं दूसरी सेवा करूंगी और श्रीगुसांईजीकुं हूं श्रीठाकुरजीनें जताइ जो आप कृष्णाकुं भलामण करो जो रसोईकी सेवा न छोडे ॥ तब श्रीगुसांईजी द्वारकासुं पाछेवा गाममें पधारे जब वे कृष्णा श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं आवती जासूं रसोईकी बहुत अवार जानके वाकी सासू रसोई करती ॥ जब श्रीगुसांईजीनें वा कृष्णासों आज्ञा करीजो तेरे हाथकी रसोई श्रीठाकुरजीकुं भावेहे जासूं तुम श्रीठाकुरजीसों पहुंचके हमारे दर्शनकुं आईयो ॥ श्रीप्रभुनकुं श्रम होय ऐसो करणो नहीं ये दासको मुख्य धर्म

है ॥ जादिनतें कृष्णावाई रसोईकी सेवा विशेष करके आपही करती सो वे कृष्णावाई ऐसी कृपापात्र हती ॥ ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥१६॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक अलीखानपठाण ति०

सो वे अलीखान पठाण पृथ्वीपतीके पाससों तवीसाकी हकूमत लेके महावनमें आयरहे और श्रीगुसांईजीके पास नित्य कथा सुनवेकुं आवते ॥ विननें कथामें ये सुन्यो ॥ श्लोक ॥ "वृक्षे वृक्षेवेणुधारीपत्रेपत्रेचतुर्भुजः॥ यत्रवृंदावनं तत्रलक्षालक्षकथाकुतः" ॥ १ ॥ ये श्लोक सुनके ऐसी डोंडी फिराई जो व्रजके वृक्षको पत्ता कोई तोरेगो वाकुं में शिक्षा करूंगो ॥ वा देशमें एक तेली तेल लादके जातो हतो वानें एक वृक्षकी डार तोडी ॥ जब अलीखाननें वाको सगरो तेल वा वृक्षमें ठलवाय दियो ॥ तबसूं ऐसो डर वैठगयो जो कोई व्रजके वृक्षको पत्ता न तोरे ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ फेर एक दिन एक चोरकुं अलीखानके पास पकड लाए ॥ वे चोर सोगंध खायवे लग्यो और कही जो में ताते तेलमें हाथ डारूंगो जब तातो तेल ठंडो होयगो तब मेरी बात आप साची मानोगे ॥ तब अलीखाननें तेल मगायके कही ॥ जो परमेश्वर ताते तेलकुं ठंढो करसकेहें वो ठंढेको तातो कर सकेंगे ॥ जासूं तूं ठंढे तेलमें हाथ डार ॥ जब वा चोरनें ठंढे तेलमें हाथ डारे तब वाके हाथ जर गए ॥ सो वे अलीखानको परमेश्वर उपर ऐसो दृढविश्वास हतो ॥ प्रसंग ॥२॥ वा अलीखानके पास एकघोडा बहुत सुंदर हतो और एक घडीमें छः कोस चलतो हतो ॥ वा घोडाकुं देखके

श्रीगुसांईजीनें बहुत सराहना करी ॥ जब वा घोडा अलीखाननें श्रीगुसांईजीके पास पठाय दियो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें राख्यो नहीं जब अलीखान मनमें समझे जो मैं इनको सेवक होउं तो राखेंगे तब अलीखान सेवक भए जब अलीखान सेवा करवे लगे तब अलीखानकी बेटीहू सेवा करवे लगी॥ तब अलीखानकी बेटीकुं श्रीठाकुरजीनें अनुभव करायौ।औरसंगमिलके नृत्य करते जब अलीखानकुं खबर पडी जो भीतर कहा नृत्यको शब्द होयहै जब अलीखाननें छिपके देख्यो तो श्रीठाकुरजी पधारेहैं और नृत्य करेंहैं सो देखिके बेटीकी बहुत सराहना करन लागे ॥ प्रसंग ॥३॥ और नित्य श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलमें कथा कहते और सब वैष्णव सुनते और अलीखानहू नित्य कथा सुनिवेकुं आवते जब अलीखान आवते तब श्रीगुसांईजी कथा कहते वैष्णवनके मनमें आई जो म्लेच्छ आवेहै जब कथा वाचेहैं ॥ तब श्रीगुसांईजी सब वैष्णवनके मनकी जानके एकदिन वैष्णवनसूं पूंछी जो काल कहा प्रसंग हतो जब कोई वैष्णवकहिसक्यो नहीं तब अलीखाननें हाथ जाडके वीनती करी जो आपकी आज्ञा होय तो कालकी कहूं अथवा आज्ञा होय तो जादिनसुं कथा सुनूंहू सब दिनकी कहूं जादिनसुं कथाको आरंभ भयोहै ये सुनके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भए ॥ सो वे अलीखान ऐसे कृपापात्र हते जो कछु भगवत् कथा सुनते सो एक अक्षर न भूलते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १७ ॥ * ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक निहालचंदझलोटाक्षत्री.

वे निहालचंद उज्जैनमें रहते हते ॥ पुष्टिमार्गीय ग्रंथ सुनवेमें बहोत आसक्ति उनकी हती ॥ और श्रीठाकुरजी उनकुं अनुभव जतावत हते सो एक समें ये निहालचंद श्रीगोकुल चले ॥ रस्तामें सोलह मनुष्य व्यापारिनको संग भयो सो रस्तामेंसों चोर वेपारिनकों तथा निहालचंदकुं पकरिके लेगए ॥ सो द्रव्य सब लेके कैद करे ॥ औरसबको मार डारने ऐसो विचार कर्यो॥ परंतु वे चोरनको जो मुख्य पटेल हतो वाकी मा वैष्णव हती॥ चाचाहरिवंशजीनें जिन भीलनको गाम वैष्णव कर्यो हतो वा पटेलकी मा वा गामकी बेटी हती ॥ और वे निहालचंदभाई रात्रिकों कीर्तन करते हते सो वा पटेलकी मानें सुन्ये ॥ सो वे उठके निहालचंदजीके पास गई और विनकुं पूछ्यो जो तुमारो नाम कहाहे विननें नाम बताये सो वे निहालचंदको नाम वानें वैष्णवनसों सुन्यो हतो ॥ सो वे नाम सुनतही पांवन पडी ॥ और बेटाकों लायके पावन पराये अपराध क्षमा कराए ॥ और सब गामकों वैष्णव कराए ॥ और सब गामसूं मिलके श्रीगुसांईजीकी भेट दिवाई और वा निहालचंदनें विनचोरनको खेती करवेकी कही चोरी छुडाय दीनी ॥ फेर उहांसों वे निहालचंद श्रीगोकुल आए और वे सोले वेपारीहूं संग आए और सब वैष्णव भए ॥ और विनके संग जो मालहतो सो सब भेट कर दीनो॥ सो वे निहालचंद ऐसे कृपापात्र हते॥ जिनके संगसूं भीलको गाम तथा व्योपारी सब वैष्णव भए ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १८ ॥ ❀ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक माधोदासक्षत्री तिन०
सो वे माधवदास काबुलमें रहते हते ॥ सो एकसमें मै-
यारूपमुरारी देशाधीपतीके संग काबुल गए और उहां ब-
जारमें माधवदासजीके माथेपर तिलक देखके पूछवे गए ॥
जो तुम कोन हो और ये तिलक क्यों करयो है ॥ जब मा-
धवदासजीनें कहीहम श्रीगुसांईजीके सेवकहें ॥ जब रूप-
मुरारीनें कही जो हमहूं श्रीगुसांईजीके सेवक हैं तब
माधवदास बहुत प्रसन्न भए ॥ इतनेमें माधवदास उठके
अंचल फिरायवे लगे ॥ जब रूपमुरारीनें पूंछी यह कहाहै
जब विननें कही श्रीनाथजी गाय चरायके व्रजमें पधारे
हैं जासूं अंचल वारत हूं ॥ तब रूपमुरारी ये सुनके ब-
होत विस्मय भए ऐसे आश्चर्य भयो जो श्रीनाथजी इ-
नकों इहां दर्शन देतहैं ॥ तब मनमें इनकी बहोत सराहना
किये और माधवदासनें जो श्रीनाथजीको शृंगारकह्यो
सो मैयारूपमुरारीनें लिखलीनो ॥ फेर माधवदासके घर
जायके श्रीठाकुरजीको दर्शन कियो सो साक्षात् श्रीगो-
वर्धननाथजीको दर्शन भयो ॥ तब मनमें कही मेरे बडे
भाग्यहैं जो श्रीगुसांईजीनें ऐसे म्लेच्छदेशमेंहूं मोकों
वैष्णवनकोसंग दियो ॥ फेर कछुकदिन रहिके चलवे लगे॥
जब माधवदासनें कही जो तुम थोडे दिन और रहो सो
पृथ्वीपति वीस मजिल जायगो तब मैं तुमकूं एकदिनमें
पोहोंचतो कर देउंगो ॥ जब रूपमुरारि रहे ॥ वीसदिन
पाछे माधवदासजी रूपमुरारीके संग घोडापर बैठके ए-
करातमें परवतमेंको दूसरो रस्ता अस्सीकोसको एकरा-

तमें पहुंचे सो वे रस्तामें चोर बहुत हते परंतु माधवदासजीकूं तथा मैयारूपमुरारीकूं कोईनें देखे नहीं और आखीरात रस्तामें भगवद्वार्ता करत आए जब माधवदासनें कही मैं हरिद्वारमें श्रीगुसांईजीको सेवक भयो हतो ॥ तब रूपमुरारीकूं वडो आश्चर्य भयो जो श्रीनाथजी ब्रजलीलासहित इनकों दर्शन देवेंहैं सो इनके उपर श्रीगुसांईजीकी बहुत कृपाहै ॥ जब माधवदास रूपमुरारीसों विदाहोय अपने घर आए ॥ सो वे माधवदास ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनकुं काबूलमें श्रीनाथजी नित्य दर्शन देते ॥ सार ये कि प्रभूतो केवल भावके वशहैं और साधनके वश नहींहैं सो नंददासजीनें कहीहे ॥ दोहा ॥ यद्यपिअगमतेंअगमहैं, निगमकहतहैंजाहि ॥ तदपिरंगीलेप्रेमवशनिपटनिकटहरिआहि ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १९ ॥

श्रीगु० सेवक माधवदासभट्ट नागरा कायथ०

वे माधवदास श्रीगुसांईजीके सेवक भए तादिनतें विनको चित्तशांत भयो और भगवत्सेवा करवे लगे माधवदासके पिता संसारासक्त बहोत हते और विषयी हते और माधवदास उपर अप्रसन्न हते और विनके पास द्रव्य बहुत हतो माधवदासकुं एक पैसा देते न हते सो ऐसे जानते जो माधवदास भगवत् धर्ममें खर्च डारेगो और माधवदासकी निंदा बहुत करते हते जब वे वृद्ध बहुत भये तब माधवदासनें विनसों कही अबतो तीर्थयात्रा करो तो बहुत आछोहै तब माधवदासके पिता तीर्थकरवेको चले ॥ जब मथुराके चोबे विनको मिले चोबेननें कही गुरूमुख होय जा

ओर तब विननें विचार करयो जो ये चोबे तो मेरे गुरु भए हैं सो बहुत दिन भए हैं परंतु मेरो मन संसारके विषय-मेंसे निकस्यो नहीं माधवदासके गुरुके शरण जाउंगो जब मेरो मन निवृत्त होयगो ये विचार के श्रीगोकुल गए और वीनति करी जो मेरो अंगीकार करो तब श्रीगुसां-ईजीनें नाम निवेदनं करायो ॥ जब माधवदासके पितानें श्रीगुसांईजीके संग जायके श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन किये और मनमें ऐसी आई जो श्रीगुसांईजीके चरणार-विंद नहीं छोडूंगो जहांसुधी देह रहेगी ॥ ये विचार करिके माधवदासकुं पास बुलाय लिये और मनमें कहेवेलगे जो मेरे धन्य भाग्यहैं जो माधवदास जैसो पुत्र जन्म्यो तो मोकुं श्रीगुसांईजीके चरणारविंद मिले ॥ और सब तीर-थइनके चरणारविंदमें हैं जासूं तीरथ करवे न जाऊंगो और सब द्रव्य माधवदासकों सोपदियें ॥ सो माधवदास ऐसे भगवदीय भये जिनके संगतें उनके पिता जो विष-यासक्त हते सो विषयमेंसूं मन काढके प्रभूमें लग्यो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २० ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक कटहरीया ति० ॥

एकसमें श्रीगुसांईजी गुजराततें व्रजपधारते हते रस्तामें तीनसे असवार लेके कटहरिया लोगनको लुटते फिरते ते तब श्रीगुसांईजीकी असवारी जाती देखके आयकेंह घेरो दियो और पंद्रे बीस गाडी हती सबका रोक लीनि तब श्रीगुसांईजीके मनुष्य एक एक गाडीपे एक एक ठाडे होय गये सो विन चोरनकुं ऐसें दीखे जैसें गाडीपें एक

हते तब जो सामग्रीकी श्रीगुसांईजीके मनमें आवती तब वे सामग्री रूपचंदनंदा श्रीगुसांईजीके मनकी जानके झ-टलेके पठावते हते ॥ और रूपचंदनंदाको मन श्रीगुसां-ईजीके स्वरूपमें तद्रूप होय गयो हतो ॥ ऐसी ऐसी इनकी वार्ता अनेकहें सो वे भगवदीय कृपापात्र हते॥इनकीवार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २२ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक यदुनाथदास हते ति०

सो जौनपुरमें रहते सो उहां एक हाथीको महावतकी स्त्री-सों विनको मन आसक्त हतो सो वाके देखेविना जल नहीं पीते॥सो एकदिन वो लुगाई सूती हती॥पहेर दिन रह्यो जहांसुधी उठी नहीं ॥ यदुनाथदास तीन पहेर वाके दर-वज्जापें ठाडे रहे ॥ जब वे उठी तब वानें लौंडीसों कही जो देख तो बाहेर कोई पुरुषतो नहीं ठाडो है ॥ तब वा लौंडीनें कही जो एक वोहि देवको मारचो ठाडो है ॥ तब वे स्त्री बोली वोतो बावरो है॥ जैसे मेरे हाड चामसूं मन लगायोहै वैसे श्यामसूं लगायो होतो तौस्यानों जानती ये बात सुनके यदुनाथदासके हृदयमें प्रकाश होयगयो जैसे सूरजउदय होवे तो अंधारो मिटके प्रकाश होजाय ॥ तब उहांसों चलदिये सो घरमें आयके ऐसो संकल्प कियो जो अब जैसे बने तैसे श्यामकुं भजनो ॥ वाही घडी जौनपुर श्रीगुसांईजी पधारे हते ॥ और सब वैष्णव दर्शनकुं जाते हते सो भीड देखके यदुनाथदासहूं संग गए॥जायके श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सो साक्षात् पूर्ण-पुरुषोत्तम कोटिकंदर्पलावण्यस्वरूपके दर्शन भए ॥ जब

दंडवत करिके श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो मोकूं शरण लेओ ॥ जब श्रीगुसांईजीनें नाम निवेदन करायो ॥ मारगकी परिणालिका समझायके श्रीठाकुरजी पधराय दीये ॥ फेर यदुनाथदास सेवा करवे लगे ॥ यदुनाथदासको मन भगवत्सेवामें ऐंसो आसक्त भयो जो वे स्त्री हाथीवालाकी रोज सामें आयके ठाडी रहे परंतु यदुनाथदास वाकी आडी देखे नहीं और बोलेहुं नहीं वे यदुनाथदास ऐंसे कृपापात्र हते ॥ जिनको चित्त विषयसों छूटके श्रीप्रभुनमें लगगयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २३ ॥ ॐ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक राजा लाखा तिं० ॥

वह राजा व्रजमें तीरथ करवेकों आयो और श्रीनाथजीके दर्शन करिके और श्रीगुसांईजीके शरण गयो ॥ और श्रीनाथजीके स्वरूपमें ऐंसे आसक्त भयो जो श्रीनाथजीविना वाकूं कछु भावे नहीं ॥ श्रीनाथजीको रटन विनकुं अष्टप्रहर रहेतो हतो ॥ एकदिन वाकी स्त्रीनें कही जो उहां पडदाकी बंदोबस्ती होय तो मैं दर्शन करूं ॥ तब राजानें कही श्रीनाथजीके इहां पडदा कैसो ॥ जब वा राणीनें श्रीगुसांईजीसूं परबारी बीनती करवायके पडदाको बंदोबस्त करवायो ॥ और दर्शनकों आई जब एक राजा भीतर हतो और कोई मनुष्य नहीं हतो सो श्रीनाथजीनें कवांड खोलडारे ॥ सो अचानक रानीके उपर भीड पडी ॥ सो राजानें कही मैंनें कह्यो हतो जो इहां पडता नहीं चले और श्रीनाथजीनें कवांड खोले वा राजाकी बात सत्य करवेके लिये खोले ॥ सो ऐंसे श्रीनाथ-

जीमें आसक्त हते ॥ और श्रीगुसांईजीकी कृपातें विनको भाव सदैव ऐसो रहतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥२४॥❁

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक ज्ञानचंदकी वार्ता ॥

सो वे ज्ञानचंदकी देह जब थाकी तब सब वैष्णवनसों कही जो तुम भगवन्नामलेओ तब वैष्णव भगवत्स्मरण करनलगे और भगवतस्मरण करते करते ज्ञानचंदकी देह छूटी ॥ जब श्रीगोकुलमें नवीन देह धरिके श्रीगुसांईजीकुं जायके दंडवत करी ॥ तब श्रीगुसांईजीनें पूछी जो कब आए तब ज्ञानचंदनें कही अवी आयोहूं ॥ इतनेमें श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन खुले ॥ तब ज्ञानचंद दर्शन करिके लीलामें प्रवेश कर गये ॥ फेर श्रीगुसांईजी बाहेर पधारे जब वैष्णवननें पूछी जो ज्ञानचंद कहां गएहें ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी॥ज्ञानचंद भक्तचंदके संग गयेहें। जब चाचाहरिवंशजी समझे जो ज्ञानचंदकी देहछूटी और भगवल्लीलामें गए ॥ चाचाजीनें सब वैष्णवनसों कही ॥ सो वे ज्ञानचंद ऐसे कृपापात्रहते॥ जो सबनके देखते वैष्णवनकुं विश्वास उपजायवेके लियें भगवल्लीलामें प्रवेश कर्‍यो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २५ ॥ ❁ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक भाईलाकोठारीकी० ॥

जब श्रीगुसांईजी द्वारका पधारते तब भाईलाकोठारीके घर उतरते॥ जब भाईलाकोठारीको मन उद्विग्न होतो श्रीगुसांईजीके दर्शन करवेके लिये तब भाईलाकोठारीके मनकी जानके और सब काम छोडके श्रीगुसांईजी पधारते ॥ और वे भाईलाकोठारीके घरमें ऐसो चमत्कार ह-

तो जो कोई विनके घरमें जावे वाकी बुद्धि श्रीगुसांईजीकी कृपातें निर्मल होय जाती वा देशमें एक ब्राह्मणि श्रीगुसांईजीकी सेवक भई वानें अपनो सब द्रव्य भेट कर दीनो ॥ तब वाके परोक्षमें एक ब्राह्मण चुगल रहतो हतो सो वानें धोलकामें लाछबाई राणीसों कहि एक गोकुलको फकीर आयोहै ॥ और कोठारीके घरमें उतऱ्योहै ॥ और सबको द्रव्य ठगलेवैहै तब लाछबाई राणीनें अपनो प्रधान बाजबहादुरकुं बुलायके परवानगी दीनी ॥ जो तुम राजनगर जावो ॥ और कोठारीके घर जाय सब खबर काढो ॥ तब बाजबहादुर राजनगरमें कोठारीके घर आयो ॥ वा समें दशपांचगिरासिया रजपूत बैठे हते ॥ सो श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं आये हते ॥ तब बाजबहादुर विनमें जायकें बैठ गयो ॥ तब श्रीगुसांईजी पधारे सो बाजबहादुरनें उठके सबसों मिलके दंडवत करी ॥ और साक्षात् कन्हैयालालके दर्शन भये ॥ तब बाजबहादुरनें मनमें विचार कऱ्यो जो लोग मोकुं वृथा इनसूं लडावेहे फिर कालके काल देखें तब बहुत डरप्यो॥तब श्रीगुसांईजीसों जायवेकी आज्ञा मागी ॥ तब श्रीगुसांईजीनें बीडा दीयो ॥ तब बाजबहादुरनें वीनती करि ऐसी वस्तु कृपा करके देवें जो सदैव माथेपें धरके फिरु ॥ तब श्रीगुसांईजीने एक सुपारी दीनी ॥ तब पागके खूटमें बांधके माथेपें पेहेरे रहेतो॥ जब बाजबहादुर मनमें समझो जो ये ईश्वर हैं ॥ तब श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी जो महाराज मेह कब वरसेगो दुनियां बहुत घबराय रहीहै ॥ तब आपने कह्यो जो आज ब-

रसेगो ॥ जब सुनके बाजबहादुर अमने घर आयो सो रस्तामें वर्षा ऐसी भई जो सब भीजगयो ॥ तब दृढ नि-श्चय भयो जो ये ईश्वर हैं ॥ फेर वा ब्राह्मण चुगलीकरन-वालेकुं मारडारनो ऐसो विचार कन्यो तब वाको पक-डाय मगायो ॥ ये वात सुनके श्रीगुसांईजीनें कहेवाय प-ठायो याको मतमारो ॥ तब वा ब्राह्मणकुं कह्यो जो कोई दिन कोईकी चुगली मति करियो ये लिखायके वाकुं श्री-गुसांईजीके पास पठायो ॥ तब आयके दंडवत करिके कही जो आपकी कृपातें वच्योहूं ॥ अब मोकुं सेवक करो ॥ तब वा ब्राह्मणकुं शरण लियो सो वे भाईलाकोठारी ऐसे कृपापात्र हते ॥ जो विनके घरमें जो आवै वाकी बुद्दी निर्मल होयजाती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव॥२६॥❀॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक हरजीकोठारीकी वार्ता॥

सो वे तीन भाई हते जब श्रीगुसांईजी असारवामें पधारते तब तीनो भाईनको मन प्रसन्न राखते ॥ सो एक भाईके घर पोढते ॥ और एक भाईके घर रसोई करते और एकभाईके घर बैठक राखते ॥ और विन तीन भाईनमेंसूं हरजीकोठारी पंडित हते ॥ सो वा हरजीकोठारीनें विठ्ठ-लसहस्रनामग्रंथ प्रकट कन्यो ॥ और श्रीगुसांईजीकुं पूर्णपुरुषोत्तम जानते ॥ सो वे तीनोभाई ऐसे कृपापात्र हते ॥ जो अबसूधी विनके घरकी बैठक असारवामें प्रसिद्ध है ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ २७ ॥ ❀ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक गोपालदासकी वार्ता॥

सो वा गोपालदास रुपालगाममें रहते वा गोपालदासकी

सगाई भाईलाकोठारीके घर भई हती, एकदिन विनको नोता भाईलाकोठारीके घर हतो॥ तब गोपालदास पांच वरसके हते ॥ जब विनकुं देखके श्रीगुसांईजीनें पूंछी ॥ ये कोनहे जब भाईलाकोठारीनें कही जो ये गोमतीको वर है तब श्रीगुसांईजीनें कही गोमतीको वर तो सागर चहिये जब कोठारीनें कही राजकी कृपातें येही सागर होयगो ॥ जब ये बात सुनिके श्रीगुसांईजीनें विचार करयो जो मेरो सेवक भाईलाकोठारी भयो याको वचनसत्य भयो चाहीये जब आपनें गोपालदासकुं चर्वित तांबूल दियो ॥ जब गोपालदासको हृदय निर्मल भयो ॥ जब गोपालदासकुं रासलीलाके दर्शन भए ॥ और रासलीलामें सदैव रात्र रहेहे जासूं सवा पहर दिन चढयो हतो तोहुं गोपालदासनें केदारारागमें वल्लभाख्यान गायो॥सो वे गोपालदास ऐसे कृपापात्र हते जिननें मारगको सब सिद्धांत नवाख्यानमें वर्णन करयो॥ और चौथे आख्यानमें द्वादशस्कंधकी द्वादशलीला समावेश करिके एकेक तुकमें एकेक स्कंधकी लीला गायीहे ॥ सोवे ऐसे कृपापात्र हते॥ ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ और गोपालदासके हृदयमें आपने श्रीगुसांईजीनें हीं प्रवेश कीयो और आपनेंहिं वल्लभाख्यान गोपालदासके मुखद्वारा वरनन किये जेंसे श्रीमद्भागवत श्रीठाकुरजीनें शुकदेवजीके हृदयमें प्रवेश करके शुकदेवजीके मुखद्वारा वर्नन कीयो जासूं श्रीमद्भागवतमें कोई ठिकाणे श्रीराधाजी ऐसो नाम नहीं है ऐसे वल्लभाख्यानमेंहुं। कोई ठिकाणे श्रीरुक्मिणीवल्लभजीका

तथा श्रीपद्मावतीवहूजीको नाम नहीं है सो वे गोपालदास ऐसे कृपापात्र हते वार्ता संपूर्ण॥प्र०।२॥ वैष्णव॥२८॥

श्रीगुसांईजीके सेवक मानिकचंद ओसवाल

वनियाकी वार्ता ॥ सो वे मानिकचंदको श्रीगुसांईजीकुं पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भए ॥ जब मानिकचंद तथा मानिकचंदकी स्त्री श्रीगुसांईजीके सेवक भए और मानिकचंदनें सर्वस्व अर्पण कर दियो जब मानिकचंदजी सेवक भए जब ये पद गायो ॥ "चहुं युग वेद वचन प्रतिपारयो "॥ इत्यादिक बहुत पद गाये ॥ फेर मानिकचंदकूं श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ॥ जो तुम वेपार करो और घरसें रहके श्रीठाकुरजीकी सेवा करो जब मानिकचंदजी फेर व्यवहार करन लागे ॥ फेर मानिकचंदजी जब वृद्ध भए तब श्रीठाकुरजी पधरायके श्रीगुसांईजीके पास आयके रहे ॥ सो वे मानिकचंदको ऐसो नेम हतो पातलपर महाप्रसाद लेवेकुं बेठते सो पातलपर महाप्रसाद न छोडें ॥ एक दिन श्रीगोकुलनाथजीके मंदिरमें मानिकचंदजी प्रसाद लेवे बैठे हते सो विन साचोराननें ऐसी जानी जो ये पातलपर कछु छोडे नहींहें और पातल धोयके पी जायहें तब साचोराननें मस्करी करवेके लीयें भातके नीचे गोबर धरदीयो ॥ तब मानिकचंद गोबर सहित खाय गये ॥ वा बातकी खबर श्रीगोकुलनाथजीकुं पडी तब श्रीगोकुलनाथजीनें हाथमें जललेकेसाचोरानको शाप दियो तुमारो साचोरा देहसूं कोईको उद्धार नहीं होयगो ॥ और वाई दिनसूं सेवकी जल

पर्यंत साचोरा श्रीगोकुलनाथजीके घरमें नहिं छुवे ऐसो बंदोबस्त कन्यो ॥ सो वे मानिकचंदजी ऐसे कृपापात्र हते जिनकी कान श्रीगोकुलनाथजी ऐसी राखते जिन-केलीयें आज सूधी साचोरानको श्रीगोकुलनाथजीकी सेवामें नहीं आवेदेवेंहे ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २९ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक देवब्राह्मण बंगालाके वासीकी वार्ता ॥ सो ब्राह्मण व्रजजात्रा करवे आए सो श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन करिके विनको मन बहुत प्रसन्न भयो ॥ और साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये तब विननें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो मोकुं शरण लेओ ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कृपाकरिके समर्पण करायो जब वा ब्राह्मणनें इहां रहेके पुष्टिमार्गीय सब सेवाकी प्रणालिका सीखे ॥ फेर वे ब्राह्मण श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लेके बंगालमें गए उहां घरमें सेवा करवे लगे फिर एक-दिन वा ब्राह्मणनें उडदकी दारके वडा करे तब वा ब्रा-ह्मणके मनमें ऐसी आई जो कछु मिष्टान्नहुं चहिये जब द्रव्यको संकोच बहोत हतो जब थोडो गुड लाए और श्रीनाथजीकुं भोग समर्प्यो ॥ तब श्रीनाथजी साक्षात् आप अरोगवेकों पधारे और गिरिराजजी उपर राज-भोग धन्यो सो नहीं अरोगे ॥ पाछें भीतरियाननें अनो-सर करे जब श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलविराजते हते ॥ जब उहां श्रीनाथजीनें जताई जो आज हम भूखेंहें हम वा देवब्राह्मणके घरमें गुड और वडा अरोगवे गए हते जा-पीछे राजभोग धरिके और सरायके भीतरियाननें अनो-

सर कर दिये ॥ जब श्रीगुसांईजी वाहीसमें श्रीगोकुलतें श्रीगिरिराजजी पधारे और सामग्री करायके राजभोग धराए ॥ और वा ब्राह्मणकुं पत्र लिखे जो तुमनें अमुक दिन गुड और वडा धऱ्येहें सो श्रीनाथजी भली भांतिसों आरोगेहें ॥ ये पत्र वांचके वो ब्राह्मण वहोत प्रसन्न भयो और दो थान बंगाली मलमलके लेके चल्यो ॥ सो आयकें श्रीगुसांईजीकुं एक भेट कऱ्यो और वीनती करी जो ये थान अंगीकार करें जब ॥ श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो ये थान श्रीनाथजीके लायकहै ॥ जब वा ब्राह्मणनें वीनती करी जो एक दूसरो थान लायोहूं सो आप अंगीकार करें ॥ तब श्रीगुसांईजीनें वैसेंही कियो ॥ फेर वा ब्राह्मणनें वा मलमलके वागा पहिरके श्रीनाथजीके दर्शन किये ॥ सो वे ब्राह्मण ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ३० ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गणेशव्यासकी वार्ता ॥

सो वे गणेशव्यासकुं श्रीनाथजी सानुभाव हते ॥ वे गणेशव्यास एकदिन श्रीनाथजीके लीयें सामग्री लावते हते॥ तब रस्तामें बरसात पड्यो सो गामबाहेर देवीके मंदिरमें आयके डेरा कियो तब लोगननें कही जो मनुष्य रात इहां रहे ताकुं ये देवी तो खाय जायहे ॥ तब गणेशव्यासनें देवीको मंदिर धोयके देवीके कानमें अष्टाक्षर मंत्र सुनायो ॥ और आप उहां सोयरहे तब वा देवीनें गामके राजाकुं स्वप्नमें कह्यो जो अब मैं वैष्णव भईहुं तुम दो बकरा मोकुं नित्य पठावत हो सो मत पठेयो ॥ और तुम

सब वैष्णव होय जावो नहिंतो सबकुं दुःख देऊंगी ये बात राजाकुं देवीनें स्वप्नमें कही तब वे राजानें सवारे गणेशव्यासके पास जायके सब वार्ता पूंछी जब गणेशव्यास राजाकुं संग लेके आये॥ सो श्रीगुसांईजीके सेवक कराये सो वे गणेशव्यास ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनके संगसूं देवी तथा राजा वैष्णव भये ॥प्रसंग॥ १ ॥ वा गणेशव्यासके ऊपर श्रीगुसांईजी खीजते हते ॥ तब वे गणेशव्यास अपने भाग्य मानते ॥ और श्रीगुसांईजी विनके पीछे उनकी बहुत सराहना करते ॥ तब एक वैष्णवनें पूंछी आप उनपर खीजतेहो और पीठपाछे सराहना करोहो सो कैसे॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो वैष्णवताती याहीको नाम हैं जो रीसकरें तोहुं अभाव न आवे ॥ सो वे गणेशव्यास ऐसे कृपापात्र हते जिनपर श्रीगुसांईजी खीजते पर वे अभाव न लावते॥वार्ता संपूर्ण॥वैष्णव॥२१॥

श्रीगुसांईजीके सेवक मधुसूदनदासकी वार्ता॥

एकसमय मधुसूदनदास श्रीगोकुल आये और श्रीगुसांईजीके दर्शन करे ॥ और मनमें ऐसी आई जो श्रीगुसांईजीको सेवक होउं तो ठीक ॥ जब श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो मोकुं शरण लेओ ॥ जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो नाहाय आवो तब वे नाहाय आये ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करिके नाम निवेदन करायो ॥ जब मधुसूदनदासको चित्त बहुत प्रसन्न भयो जब श्रीगोकुलमें मन लाग्यो पुष्टिमार्गकी रीती सीखवेकुं श्रीगोकुलमें रहि गए॥ और भिक्षावृत्तिकरके निर्वाह करवे लगे ॥

एकदिन श्रीगुसांईजीनें पूछी जो तुम भिक्षा कहां कहां मांगो हो ॥ विननें कही सवनके घरसों मांग लावुंहुं जब श्रीगुसांईजीनें कही जो हमारे सेवक तथा भट्ट तथा हमारे नौकर विनके घरसूंतुमारे भिक्षा लेनी नहीं.कारण विनके घरमें हमारो द्रव्य आवेहै देवद्रव्य गुरुद्रव्य ब्राह्मणको द्रव्य इनके अंश लीयेंसों बुद्धि भ्रष्ट होवे है जब मधुसूदनदास वैसेही करन लागे जब मधुसूदनदासकी चित्तवृत्ति स्थिर देखके श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीके पांनघरकी सेवा दीनी ॥ और मधुसूदनदासकुं सेवामें ऐसो चित्त लग्यो जो जन्मभर श्रीनाथजीकी सेवा कीनी ॥ तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये॥वार्ता सं०वैष्णव॥३२॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक ब्रह्मदास हते तिनकी०

सो वे ब्रह्मदास गोपालपुरमें रहेते हते और व्रजमेंफिर्‍यो करते मानसीसेवा करते मानसी जीनकुं साक्षात्कार होयगई हति और राधाकुंडपर एक बंगाली कृष्णचैतन्यको सेवक रहतो हतो सो वे ब्रह्मदासजीको मित्र हतो वेहु मानसी करतो और सदाही दूध पीके रहतो हतो फेर थोडे दिनपीछे दूध छोडदियो और छाछपीवेलग्यो एकदिन वा बंगालीनें मानसी सेवा करि जब मानसीमें दूध भोग धर्‍यो तब प्रसादिदूधमानसीमें पियो फेर नित्यकी छाछ लेवेको समय भयो फेर वा बंगालीनें शिष्यनकुं नहि कहि तोहुंवाके शिष्यननें जोरशुं छाछप्याई कारण जो वानें मानसीमें दूध पियो है सो शिष्यनकुं खबर न हती पाछे वा बंगालीकुं ज्वर आयो सो वे ब्रह्मदासजी वा बंगालीकुं

देखवे आये सो वे ब्रह्मदास वैद्यकमें बहुत चतुर हते तब ब्रह्मदासजीनें देखके कहि तुमनें दूधके ऊपर छाछ लीनीहै जासों ज्वर आयोहै फेर वा बंगालीके शिष्यननें कहि इननें दूध नहिं पीयोहै तब वे बंगाली बोल्यो अपने शिष्यनसुं तुमकुं कहा खबर है जाघरको हमनें दूध पियोहै ये बाई घरके सदैव रहवे वारेहै और जब हमनें दूध पियो जब ये देखते हते सो वे ब्रह्मदासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते जो कोई और मनुष्य मानसीसेवा करतो सो अपनी मानसीके प्रतापतें और श्रीगुसांईजीकी कृपातें सबकि मानसी जानजाते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥३३॥

॥ श्रीगुसांईजीको सेवक नरुवैष्णव हतो सो

द्वारिकाके रस्तामें रहेतो तिनकी वार्ता:—सो एकसमें श्रीगुसांईजी द्वारिका पधारते हते सो वैष्णव श्रीगुसांईजीकुं अपने घर पधरायके डेरा कराए ॥ वाको घर बहुत छोटो हतो तोहुं वाको आग्रह देखके श्रीगुसांईजी उहां डेरा किये ॥ और श्रीगुसांईजीनें वा वैष्णवसों पूंछी जो तुम निर्वाह कैसे करोहो ॥ जब वा वैष्णवनें कही गामके बाहेर एक वृक्षहै सो वाके नीचे आपने आगें डेराकर्‌यो हतो सो वा वृक्षके पास बैठके भगवद्वार्ता करुहुं और वैष्णव गाममें कोउ नहीहै ॥ जब श्रीगुसांईजीनें कही वृक्ष मोकुं दिखाव जब वे वैष्णव श्रीगुसांईजीकुं पधरायके वा वृक्ष पास लेगयो ॥ जब वा वृक्षनें श्रीगुसांईजीकुं आते देखके दंडवत करके मूलसे उखरि पर्‌यो ॥ जब श्रीगुसांईजीनें मनुष्यनकुं कही याको पत्र डाल सब उठाय

लेचलो याको सर्वांग अंगीकार भयो ये वृक्ष आगले ज-न्ममें वैष्णव हतो और लोगनके दोष देखतो याहीतें वृक्ष भयो है ये बात सुनके वे वैष्णव उहांतें आश्चर्य पायो ॥ फेर श्रीगुसांईजी द्वारिका पधारे ॥ और वा वैष्णवके घर जो कछु हतो सो सब भेटकरदियो सो वे वैष्णवऐंसो कृपापात्र हतो जाकुं श्रीगुसांईजीनें लौकिक निर्वाह पूंछो जब विननें अलौकिक निर्वाह बतायो ॥ वैष्णवनकूं ऐं-सोही चहिये तातें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक पाथोगूजरी तिनकी०

सो पाथोगूजरी आन्योरमें रहते हते ॥ सो पाथोगूजरी एकदिन बेटाके लीयें छाक लेजात हती रस्तामें श्रीनाथ-जीनें कही ये दही भात हमकुं दे तब विननें दियो जब श्रीनाथजी आरोगे जब आरोग चुके इतनेमें शंखनाद भये जब श्रीहस्त धोये विना मंदिरमें पधारे तब श्रीगुसांई-जीनें श्रीनाथजीके दही भातके श्रीहस्त देखिके पूंछी जो आप कहां आरोगे है तब श्रीनाथजीनें कही जो पाथो-गूजरीके पासतें लीयो हतो ॥ वादिन श्रीगुसांईजीनें पोरि-यासों कही जो पाथोगूजरी जब आवे तब किवार खोल दीजियो ॥ जब श्रीनाथजी आज्ञा करते तादिन पाथो-गूजरी पायके अरोगवाय जाती जादिनतें श्रीगुसांईजी-नें कुनवारामें मुख्य सामग्री दही भातकी राखी है सो वे पाथोगूजरी ऐंसी कृपापात्र हती॥वार्ता संपूर्ण वैष्णव॥३५॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एकब्रजबासीकी वहू

तिनकी वार्ताः–जब वे वहू सासरें आई जादिन विनकी भैंसखोय गई ॥ तब वाके घरके मनुष्य कहने लगे या वहूके पांव आछे नहीं हैं जादिन आई तादिनही भैंस गई॥ जब वा वहूके मनमें चिंता उपजी ॥ तब वानें श्रीनाथजीकुं सवासेर माखन मान्यो तब पांच सात दिनमें वाकी भैंस मिली ॥ जब वे वहू भैंसकी छाछ विलोवे लगी जब रोज एक छटांक माखन चुरायलेवे और दूसरे दिन वा माखन ताजामें मिलायके ताजो काढ लेवें ऐंसे करत करत जब सवासेर मांखन पूरो भयो जब लेके श्रीनाथजीकुं अरोगवायवे चली ॥ घरसुं बाहेर निकसी जब ऐंसो विचार कन्यो जो मोकुं कोई देखेगो तो कहा कहेगो जब ऐंसी चिंता उत्पन्न भई न पाछे आयो जाय न आगें गयो जाय ॥ तब श्रीनाथजी वाकुं चिंतातुर देखके पधारे श्रीनाथजीनें ऐंसी जानी जो ये मेरे विना दूसरो देव जानें नहींहें जासूं पधारे ॥ और वाको मांखन लेके आरोगे सो वे वहू ऐंसी कृपापात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीकेसेवकगोपीनाथदासग्वालकी०

सो गोपीनाथदास ग्वालवनमें गाय भैंस चरावत हते ॥ सो एकदिन गोपीनाथदासकूं वनमें भूंख लगी ॥ जब श्रीनाथजीनें आठ लड्डवा राजभोगकी सामग्रीमेंसो वनमें लायके गोपीनाथदासकुं दिये ॥ तब विननें विचार कन्यो जो ये लडुवा श्रीगुसांईजीकी आज्ञा विना खाने नहीं॥ जब वे लड्डवा श्रीगुसांईजीके पास लेआये॥ और श्रीगु-

सांईजीकुं वीनती करी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करिके लडुवा श्रीनाथजीनें दीनेहैं सो तुम खावो।सो गोपीनाथदास श्रीगुसांईजीकी आज्ञा विन कछु करत नहीं हते ॥ सो एक दिन गोपालदास भीतरियाकुं वनमें श्रीनाथजीनें कही जो मोकुं भूख लागीहै ॥ जब भीतरियानें आयके श्रीगुसांईजीसों वीनती करी तब श्रीगुसांईजी सब सीतल सामग्री तयार करके आप वनमें पधारे ॥ तब तडका बहोत हतो तब गोपीनाथदास ग्वालने श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो महाराज ऐसी घाममें काहेकों पधारेहै ॥ श्रीनाथजीतो बालकहै यासूं आप पाछे पधारें ॥ तोहूं श्रीगुसांईजी वनमें पधारे ॥ जब जायके श्रीनाथजीकुं सामग्री अरोगवाई ॥ तब गोपीनाथदास ग्वालनें श्रीनाथजीसों वीनती करी जो महाराज आपनें ऐसी घाममें श्रीगुसांईजीकुं काहेको श्रम करायो ॥ आप आज्ञा करते तो बहुत सामग्री आयजाति तब श्रीनाथजीनें आज्ञा करी जो इनके हाथ विना मोकुं दूसरेके हाथकी भावे नहींहै॥ और इनके कहे विना दूसरेके हाथकी अरोगूंहूं नहीं हूं ये बात सुनके गोपीनाथदास चुप कर रहे ॥ याहीतें श्रीरघुनाथजीनें श्रीगुसांईजीको नाम नामरत्नाख्यग्रंथमें ॥ तन्निमंत्रणभोजकः ॥ ऐसो वर्णन कर्यो है सो वे गोपीनाथदासग्वाल ऐसे कृपापात्र हते तातें इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ३७ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक दोभाई तिनकी ॥

वे दोनो भाई पटेल गुजरातके हते श्रीजीद्वारमें रहिके श्री-

नाथजीकी सेवा करते सो एकदिन वे दोउनके मनमें ऐंसी आई जो हमनें द्रव्य खरचके श्रीनाथजीकुं सामग्री नहीं अरोगवाई है तब वे दोनो उहांते चले सो एक तलाव खुदावतो हतो सो उहां कंठी तिलक छिपायके मजूरी करन लगे सो रातकुं रसोई करते दिनकुं मजूरी करते एसें करत करत बहुत दिन बीते सो विनकुं कोई नें वैष्णवहें ऐंसो जान्यो तब विन दोउनकी खात्री करने लागे और थोडी मजूरी करावन लागे तब विननें विचार कर्‍यो जो धर्म वेचके पैसा कमावनो ये बात आछी नहीं जब वे उहांसों श्रीजीद्वार आये और पैसा जो लाये हते सो श्रीगुसांईं-जीकुं देके श्रीनाथजीकुं अंगीकार कराए जब श्रीगुसां-ईंजीकूं सब बात कही तब श्रीगुसांईंजीनें आज्ञा करी जो वैष्णवधर्म प्रकट करके पैसा लावे वे पैसा श्रीनाथजी अंगीकार नहीं करेहें ॥ वे दोनोभाई ऐंसे कृपापात्र हते जिननें मजूरी करी तोहुं वैष्णवधर्म प्रकट कियो नहीं तातें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥३८॥

॥श्रीगुसांईंजीके सेवक गोपालदास भीतरिया की वार्ता:—सो वे गोपालदास गुजरातमेंतें श्रीगुसांईंजीके संग आए॥ और श्रीगुसांईंजीनें गोपालदासजीकुं श्रीनाथजीकी सेवा सौंपी ॥ श्रीनाथजी गोपालदासके ऊपर ऐंसी कृपा करते जाठिकाणें गोपालदास सेवामें भूलते ताठिकाणे श्रीनाथजी सिखावते ॥ और गोपालदासजी को प्रसंग गोपीनाथदास ग्वालकी वार्तामें लिख्योहे ॥ श्रीनाथजी गोपालदासकुं संग वनमें लेजाते और जो

सामग्री गोपालदासजीकुं न आवती सो श्रीनाथजी आप वतायके करायलेते ऐसे अनेक रीतके अनुभव करावते सो वे गोपालदास ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ ॥ वैष्णव ॥ ३९ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक ब्राह्मण ति० ॥

सो ब्राह्मण गंगाजीके तीरपर एक झोंपडी बनायके श्रीठाकुरजी पधरायके दोनो स्त्रीपुरुष सेवा करते सो वे ब्राह्मण भिक्षाकरि लावते और एकदिनको सीधो होयतो दूसरे दिनके लिये कोई देवे आवे वाके पास लेते नहीं ॥ और जब श्रीठाकुरजीको राजभोगसरे पीछे जितने वैष्णव आये होंय सबकी पातर करते और भगवत्सेवा और भगवद्दर्शन विना विनको चित्त दूसरे ठिकाने जातो न हतो ॥ ऐसे करत करत बहुत दिनवीते तब एक पंडित गंगाजीके तट पर तप करवेकुं आय रह्यो सो पंडित बहुत विद्वान हतो और सामुद्रिकशास्त्र पढ्यो हतो और वा ब्राह्मणके घरके पास रहतो हतो ॥ और वा पंडितकुं महाप्रसादकी पातर वे ब्राह्मण धरतो हतो पाछे एकदिन वा पंडितनें ज्योतिषके बलसूं तथा सामुद्रिकसूं ऐसे जान्यो जो या ब्राह्मणके ऊपर काल चोरीको मुद्दा आवेगो और राजाके मनुष्य पकड ले जायंगे और राजाके हुकुमसों या ब्राह्मणकुं फांसी देवेंगे ॥ सो पंडित अपनें मनमें अनेक संकल्प विकल्प करवे लगे दसघडी दिन काल चढेगो तब या ब्राह्मणके प्राण जाएंगे ऐसे विचार करत वा पंडितको सगरो दिन गयो सो वे जब समय

यकी निवृत्ति नहीं होयहै मेरी रोमरोममें कीडा पडने चहीये जब मेरो अपराधनिवृत्त होयगो ऐसें अनन्यताके बचन सुनिके श्रीरामचंद्रजी हस्ये और आज्ञा करी जो जाओ श्रीनाथजीके दर्शन करो श्रीरामचंद्रजीके वचन सुनके वाको कोढ मिटगयो और आयके श्रीनाथजीके दर्शन करे सो वे वैष्णव ऐसे अनन्य हते विनकी अनन्यता देखिके श्रीनाथजी वडे प्रसन्न भए ॥ और सब प्रकारसुं अनुभव जताए ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४१ ॥ ❀

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक कुनबी पटेल हतो तिनकी वार्ता ॥ सो वैष्णव गुजरातके संगमें व्रजजात्राकूं चले ॥ रस्तामें वा संगके वैष्णवनकी मेहेनत मजूरी करत चल्यो ॥ जब श्रीजीद्वार एकमजल रह्यो जादिन वा वैष्णवकुं ज्वर आयो जब वानें सबकों कही जो मोकुं काल गाडीपर बेठाइयो ॥ परंतु वाकी बात कोईनें सुनी नहीं तब वाकुं चिंता उत्पन्न भई जोमोकुंसबारें श्रीनाथजीके दर्शन कैसें होयंगे या चिंताके लीयें वाकुं आखी रात नीद नहीं आई ॥ वाकी चिंता श्रीनाथजी सहि न सके जब श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीसों कही जो वाकुं बहुत चिंता मेरे दर्शनके लीयें भईहै जासूं मोकुं नीद नहीं आवेहै ॥ ये बात सुनके श्रीगुसांईजीनें कही आप सुखसें पोढें वह सबसों पहेले आय जायगो ॥ जब श्रीगुसांईजीनें वाकुं गाडी भेज सबसूं पहेलें बोलायलिये और श्रीनाथजीके दर्शन कराए ॥ दर्शन करत मात्र वाकी देहदशा भूलगई जब श्रीगुसांईजीनें याकी ये व्यवस्था देखिके

चरणस्पर्श कराए ॥ तव वाकुं स्मृति आई जव श्रीगुसां-
ईजीकुं साष्टांग दंडवत करी जव श्रीगुसांईजीनें वासों
सव समाचार पूंछे जव वे संग आयो जव श्रीनाथजीनें
श्रीगुसांईजीसों कही इनको दर्शन मत करन देवो जव
श्रीगुसांईजीनें वीनती करी जो जीवतो सदैव अपराधसुं
भरेहे इननें वैष्णव जानके अपराध नहीं कियोहै ॥ जब
श्रीनाथजीनें कही अब इनको दर्शन करावो वैष्णव जा-
नके अपराध करे तोमें अंगीकार न करुंगो फेर श्रीगुसां-
ईजीनें विनकुं समझाये आज पीछे कोईदिन वैष्णवको
अपराध मत करियो ऐसे समझायके फेर विनकूं दर्शन
करवेकी आज्ञा भई सो पटेल श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपा-
पात्र हतो ॥ जिनकी आर्ती श्रीनाथजी न सहि सके ॥
वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४२ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक साहूकारके बेटाकी

वहूकी वार्ताः—सो वे वहू एकदिन बारीमें बैठीहती ॥ सो
एक तुरकनें देखी सो वा तुरककी वामें आसक्ती भई ॥
वा वहूको देखे विना वो तुरक जल नलेवे जव गाममें
वहुत चर्चा होवे लगि और ज्ञातमें निंदा भई जब वा
वहूके घरके मनुष्य वा वहूकूं श्रीगोकुल लेगये ॥ या
वातकी खबर तुर्ककुं परी सो वे विनकेपाछे दौर्यो ॥ सो
रस्तामें जाय मिल्यो ॥ वे लोग कहेने लगे जा दुखके
मारे घर छोडयो सो दुख तो साथ मे आयो ऐसे करते
श्रीगोकुल पहुंचे फेर नाववालेकूं वा साहूकारनें कही
याकूं पार मत उतारियो ॥ सो वह तुरक यमुनाजीके

किनारे बैठ रह्यो ॥ वा साहूकारनें जायके श्रीगुसांईजीके तथा श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये ॥ जब वा साहूकारनें महाप्रसाद लेवेकि तैयारी करि तब श्रीगुसांईजीनें पांच पातर धराई ॥ वा तुर्ककुं मनुष्य पठाय श्रीगुसांईजीनें बुलाय लियो जब वे पांचजने दूरदूर प्रसाद लेवे बैठे श्रीगुसांईजी विनके सामें आयके विराजे ॥ सो वे चार जनेतो प्रसाद लेके उठे और वा तुर्ककी दृष्टी और मन तो श्रीगुसांईजीके चरणारविंदमें लग रह्यो ॥ और कछू देहानुसंधान रह्यो नहीं जहां सुधी श्रीगुसांईजी वा तुर्कके सामें बिराजे रहे ॥ जबसूधी दर्शन करत रह्यो जब श्रीगुसांईजी उठके भीतर पधारे तब वाकीदेह छूटिगई ॥ ये बात श्रीगुसांईजीनें जानी जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी वा तुर्ककुं अग्निसंस्कार कराओ ॥ या बातको कारण वैष्णवननें श्रीगुसांईजीसों पूंछो तब श्रीगुसांईजीनें कही ये आगले जन्ममें ब्राह्मण वैष्णव हतो ये वहू वाकी स्त्री हती ॥ सो एकदिन एक वैष्णवसुं एकांत भगवद्वार्ता करत हती वामें कछू दोष हतो नहीं तब याके मनमें वा वैष्णव ऊपर या स्त्रीकोदोष आयो हतो या अपराधतें याको म्लेच्छके घर जन्म भयो और वाकी स्त्री हती सो या क्षत्रीके बेटाकी स्त्री भईहै जब या वहूकुं यानें देखी तब वा तुर्ककुं याके नेत्रनमें श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन भये जासुं या वहूमें वाको मन लग गयो जब श्रीगोकुल आयो यमुनाजलपान कर्‍यो तब याको अपराध निवृत्त भयो अब ये भगवल्लीलामें प्राप्त भयो है ॥ ये बात सुनके

वाःवहूकुं विरहताप भयो जब वाकी देह छूटगई ॥ सो वे भगवल्लीलामें प्राप्त भई ॥ सो वे वहु श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४३ ॥ ❀ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक साठोदरा नागर गुजरातके वासी तिनकी वार्ताः– सो वे वैष्णव जा गाममें रहते वा गाममें एक दूसरो वैष्णव रहेतो हतो सो दोनो परस्पर मिलाप राखते हते और हिलमिलके भगवत्सेवा करते हते सो एकदिन दोउ जनें जल भरके आवते हते रस्तामें एक वेश्याको घर हतो वाकी बेटी नृत्य करती हती सो साठोदरा वैष्णवनें देखी सो वेश्याकी बेटी दैवी जीव हती जासुं वे देखवेकुं ठाढे रहि गये तब दूसरो वैष्णव अपनें घर आयो वह दूसरो वैष्णव मनमें समझ्यो ये विपईहैं याको संग न करनो और स्त्रीसों कहि जो साठोदरा वैष्णव मोकुं वोलायवे आवे तो तुम कहियो घरमें नहिं है पीछे वा साठोदरा वैष्णवनें वेश्यासों ठराव करके वाकी बेटीकुं घर ले आये रात्रीकुं न्हवायके शृंगार करायके और अष्टाक्षरमंत्रसुनायके श्रीठाकुरजीके संनिधान नृत्य करायो और श्रीठाकुरजी वाको गान सुनके बहुत प्रसन्न भये और वेश्याकी बेटीमें इतनी सामर्थ्य भई जो संस्कृत वोलवे लगी और भगवद्रूपमें मन लग्यो और वा वैष्णवको बहुत उपकार मान्यो और द्रव्य न लियो और मनमें ये विचार कऱ्यो जो नित्य ऐसे वैष्णवनको सत्संग होय तो बहुत आछौ और वेश्याको कर्म छोड दियो और वा वैष्णवको सत्संग करवे लगी

फेर वह दूसरो वैष्णव जो गाममें रहेतो हतो वाकी स्त्रीकुं श्रीठाकुरजीनें कही मैं अब तुमारे घरमें नहीं बिराजूंगो तुमनें वा साठोदरा वैष्णवको वृथा दोष देख्यो है तब वो वैष्णव साठोदरा वैष्णवके पांवन पऱ्यो और अपराध क्षमा करायो जबसुं साठोदरानागर और दूसरो वैष्णव तथा वेश्याकी बेटीदोनो मिलके भगवद्वार्ता नित्य करते सो वा साठोदरा वैष्णवके संगतें वेश्याकी बेटी परम वैष्णव भई तातें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४४ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वेश्याकी बेटी ति०

वा वेश्याकी बेटीनें साठोदरा वैष्णवके घर श्रीठाकुरजीके आगें आखीरात नृत्य कऱ्यो जब सवारो भयो तब वाकुं कछु देहकी शुद्धी रही नहीं भगवदावेशमें मग्न भई तब डेढ़पहेर दिन चढ गयो वाके घरके बुलायवे आये जब कछु बोले नहीं और कछु सुनेहुं नहीं फिर वाके घरके मनुष्य वाकुं पकडके लेगये सो घरमें जाय बावरी होय गई कछु खाय नहीं बोले नहीं सो घरके आदमीनकी दृष्टी बचायके वा वैष्णवके घर आई उहां आछी रीतसूं बोली और भगवद्वार्ता करी और प्रसाद लियो या रीतसूं नित्य करे वाके घरके मनुष्यननें राजद्वारमें पुकार करी जो या वैष्णवनें हमारी बेटीकुं बावरी करदीनी है जब राजाके मनुष्य वा वैष्णवकुं पकडके लेगये जब राजानें वा वैष्णवकुं देख्यो तो वैष्णव परम भगवदीय हतो भगवत्तेज वाके मुखपर बिराजे है तब राजा बोल्यो ये झूठी बात है ये

मंत्र जंत्र कछु करै नहीं वो वैष्णव अपने घर आयो और वेश्याकी बेटीकुं वाके घरके मनुष्यननें बावरी जानके निकास दीनी अब वे बाई वैष्णवके घरमें आयके रही इतनेंमें श्रीगुसांईजी पधारे वा बाईकुं नाम निवेदन करायो जब वे बाई फेर वैष्णवके घर प्रचारगी करवे लगी एकदिन वा साठोदरा वैष्णवकुं श्रीठाकुरजीनें कही जो मेरी सेवा शृंगार ये बाई करेगी और तुम रसोईकी सेवा करो जब ये वैष्णव बहुत प्रसन्न भयो और वह बाई शृंगार करन लगी और वे रसोई करन लग्यो और जब वे वैष्णव व्यावृत्तीकुं जाय तब वा बाईसुं श्रीठाकुरजी बोलें बतलावें सो वे बाई श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भई जासुं वैष्णवको संग सर्वथा करनो॥वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव। ४५।

॥श्रीगुसांईजीके सेवक वाघजीरजपूत ति०॥

सो वे वाघजी रजपूत तथा विनकी स्त्री घरमें श्रीठाकुरजी पधरायके भलीभांतिसुं सेवा करते हते और एक दो वैष्णवनकुं नित्य नेमसो प्रसाद लेवावत हते एकदिन वाघजीनें एक वैष्णवकुं न्योतो दियो और तवापूरीकी सामग्री कराई सो वा दिन शृंगार करके वाघजीरजपूत राजाकी असवारीमें गयो घरमें घी थोडो हतो सो वाघजीकी स्त्रीनें थोडो घी राजभोगमें धर्यो तब वाघजीके श्रीठाकुरजीनें वाघजीकुं जताई जो घी थोडोहै और तवापूरी गलेमें चुभतहै तब वाघजीकुं बडी आतुरता भई जब तहांसुं दोडे और बजारमेंसुं घी लेके और दोडके श्रीठाकुरजीके आगें धर दियो सब कपडा पेंहेरे मंदिरमें

चले गये कछु सुध न रही श्रीठाकुरजीकुं श्रम होवेगो ये बात ध्यानमें रही अनाचार मीलेगो येबात ध्यानमें न रही तब घी घरके फिर राजाकी अस्वारीमें गयो वा समें वो वैष्णव वहां बैठो हतो वाके मनमें ऐंसी आई जोडी पेहरके मंदिरमें जायके घी धऱ्यो जासुं ये आचार विचार कछु राखे नहींहै इनके घरको प्रसाद लेनो नहीं ये बिचारके उठगयो फिर वाघजी जब आयो वा वैष्णवकुं बुलायवे गयो जब वे वैष्णव छिपगयो फिर वाघजी घरमें आय दोनो स्त्रीपुरुष सूंखे रहे ऐंसे तीन दिनसूधी वह वैष्णव आयो नहीं सो वाघजी तीन दिन सूधी सूंखे रहे जब वा वैष्णवके श्रीठाकुरजीनें स्वप्नमें वाकी स्त्रीकुं जताई जो मैं तुमारे घरते जाउंगो तुमनें वाघजी ऊपर वृथा दोष धऱ्यो हैवाको चित्ततो मेरेमें लग्योहतो और देहको भान कछु हतो नहीं जासुं तुमारे घर नहीं विराजुंगो ये सुनके वा वैष्णवकी स्त्री जागपडी और अपने पतीसों कह्यो जब वो वैष्णव आयके वाघजीके पांवन पऱ्यो और अपराध क्षमा करायो और दोनोनें मिलके महाप्रसाद लियो सो वे वाघजी ऐंसे कृपापात्र हते जिनका दुःख श्रीठाकुरजी सहि न सके इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४६ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक अजबकुंवरबाई ति० ॥

सो वे अजबकुंवर बाई मेवाडमें रहेती हती मीरांबाईकी देरांनी हती और उहां एक दिन श्रीगुसांईजी पधारे जब अजबकुंवर बाईकुं साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये

जब अजबकुंवर श्रीगुसांईजीकी सेवक भई और अष्टप्रहर श्रीगुसांईजीके चरणारविंदमें चित्त लग्यो रहे जब श्रीगुसांईजी पधारवे लगे तब अजबकुंवर बाईकुं मूर्छा आई तब श्रीगुसांईजी वाकी ऐंसी दशा देखके चारदिन उहां बिराजे और अजबकुंवर बाईकुं पादुकाजी पधराय दीये तब अवजकुंवर बाई शुद्ध पुष्टिमार्गकी रीती प्रमाणें सेवा करन लगी और श्रीनाथजी अजबकुंवरबाईके संग नित्य चोपर खेलते और अजबकुंवरबाईके मनमें ऐंसी हती जो श्रीनाथजी सदैव इहां विराजें तो आछो एक दिन अजबकुंवरबाईके ऊपर श्रीनाथजी प्रसन्न भये और कही जो कछु मांग तब अजबकुंवरनें माग्यो जो आप सदा इहां विराजो तब श्रीनाथजीनें कही श्रीगुसांईजी और श्रीगुसांईजीके सात लालजी जहां सूधी भूतल ऊपर मेरी सेवा करेंगे तहांसूधी गोवर्धन पर्वत नहीं छोडूंगो फेर पीछे इहां पधारुंगो और तहांसूधी नित्य आवजाव करूंगो ऐंसे बचन सुनके अजबकुंवरबाई मनमें बहुत प्रसन्न भई जासुं श्री नाथजी मेवाडमें अजबकुंवरबाईको बचन सत्य करवेके लीयें अबसूधी विराजेहें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४७ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीकी सेवक बीरबलकी बेटी ति० ॥

एकदिन श्रीगुसांईजी आगरे पधारे हते बीरबलकी बेटीकुं श्रीगुसांईजीके दर्शन साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके भये जब बीरबलकी बेटी श्रीगुसांईजीकी सेवक भई और नित्य कथा सुनवेकुं श्रीगुसांईजीके पास जाती और कथामें जो

सुनती सो मनमें लिख राखती एक अक्षर भूलती न हती और दिवस रात वा कथाको अनुभव करत हती,एकदिन बीरबलकुं पादशाहनें पूंछी के साहेबको मिलनो कैसे हो-वेहें ये निश्चयकरके हमकुं कहो तब बीरबलनें सब पंडित और महंतनसुं पूंछी परंतु विनकी कही कछु नजरमें आई नहीं ॥ तब बहुत चिंतातुर भये और ऐंसो डरलग्यो जो पातशाह लूट लेवेगो जब बेटीनें कही याको उत्तर श्रीगु-सांईजी देवेंगे जब बीरबल श्रीगोकुल आये श्रीगुसांईजी कुं बीनती करी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो उत्तर पादशाहकुं एकांतमें देउंगो जब बीरबलनें पादशाहसों कही तब पादशाह श्रीगोकुल आये बीरबलहुं संग आये जब बीरबल आयके पादशाहके डेरापर श्रीगुसांईजीकुं पधरायलेगये जब पादशाहनें एकांतमें श्रीगुसांईजीसों पूंछी जो साहेब कैसे मिलेंहें सो उपाय बतावो जब श्रीगु-सांईजीनें लौकिक रीतसों उत्तर दियो, कही जेसें तुम हमकुं मिले ऐसे साहेब मिलतेहें तब पादशाहनें कही याको कारण समझावो,तब श्रीगुसांईजीनें कही हम हजारन उपाय करें तो तुमको मिलनो कठिन है और तुम वि-चाऱ्येतो घडीहुं न लगी तुर्त हमकुं मिललिये ऐसें जीव हजारन उपाय करे तोहुं साहेब नहीं मिलता है और सा-हेब विचारे तो झट जीवकुं अपनो करलेवे है, जीवके हाथ कछु नहीं है साहेबकी मर्जी होवे तो क्षणएक न लगे ये सुनके पादशाह बहुत प्रसन्न भये और श्रीगुसांईजीकुं दं-डवत करी और बीनती करी जो कछु मेरो अंगीकार करो

तव श्रीगुसांईजीनें कही जो हमकुं गोपालपुर एक घंटामें पहोंच्यो जाय एंसी अस्वारी होवेतो ठीक जव पादशाहनें एंसो घोडो भेट कर्यो जो एक घंटामें दशकोष जाय और घोडाके खरचमें श्रीगोकुल और गोपालपुर ये दो गाम दीये और दंडवत करके आगरेमें गये वा घोडापर बैठके श्रीगुसांईजी नित्य गोपालपुर पधारते और पाछे श्रीगोकुल आयजाते वा घोडाकी वात गोपालदासजीनें सप्तमवल्लभाख्यानमें गाईहै॥"तुरंग चाले वायुवेगें उतावला जाणे नौका चाली सिंधु तरवा"॥ एंसी रीतीसुं गोपालदासजीनें वर्णन कर्यो है सो वीरवलकी वेटी एंसी कृपापात्र हती और श्रीगुसांईजीके उपर एंसो विश्वास हतो इनकी वार्ता कहा कहिये॥वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव४८॥

॥ श्रीगुसांईजीकी सेवक एक कूंजरी तिनकी०

एकदिन श्रीगुसांईजी गोपाल पुरतें श्रीगोकुलपधारते हते रस्तामें एक कूंजरी प्यासमों घवरायके पडी हती तव श्रीगुसांईजीनें खवाससों कहि ये कौन पडी है तव खवासनें कहि प्यासके मारे या लुगाईके प्रान निकसेंहैं तव आपनें खवाससुं कही आपणी झारीमेंते याकुं जल प्यावो तव खवासनें कही झारी छिवाय जायगी तव श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो झारीतो दूसरी आवेगी परंतु याके प्राणतो बचेंगे तव वाकुं जल प्यायो जब वो चेतन भई फिर वे कूंजरी अपनो सव द्रव्य लेके श्रीगोकुलमें आयके रही दिनकुं दुकान मांडके बैठे रातकुं गामबहार जायके रहे कारण जो श्रीगोकुलमें बडी जातवालेकुं रात रहेवेको

पृथ्वीपती अकबर बादशाहको हुकम न हतो सो ऐंसेमें कुंजरी बाहेरसों उत्तम मेवा लायके श्रीगोकुलमें बेचे और जो कोई मंदिरमें मेवा पहोंचावे वाके पास दाम थोडे लेवे मनमें ऐंसे समझे जो मेरो द्रव्य या रीतसुं अंगीकार होयगो ऐंसे करत करत वा कूंजरीनें आखो जन्म श्रीगोकुलमें संपूर्ण कर्यो और श्रीगुसांईजी यमुनाजीके घाटपर पधारते जब वा कूंजरीकुं नित्य दर्शन होते सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके होते जासुं वे कूंजरी श्रीगुसांईजीकुं पूर्णपुरुषोत्तम जानके श्रीगोकुलमें रही हती जहां-सूधी वाकी देह रही तहांसूधी वाकुं वेसेही पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन होते सो वे कूंजरी श्रीगुसांईजीकी एसी कृपापात्र भगवदीय हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४९ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक प्रेत हतीत पतीत दृय भाईतिनकी वार्ता॥ दोऊ हतीत पतीत महानदीके तीरऊपर रहेते हते जो कोई रस्तामें निकसतो जाकुं मारडारते ऐंसे सब लोगनकुं खबर पडी सो वे रस्ता उजाड भयो कोई आवतो जातो न हतो वा ठेकाणेसुं चार चार कोश सूधी उजाड भयो हतो कोई खेती करवेहु न आवतो वे ऐंसे प्रेत जबर हते कोई मंत्र जंत्रके वश न हते, जो कोई जातो ताकुं मारडारते सो एकदिन चाचाहरिवंशजी गुजरातते श्रीगोकुल जाते हते सो भूलकेवे रस्ता निकसे तब दोनो प्रेत पर्वत बनके रस्तापर आयके पडे एकतो जायवेके रस्तापर आयके पड्यो और दूसरो पाछें फिरवेके रस्तापर आयके पड्यो तब चाचाजीनें

जान्यो केये कोई प्रेतहैं जब चाचाहरिवंचजीनें चरणामृत मिलायके विनके ऊपर जल डान्यो तब विननें चाचा-हरिवंशजीको प्रताप जान्यो ये कोई बडे महापुरुषहैं हाथ जोडके वीनती करन लगे कहीजो हमारो उद्धार करौ, चाचाहरिवंशजीनें विनकुं अष्टाक्षर मंत्र सुनायो नाम-सुनतहीं विनकी दिव्यदेह भई और भगवल्लीलामें प्रवेश भये फेर चाचाजी श्रीगोकुल गये और श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी सोवर्ष पहेले ये दोऊ ठग हते और वैष्णवको वेष बनायके फिरते हते एक ठिकाणे वैष्णवके घर जायके उतरे हते सो वैष्णवतो घरमें हतो नहीं वाकी स्त्री हती सो रातकुं वाके घर रहिके वा स्त्रीकुं मारके गहेनो लेगये, फेर रस्तामें विनकुं चोर मिले सो चोरननें विनकुं मार डान्ये गहेनो लेगये जैसो विनने कन्यो तैं सो भुक्त्यो तो सही परंतु वैष्णवकुं मान्यो हतो और वैष्णव बनके ठगाई करते हते या अपरा-धतें प्रेत भये हते जो तुम इनको उद्धार न करते तो कल्पप-रसूधी प्रेतरहेते वैष्णवको अपराध ऐसोहै सो वैष्णवविना वैष्णवको अपराध क्षमा करवेकुं कोई सामर्थ्य नहींहै श्री-ठाकुरजीहु क्षमा न करें ये बात अंबरीषके आख्यानमें प्र-सिद्धहे जासूं वैष्णवके अपराधसूं डरपतरहेनो ऐसे चाचाह-रिवंशजीकुं श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ये सुनके सब वैष्णव प्रसन्न भये सो वे हतीत पतीतकुं चाचाहरिवंशजीनें श्रीगु-सांईजीकी कृपातें उद्धार कियो और गोपालदासजीनें ऐसे वल्लभाख्यानमें गायोहै ॥ हतीत पतीतनो जुओ

तुमें प्रकटइंधाण ॥ सो वे श्रीगुसांईजीकी कृपातें भगव-
ल्लीलामें प्रवेश भये ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ ९० ॥ ❀
॥ श्रीगुसांईजीके सेवक गंगाबाई क्षत्राणी-
तिनकी वार्ता ॥ सो गंगाबाईकी माता महावनमें रहेती
हती और श्रीगुसांईजीकी सेवक हती और श्रीगुसांईजी-
के स्वरूपमें चित्त लग रह्यो हतो और वाके मनमें श्री-
गुसांईजीके स्वरूपमें कामबुद्धि रहेती हती परंतु श्रीगुसां-
ईजीकीतो ऐसी प्रतिज्ञा हती जो परस्त्रीके सामें काम दृ-
ष्टीसों देखनो नहीं ये बात वे क्षत्राणी महावनवालीकी
श्रीगुसांईजीनें जानी तब श्रीगोकुलमें आयवेको वा क्ष-
त्राणीकुं बंदकर्‍यो ॥ बार वर्ष पर्यंत श्रीगोकुलमें न आ-
यवेदीनी सो महावनमें विप्रयोगकी भावनासूं श्रीगुसां-
ईजीको ध्यान करत हती ॥ एकदिन वाकूं स्वप्न भयो
जब वाकूं गर्भस्थिति भई सो वे गंगाबाई जन्मे तब ति-
नकी मातातो भगवल्लीलामें प्राप्त भई सो गंगाबाई जब
बडि भई तब वे गंगाबाई श्रीगुसांईजीकी सेवक भई और
महावनसुं गोपालपुरमें आयके रही हती और तिनसुं
श्रीगोवर्धननाथजी हँसते खेलते बातें करते सब लीलाके
दर्शन करावते और गंगाबाई तैसि लीलाके पद बनायके
श्रीनाथजीके आगें गावति और गंगाबाईनें जितने पद
बनाये ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरन ऐसी छापधरीहे और सोळेसें
अठ्ठाईशमें तिनको जन्म हतो और सत्रेंसो छत्तीश वर्ष-
सूधी वे भूतल पर रही हती एकसो आठवर्ष सूधी रही
हती और मेवाडमें श्रीनाथजीके संग आई हती सो इन-

की विशेष वात श्रीनाथजीके प्राकट्यमें लिखीहै एकदिन श्रीनाथजीनें श्रीहरिरायजीकुं मेवाडमें कही जो गंगा वाईकुं वस्त्र आभूषण अतिसुंदर पहिरायके रातकुं जगमोहनमें वैठाय देवो तव वैठायदीनी तव रातकुं जगमोहनमें ते श्रीनाथजी गंगावाईकूं देहसहित लीलामें लेगये सो वे गंगावाई श्रीनाथजीके ऐसि कृपापात्र भगवदीय हती तातें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ५१ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

॥एक श्रीगुसांईजीके सेवक राजा तिनकीवार्ता

सो वे राजाको मन दिवसरात भगवत्सेवामें हतो भगवत् उपयोग विना द्रव्य खरचतो न हतो और वृथालाप वृथाक्रिया वृथाध्यान तीनो करके रहेत हतो लौकिकमें अवश्य होवे वितनो वोले, वैष्णवको संग दिवसरात छोडे नहीं और वैष्णव विना कोईके ऊपर रीझे नहीं वा राजाके गाममें एक भवैया आयो सो भवैया वहोत चतुर हतो और खेलमें ऐसो चतुर हतो जो सवकुं रीझावे बहुत दिन सूधी वा गाममें रह्यो परंतु वाको राजा खेल देखे नहीं वे भवैया ऐसो प्रयत्न करनेलग्यो जो कोई उपायसुं राजा मेरो खेल देखै तो ठीक सो वा भवैयानें राजाके कामदारनकुं मिलके ऐसो प्रयत्न करके राजा खेल देखे ऐसो ठराव कर्‍यो जब वो भवैया रातकूं ख्याल करन लग्यो और सब कामदार तथा राजा खेल देखवे वैठे सो वा भवैयानें बहोत खेल करे और बहुत तऱ्हेंके स्वांग बनाये परंतु राजा रीझ्यो नहीं ॥ वा

भवैयाकूं मनमें बडो पश्चात्ताप भयो और राजाके मनुष्यनसूं पूछन लग्यो जो राजा कोनशी रीतीसुं रीझेगो सो तुम बतावो तब राजाके खवासनें कह्यो जो वैष्णव विना राजा औरके ऊपर न रीझेगो तब राजाके मनुष्यनके सिखायेतें वे भवैया वैष्णवको स्वांग पेहेरके तिलक मुद्रा माला धरके राजाकी सभामें आयो तब राजानें उठके वा वैष्णवकूं साष्टांग दंडवत कर्‍यो और छातीसुं लगायके मिल्यो और गादीपर बैठायके आप राजा पंखा करन लग्यो और वा वैष्णवसुं भगवद्वार्ता करन लग्यो और भंडार खोलाय दियो और जो चहिये सो लेवो ऐसे कहेके वा वैष्णवकी बहुत टहेल करी यद्यपि राजा जानतो हतो जो ये भवैया है और वैष्णवको स्वांग बनायके आयो है तोहूं राजाको वैष्णव वेषपर ऐसो विश्वास हतो जैसे साक्षात् श्रीठाकुरजी ऊपर होवे ॥ सो वे राजा हरीगुरु वैष्णवमें भेद रंचकहूं जानतो न हतो तातें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ५२ ॥❋ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक **दयाभवैया** तिनकी वार्ता ॥ सो वा दया भवैयानें वैष्णवको स्वांग धरके और राजाकुं रिझायके और राजासूं विदाहोयके अपने डेरापर चल्यो ॥ मनमें ऐसो विचार करन लग्यो जो बहुत दिनकी मेहेनत सफल भई जब रस्तामें पाछे देखे तो चार स्त्री संग पाछे चली आवतिहे और भवैया ठाडो रहेतो चार स्त्री ठाडी रही जाएं और वेचले तो संग चलवे लगजाएं ॥ सो देखके वाके मनमें आश्चर्य

भयो ये कौनहै फेर वे भवैया तिनस्त्रीनसुं पूंछवे लग्यो जो तुम कौनहो और मेरे संग काहेकुं आवत हौ जब वे स्त्री बोलवे लगी जो हम चार हत्या हैं तेरे शरीरमें सदा रहेंहैं जब तुं मरेंगो तब तोकुं नरकमें लेजाएंगी और अब तैने वैष्णवको वेष धारण कर्योहै जासुं तेरे शरीरमेंसुं हम बाहिर निकसीहैं वैष्णवसुं हम बहुत दूर रहें हैं वैष्णवकी दृष्टीमें हम आवेंतो भस्महोयजाएंहै ये बात सुनके दयाभवैया पाछें फिर्यो और जायके राजाके पांवन पर्यो और कही जो हमकुं वैष्णव करों और सब वृत्तांत हत्यानको कह्यो जब राजानें उठके तिन चारस्त्रीनकुं देख्यो वे तुरत भस्महोयगई तब दयाभवैयाकुं श्रीगुसांईजीको पत्र लिखदेके अडेल पठायो सो वे दया भवैया जायके श्रीगुसांईजीको सहकुंटुंब सेवक भयो और श्रीठाकुरजी पधरायके भगवत्सेवा करन लग्यो सो कितनें दिन अडेलमें रहिकेपुष्टिमार्गकी सेवाकी रीत सीखके फिर वा राजाके पास जंन्मसूधी रह्यो और दोनो मिलके भगवद्वार्ता करें और वा भवैयाकूं ऐसो निश्चय भयो जो वैष्णवधर्मतें अन्य धर्म सब तुच्छहैं जो मैंने वैष्णवको झूठो वेष पेहेर्यो तो हुं हत्या दूर भागगई और साचो रहुंगो तो श्रीगुसांईजीकी कृपातें निश्चय करके मोकुं भगवल्लीलाकी प्राप्ती होयगी ऐसे करत करत वा भवैयाकुं भगवल्लीलाकी स्फूर्ती भई और श्रीठाकुरजी सानुभाव जनावन लगे सो वे दयाभवैया वा राजाके संगतें परम भगवदीय भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ५३ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक कुणबी गुजरातके वासीकी वार्ता–सो वे वैष्णव तादृशी हतो ॥ श्रीठाकुरजी विनकुं सानुभाव जनावत हते सो वैष्णव चाचाजीके संग श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं व्रजमें गयो रस्तामें एक गाम हतो वा गाममें एक ब्राह्मणी हती वा ब्राह्मणीकुं गलित कोढ भयो हतो और कीडा पडगये हते सो वा ब्राह्मणीको बेटा नदी ऊपर माकुं धोवेकेलियें लेगयो हतो तब वे कुणबी वैष्णव न्हाय पेहेले धोती धोवतो हतो सो वाकी धोतीके छींटा वा ब्राह्मणीके ऊपर पडे सो जा ठिकाणे छींटा लगे इतने शरीरमेसों कोढ मिटगयो तब वे ब्राह्मणी वैष्णवके पांवन पडी और कह्यो जो मेरे शरीरकी ये व्यवस्थाहै परंतु तुमारी धोतीकी छींटतें मेरो शरीर इतनो नीको भयोहै तब वा कुणबी वैष्णवनें कही मैंतो शूद्रहुं तुम ब्राह्मण होयके मेरे पांवन मति पडो जब वा ब्राह्मणीनेंहाथ जोडके कही तुमतो बडे महापुरुषहो मेरो दुःख तुमबिना दूसरो कोई दूरकरवेकुं सामर्थ्य नहीं है जासुं मेरे ऊपर कृपा करो तब वे वैष्णव ब्राह्मणीकुं चाचाहरिवंशजीके पास लेगयो और सब वृत्तांत कह्यो तब चाचाजीनें वाकुं नाम सुनायो और चरणामृत दीयो तब वा ब्राह्मणीको सब कोढ मिटगयो और सब अंग नीको भयो जब वह ब्राह्मणी आछी रीतीसुं अपने घरगई वाको शरीर नीको भयोदेखके वा गामके लोक सब मिलके चाचाहरिवंशजीके पास आयके पांवन पडे और सबने नामसुन्यो और पुष्टिमार्गकी रीती शीखे और सब गामके लोग वै-

ष्णव भये और वे ब्राह्मणी तथा वाको बेटा वा वैष्णवके संग श्रीगोकुल गये जायके श्रीगुसांईजीके सेवक भये श्रीनवनीतप्रियाजीके तथा श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन करके बहुत प्रसन्न भये और व्रजयात्रा करके श्रीठाकुरजी पधरायके अपने देशमें आये सो वे कुणवी वैष्णव ऐसे कृपापात्र हते जिनकी धोतीके छींटानतें कोढ मिटगयो तातें इनकी वार्ता कहा कहिये॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव॥५४॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक बाईक्षत्रानी की वार्ता ॥ वे क्षत्राणी मोरी वहोत हती और श्रीठाकुरजीकी सेवा भलीभांतिसों करत हती और श्रीठाकुरजी विनकुं बालभाव जनावत हते और छातीसुं लपटते और गोदमें बैठते और घडी घडी भूखे होयके खायवेकुं मागते और वे बाईकुं वहार जावे देते नहीं और जब वे बाई बाहेर जाती तो श्रीठाकूरजी रुदन करते या रीतसुं बालभाव जनावते एकदिन घरमें बिलाई लडवे लगी जब श्रीठाकुरजीनें वा बाईसुं कही मैं बहोत डरपतहुं ऐसे कहिके वा बाईकी छातीसुं लपट गये जब वा बाईनें कही जो तुमनें पूतना आदिक दैत्य मारेहैं जबतो डरपे नहीं अब काहेकुं डरपतहो तब श्रीठाकुरजी वा बाईसुं बोले नहीं तीन-दीन सूधी कछू मागेंहुं नहीं जब वा बाईनें बहुत प्रार्थना करके और रोवे लगी जब श्रीठाकुरजी फेर बोलवे लगे जासूं वैष्णवनकुं ऐसे विचार राखनो नहीं॥ श्रीठाकुरजीकुं भूख नहीं लगे है और शीत नहीं लगे और प्यास नहीं लगे ये सर्व सामर्थ्यहैं ऐसे विचारके जो श्रीठाकुरजीकी

सेवा करेंहें विनकी सेवा निष्फल होवेंहें श्रीमहाप्रभुजीनें निबंधमें कह्योहें ॥ सो श्लोक ॥ माहात्म्यज्ञानपूर्वस्तुसुदृढःसर्वतोधिकः ॥ स्नेहो भक्तिरितिप्रोक्ता तयामुक्तिर्नचान्यथा ॥ १ ॥ जासुं माहात्म्यज्ञान पूर्वक सुदृढ सर्वते अधिक स्नेह श्रीठाकुरजीमें राख्यो चहिये जैसे कोउ राजा होवे तो हु राजाकी माताके मनमें ऐसे रहे हे मेरो बेटा भूखो होयगो और मेरे बेटाकुं ठंड लगती होयगी यारीतीसुं वैष्णवनकुं श्रीठाकुरजी ऊपर स्नेह राख्यो चहिये सो वे वाईक्षत्रानी ऐसी कृपापात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ ८५ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक पटेलकी वार्ता ॥

सो वे पटेल गुजरातके संगमें श्रीगोकुलगये और श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीगुसांईजीके लालजी सात श्रीगुसांईजीकुं काकाजी कहेते हते सो पटेल विनबालकनके मुखतें सुनके श्रीगुसांईजीकुं काकाजी कहेते ॥ वा पटेलकुं ऐसो भोरो जानके श्रीगुसांईजीनें गायनकी सेवा करवेकेलीयें खिरकमें राख्यो ॥ सो वे पटेल गायनकी ऐसी सेवा करतो जैसे गाय सुखी होवें गायनके नीचे झाडतो और नित्य गायनके नीचे रेती बिछावतो और वे रेती नित्य बहार काढडारतो नित्य नई नई रेती बिछावतो वह पटेल मनमें ऐसे विचारतो के गायनके शरीरमें जीव न पडे और गायनकुं ठंड न लगे गायनकी ऐसीटेहेल देखके श्रीनाथजी वा पटेलपर प्रसन्न भये और वह पटेलगायनकुं घास धोयकेखवावतो कारण जो गाय-

नके दूधमें रज आवेगी तो श्रीनाथजी कैसे आरोगेंगे सो वे पटेल कोईदिन पातर लेवे जाय और कोईदिन नजाय गायनकी टेहेलमें अवार होंयजायतो पातरलेवे नजाय भूखो टेहेल कर्यो करे जब वाकुं श्रीनाथजी लडुवा देवे सो वे पटेल खायके गायकी सेवा कर्यो करे ॥ एकदिन वा पटेलसुं श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो तुं नित्य पातर लेवे क्युंनहीं आवेहै जब वा पटेलनें कही काकाजी महाराज कोईदिन श्रीनाथजी लडुवा देवे जब पातर लेवे नहीं आवुंहूं जब लडुवा न देवे तब पातर लेवे आवुंहूं ये बात सुनके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये और कही जो तेरी पातर नित्य खिरकमें पठावेंगे सो वे पटेल नित्य गायनकी टेहेल कर्यो करतो ॥ एकदिन वा पटेलनें कही जो अब मेरी पातर मति पठावो मोकुं श्रीनाथजी नित्य लडुवा देवेहैं ये सुनके श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुम लडुवा सब खायजावोहो कें कछु राखो हो॥ तब वानें कही आधों लडुवा मेरे पास है जब वे श्रीगुसांईजीनें आधो लडुवा मगायो ॥ देखेंतो शय्याभोगको लडुवाहै जब श्रीगुसांईजी देखके वाके ऊपर बहोत प्रसन्न भये॥ फेर एकदिन मेघ बहोत वरस्यो हतो जब वे पटेल भूखो रह्यो जब श्रीनाथजी झारीबंटालेके वा पटेलके पास आयके वाकूं लडुवा दियो और झारीबंटा उहां छोडके श्रीनाथजी गये ॥ जब वे पटेलझारीबंटा लेके श्रीगुसांईजीकी बैठकमें लायके श्रीगुसांईजीकुं दीये और कही जो रातकुं श्रीनाथजी खिरकमें भूलगयेहैं जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा

करी अब तुम सिंघपोरपें रखवारी करो तब वे पटेल सिंघपोरपर बैठे रहेते एकदिन श्रीनाथजी सिंघपोरतें बहार पधारन लगे तब वा पटेलनें नाही कही जो रातकुं गहेनो पेहेरके मतजाओ जो जाओगे तो काकाजी मेरे ऊपर खीजेंगे तब श्रीनाथजी पधारे ॥ तब वह पटेल पाछें गयो जब वृंदावनमें जायके श्रीनाथजीनें रास कन्यो तब वा पटेलकुं दर्शन भये और उहां आभूषण जो व्रजभक्तनके पडे सो सब पटेल बीनके लायो फेर लायके श्रीगुसांईजीके आगें धरे और कही जो श्रीनाथजी माने नहीं हैं और रातकुं मंदीरमेंसुं हजारन स्त्री श्रीनाथजीके संग गई हती जब खबर न पडी वे स्त्री कहांरहती होएंगी मैं विनको गहेनो बीनलायोहुं ये सुनके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये जब श्रीगुसांईजीनें मनमें विचार कन्यो जो याकुं स्वाभाविक प्रपंचकी स्मृती भूलगई है और भगवत्स्वरूपमें आसक्ति भई है याकुं गायनकी सेवातें निरोधसिद्ध भयोहे याके भाग्यकी बडाई कहा करनी जिनके अरसपरस श्रीनाथजी होय रहेहें विचारके वा पटेलकुं श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुं सिंघपोरीकी रखवारी कन्यो कर ॥ जहां श्रीनाथजीजाऐं विनकुं जायवेदीजो तुं नाहीं मतकरियो और तोकुं संग ले जाएंतो जईओ नहींतो मति जईओ ये सुनके वा पटेलनें वीनती करी गहेनोखोइ आवेतो कैसे करनो तब श्रीगुसांईजीनें कही हमारे घर गहेनो बहोत हैं जब सुनके वह पटेल चुपकर रह्यो और सिंघपोरीपर बैठो रहे-

तो जब श्रीनाथजी पधारते जब वाकुं जगायके कही जाते ॥ और इच्छाहोतीतो संग ले पधारते वे पटेल श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ ॥ वैष्णव ॥ ५६ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एकविरक्त वैष्णवकी०

सो वे वैष्णव व्रजमें पर्यटन करते सो चुकटी मागके निर्वाह करते ॥ एकदिन कोकिला वनमें रसोई करी वा दिन डोल उत्सव हतो सो वे भूलगये हते जब रसोई करचुके तब डोलउत्सव याद आयो जब बडो पश्चात्ताप कऱ्यो पाछें विचार कऱ्यो भगवद इच्छा ऐसी है जब कुंजकी लता बांधके डोल कऱ्यो और श्रीठाकुरजीकुं झुलायो और दार बाटी करी हती सो तीनो भोगनमें दार बाटी समर्पी सो या वैष्णवको ऐसो भाव देखके श्रीठाकुरजी बहुत प्रसन्न भये और श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयके श्रीगुसांईजीकुं जताये जब श्रीगुसांईजीनें मनमें ऐसी जानिके वा वैष्णवके धन्य भाग्य हैं फेर एकदिन वे वैष्णव श्रीगुसांईजीके पास गये तब श्रीगुसांईजीनें वा वैष्णवकुं डोलके समाचार कहे तब वा वैष्णवनें कही श्रीठाकुरजी जो कछु मानतेहैं सो आपकी कानतें मानतहैं यामें जीवकी सामर्थ्य कछु नहींहैं सो वे वैष्णव ऐसे कृपापात्र हते जिनके भावतें श्रीठाकुरजी वश्य होय गए हते सो वा वैष्णवको ऐसो भाव हतो तातें इनकी वार्ता कहांताई कहिये जाकुं देखके श्रीठाकुरजी प्रफुल्लित रहते हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ५७ ॥ ❀ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक विरक्त तिनकी ॥

सो वा वैष्णवनें ऐंसो नेम लीयो नित्य गिरिराजकी परिक्रमा करनी एंसे करते बहुत दिन वीते एकदिन वाके मनमें ऐंसी आई कोई दिन श्रीगुसांईजी मोसुं बोले नहींहें सो बहुत चिंता नित्य करे एकदिन वा वैष्णवके पांवमें ठोकर लगी जब परिक्रमा करवे न जायसक्यो वा दिन अन्नकूटको उत्सव हतो सो वा वैष्णवके मनमें ऐंसी आई जो या रस्ता ऊपर आज श्रीगुसांईजी पधारेंगे सो वे रस्ता झाऱ्यो और कांकर वीनडारे फेर गोवर्धन पूजाके दर्शन कीये और फेर श्रीगुसांईजीके दर्शन करवे गयो जब श्रीगुसांईजीनें कही आवो वैष्णव बैठो जब वा वैष्णवनें बीनती करी जो महाराजाधिराज कोई दिन आप मोसों बोले नहींहें आज कृपा करके बोलेहें याको कारण कहा जब श्रीगुसांईजीनें कही आज तुम पुष्टिमार्गकी रीतीप्रमाणें चलेहो जासुं हम प्रसन्न भयेहें जब वा वैष्णवनें वीनती करी जो मैं नित्य गिरिराजजीकी परिक्रमा करुंहुं जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो ये तो तेरी देहको साधन करेहें और आजतो तैंनें श्रीठाकुरजीको सुख विचाऱ्यो है पुष्टिमार्गमेंतो जेंसे श्रीठाकुरजी सुखी होवे वैष्णवकुं वैसीहीं कृती करणी चहीये ये सुनके वे वैष्णव बहुत प्रसन्न भये और सब साधन छोडके सेवा करन लगे सो वे वैष्णव ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ५८ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक क्षत्री ति० ॥

सो वे क्षत्री हीरानकी धरती परखतो हतो एक वरसमें व-

रसाद न वरस्यो सो वाकी खेतीमें कछु भयो नहीं और सरकारनें मसूलके पैसा मांगे सो वाके पास हते नहीं तब सरकारनें वाको घर लूट लीयो वाके घर कछु रह्यो नहीं फेर वाकी स्त्री चरखा कांतके जो कछु पैसा आवतो वासुं निर्वाह करते परंतु दोय मनुष्यनको चित्त ऐंसो रहेतो श्रीठाकुरजीकुं श्रम होवेहै ये विचार करकेये परदेश चल्यो सो जादेशमें हीरा होते हते वाई देशमें गयो उहां एक वेपारीसुं मिल्यो वासुं ठराव कर्यो जो में हीरानकी धरती परखुंहुं तुमकुं में जो धरती परखदेवुं सो तुमलेउ जो माल निकसे सो आधो मेरो और आधो तुमारो ऐंसे कबूल करायके वासुं धरती लेवाई सो धरती खोदाई ॥ जब माल वहुत निकस्यो ता पाछें वा वेपारीनें वा क्षत्री वैष्णवकुं कछु दियो नहीं फेर वे क्षत्रीवैष्णव दूसरे वेपारीसुं मिले वासों नक्की लिखत पढत करके फेर वा देशमें धरती लेवाई फेर वानें धरती खोदाई जब हीरा वहुत निकसे जब विनसुं आधो माल बाटके अपनें देशकुं चल्यो इतनेमें जो पेहेलो वेपारी हतो वाके घरमें अग्नी लगी सो सब माल जर गयो जब वे वेपारी आयके वैष्णवके पांवन पर्यो जो मेरो अपराध क्षमा करो अब मेरे पास कछु रह्यो नहींहै जब वा वैष्णवकुं दया आई फेर वाकुं धरती परख दीनी सो वैष्णवनके ऐंसे धर्महोवैहैं जो बुरोकरे तासुं भलो करणो फिर वह क्षत्री वैष्णव अपने देशकुं चल्यो दो चार नोकर राखके अपने देशकुं चल्यो जब रस्तामें एक तलाव जंगलमें हतो वा तला-

वके ऊपर ग्यारे ठग उतरे हते उहां क्षत्री वैष्णवनें डेरा कर्यो और अपनें मनुष्यनकुं कही तुम चार जने गाममेंसुं सामग्री ले आवो तब वे मनुष्य गये जब ठगननें ऐंसो विचार कर्यो याकुं मारके सब माल लेजाएंतो ठीक तब ठग मारवे लगे जब वैष्णवनें कही मोकुं न्हाय लेवे देओ तब ठगननें कही जो भलें ॥ फेर वे वैष्णव तलावमें न्हायवे लग्यो ॥ उहां न्हायके श्रीगुसांईजीको ध्यान कर्यो श्रीगुसांईजी परमदयालहैं भक्तविरह कातर करुणा मयहैं भक्तनकुं छोडे नहींहैं जहां तहां भक्तनके पाछें फिरेंहैं जासुं वा क्षत्री वैष्णवकुं वा तलावमें दर्शन दिये जब वा वैष्णवनें बीनती करी जो मेरो कहा अपराधहै तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ये आगले जन्ममें ग्यारें चोर हते और तुम सरकारकी नोकरीमें हते तब तुमनें इनकुं मारे हते अब ये तेरो वैर लेवेकुं आयेहैं इतनो आछो है जो एक जन्में ग्यार जने तुमकुं मारेंहैं नहीतो ११ जन्म तुमकुं लेने पडते और एक एक जन्ममें न्यारो न्यारो वैर लेते वो क्षत्री श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लेके बहार आय और विन ठगनसों कही अब तुम मोकुं मारो ॥ परंतु विन ठगननें श्रीगुसांईजीकी वाणी सुनी हती दर्शन न भये हते वा वाणी श्रवणके प्रतापतें विनकी बुद्धी निर्मल होय गई हती जैसे भगवानके पार्षदनकी वाणी सुनके अजामेलकी बुद्धि निर्मल भई हती जब यमदूत अजामेलकुं मारवे लगे हते तब भगवत् पार्षदननें छुडायो हतो वाही समय जो भगवत् पार्षदननें यमदूतनकुं भगव-

द्यश सुनायो हतो सो अजामेलनें सुन्यो अजामेलकुं अमृतको बिंद्रु पान कह्योहे सो श्रीमहाप्रभुजीनें जलभेदमें लिख्योहै ॥ तादृशानांकचिद्वाक्यंदूतानामिववर्णितं ॥ अजामिलाकर्णनवद्बिंदुपानंप्रकीर्तितं ॥ १ ॥ ऐसे विनठगनकुं अमृतकी बूंदनको पान भयो जब वे ठग कहन लगे तुमनें तलावमें कोणसुं बातें करीहैं और पहेले जन्मको वृत्तांत तुमकुं कौन कहतो हतो सो कृपा करके कहो अब हम तुमारे दास होएंगे अब तुमकुं नहीं मारेंगे और हमारे द्रव्य नहीं चहिये तुम सत्य बोलो जो कोनसुं बात करीहै जब वे क्षत्री वैष्णवनें जो बात भई हती सो कहि दीनी जब वे सब ठग विनके पांवन परे और कही जो हमकुं श्रीगुसांईजीके सेवक करावो पाछें वे क्षत्री वैष्णव रसोई करके सबनकुं प्रसाद लेवायके अपने गाम आयो और आछे हीरानको श्रीगुसांईजीके लीयें हार करायो और दशहजारके हीरा बेचडारे सब घरके खरचकी बंदोबस्ती करी और फेर अपने श्रीठाकुरजी पधरायके और स्त्रीकुं संग लेके और विन ठगनकुं संग लेके श्रीगोकुल आयो फेर श्रीगुसांईजीके दर्शन करे और सब ठगनकी वात कही जब वे ठग श्रीगुसांईजीकी प्रेमपूर्वक शरण गये और श्रीगुसांईजीकी कृपातें भगवत्स्वरूप और श्रीमहाप्रभुजीको स्वरूप और श्रीगिरिराजको स्वरूप और श्रीयमुनाजीको स्वरूप और व्रजको स्वरूपनको विन ठगनकुं श्रीगुसांईजीकी कृपातें ज्ञान भयो सो क्षत्री वैष्णव ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते॥वार्ता संपूर्ण॥वै०॥५९

श्रीगुसांईजीके सेवक एक विरक्त तिनकी वा०

सो वैष्णव श्रीगोकुलमें रहेतो और चुकटी मागके निर्वाह करतो और वा गाममें एक क्षत्राणी वैष्णव हती सो वाके पास द्रव्य बहोत हतो और विरक्त वैष्णव क्षत्राणीके घर बहोत जातो और भगवद्वार्ता करतो परंतु लोग निंदा बहोत करते एकदिन वा वैष्णवसुं श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो तूं वा क्षत्राणीके घर क्यूं जायहें तब वानें कही जो महाराज मेरो वासुं कछु मतलब नहीं है कदाचित् कछु द्रव्यको काम पडे तो वह काम वासुं निकसे तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो वैष्णवकुं द्रव्यपात्रकी खुशामद नकरी चाहिये त्यागीकुं खुशामद नकरणी श्रीमद्भागवतमें कह्योहै ॥ श्लोक ॥ सत्यांक्षितौकिंकशिपोःप्रयासै र्बाहौस्वसिद्धेह्युपबर्हणैःकिं ॥ सत्यंजलौकिंपुरुधाऽन्नपात्र्या दिग्वल्कलादौसतिकिंदुकूलैः ॥१॥ चीराणिकिंपथिनसंतिदिशंतिभिक्षां नैवांघ्रिपाःपरभृतः सरितोऽप्यशुष्यन् ॥ रुद्धागुहाःकिमजितोऽवतिनोपसन्नान्कस्माद्भजन्तिकवयोधनदुर्मदांधान् ॥ २ ॥ ऐसे बहोत रीतीसुं वा विरक्तकूं श्रीगुसांईजीनें समझायो परंतु वो वैष्णव समझो नहीं तब श्रीगुसांईजी परमदयालहैं वा वैष्णवकुं संसारमें डूबतो देखके श्रीगुसांईजीनें लौकिक चरित्र रच्यो वा वैष्णवकुं कही हमकुं रुपैया पांच हजार उधारे चहिये महिना एकमें पाछे देवेंगे वा क्षत्राणीसों तुम बीच पडके तुमारे नामसुं उधारे लिवाय देवो जब वा क्षत्राणीकुं कहिके रुपैया पांच हजार वे वैष्णव अपने नामसुं ले-

आयो सो श्रीगुसांईजीकुं दीने तव लेके रुपैया श्रीगुसांईजीनें धरतीमें गडाय दीने महिना दोढ पीछे वा क्षत्राणीनें वा वैष्णवसुं रुपैया मागे तव श्रीगुसांईजीनें वा वैष्णवसों कही जो हमतो वर्ष दो वर्ष पीछे परदेश जाएंगे जब रुपैया आवेंगे तव देवेंगे तव वा वैष्णव सुनके चुप कर रह्यो जब वा क्षत्राणीनें वा वैष्णवकुं सिपाईनके पेहेरेमें बैठाय-दियो टुकटि मागवे जाने न दियें और घरमें आवे न दियें एक वार दर्शन करवे सिपाईके संग जावे देवे तव मनमें ऐसो विचार कर्‍यो याकुं वहोत दुःख देउंगी तो श्रीगुसांईजी रुपैया देवेंगे जब वो वैष्णव श्रीगुसांईजीके दर्शन करवे गयो चार सिपाई संग गये तव श्रीगुसांईजीनें पूंछ्यो वैष्णव ये कहाहै तव वे वैष्णव रोय पड्यो और अपनी संपूर्ण हकीकत कही जव श्रीगुसांईजीनें कही वा क्षत्राणी तेरी मित्रहै वाके पास चार पांच लाख रुपैयाको द्रव्य है खावेवारो कोई है नहीं पांच हजारके लीयें तोकुं ऐसो हेरान कर्‍यो अब तुम कैसे करोगे तब वा वैष्णवनें कही जो एकवार क्षत्राणीके रुपैया चूके तो जन्मसूधी वाको मुख न देखूंगो तीनदिन भयेहै मैनें अन्नजल लीयो नहीहै ये सुनके श्रीगुसांईजी वहोत कृपा करिके वह द्रव्य कढाय दियो और वा वैष्णवकुं कही जो हमारे कछु द्रव्य चहितो न हतो तेरी आसक्ती छुडायवेकेलीयें इतनो काम करनो पड्यो तव द्रव्य लेके वा वैष्णवनें क्षत्राणीकु दियो और अपने मनमें समझ्यो जो श्रीगुसांईजी विना ऐसी कृपा कौनकरे और संसारमें डूबते

नकुं कौन काढै ऐसो विचारके वा वैष्णवनें ऐसो नेम लियो वा क्षत्राणीको मुख न देखुंगो सो वे वैष्णव ऐसो कृपापात्र हतो जिनकुं श्रीगुसांईजीनें संसारासक्ति छुडाई ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६० ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक ब्राह्मण स्त्रीपुरुष देवीके उपासीतिनकी वार्ता–सो वे ब्राह्मण आगरेमें रहेतो हतो सो वे ब्राह्मणस्त्रीपुरुषनें ऐसे देवीको मंत्र साधे जो देवी आयके नित्य मध्यरात्रीमें दर्शन देवै और बातें करे ऐसे करतकरत बहोत दिन बीते एकदिन चाचाहरिवंशजी श्रीगोकुलमेतें आगरेगये सो ज्येष्ठमास हतो धूप बहोत पडती हती सो तापकेलीये रस्तामें अवार होयगई, रात पेहेर गई जब आगरे पहोंचे सो बहोत श्रमित भये सो वा ब्राह्मणके चोतरापर डेरा कर्‍यो उहां हवा आछी जानके सोयरहे जब मध्यरात्री भई जब वह देवी ब्राह्मणके घर आई देखेतो वा ब्राह्मणके चोतरापर पांच वैष्णव सोयरहेहैं देवी प्रसन्न होयके अपने बडे भाग्य मानके विन वैष्णवनकुं पंखा करन लगी और मनमें येसमझीके ये भगवद्भक्तसूतेहैं सो इनकुं उलंघके केसें जाउं और वे ब्राह्मणतो देवीके दर्शनकेलीयें बहोत आतुर हते सो दोनो स्त्रीपुरुष बहोत प्रार्थना करन लगे और स्तुती करन लगे और आवाहन करन लगे तोहूं देवी आई नहीं आखीरात चाचाजीकुं देवी पंखा करती रही जब रात चारघडी रही तब चाचाजी उठे और संतदासके घर चले जब देवी भीतर गई विनस्त्रीपुरुषनकुं द-

र्शन दिये जब वे ब्राह्मण हाथजोडके पूछन लग्यो जो
आज काहेकूं रातकुं नहीं पधारे हमारो कहा अपराधहै
जब देवीनें कही जो तुमारे घरके आगे वैष्णव सूतेहते
मैं विनकुं पंखा करती हती तव वा ब्राह्मणनें हाथजोडके
कही जो वैष्णव तुमसों अधिकहैं कहा ॥ तब वा देवीनें
कही जो वैष्णव त्रिलोकीसुं अधिकहैं साक्षात भगवान
जिनके वशमेंहे और मेरे जेसे देवता तो विनकी टेहेल
करवेकी अभिलापा राखेंहें परंतु येटहेल मिले नहींहे ये
सुनके वे ब्राह्मण वोल्यो जो तुम कृपाकरके ऐसे वैष्णव-
नके दर्शन हमकुं करावो जव वा देवीनें कही जो मैं तु-
मारे ऊपर प्रसन्न भईहुं और तुमारो साचो भाव मेरे-
मेंहे जासुं मैं तुमकुं कहूंहुं जो तुम दोउजने वा वैष्णवके
पास जायके श्रीगुसांईजीके शरण जावो जव वे ब्राह्मण
स्त्रीसहित संतदासजीके घर जायके चाचाहरिवंशजीकुं
मिले और सब वत्तांत कह्यो तव विनदोउनकुं चाचा-
जीनें नाम सुनायो और मारगकी रीती सिखाई फेर
विनदोउनस्त्रीपुरुषनकुं चाचाजी श्रीगोकुल ले गये और
श्रीगुसांईजीके दर्शन कराये और सब प्रकार जणायो तव
श्रीगुसांईजीनें कृपाकरके विन स्त्रीपुरुषनकुं नाम निवेदन
करायो जव वे स्त्रीपुरुष श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन क-
रके बहोत प्रसन्न भये और श्रीमदनमोहनजीकी सेवा
माथेपधराई और सेवा करन लगे और श्रीनाथजीके
दर्शन श्रीगुसांईजीके संग जायके करे सो वे ब्राह्मण और
ब्राह्मणी बहोत प्रसन्न भये तब श्रीगुसांईजीसुं विदा होयके

आगरे आये और एक महिनासूधी चाचाहरिवंशजी हमारे पास रहें ऐसी वीनती श्रीगुसांईजीकुं करके चाचाजीकुं संग ले आये जब चाचाहरिवंशजीनें कृपाकरके विनकुं मारगकी रीती सिखाई सो वे स्त्रीपुरुष श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥६१॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक कृष्णदासतथाईश्वरदास दोउ भाईकी वार्ता–सो वे दोनो भाई निष्किंचन हते और सदा श्रीगुसांईजीके पास रहेते और श्रीगुसांईजी परदेश पधारते तो संग जाते और जलघराकी सेवा करते हते और दोऊ भाई अफीम वहोत खाते हते ॥ एकदिन श्रीगुसांईजीनें विनकुं अफीम खाते देखे जब श्रीगुसांईजीनें विनकुं कही तुम अफीम छोडदेवो विननें वीनती करी महाराज अफीममें कहा दोषहै तव श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो अफीम भगवत्स्वरूपकुं भुलावेहें और अफीम पुरुषार्थ घटावेहें और तत्वनिश्चयकुं भुलायके अतत्त्वमें मन लगावेहै और जब अफीम न मिलै तब कोई बातमें चित्त नहीं लगेहै ये बात सुनके विन दोउन भाईननें अफीम छोडदीनी और भगवद्रसमें छके रहेते विनकुं सदा भगवद्रसको अमल रहेतो जासुं भगवद्वार्ता विना दूसरी बात नहीं करते सो वे दोउभाई श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण॥ ॥ वैष्णव ॥ ६२ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक साहुकारके बेटाकी बहूकी वार्ता–सो वे साहुकारके बेटाकी बहू सूरतगांममें

रहेती हती वाको रूप बहोत सुंदर हतो और वे सती हती एकदिन अपने घरमें कवांड लगायके नहाती हती सो एक म्लेच्छ पादशाहको नौकर घोडापर बैठके जातो हतो सो वाकी नजर वा स्त्रीके ऊपर गई और देखकेका-मातुर भयो तव घोडा कुदायके वा के घरके भीतर जा-यपऱ्यो सो वे स्त्री नग्न नहाती हती वाको हाथ पकरलियो जब वह स्त्री वोली इतनी तसती काहेकुं लेहो मैं तुमारी चाकरहुं तुम कहो जैसे करुंगी अवी मोकुं वस्त्र पेहेरें लेवे-देवो ये सुनके वह म्लेच्छ प्रसन्न भयो और कही जो तुम कपडा पेहेरके हमारे संग चलो ये कहेके वा स्त्रीको हाथ छोडदियो वा स्त्रीनें कपडा पेहेरके और वा म्लेच्छके मु-खमें एक तमाचो मारके एक कोठामें कवाडदेके चली गई तव म्लेच्छ सरमायके घर गयो फेर मनमें ये विचार कऱ्यो जितनो द्रव्य अपने पास है खरचके या लुगाईसुं विवाह करनो याकुं छोडनी नही ऐंसे विचारके उपाय ढूंढवे लग्यो वा स्त्रीके घरके पास एक डोकरी रहेती हती बहोत गरीब हती वा डोकरीसुं वा म्लेच्छनें पेहेचाण करी और नित्य वाके घर जाय ॥ कोईदिन आठ आना कोई दिन रुपैयो कोई दिन दो रुपैया वा डोकरीकुं दे आवे ऐंसे करते करते वा डोकरीसुं कही जो या सेठके बेटाकी वहूको नाम और बापको नाम सासु सुसरा धणी याको नाना नानी मामा मामी सबको नाम और याके शरी-रके चिन्ह और वाकी अवस्था और जन्मको वरस तथा महिना दिवस याकुं पूछके मोकुं लिखायदे तो पचाश

मोहर देऊंगो तब वा डोकरीनें कबूल कन्यो और नित्य वाके घर जाय और वा बहूको तेलकांकसी करे और सब वातें पूंछे और आयके वा म्लेच्छकूं लिखाय देवे ऐसे करते जब सब वृत्तांत लिखाय चुकी तब वा म्लेच्छनें एक वेश्याकी छोरी मोललीनी और साहूकारके बेटाकी बहूको नाम हतो सो नाम धन्यो और वाकुंसव सगानके नाम सिखाय दिये जब वह वेश्याकी बेटी हुशार भई सो वा साहूकारके घरके पाछे वा वेश्याकी बेटीकुं ठाडी राखी और सूबाके आगें जायके पुकान्यो जो असुकी साहूकारके बेटाकी वहु मेरे संग मुसलमान होंवेकुं खुश है और मेरे संग पर्णवेकुं खुशहे सो वाके घरके पाछें ठाडीहै वाकुं सरकार बुलायके पूछलेवे जब हाकमनें वाकुं बोलायो और वे बात सब पूंछी और सगानके सब नाम लिख-लिये और म्लेच्छ बोल्यो येपाछें फेर बदल जायगी और सुसराके घर चली जायगी जासुं सरकार पको करलेवें जब वा हाकेमनें वासुं पक्की लिखत करलीनी फेर वाकुं रजा दीनी फेर वा म्लेच्छनें वेश्याकी बेटीकुं वेश्याके घर पठाय दीनी और पंदरे दिन पाछें वा सूबाके आगें पुकार करी जो वा साहूकारके बेटाकी बहूनें मेरे संग खान पान करके फेर वाके घर गईहै तब सूबानें हुकम करके वा बहूकूं पकडाई फेर वाको सुसरा वाको बाप और सब गामको पंच एकट्ठे होयके वा सूबाके पास गये परंतु सूबानें मानी नहीं कह्यो ये बाई मेरे पास आयके लिखाय गई है बहोत तकरार भई तब वाके सुस-

रानें कही ये कोईदिन वहार नीकसी नहींहे जासुं हम दि-
ल्लीमें अकवर पादशाहके पास पुकारेंगे जहांसूधी हमारो
दिल्लीमें न्याय नहोवे तहांसूधी वा वहूको धर्म भ्रष्ट नहोवे
और म्लेच्छ या वहुकुं स्पर्श नकरे ऐसे सूवासों नक्की कर-
लियो फिर सूवाको वंदोवस्ती लेके दिल्ली गये तब अकवर
पादशाहनें न्याय कर्यो वा म्लेच्छके लाभमें हुकम
कर्यो जब वे वहु ऊंचे स्वरसुं रोवन लगी और कहेन
लगी ॥ हे ईश्वर जो तुम सत्य होतो मेरे प्राणलेवो मैं या
वातमें कछु जानत नहींहुं वाकी व्यवस्था देखके दिल्ली-
पतीके मनमें ऐंसी आई जो वा स्त्रीको मन जो म्लेच्छमें
मोहित होतो तो ऐंसी रुदन न करती जासुं प्रभु मेरे न्या-
यमें खामी नपाडे तो वहोत आछो सो परमेश्वर मेरो
धर्म राखेंगे ऐंसे विचारके हुकम दीयो और कचेरीमें ऐसो
कह्यो जो या न्यायमें कछु खामिहै वरोवर नहिं दीसे है॥
फेर वा म्लेच्छके संग कर दिनी सो म्लेच्छ कचेरीसुं ले
चल्यो और वे वहू ऊंचेस्वरसुं रुदन करे और छाती कूटे
हजारन लोक तमाशा देखवेकुं एकठे भये वा वहुकुं म्ले-
च्छ ले चल्यो वाई दिन श्रीगुसांईजी श्रीविठ्ठलनाथजी
दिल्ली पधारे हते जहां श्रीगुसांईजीको डेरा हतो वा रस्ता
होयके वो म्लेच्छ निकस्यो और वह स्त्री रुदन करती हती
और वहोत मनुष्यनकी भीड संग हती जब श्रीगुसांई-
जीनें देखी और पूंछ्यो जो ये कहाहै जब सब वृत्तांत सुन्यो
तब वा तुरककुं और वा वहूकुं बुलायो और सब समा-
चार पूंछे और सुनके पृथ्वीपतीकुं खबर कराई जो हम

याको न्याय पंदरें दिनमें करदेवेंगें ये सुनके पृथ्वीपती प्र-सन्न भयो और कही जो एक महिनाके भीतर जो श्रीगु-सांईजी करें सो न्याय मेरे कबूल है ऐसे कहेके बीरबल दिवानकुं श्रीगुसांईजीके पास पठायो सो बीरबलनें वीन-ती आयके करी ये सुनके श्रीगुसांईजीनें म्लेच्छकुं और ठिकाणे रहेवेको हुकूम दियो और वा बहूकुं सासु सुस-राके पास राखी और दोउनकुं बुलायके विनकी सब ह-कीकत सुनी फेर एकदिन श्रीगुसांईजीनें दो पींजरा मं-गाये एक पींजरामें वा तुरककुं बैठायो एक और पींज-रामें वा बहूकुं बैठाई और दोनु पींजरा मैदानमें धराय दिये और आखी रात वे पींजराकी पास कोई मनुष्य जा-यनहीं ऐसी बंदोबस्ती करदीनी और एक मनुष्य दिल्ही-पतीकी खातरीको छानो छानो रातकुं वा पींजरेके पास बैठायो जैसे दो उनकुं खबर न पडे ऐसी रीतीसुं वे मनुष्य बैठो रह्यो फेर वा पींजरामें मध्यरातपीछे वह बहू बोली वा म्लेच्छसुं कही जो अब मैंतेरी भईहुं और तेरे संग जन्म काढुंगी जासुं कछु तुमारो पराक्रम जाणुं तो मेरो चित्त प्रसन्न होवे जो तुमनें कैसी रीतीसों ये उपाय रच्यो सो तुम मोसों कहो तो मोकुं धीरज आवे तो मेरे मनकुं धि-रजदेउं मैंने कोईदिन तुमकुं देख्यो नहीं है जो तुमारे प-राक्रम नहीं कहोगे तो मेरे प्राण पींजरासुं माथा फोडके काढ डारुंगी जब वो म्लेच्छ सुनके बहोत प्रसन्न भयो और बोल्यो जो तुम मेरे पराक्रम अब सूधी जानें नहीं है जो तोकुं कछु खबर है नहीं तोहुं इतनो कर दिखायो

है फेर वा म्लेच्छनें सब वृत्तांत कह्यो वा डोकरीकी और वा वेश्याकी छोरीकी सब रीती जेंसी वनी हती सब कही॥ ये सुनके वे बहू बोली अब मेरे प्राणरहेंगे अब तेरे वश होयके तेरे पास आवूगी ये सुनके वे म्लेच्छ प्रसन्न भयो ओर फेर आपणी वडाई करनलग्यो तब वे मनुष्य जो छिपके बेठो हतो वानें दोननकी वातें आखीरात भई हती सो सब लिख लीनी हती जब सवारो भयो जब श्रीगुसांईजीनें दोनो पींजरा मंगाये और वे मनुष्यनें लिख्यो हतो सब वांच्यो जब श्रीगुसांईजीनें वे दोनो पींजरा और वे लिख्यो हतो सो पृथ्वीपतीके पास पठाय दीये सो अकबरपादशाह ये लिखत वांचके वा तुरककुं जन्मकेद दीनी ओर वा सूबाकुं दूर कियो और सूवासों कही जो जासमें ये स्त्री तेरे पास लिखायवेकुं आइहती वा ईसमें तेनें या स्त्रीके वापकी और सुसराकी बुलायके सही क्युं न लीनी और वा वेश्याको और डोकरीको घर लूटलियो और वा बहूकुं छोडदीनी जब वा बहूनें अपने सगानसों कही जो मोकुं श्रीगुसांईजीनें जीवती राखीहै जासुं में इनकी सेवक होउंगी फेर वह बहू श्रीगुसांईजीकी सेवक भई और वाके सासुसुसरा और मावाप वाको धणी और जितनें वाके संग गये हते सब श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीठाकुरजी पधरायके अपने देशकुं आये सो वे बहू अपने सत्यमें रही तो वाके संगसुं सब वैष्णव भये सो बहू ऐसी कृपापात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव ॥ ६३ ॥ ॥

॥ **श्रीगुसांईजीके सेवक हरिदास खवास स-**

नोडिया तिनकी वार्ता ॥ सो वे हरिदास श्रीगुसांईजीकी खवासी करते हते सो हरिदासकुं श्रीगुसांईजीनें दोबातनकी शिक्षा दीनी ॥ एकतो हमारे द्रव्यको स्पर्श न करनो और एक परस्त्रीसों एकांत बात न करनी हमारो द्रव्य स्पर्श करेतें बुद्धी भ्रष्ट होय जाय ॥ और परस्त्रीके एकांत करेतें चित्त चलायमान होवै सो भगवदावेश हृदयमें न होवे ॥ सो हरिदासनें जन्म पर्यंत श्रीगुसांईजीकी आज्ञा पाली ॥ और एकदिन हरिदासनें श्रीगुसांईजीसों बीनती करी जो मेरे श्रीमद्भागवत सुनवेकी इच्छा है तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुम उज्जेनमें जायके कृष्णभट्टजीके पास श्रीमद्भागवत सुन आवो जब हरिदास उज्जेन गये और कृष्णभट्टजीसों कही जो मोकुं श्रीमद्भागवत सुनाओ तब श्रीकृष्णभट्टजीनें वेणुगीतको प्रसंग सुनायो सो ॥ श्लोक ॥ बर्हापीडंनटवरवपुःकर्णयोःकर्णिकारं बिभ्रद्वासःकनककपिशंवैजयंतींचमालाम् ॥ रंध्रान्वेणो रधरसुधया पूरयन्गोपवृंदैर्वृंदारण्यंस्वपदरमणं प्राविशद्गीतकीर्तिः ॥ १ ॥ या श्लोकको सुबोधिनीको प्रसंग जामें तीनप्रकारकी सुधाको वर्णन कर्योहै ॥ एकतो सर्वभोग्या सुधा और दूसरी देवभोग्या सुधा और तीसरी भगवद्भोग्या सुधाको स्वरूप श्रीठाकुरजीनें वेणुगीतमें वर्णन करके व्रज भक्तनकुं आपके स्वरूपको बोध करायो और वर्णन करवेकी सामर्थ्य दीनी ये प्रसंग हरिदास सुनके मूर्छा खायगये सो एक पहेर पाछे चेतन भये फेर हरिदासजीनें कृष्णभट्टसों कही अब श्रीमद्भागवतको

प्रसंग और सुनाओ तव कृष्णभट्टजीनें कही जो मोकुं अव-काश नहींहै॥ और मनमें कृष्णभट्टजी डरपे जो इनकीदश-मीअवस्था होयजायगी तो श्रीगुसांईजी खीजेंगे तव कृष्ण-भट्टजीनें हरिदासजीसों कही तुम जायके श्रीगुसांईजीकी सेवा करो फेर हरिदासजी आयके श्रीगोकुलमें श्रीगुसां-ईजीकी खवासी करन लगे ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ एकदिन हरि-दासजीनें एक साचोराके घरको बेंगणको शाकलियो हतो जव हरिदासजीके मनमें ऐसी आई जो मोकुं इतनें वर्ष भयेहें श्रीगुसांईजीकी सेवा करुंहुं और कछु पगार नहीं लेउंहुं जासुं कछुक द्रव्य श्रीगुसांईजीको लेके चल्यो जाउं तो ठीक जव श्रीगुसांईजीकी वहूजीके आभूषण एक हजार रुपैयाके लेके उहांसुं चले सो हरिदासजी वृंदावन होयके और आगे चले सो एक तलाव हतो उहां एक साधूकी जगह हती उहां हरिदास सामान धरके और खरचुं गये और तलाव ऊपर न्हाये तव उहां पवन आई और व्रजकी रज उडके हरिदासके मुखमें पडी जब हरिदासजीकी बुद्धी शुद्ध भई और पेट-मेंसुं सव आसुराचेष निकस गयो तव हरिदासकुं ऐसो पश्चात्ताप भयो मैनें कहा काम कर्‍यो जव हरिदास गा-ठडी लैके श्रीगोकुल फेर आये और आयके श्रीगुसांई-जीकुं आभूषण दिये और बीनती करी जो मेरी बुद्धी ऐसी क्युं भई तव श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो हमारे सेवक और हमारी ज्ञातीके भट्ट और हमारे जलघरिया प्रचा-रक रसोइया मुखिया भितरिया तिनके घर हमारो वि-

नाप्रसादी द्रव्य जायहै विनके घरको जे कोई वैष्णव खावे विनकी बुद्धी ऐंसी होवे जैंसें तुमारी भई ॥ हरी गुरु वैष्णवमें विनकी विषम बुद्धी होयजायहै ॥ जहांसूधी तु-मारे पेटमें वा साचोराको साक रह्यो तहांसूधी तुमारी बुद्धी बिगडी रही जब तुमारे मुखमें भगवद् इच्छातें व्रज रज पडी और तुमकुं उलटी भई जब वे अंश निकस गयो तब तुमारी बुद्धी निर्मल भई यातें सब वैष्णनवकुं गुरु तथा श्रीठाकुरजीके अनप्रसादी द्रव्यको ऐंसो डर राख्यो-चहिये सो वे हरिदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६४ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक प्रेमनिधिमिश्रकी वार्ता

सो प्रेमनिधिमिश्र आगरामें श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे और प्रेम-निधिमिश्र विशेष करके अपरसमें रहते यवनकी बस्ति जानके बहार नहि निकसते और प्रेमनिधिमिश्रको ऐंसो नेम हतो सवापहर रात रहे गागर कंतानमें बांध राखते सो गागर लैके जमुनाजीपें जाय और नहायके फेर गा-गर भर लावते सो एकदिन बरसात बहुत भई जहांतहां-कीच भई तब प्रेमनिधीकूं चिंता भई जो अंधेरामें जहां-तहां पांव पडजायगो और दिनकुं म्लेच्छ छीजाएंगे या चिंताके लीयें आखीरात नींद न आई सो वाकि चिंताको देख श्रीगोवर्धननाथजी सहि न सके जब सवापेहेर रात रहि तब प्रेमनिधि यमुनाजीपें चले घरसुं बाहिर निकसे तो एक दश बरसको छोरा मसाल लैके आवेहै तब प्रेम-

निधिनें जानि ये कोईको पोंचायके जायहै याके पाछें पाछें जाउंतो ठीक जहांसुधि ये या रस्तापें जाय तहां-सुधि याके पाछें चल्यो जाउंगो फिर जायगो तव यमुना-जीपें जाउंगो ऐसें करते वे छोरो यमुनाजीसुधि आयो पीछे अंतर्धान होयगयो तव वाकुं वडो आश्चर्य भयो ये कौन होयगो कहाहोयगो कोई भूत प्रेतकी सामर्थ्य तो नहींहै जो मेरिदृष्टिमें आयसके ऐसे विचार करन लग्यो फेर न-हायके गागरभरके प्रेमनिधि चले तव मसाल लेके वह छोरा फेर आयगयो तव विचार कर्‍यो जो यासों पूछं कोनहैं पांचसातपेंड चल्यो इतनेमें एककोसभर घरहतो सो आय गयो कछु पूंछ सक्यो नहिं तव वह छोरा चल्यो गयो फिर यानें घरमें विचार कर्‍यो जो कोसभर रस्ता एक पांचसातपेंडमें आय गयो ये कार्य श्रीनाथजीके हैं जासुं वहुत पश्चात्ताप भयो और वा छोराके रूपमें मन लग रह्यो और नेत्रनमेंसुं जल आवै लगगयो सो वे प्रेम-निधि मिश्र ऐसें श्रीगुसांईजीके कृपापात्र हते जिनके लीयें श्रीनाथजीकुं मसाल लेनी पडी ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ और प्रेमनिधि कथा ऐसी वांचते जो कोई सुनवे आवतो वाको मन हरणहोयजातो और भगवत्स्वरूपको ज्ञान होयजातो जासुं स्त्री और पुरुष बहुत मनुष्य कथा सुनवेकुं आवते ॥ सो ये बात वा प्रेमनिधीके परोसी जो दुष्ट हते विननसुं सही न गई, विनदुष्टनने जायके पृथ्वीपतीसों पुकार करि तव पृथ्वीपतीनें चोवदार पठाये तव वाहीसमय प्रेमनिधीनें न्हायके उत्थापन किये हते और झारि उठाई हती और

दूसरि भरवेकुं विचार करते हते तब चोबदारनें जायके पकडके पृथ्वीपतीके पास लेगये और श्रीठाकुरजी जलविना रहेगये तब पृथ्वीपतीनें पूंछी तुम कथा बांचोहो जो ख्रीनको क्यों आवे देवोहो तब प्रेमनिधि बोले जहां भगवत्कथा होवेहे जो सुनवे उहां आवे विनको उठाय देनो और विनको धमकावनो और विषयदृष्टिसों देखनो और भगवन्नाम सुनवेमें प्रतिबंध करनो यामें दोष बहुत लगेहै जासुं मैं कोईको नाहिं नहिं कहूंहूं तब पृथ्वीपतीनें कहि तुमकहो सो बात और है ओर तेरी गलीके लोगननें कहि सो बात और है जहां सूधी निर्धार नहिं होयगो तहांसूधी तुम नहिं छूटोगे ऐसे कहिके विनकुं कैद पठायदियो तब श्रीठाकुरजीनें पृथ्वीपतीको इष्ट जो पीर वाकोरूप धरके और पृथ्वीपती रातको सूतो हतो जहां गये तब स्वप्नमें वाकुं कहि मोकुं प्यास लगीहै वानें कहिआप जल पीवो तन्हें तन्हेंके जल मेरे घरमेंहैं अनेक प्रकारकी सुगंधिवाले जलहैं तब श्रीठाकुरजी बोले कौन पियावेगो तब वो पृथ्वीपती बोल्यो जो आप फरमावोगे सोई पियावेगो तब श्रीठाकुरजीनें वाकुं लात मारी और कहि तु मेरीबात चित्त देके सुनें नहिं जाके हाथको मैं जल पिउंहुं वाकुं तेनें कैद कऱ्योहै ऐसे बचन सुनके वह पृथ्वीपती उठ बैठो तब मनुष्य पठायके वा प्रेमनिधि मिश्रकुं कैदमेंसूं बुलायो और उठके वाके पांव पकड लीये और कहि मेरे अपराध क्षमा करो और साहेब प्यासे हैं तुम जायके जल प्यावो ओरके हाथको नहिं पीवेहें एक तुममें

रीझेहें जासुं तुम जायके साहेबकुं जल प्यावो और मैं तुमारे ऊपर राजीहुं जैसे कथा वांचोहो तैसे वांचो और कोई देश कोई गाम में तुमारि भेट करूं सो लेवो तव प्रेमनिधि वोले हमकुं कछू नहिं चहिये द्रव्य पायके को-ईको आछो नहिं भयो है जिननें द्रव्य पायेहें विनकि बुद्धि स्थिर नहिं होवेहै विनको वहुत प्रकारके विगाड होवेहें जासुं में द्रव्य नहिं छिउंगो तव पृथ्वीपति वहुत डरप्यो और कही कछू फरमावो तव प्रेमनिधीनें कही तुम कोई दिन मोकुं बुलाइयो मती ॥ येहि मागुंहुं तव दोचार मनुष्य और मसाल संग देके वाही समें प्रेमनिधी जीको घर पठाये तव घर जायके और न्हायके झारि भरि तव श्रीठाकुरजीकुं धीरज आई और शांत भये वे प्रेमनिधिमिश्र श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६५ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ **श्रीगुसांईजीके सेवक ब्राह्मण स्त्रीपुरुष तिन-की वार्ता** ॥ सो वे ब्राह्मण इटाए गाममें रहेते हते सो देविउपासि हते रातकुं देवि विनके पास आवती और एकदिन चाचाजी इटायामें गये रात बहुत गई जव ब्रा-ह्मणके चौतरापें डेरा किये सो उहां सोयरहे तव रातको देवि आई सो वैष्णवको उल्लंघन नकरसकि उहां ठाडी रहि विष्णुकि माया जो देवि सो वैष्णवको स्वरूप आछि रीतीसुं जानति हति सो पाछी गई और वे ब्राह्मण अनेक प्रकारके मंत्र तथा जप तथा आवाहन करन लग्यो जव रात दोघडि रहितव चाचाजी उठके चलेफेर देवि वा ब्रा-

ह्मणके घरमें गई तब ब्राह्मणनें पूंछी क्युं रातको नहिं पधारे तब देवीनें कहि चोतरापर वैष्णव सोयेहते विनको उल्लंघन कैसें करुं तब वा ब्राह्मणनें पूंछी वैष्णव कहा तुमसुं बडेहै ॥ तब देवीनें कहि अनन्य वैष्णव सबतें बडेहें इनतें बडो कोई नहिं तेतीस करोड देवता विराटके रोमरोममें है सो विराट भगवान ब्रह्मांडरूपहैं ऐसे अनंत कोटि ब्रह्मांड श्रीठाकुरजीके एक एक रोममें हैं ऐसे भगवानको जिनने बस करेहें ऐसे जो वैष्णव तिनसों बडो कोनहै जिनके पाछे पूर्णपुरुषोत्तम फिरेंहें तब ब्राह्मणनें कहि मोकूं वा वैष्णवके दर्शन करणेहें तब देवीनें कहि गाम बाहर जावो, अबी तुमकुं जाते मिलेंगे तब वे ब्राह्मण जायके चाचाजीसों मिले और कहि जो मेरे घर पाछे पधारो और सब बात कही तब चाचाजीनें कहि हम दशपंद्रे दिन पीछे आवेंगे और वा ब्राह्मणको एक उपरना दियो कह्यो जो वा देवीको ये उपरना दीजो फेर ब्राह्मण घरमें आयके एक खुटीपें उपरना धरदियो और न्हायकेगायत्री जप करन लग्यो और वा ब्राह्मणकी स्त्री रसोई करन लगी तब पवनचल्यो सो उपरना उडके वा ब्राह्मणके माथे ऊपर जाय पडयो तब वाकि लुगाई वा ब्राह्मणकुं कुतिया जेसी दीसवे लगी तब वो ब्राह्मण बोल्यो तु कुतिया क्युं होयगईहें वा स्त्रीनें विचार कऱ्यो जो याको कहा भयोहै ये बावरोतो नहिं भयोहै तब वा ब्राह्मणनें माथेसो उपरना उतारलियो फेर वे स्त्री वाकुं मनुष्य जैसी दीसवे लगि तब वा ब्राह्मणनें विचारी या उपरनामें चम-

त्कार है तव वा लुगाईसुं कहि ये उपरना ओढके तूं मोकुं देख तव वा लुगाईनें उपरना ओढके देख्यो तव वा ब्राह्मण वाकुं गधाजेसो दिस्यो तव वा लुगाईनें कहि तुम मोकुं गधाजेसें दिसोहो तव ब्राह्मण उपरना ओढके बजारमें चल्यो सो कोई गधा कोई कुत्ता कोई घोडा कोई उंट ऐसे अनेक प्रकारके पशुदीसें परंतु मनुष्य कोई न दीसें सो आखे गाममें फीरे दोजनेएकदुकानपें मनुष्य देखे तव विनकुं जायके पूंछि जो तुम कौनसे घर-मेंमें हो विननें कहि हम वैष्णवहें और श्रीगुसांईजीके सेवकहें और तुं क्युं पूंछेहें तव ब्राह्मणनें सब बात कहि तव वे वैष्णव पछतायवे लगे जो चाचाजी या गाममें आये हमकुं तो मिलेहें नहिं अव आवे तो हमकुं खवर करियो फिर वा ब्राह्मणनें मनमें विचार कर्‌यो करे जो अब चाचाजी आवे तो मैं वैष्णव होवुं फिर थोडेदिन पीछे चाचाजी आये सो वा ब्राह्मणके घर उतरे और दोनो स्त्रीपुरुषनको चाचाजीनें नामसुनाये फिर दोनो जने वैष्णव भये श्रीगोकुलमें आयके श्रीगुसांईजीकी कृपातें श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये फिर श्रीगुसांई-जीके मुखसों कथा सुनि फिर श्रीनाथजीके दर्शन करे और श्रीठाकुरजी पधरायके इटायमें आयके भगवत्सेवा करन लगे और कितनेक दिन वीते पीछे श्रीठाकुरजी विनकुं अ-नुभव जतावन लगे वे ब्राह्मण श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते जिनको श्रीगुसांईजीनें चाचाजी द्वारा प्रमेयबल दि-खायके अंगीकार करलीये ॥ वार्ता संपूर्ण॥वैष्णव॥६६॥

श्रीगुसांईजीके सेवक श्यामदास विरक्तकी ०

सो वे श्यामदासके उपर श्रीगुसांईजीकी संपूर्ण कृपा हती और श्रीठाकुरजी अनुभव जनावत हते एकदिन लालदास ब्राह्मण श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और लालदासनें बीनती करि महाराज मैं कैसे करुं मेरो चित्त स्थिर नहिं रहेहै तब श्रीगुसांईजीनें कहि जो तुम एक वर्षसूधि श्यामदासको सत्संग करो तब लालदासनें श्यामदाससों कहि जो मैं तुमारो एकवर्षसूधि सत्संग करुंगो श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करि है॥ तब श्यामदासनें कहि मेरे परदेश जानोहै तब लालदासनें कही मैंहुं तुमारे संग तुमारी टेहेल करतो चलुंगो तब वे श्यामदास चले लालदास विनके संग चले रस्तामें एक गाम आयो वा गाममें एक वैष्णवके घर मंडाण हतो वानें वाई दिन पांचसे मनुष्य जिमायवेको विचार कर्‍यो हतो सो विननें श्यामदास तथा लालदासकुं न्योतो दियो तब दोनो जने प्रसाद लेवे गये उहां जायके बैठे सो श्यामदासको पातलमें सब कीडाकीडासे दीसे तब श्यामदासकुं श्रीठाकुरजीनें ऐसी जताई ये द्रव्य कन्याविक्रयकोहै सो मैं कोईदिन अंगिकार करुं नहिंहुं और याहीतें ये सामग्री मैं नहिं अरोग्योहुं यातें तुम प्रसाद मतलीजो तब श्यामदासनें प्रसाद लेवेकि नाहिं करि तब सब वैष्णव श्यामदासकुं समझावे लगे श्यामदासतो उठके चलेगये सो वा गाममेंसुं दूसरे गाम चले गये और लालदासतो उहां बैठे रहे मनमें ये विचार कियो जो श्यामदास स्यानो वैष्णव नहिंहै वैष्णवनको कह्यो नहिं

माने है ऐसे समझके लालदास प्रसाद लेवे बैठे प्रसाद लेके श्यामदासके पास गये वादिनतें श्यामदास विनसों कछू बोलते नहिंहते पातलधरदेते ऐसें करते करते एकवर्ष भयो तब श्रीगोकुल गये तब लालदासनें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो श्यामदास कछू समझे नहिंहै पांचसे वैष्णवनको कह्यो न मान्यो महाप्रसाद न लियो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करि जो तुमने हमारी आज्ञा और वैष्णवकि आज्ञा मानि नहिं ॥ तुमकुं कह्यो हतो जो तुम श्यामदासको सत्संग करो जब तुमनें पांचसे वैष्णवनके कहे सों प्रसाद क्यों लियो वह कन्याविक्रयको द्रव्य हतो श्रीठाकुरजीनें नहिं अरोग्यो हतो जासुं तुमनें प्रसाद लियो अबतो दो वर्ष पर्यंत श्यामदासकी टेहेल करोगे तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होवेंगे तब वे लालदास श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लेके श्यामदासजीकी टेहेल करन लगे सो वे श्यामदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते जिनकुं श्रीठाकुरजीनें ऐसी जताई सो कन्याविक्रयके द्रव्यनें शुभकार्य होवे सो व्यर्थ जाय ॥ वार्ता संपूर्ण॥वैष्णव॥६७॥❀

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णवकी बेटीकी वार्ता ॥ सो वैष्णवकीबेटीको विवाह श्रीरामचंद्र उपासीके इहां भयो हतो वे बाई बालपनेसुं श्रीगुसांईजीकी सेवक भई हती और भगवत्सेवापें तत्पर भई और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगी और बालपनेसुं भगवद्धर्मनको आचरण करने लागी श्रीमद्भागवतमें कह्योहै ॥ श्लोक ॥ कौमारआचरेत्प्राज्ञोधर्मान्भागवता-

निह ॥ याको अर्थ प्राज्ञजेबुद्धिमानहें सो बालअवस्थासुं भगवद्धर्मनको आचरण करें ऐसे वा वैष्णवकी बेटी अनन्य श्रीकृष्णचंद्रकी भक्त हती सो वे बाई जब वाके पतीकेघर गई जब वाको पति श्रीरामचंद्रजीको उपासी हतो सो देखके वह बाई वाके पतिसुं भाषण करती नहीं एकदिन वाके पतीनें पूंछी जो तुमारे श्रीकृष्णचंद्रकहा करतेंहें वा बाईने कही जो बाललीला और दान लीला और रासलीला और चोर लीला मानलीला जन्मलीला वनलीला विहारलीला सबलीला जितनीहे सो एककालावच्छिन्न करतेंहें जब वाके पतिनें कही जो हमारे श्रीरामचंद्रजी राजलीला करतेंहें ऐसे करते नित्य झगडो विन दोउनको चलतो सो श्रीठाकुरजी नित्य आयके विनको झगडो चुकावते और कहते सर्वत्र मैं हुं तुम मेरेमें अभेद जानो मेरेमें भेद नहींहें वा स्वरूपमें वा स्त्रीकुं श्रीकृष्णचंद्रजी दीखते और वा पुरुषकुं श्रीरामचंद्रजी दीखते जब वे स्त्रीपुरुषनको नित्य ऐसे करते आखोजन्म झगडत गयो और नित्य श्रीठाकुरजी झगडा चुकावतरहे जन्मसूधी विनकुं संसार ब्यवहारयाद आयो नहीं सो वे बाई वैष्णवकी बेटी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६८ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक आठ वैष्णव हते ति०

सो वे आठजने एकगाममें रहते हते सो वे श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं आये सो सातजनेनके पास द्रव्य हतो और एक दुर्बल हतो वाके पास कछु भेट कर-

वेको श्रीफल नहीं हतो सो सात जनेननें जब भेटकरी और एक वैष्णव जो दुर्बल हतो वानें कछु भेट नकरी वाके पास एक सेरभर चोखा हते सो वे चोखा वा वैष्णवनें छिपाय राखे हते जो कोईकूं खबर न पडेगी जब श्रीनवनी-तप्रियाजीके भंडारमें धर देउंगो ये समझके वानें छिपाय राखे हते जब सबने भेट करी तब वो वैष्णव सरमायके बैठरह्यो जब वाकुं श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तेनें चोखा छिपाय राख्येहें सो लावो ॥ जब श्रीगुसांईजीनें चोखा श्रीमुखसों वा वैष्णवके पासतें मागलीये जेंसे श्रीठाकुर-जीनें सुदामाके पास तंदुल मांगे हते जो वे चोखा अर्ध-तो श्रीनाथजीके भंडारमें पठाये और अर्ध तो श्रीनवनी-तप्रियाजीके भंडारमें पठाये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ फेर एकदिन वे आठ वैष्णव गोपाल पुरमें श्रीनाथजीके दर्शन करवेकुं आये जब वे सात जने तो आछी जगामें उतरे और वे दुर्बल वैष्णव तो जहां तहां पडरह्यो और कछु खायवेकुं तथा ओढवेकुं वाके पास हतो नहीं सो भूखो पड रह्यो॥ सात जनानें वाकी खबर काढी नहीं जब श्रीनाथजी मध्य रातकुं शय्या भोगको लडुवा और ओढवेंकी सु-फेती लेके वा वैष्णवकुं दीनी और कही जो श्रीगुसांईजीनें मोकुं तेरे पास पठायोहै वा वैष्णवनें श्रीनाथजीकुं पेहे-चानें नहीं जब सवारो भयो तब लोगननें श्रीनाथजीकी सुफेती वा वैष्णवकुं ओढी देखी तब श्रीगुसांईजीकुं लो-गननें कही जो ये आपके घरसुं श्रीनाथजीके वस्त्र कैसे ले गयोहै जब श्रीगुसांईजीनें मनमें ऐंसी जानी जो श्री-

नाथजीनें दीयेहें फिर मंगलाके समें श्रीनाथजीनें श्रीगु-
सांईजीसुं आज्ञा करी जो ये सात जणातो याकी खबर
राखें नहींहें परंतु मेरे वैष्णवकुं दुःख पडे सो मैं कैसे स-
हीसकुं ये सुनके श्रीगुसांईजीनें विन सातजनानकुं बुला-
यके कही जो तुम एकएकजना वार प्रमाणें याकी टहेल
करौ श्रीनाथजी तुमारी सेवा मानेंगे और जादिन श्री-
नाथजीकी सेवाको काम होवै तोहु तुमारे यांकी टेहेल
छोडनी नहीं श्रीनाथजीकी सेवासुं शतगुणी गुरूकी सेवा
विशेषहै गुरूकी सेवासुं सतगुणी वैष्णवकी सेवा विशेषहै
परंतु वैष्णव निर्लोभी निष्कपटी और अन्याश्रय रहित॥
पुष्टिमार्गकी रीती विना दूसरी रीती न जाणे और लोग-
नकुं अपनी वैष्णवता न जनावे और पुष्टिमार्गकी रीतीसें
कुशल होवै ऐसे वैष्णवनकी सेवा सर्वतें अधिक है यासुं
अधिकी कछु नहींहै सो तुम सात जना याकी टहेलमें
तत्पर रहो ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ फेर एकदिन वे आठ वैष्णव
श्रीगोकुल गये॥ और नित्य उहां दर्शन करते और नित्य
श्रीगुसांईजीके मुखसुं कथा सुनते एकदिन सब वैष्णव
आये और वे दुर्बल वैष्णव आयो नहीं तब श्रीगुसांईजी
पुस्तक खोलके विराजे रहे तब वैष्णवननें बीनती करी
आप कथा वांचो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जिनके
लीयें कथारस श्रीमहाप्रभुजीनें प्रकट कर्‍योहें वे आवेंगे
जब बांचेंगे जब वे दुर्बल वैष्णव आयो तब कथाको आ-
रंभ श्रीगुसांईजीनें कर्‍यो जब वाहीसमय एक द्रव्य पात्र
बैठो हतो वानें कही जो येतो मजूर जेंसो है यामें कहाहै

जब श्रीगुसांईजीनें कही तुमनें जो धन एकठो कन्यो है सो सब इहां छोडजाओगे और याने जो भगवद्रस और भगवद्गुणानुवाद एकठो कन्यो है सो ये संग लेजायगो जासुं मजूर ये भये के तुम भये ये सुनके वो द्रव्यपात्र बहुत लजायो और सब धंदो छोडके वा दुर्वल वैष्णवको सत्संग करन लग्यो सो वह दुर्वल वैष्णव ऐसो कृपापात्र हतो और वे सात वैष्णव श्रीगुसांईजीकी आज्ञा तें जन्म पर्यंत वाकी टहेलमें लगे रहते सो वे आठ वैष्णव ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण वै० ॥ ६९ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक तीन तूंबावाले वैष्ण०॥

सो वे वैष्णव विरक्त हते सो एक तूंबा खासाको और एक सेवकीको और एक बहारको ऐसे तीन तूंबा राखते हते और जा गाममें जाते तहां भगवदिच्छासुं निर्वाह करते एक गाममें गये जहां मेह बहुत बरस्यो कछु रसोईको उ-पाय बन्यो नहीं जब तीन दिन सूधी सूखे रहे चौथे दिन बरसात बंद भयो सो वे वैष्णव तलावपें नहायवे गये तब वा गामको ब्राह्मण वैष्णव नहातो हतो सो वा विरक्त वै-ष्णवकुं वह ब्राह्मण वैष्णव अपने घर ले गयो आछी री-तीसुं वाकी टहेल करी वो ब्राह्मण वैष्णव ऐसे समझ्योके मेरे घर साक्षात् भगवान पधारेहै और तीन दिन सूधी विनकुं राख्यो महा प्रसाद लेवायो और वा विरक्त वै-ष्णवके हृदयमें सदा भगवदआवेश रहतो हतो सो वे प्र-सन्न भये और भगवद् आवेशतें बोले जो कछु माग जो तुमारो मनोरथ होयगो सब पूरण होयगो तब वह ब्राह्मण

वैष्णव हाथ जोडके बोल्यो जो मेरे तो कछू मनोरथ न-
हींहै परंतु या गामको राजा बहुत धर्म वालोहै और ब्रा-
ह्मणनकी भक्ती वा राजाकुं बहुतहै ब्राह्मणकी रक्षा
आछी भांतीसुं करेहैं साठवर्षको भयोहैं वाकुं पुत्र नहींहै
सो होवै तो बहुत आछो ॥ ये सुनके वो विरक्तवैष्णव
भगवद् आवेशसोंभरे हते और भगवद् इच्छासुं बोलेजो
राजाके चार बेटा होवेंगे और राजावैष्णव होयगो तब
ऐसे कहके वैष्णव गये फिर वह ब्राह्मण वैष्णव राजाके पा-
स गयो और जायके आशीर्वाद दियो तब राजानें वा
ब्राह्मणकुं आदर करके बैठायो और बीनती करी आप
जेंसेनको आवनो बडें भाग्यनतें होवेहै और हम जैसे गृ-
हस्थ दीनचित्त वालेनकुं आपबिना कौन पावन करे हम
आपके दर्शनमात्रसुं पवित्र भयेहैं परंतु आपके आयवेको
कारण कहो ये बचन राजाके सुनके वह ब्राह्मण वा वैष्ण-
वको बचन स्मरण करके और राजाकी भक्ती देखके ब-
हुत प्रसन्न भयो और कहवे लग्यो राजा मेरे घर एक प-
रम भगवदीय आयो हतो सो वह वैष्णव कहिगयोहै जो
राजाके चार बेटा होयंगे जब राजानें कही जो ब्राह्मण
तुम सुनो मैंनें बेटाके लीयें बहुत उपाय कियेहैं सो तुम
सुनो या गाममें एक विश्वनाथ ब्राह्मण रहेहै वा ब्राह्मणकुं
महादेवजी दर्शन देवेहैं और महादेवजी संपूर्ण कृपा वा
ब्राह्मण ऊपर राखेहैं जो वा ब्राह्मणनें मोकुं यज्ञ करवेकी
कही और जब वा ब्राह्मणके कहेसुं मैंनें चार बखत महा-
रुद्र यज्ञ कन्यो तोहुं मेरे पुत्र न भयो फेर वा विश्वनाथ-

ब्राह्मणनें श्रीमहादेवजीसों पूंछी जो या राजाके पुत्र क्यूं नहीं होवेहैं मैंने चार वार महारुद्र यज्ञ करायो है तोहूं याके पुत्र नहीं भयो तव महादेवजीनें कही मैं श्रीठाकुरजीसुं वीनती करुंगो फेर महादेवजी वैकुंठमें जायके श्रीठाकुरजीसों प्रणाम पूर्वक वीनती करी जव श्रीठाकुरजीनें कही जो या राजाके सात जन्म पर्यंत पुत्र नहीं लिख्योहै तव ये सुनके श्रीमहादेवजीनें वा ब्राह्मणकुं कही जो तुं कछु प्रयत्न मति कर और हठहूं न कर वा राजाके कर्ममें पुत्र नहीं लिख्योहै जव वह ब्राह्मण वैठरह्यो वह ब्राह्मण मोसों ऐसो वोलगयो और तुम कहोहो चारपुत्र होवेंगे ये वात कैसे वनेगी तव वह वैष्णवब्राह्मण वोल्यो जो यामें कछु खर्च नहीं लगेहै और कछु मेरे चहीयेहूं नहीं मैंतो तुमकुं यातें कहेवे आयोहूं जो और लोग कहेंगे हमनें वेटा दियेहें सो तुम और कोईको कह्यो मानियो मति ॥ और मेरे कहेको विश्वास राखो ॥ ये कहेके वे वैष्णवब्राह्मण अपनें घर गयो और शुद्धचित्तसुं भगवत्सेवा करन लग्यो फेर भगवदिच्छातें वा राजाकी चार स्त्रीनकुं गर्भ रह्यो और दसमहिनावीते पीछे राजाके चार वेटा भये जव राजानें वा वैष्णव ब्राह्मणकुं बुलायके कही जो तुम कोनसे धर्मप्रमाणें चलोहो और कोनदेवकी उपासना करोहो सो कृपाकरके कहो और जो वैष्णव तुमकुं मेरे पुत्र होएंगे ऐसो आशीर्वाद दियो हतो सो वैष्णव कहांहै और वाकुं और तुमकुं कहा चहीयेहै सो कहो जव वा ब्राह्मण वैष्णवनें कही जो हमकुं तो कछु नहीं चहिये और वे वै-

ष्णव हमारो गुरुभाईहै और मेरे गुरुनके पासहैं और विरक्त दशामें हैं ॥ वाकुं तो कछु अपेक्षा नहींहै और इहां बुलायसुं वे आवेंगे नहीं जब राजानें कही जो मोकुं तुमारे गुरूके दर्शन कराओ जब वा ब्राह्मणवैष्णवनें श्रीगुसांईजीकुं बीनती पत्र लिख्यो फेर श्रीगुसांईजी कृपाकरके श्रीगोकुलतें पधारे और वा राजाकुं दर्शन दिये और वा राजाकुं साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये और वे राजा श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और अपने सर्व परकर और कुटुंब सबकुं श्रीगुसांईजीके सेवक कराये और श्रीठाकुरजी श्रीमदनमोहनजी पधरायके सेवा करन लग्यो और श्रीगुसांईजी फेर श्रीगोकुल पधारे फेर एकदिन वा विश्वनाथब्राह्मणनें महादेवजीसों बीनती करी जो तुमनें कही हती जो या राजाके सात जन्म सुधी पुत्र नहीं होयगो सो चार पुत्र कैसे भये तब श्रीमहादेवजीनें जायके श्रीठाकुरजीकुं कही जब श्रीठाकुरजीनें आज्ञा करी मेरे जो अनन्य भक्तहै विनके मैं अधीनहुं और वे चाहेसो करसकें और जिननें मोकुं तनमन प्राण समर्पण कियोहै वीनकुं कोन सो अर्थ बाकी रह जायहै वे चाहेतो मोकुंहुं जन्म लेनो पडे और पुत्र देवें यामें कहा आश्चर्य है ये कछु बडो आश्चर्य नहींहै जासुं ये शंका तुम करो मति वैष्णवनको कियो वृथा नहींहोवेंहै वैष्णव त्रिगुणातीतहैं और कालके वश नहींहैं और कोईके वश नहींहैं जासुं तुम शंका छोडके जाओ तब महादेवजीनें वा विश्वनाथब्राह्मणकुं कही जो वैष्णव त्रिलोकीकुं पवित्र करे हैं और

श्रीठाकुरजी विनके पाछें फिरेंहें जेंसे गौ पीछें वत्स फिरेहें ऐंसे वैष्णवनके लीयें श्रीठाकुरजी अनेकप्रकारके अवतार लेंहें वैष्णव जेंसे इच्छा आवे ऐंसे करेंहें जिनकुं भगवच्चरणारविंदको दृढ आश्रय है सो कहानहिं करसकेंगे श्रीभागवतमें कह्यो है ॥ श्लोक ॥ यत्पादपंकजपरागनिषेवतृप्तायोगप्रभावविधुताखिलकर्मवंधा ॥ स्वैरंचरंतिमुनयोपिननह्यमाना इति ॥ वे वैष्णव स्वतंत्र आचरण करेंहें विनके ऊपर कोईको हुकम नहींहे जीत्योंहे काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर जिननें ऐंसे वैष्णव सर्व करण समर्थ हें ये सुनके विश्वनाथ ब्राह्मणनें महादेवजीसों कही मोकुं वैष्णव करो तब महादेवजीनें कही जो वा ब्राह्मण वैष्णव जिननें राजाकुं वैष्णव कर्योहे विनके पास तुम जाओ और हमारो नाम देके कहो तो वे तुमकुं वैष्णव करेंगे फेर विश्वनाथ वा ब्राह्मण वैष्णवके घर गयो जायके वा ब्राह्मण वैष्णवकुं सव समाचार कहे तब वा ब्राह्मण वैष्णवनें विश्वनाथ ब्राह्मणकुं आदर करके वैठायो और श्रीठाकुरजीके दर्शन करवाये और महाप्रसाद लेवायो फेर पत्र लिखके विश्वनाथ ब्राह्मणकुं श्रीगोकुलपठायो फेर विश्वनाथ ब्राह्मण श्रीगोकुल जायके श्रीगुसांईजीको सेवक भयो सो वे विरक्त वैष्णव तीनतूंबावाले ऐंसे भगवदीय हते जिनकी कृपातें वा राजाको सब देश वैष्णव भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ७० ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीकी सेवक एक ब्राह्मणीकी वार्ता॥

वा बाई वैष्णव जा गाममें रहेती हती वा गाममें एक म-

हादेवजीको पूजारी रहेतो हतो सो शिवको निर्माल्य खातो हतो शिवनिर्माल्य खायवेको दोष पद्मपुराणमें लिख्योहै पार्वतीजीनें शिवनिर्माल्य खावेवालानकुं शाप दियो है सो वे महादेवको पूजारीकी देह छूटी सो वाकुं एक वृक्षनीचे अग्निसंस्कार करवे गये सो वाको धूंवां आकाशमें गयो एक देवताको विमान जातो हतो ताकुं धूवांको स्पर्श भयो सो वे देवता विमान सहित भूमिपर आयके परयो तब वाकुं देखके बहोत लोग एकठे भये सो वा गाममें बडो सोर भयो तब गामको राजा देखवेको आयो सो वे देवता कहेनलग्यो जिननें अश्वमेध यज्ञ कर्यो होय सो वाको फल देवेतो विमान सहित स्वर्गमें जाउं जब राजानें सब पंडित एकठे करे कोईकुं कछु उ-पाय सूझो नहीं सो वे पंडित राजाके कहेतें उपाय करन लगे कोई पाठ करे कोई हवन करे कोई वेद पाठ करे परंतु विमान तो कोई उपायसूं स्वर्गमें जाय नहीं जब वे बाई जल भरवे गई हती सो वा ब्राह्मणीनें पूंछ्यो ये काहेकी भीडहै जब सब बात लोगननें कही जब वे ब्राह्मणी गागर घरके जायके कही जो तुम सब दूर होय जाओ मैं वि-मानकुं स्वर्गमें पठाउंगी जब सब लोग सरक गये वा ब्राह्मणीनें हाथमें जल लेंके कही जो मैं जलकी गागर लाउंहुं सो एक पैंडको फल तुमकुं देउंहुं ऐसे कहेके वा विमानपर जल छांटयो सो वे देवता जल पडत मात्र वा ब्राह्मणीकी स्तुती करते करते विमान सहित स्वर्गमें गये ये बात देखके वे राजा और सब गाम वे ब्राह्मणीके पां-

वन परे और कहेन लगे जो हमकुं तीन दिन मेहेनत करते भईहें और हमने तीन दिन सूधी अन्न जल लियो नहींहै और बहोत उपाय कीयेहै परंतु कछु भयो नहींहै और तुमनें सहज विमान स्वर्गमें पठाय दियो वाको कारण कहा जब वे बाई बोली ॥ श्लोक॥ विप्राद्विषड्गुणयुतादरविंदनाभपादारविंदविमुखात्श्वपचंवरिष्टं ॥ मन्येतदर्पितमनोवचनेहितार्थप्राणंपुनातिसकुलंनतुभूरिमानः ॥ वा ब्राह्मणीनें ये श्लोक कह्यो याको अर्थ–कोई ब्राह्मणहै और द्वादशगुण सहितहै और पद्मनाभजो श्रीठाकुरजीके चरण कमलतें बहिर्मुखहै ऐसे ब्राह्मणसुं भगवानकी भक्तिकरनार जो चांडाल सो श्रेष्ठहै कैसोहे जो चांडाल जानें मन और वाणी भगवानके अर्पण करीहै और भगवानके विरहसुं आतुरहै मन जाको ऐसो जो चांडाल सो अपनी कुल सहित प्राणनकुं पवित्र करेहै और वे ब्राह्मणहै सो प्राणपवित्र न करे सो कुलकुं कहा करेगो ये बात सुनके वे राजा और पंडित सब वे ब्राह्मणीके घरमें आये और आयके ब्राह्मणीकुं कही जो तुं कछु गामले और खर्चले और हमकुं पवित्र कर तब वा ब्राह्मणीनें सुनके कही जो मैं तो निरपेक्षहुं और मोकुं कछू चहिये नहीं और तुमारे पवित्र होवेको विचार होवेतो श्रीगुसांईजीके शरण जाओ जब वा राजानें वा ब्राह्मणीके नामको बीनती पत्र लिखके श्रीगोकुलपठायो और श्रीगुसांईजीकुं वा गाममें पधराये और सब सेवक भये तब वा राजाकुं श्रीगुसांईजीके दर्शन साक्षात पूर्णपुरुषोत्तमके भये

जब वे राजा श्रीगुसांईजीके आगे वा ब्राह्मणीकी वहोत ब-
डाई करी और भगवद सेवा माथेपधरायके सेवा करन ल-
ग्यो जब वा राजानें बीनती करी जो महाराजभगवदस्वरू-
पमें प्रेम और आसक्ती और व्यसन कैसे होवे जब श्री-
गुसांईजीनें वा राजाकुं श्रीनवनीतप्रियाजीके स्वरूपको
ज्ञान करायो और भक्तिवर्धिनी ग्रंथ पढायो सो वे बाई
ब्राह्मणी ऐसी कृपापात्र हती जाके संगतें सब गाम वैष्णव
भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ७१ ॥ ❀ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक सेठको लडको हतो
तिनकी वार्ता ॥ जब श्रीगुसांईजी परदेश पधारे तब वा
लडकानें श्रीगुसांईजीके श्रीमुखतें कथा सुनी सो दश-
मस्कंधके द्वादशअध्यायकी श्रीसुबोधिनीजी सुनी ॥
॥ सो श्लोक ॥ कृष्णः कमलपत्राक्षः पुण्यश्रव
णकीर्तनः ॥ स्तूयमानोऽनुगैर्गोपैः साग्रजो व्रजमाव्रजत
॥ १ ॥ या श्लोककी सुबोधनीमें नित्य श्रीठाकुरजी गौ-
चारण करके ब्रजमें पधारतेहै ये लीला नित्य है ये बात
वा लडकानें सुनी और श्रीगुसांईजीसुं बीनती करी जो
महाराज ये लीला अबी है के नहीं तब श्रीगुसांईजीनें
आज्ञा करी ये लीला नित्य है और अखंड है और सर्वत्र
व्यापक है ये बात सुनके वो लरका ब्रजमें गयो और स्या-
मढाकके पास जायके बैठो सांझ पडी गौ आवेकी बिरीयां
भई जब वाकुं दर्शन न भये तब वाकुं बहोत ताप भयो
जो सांझपडी तोहु ठाकुरजी पधारे नहीं तब वाको विप्र-
योग देखके श्रीनाथजीनें दर्शन दिये और सब गोपबा-

लक संग वेणुनाद करते गायनके संग श्रीनाथजी पधारे सो देखके वा लडकाकुं देहदशा भूल गई और नयो देह धरके वा गोपनके लडकानके संग नित्य लीलामें प्रवेश कियो सो वैष्णवको लडका श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते जिनकुं नित्य लीलाके दर्शनदेके श्रीनाथजीनें अपनी लीलामें अंगिकार कियो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥७२॥

श्रीगुसांईजीके सेवक आसकरणराजाकीवा०

सो वे आसकरणजी नरवरगढमें रहते विनकुं रागसुनवेको व्यसन बहुत हतो सो गान सुनायदेके लायें देशदेशके कलावत गवैया उहां आवते हते और सबकुं आदरपूर्वक सन्मान करते हते और रागकी परीक्षा बहुत आछी हती ये बात तानसेनजीनें सुनी तब तानसेनजी आसकरनजीके पास आये सो आसकरनजीके पास विष्णुपद गायो सो पद ॥ राग सारंग ॥ कुंवरवैठे प्यारीके-संग अंगअंगभरेरंग बलवलवल त्रिभंगी युवतिन सुखदाई ॥ ललितगती विलासहास दंपतिमन अतिउल्हास विकसित कच सुमनवास स्फुटत कुसुमनिकर तैसीहै शरद रेन जुन्हाई ॥ १ ॥ नवनिकुंज मधुपगुंज कोकिलकल कूंजत पुंजसीतल सुंगधमंद वहतपवन अतिसुहाई ॥ गोविंदप्रभुसरसजोरिनवकिशोरनवकिशोरी निरखमदनफोज मोरीछैलछबीले नवलकुंवरव्रजनृपकुलमनिराई ॥ २ ॥ ये पद सुनके राजा आसकरन बहुत प्रसन्न भये और तानसेनसुं कही जो मैनें बहुत पद सुनेंहैं परंतु ऐसो विष्णुपद कोईदिन सुन्यो नहीं है सो तुमनें ऐसे पद

कहांते सीखेहैं सो हमकुं शिखाओ जब तानसेनजी बोले श्रीगोकुलमें श्रीविठ्ठलनाथजी श्रीगुसांईजीहैं तिनकेसे-वक गोविंदस्वामीहैं तिननें ऐसे सहस्रावधी पद कियेहैं परंतु श्रीगुसांईजीके सेवक विनावे औरकुं शिखावते नाहीहैं मैंहुं तिनके संगतें श्रीगुसांईजीको सेवक भयोहुं जासुं मैंहुं कोईकुं शिखावत नाही हुं जब राजा आस-करननें कही तुमकुं जो गाम अथवा द्रव्य चहीये सो लेवो परंतु ऐसे पद सिखावो तब तानसेनजीनें कही जो मैं तुमारे पास द्रव्यकेलीयें नहीं आयोहुं मैंनें ऐसी सुनीहै जो राजा आसकरन गुणकी परीक्षाबहुत आछी करेंहैं सो बात देखवेकी लीयें आयोहुं जैंसी सुनी हती तैसी देखी तो सही और कछु मेरे काम नहींहै और कछु मोकुं च-हिये नहींहै ये बात सुनके राजा आसकरननें कही मैंहुं श्रीगुसांईजीको सेवक होउंगो और गोविंदस्वामीकुं मिलुंगो तुम दश पंदरे दिन इहां रहो और कृपाकरके मोकुं संग लेचलो जब तानसेनजी उहां रहे और थोडे दिन पीछे राजा आसकरनजीकूं संग लैके श्रीगोकुल गये जब श्रीगुसांईजी ठकरानी घाटपर संध्या करते हते सो राजा आसकरनजीकुं साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम कोटि कंदर्पलावण्य ऐसे स्वरूपके दर्शन भये जब श्रीगुसांई-जीकुं साष्टांग दंडवत करके ठाडे रहे जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी आसकरनजी बोहोत दिन भये कहां सूधी श्रीठाकुरजी तुमारि बाट देखेंगे तब आसकरननें कहि श्रीठाकुरजी आप भटकवेको पार लावेंगे तो कछु ढील

नहिं लगेगी तब श्रीगुसांईजीनें कही न्हायके मंदिरमें आवो जब आसकरनजी न्हाय आये जब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके आसकरनजीकुं नाम निवेदन करवायो वाई समय गोविंदस्वामी श्रीनवनीतप्रियाजीके सन्निधान कीर्तन करते हते श्रावण मास हतो॥ सो पद ॥ राग मल्हार ॥ आईजु स्याम जलदघटा ओल्हर चहुंदिशतें घनघोर ॥ दंपतिपरस्परबाहींजोटीविरहतकुसुमवीनतकालिंदीतटा॥ ॥ १ ॥ बडीबडीबूंदनबरषनलाग्योतेसीलहेकतवीजछटा॥ गोविंदप्रभुपीयप्यारीउठचलेओढेलालपटदोरलियेजाय-बंसीवटा॥ २ ॥ येपद गोविंदस्वामी श्रीनवनीतप्रियाजीके संनिधान गावते हते ॥ सो राजा आसकरननें सुन्यो और तानसेनसों कही जो ये बहुत सुंदर गान करेहें यामें मेरो मन बहोत लगगयो है येही गोविंदस्वामी होयंगे और तब तानसेननें कही ये गोविंदस्वामीहे जब राजा आसकरनजी नित्य गोविंदस्वामीके पास जाते रमणरेतीमेंहुं संग फिर्‍यो करते॥प्रसंग॥ १ ॥ फेर राजा आसकरननें श्रीगुसांईजीसुं बीनती करी जो महाराज अब मेरे कहा करनो जब श्रीगुसांईजीनें ये आज्ञा करी भगवत्सेवा करो ऐसें कहेके श्रीमदनमोहनजीको स्वरूप पधराय दियो जब राजा आसकरननें बीनती करी जो मैं भगवत्सेवाकी विधी समझत नहींहुं आप कृपा करके मोकुं समझावें जब श्रीगुसांईजीनें सेवाकी रीती कही सवारें उठके माला और यज्ञोपवीत संभारनो मालादास्य धर्महे जनेउ वैदिकधर्महे जनेउको अधिकार न होवे तो मालामात्र

संभारनो और श्रीमहाप्रभुजीको और श्रीठाकुरजीको ध्यान करके नाम लेके दंडवत करके बाहेर आवनो फेर देह कृत्यकरके चरणामृत लैके सूर्योदय पहेलें दातुन करनो तेल लगाय मुखशुध्यर्थ बीडो खानो ॥ जादिन व्रत होवै तादिन न खानो स्नानकर श्रीयमुनाजीकी रज लै भगवत्पादाकृती तिलक करिये दश प्रकारके तिलक सकामहै भगवानके चरणकमलतें मनुष्यकुं अंतरायपाडेहें सो दशप्रकारके तिलक न करनें ॥ श्लोक॥ वर्तुलंतिर्यगछिद्रं न्हस्वंदीर्घतरंतनुम् ॥ वक्रंविरूपंवद्धाग्रंभिन्नमूलंपदच्युतं ॥ अर्थ ॥ वर्तुल (गोलतिलक) १ तिर्यक् (वांको) २ अछिद्र (वीच्याविनाको) ३ न्हस्व (वहोतछोटो) ४ दीर्घतरं (वहोतनासीकासुधीलांबो) ५ तनुं (बहोतपातलो) ६ वक्रं (आडो) ७ विरूपं (नीचेसुंसांकडोनेउपरसुंपहोलो) ८ बद्धाग्रं (उपरसुबांध्यो) ९ भिन्नमूलं (नीचेसुंदोय लकीर जुदी जुदी) ये जो दशप्रकारके तिलक हैंसो भगवानके चरणारविंदसुं दूर करेहेंसो ये दश तिलक छोडके उर्ध्वपुंड्र तिलक करनो पाछे पंचमहाभूत जो या देहमें है तिनकी भीतर शुद्धि और बाह्यशुद्धि करनी तब राजा आसकरनें पूंछ्यो हे प्रभो पंचमहाभूतकी शुद्धीके प्रकार आप कहें तब श्रीगुसांईजी हँसके प्रसन्न होयके कहने लगे जो छे मुद्रा करियेतो पंचमहाभूतकी बाह्य शुद्धि होवै, सो सुनो पद्म धारणतें पृथ्वीकी शुद्धी और शंखधारणतें जलकी शुद्धी और चक्र धारणतें अग्नीकी शुद्धी और गदाधारणतें वायूकी शुद्धी और नाम मुद्रा-

धारणतें आकाशकी शुद्धी, और संप्रदाय मुद्राधारणतें भक्तीकी प्राप्ती होतहे अब पंचमहाभूतकी अभ्यंतर शुद्धी सुनो रजचरणामृततें पार्थवांशकी शुद्धी,और जलचरणामृततें जलांशकी शुद्धी, और प्रसादी तुलसीतें अग्न्यंश शुद्धी, और भगवदीयके संगतें वायवीयांश शुद्धी, और गुरुदर्शन तथा भगवद्दर्शनतें आकाशकी शुद्धी,या प्रकार पंचमहाभूतकी शुद्धी बाहेर और भीतर करके भगवत्सेवा करनी तब भगवतमंदिरके पास जायके दंडवत करके ये श्लोक बोलनो ॥ श्लोक ॥ नमोनमस्तेऽस्त्वृषभायसात्वतांविदूरकाष्ठायमुहुःकुयोगिनाम् ॥ निरस्तसाम्यातिशयेनराधसा स्वधामनिब्रह्मणिरंस्यतेनमः ॥ ॥ १ ॥ ये श्लोक पढके मंदिरमें जानो तब तिष्टि झारी बंटा बीडी उठायके प्रसादी पात्रमें ठलायके मांजके ठिकाणे धरके मंदिर मार्जन करनो ॥ और मृत्तिकाकी पृथ्वी होवै तो लींपनो और गची वा पाषाणकी धरती होवै तो भीनो वस्त्र फेरके सूको वस्त्र फेरनो ॥ सिंहासन उठायके झटकके नित्य प्रमाणे बिछावनो फेर झारी भरके सिंहासन पासे तवकडीमें धरनी ॥ और मंगल भोगकी सामग्री सिंहासन पासे ढाँक धरनी ॥ पीछे तीन वेर घंटा बजायके तब श्रीठाकुरजीकुं जगावनें॥और जगायवेकी वियाँ जगावेके पद अथवा यथाधिकार पाठकरके जगायके सिंहासन पर पधरायके ऋतु अनुसार उढायके टेरा देनो ॥ फेर शय्या उठायके झटकके मंदिर वस्त्र करके फेर शय्याबिछाईये ॥ और शय्याके कसना डोलतेंलेके

प्रबोधिनी पर्यंत बांधनें ॥ शीतकालमें नहीं बांधिये ॥ फेर आचमनकी झारी भरके मंगल भोग सराईये ॥ तिष्टीमें आचमन कराय मुखवस्त्र करकेबीडा अरुगवायके मंगलआर्तीउतारिये ॥ पाछें एक परातमें पीढा बिछायके वाके ऊपर वस्त्र बिछाईये और हाथकुं सुहातो जल लेके श्रीठाकुरजीकुं स्नान कराईये ॥ और अंगवस्त्र कराईये ॥ और श्याम स्वरूप होंवै तो न्हवाय पीछें फुलेल लगाईये॥ फेर अंगवस्त्र करिये ॥ और गोर स्वरूप होंवै तो स्नान पीछे फुलेल न लगाईये और अतर लगाईये ॥ पाछें शृंगार कराईये ॥ वस्त्र तथा आभूषण मेण शलाका कतरनी ये सब वस्तु पासे लै बैठीये शीतकाल होंवै तो स्नानतें पहेले अंगीठी धरिये श्रीठाकुरजी बालकहें यातें सूकोमेवा माखन मिश्री धरके शृंगार कराईये ऋतु प्रमाणें वस्त्र पेहेराईये यथा रुची शृंगार कराईये ॥ उत्सवके दिन उत्सवके शृंगार कराईये पाछें राजभोग धरिये परंतु श्रीठाकुरजीकुं ऐंसो समय देखके जगाईये॥ जो मंगलापीछें शृंगार और शृंगार पीछें राजभोग धरवेकूं ढील न लगे श्रीप्रभुनकूं श्रम न होंवै ॥ फेर राजा आसकरनजीनें पूंछी जो आपके इहांतो गोपीवल्लभभोग आवेहें और ग्वाल बोलेहें ग्वालके समय घेयामथके अरोगे हें सो तो आपनें कही नहीं याको कारण कहा तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके कह्यो जो गोपीवल्लभ और ग्वाल और संध्याभोग और संध्याआरती और सांझके समयको ग्वाल वैष्णवनके घरमें नहीं होंवै ये अधिकार हमारे कुलकोहै औरकुं नहींहें

जब राजा आसकरननें बीनती करी हेमहाराज कृपानाथ आपनें मोकुं श्रीमदनमोहनजी पधरायदीयेंहैंपरंतु श्रीमदनमोहनजीके स्वरूपमें कौनसी लीला प्रकटहै सो कृपा करके कहें तब श्रीगुसांईजीनें ये सुनके कही जो श्रीमदनमोहनजीके स्वरूपमें फलप्रकर्णके प्रथम अध्यायकी लीला प्रगटहै और प्रकर्णकी लीला गुप्तहैं जब श्रीमदनमोहनजीनें वेणुनाद कर्यो सो व्रज भक्तनकुं आकर्षण कीयें फेर व्रजभक्त वेणुनाद सुनके जा कारजमें लगे हते सो कारज छोडके व्रजभक्त तुरत गमन कीये जब श्रीठाकुरजीके पास गये तब श्रीठाकुरजी बोले॥ सो श्लोक ॥ स्वागतंवोमहाभागाःप्रियंकिंकरवाणिवः ॥ व्रजस्यानामयं कच्चिद्ब्रूतागमनकारणं ॥१॥ रजन्येषाघोररूपाघोरसत्त्वनिषेविता॥ प्रतियातव्रजंनेहस्थेयंस्त्रीभिःसुमध्यमः॥२॥ ये गमन वाक्य कहे सो सुनके व्रजभक्तनकुं चिंता भई जासुं वाक्य ग्रहण न कीये, फेर सो चिंता आतुर होयके विनके नेत्रनमेंतें जल चलवे लग्यो फेर व्रजभक्त श्रीठाकुरजीके वाक्य बिचारे सो वाक्यनमेंसुं सुमध्यमा ऐसो पद निकस्यो और ये रात घोर रूप नहींहै ऐसे बचनको विचार कीये जब व्रजभक्त अपने मनमें ऐसे समझे येतो व्यंग वाक्यहैं फेर संपूर्ण श्रीअंगके दर्शन भये सो प्रभुनको स्वरूप गौर देख्यो जब ऐसो विचारे जो हमारो भाव देखके प्रभू मोहित भयेहैं सो तन्मयता निश्चय भई जो प्रभुनको चित्त हमारेमेंहै ॥ नहीं होवै तो गौर कैसे होवें ॥ फेर चरणारबिंदको दर्शन भयो सो चरणाबिंद

साधन भक्ति रूपहै और पादुकाहैसो अंतराल हैं जैसे वाक्य व्यंगहैं जो वाक्य श्रीअंग सुखद होवैतो व्रजभक्त ग्रहण करैं ॥ नहींतो नकरैं ॥ फेर देखेंतो दक्षिणचरणारविंदको अंगुलीको स्पर्शमात्र पादुकाजीको देख्यो जव दास्यभक्तीकी स्फूर्ती भई ॥ फेर फलरूप भक्ती जो श्रीमुख तिनके दर्शन भये सो फलरूप भक्तीके आगें चार प्रकारकी मुक्ती तुच्छहै ऐंसे दर्शन भये ॥ स्वरूपमुक्तीकुं प्राप्त भई जो अलक सो फलरूप भक्ती जो मुखारविंद ताको आश्रय करेंहैं यातें स्वरूपमुक्ती करके कहा ॥ सो स्वरूपमुक्ती भक्तीके आगें तुच्छहै ॥ फेर सांख्ययोगरूपी जो कुंडल विनके दर्शन भये सो सामीप्य मुक्तीकुं प्राप्त हैं ॥ अतिनिकटहैं परंतु फलरूपभक्ती जो श्रीमुख ताको आश्रय कियो हैं ॥ यातें सामीप्य मुक्ति करके कहा ॥ सालोक्यमुक्तीमें अक्षरानंदको अनुभव है सो गंडस्थल युक्त जो अधरामृतके आगें अन्य रस तुच्छहैं सो अक्षरानंदरस तुच्छ हैं सालोक्यमुक्तिकरके कहा ॥ और सायुज्यमुक्तिमें ब्रह्मानंदको अनुभव है ॥ वाक्य ॥ जलेनिमग्नंजलपानवत् ॥ जैंसे जलमें डूबके जल पीवनो ऐंसो ब्रह्मानंदको अनुभव है सो हास्य सहित जो अवलोकन वामें जो भक्तिरस है वा भक्तीके आगें ब्रह्मानंदरसको अनुभव कहा कामको ॥ ऐंसे भक्तिरसके आगें चतुर्विध जो मुक्ती व्रजभक्तनकुं तुच्छ लगेहैं ये निश्चय भयो ॥ ॥ सो ॥ श्लोक ॥ वीक्ष्यालकावृतमुखंतवकुंडलश्रीगंडस्थलाधरसुधंहसितावलोकं ॥ दत्ताभयंचभुजदंडयुगंवि-

लोक्यवक्षःश्रियैकरमणंचभवामदास्यः॥१॥ ऐसो दास्य रसतें प्राप्त भये जो व्रजभक्तनके भाव तिनकुं देखके आप बहुत प्रसन्न भये यद्यपि आत्माराम हते तोहुं विनको प्रेम देखके आपने रमण कियो॥ वाक्य॥आत्मारामोप्यरीरमत॥ ऐसो ब्रजभक्तनके भावतें श्यामस्वरूप हते सो गौरभये या रीतीको श्रीमदनमोहनजीको स्वरूप राजा आसकरननें श्रीगुसांईजीके मुखतें सुनके श्रीमदनमोहनजीकुं पधरायके और तानसेनजीकुं संग लेके राजा आसकरन अपने देशमें आये और व्रजभक्तनके भावसों सेवा करन लगे राजकाज सब दिवानकुं सोंपदीये और श्रीमदनमोहनजीकी सेवा तथा कीर्तन करनलगे और जब अनवसर होवै तब राजा मानसीसेवा करे एंसे करते करते वहोत दिन वीते ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ फेर एकदिन राजा आसकरनके ऊपर दक्षिणको राजा चढि आयो जब राजा आसकरनकुं खबर भई तब राजा आसकरन लडाई करवेकुं चले जब शत्रुकी सेनाकेपास आये तब वरसाद भयो सो राजा आसकरनकी सेनापर तो जलको वरसाद भयो और शत्रुनकी सेना पर पथ्थरकी सिलानको बरसात भयो शत्रुनकी सेना मारीगई जब राजा आशकरन जीतके पाछें फिरे घोडापर असवारभये और मानसीसेवा करनलगे फेर सब सेवा करी रसोई सिद्धकरी और भोग समर्प्यो सो कढीकी हांडी भोग धरवेकुं जाते हते इतनेमें घोडा कूद्यो जब राजा आसकरनको ध्यान सेवामेंसुं वहार निकस्यो और ऐसे मालूम पडयो जो क-

ढीकी हांडी मेरे हाथतें पडगई और कढी ढुलाय गई सो बाहार देखतो सब वस्त्र कढीसुं भरगये जब दिवाननें पूंछ्यो जो ये कहा जब आसकरनजीनें कही जो मोकुं कढी बहोत भावेहें यासुं हांडी भरके मैं कमरसों बांध राखी हती सो फूटगईहे ऐसें कहेके सो बात गुप्तराखी फेर राजा आसकरननें मनमें ये विचार कियो जो तनुजा सेवा और वित्तजा सेवा ॥ मानसी सेवा सिद्धहोवेके लीयें करनी कहीहै ॥ अब मानसी सेवा श्रीगुसांईजीकी कृपातें सिद्ध भईहे जब राज और घर कहाकामकोहे ये विचारके भतीजेको राज्य देदियो और श्रीठाकुरजी वस्त्रआभूषण सब तथा पात्र श्रीगुसांईजीके इहां पठायदिये और आप श्रीगोकुलमें जायके रहे सब लीलाके दर्शन साक्षात् होवे लगे जैसे लीलाके दर्शन होवे तैसे पद करके गावन लगे ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ एकदिन राजा आसकरन न्हायवे जाते हते॥ सो श्रीठाकुरजीनें मुरली बजाई सो राजा आसकरनजी सुनके श्रीठाकुरजीकी आडी दौड गये उहां श्रीठाकुरजी ठाडेहै और अलौकिक सब लीलाहै और सब व्रजभक्त आवेंहें और होरीको खेल होवेंहें ऐसें दर्शन राजा आसकरनजीकुं भये तब राजा आसकरनजी देहदशा भूल गये और दर्शन करके धमार गायवे लगे ॥ सोधमार ॥ यागोकुलकेचोहटे रंगराची ग्वाल ॥ मोहनखेलेफाग नैनलेनेरी रंगराचीग्वाल ॥ येधमारमें जैसेदर्शनकरतगये तैसेगातेगये ऐसें तीनदिनसूधी गायोकरे और कछु सुध न रही जब श्रीगुसांईजीनें मनुष्यनसुं कही राजा आस-

करनजी तीनदिनसुं नहीं दीखेहें सो कहांहे जव लोगननें कही जो तीनदिनसों रमणरेतीमें ठाडेहें जव श्रीगुसांईजीनें मनुष्य पठायके बुलाय लीये जव श्रीगुसांईजीके मनुष्य विनकुं ले आये देखेंतो उन्मत्त जैसे होय गये हैं तव श्रीगुसांईजीनें कही अब इनकुं लौकिक सुधि नाहींहैं भगवल्लीला साक्षात्कार होयगईहै ये व्रजमें जहां इनकी इच्छा होवै तहां ये फिरेंगे इनकुं कछु कहो मती ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥ एकदिन राजा आसकरन सेनभोग आयहते जव जगमोहनमें बैठे हते सो व्रजभक्त दूधको कटोरा हाथमें लेके यशोदाजीकुं कहेहै जो ये दूध बहुत उत्तमहै कपूर मिसरी मील्यो है तुम श्रीठाकूरजीकुं अरुगावो जव जशोदाजी दूधको कटोरा लैके श्रीठारजीकुं आरोगावे पधारे जब श्रीठाकुरजी सखामंडळीमें बीराजते हते जब जशोदाजी कहेवेलगे जो लाल तनक दूध पीवो तब ये सब दर्शन आसकरनजीकुं साक्षात भये जब आसकरनजीनें यह पद गायो ॥ राग केदारो ॥ कीजेपान ललारेओटयोदूधलाईहैजशोदामैया ॥ कनककटोराभरपीजेव्रजबाललाडलेतेरीवेनीवढेगीभैया ॥ १ ॥ ओटयोनीकोमधुरोअछूतोरुचिसो करीलीजेकन्हैया ॥ आसकरनप्रभुमोहननागरपयपीजेसुखदीजेप्रातकरोगी घैया ॥ २ ॥ जब श्रीयशोदाजी तथा रोहिणीजी श्रीठाकुरजी तथा श्रीबलदेवजीकुं सेनभोगधर्‍यो और सब सखा सहित जेमन लगे तब ये दर्शनआसकरनजीकुं भये जब आसकरनजीनें येपद गायो ॥ रागकान्हरो ॥ वियारु करत हैं घनश्याम ॥ खुरमा-

खाजागुंजा मठरीपिस्तादाखबदाम ॥१॥ दूधभातघृतसों-निथारभरि लेआईब्रजवाम ॥ आसकरनप्रभुमोहननाग-रअंगअंगअभिराम ॥ २ ॥ रागकेदारो ॥ मोहनलालवि-यारूकीजे ॥ व्यंजनमीठेखाटेखारेरुचिसोंमाग जननी-पैंलीजे ॥ १ ॥ मधुमेवापकवानमिठाई ताऊपरतातोपय-पीजे ॥ सखासहितमिलीजेमोरुचिसों जूठिनआसकरन-कोदीजे ॥ २ ॥ येसुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये फेर श्रीगुसांईजीनें ये विचार कियो जो प्रभू कैसे दयालहैं आसकरनके ऊपर कैसी कृपा करीहै जो लौकिकके रा-जानकुं राजके अंतमें नर्क मिलेहै और आसकरनकुं रा-जके अंतमें भगवत् लीलाके दर्शनभयेहैं औरलीलाकी प्राप्तीहुं होयगी ऐसे श्रीप्रभुनकी कृपा बिचारके श्रीगुसां-ईजी बहुत प्रसन्न भये पाछे सेनसमयमें दर्शन राजा आ-सकरननें करे ता पाछें राजाआसकरननें श्रीठाकुरजीके नेत्रनमें नीद झमक रही है ऐसो देख्यो और एक सखी हाथजोडके श्रीठाकुरजीके आगेंठाडीहोयके बीनती करे हैं जो आपकुं नीद आय रहीहै सो पोढो ॥ येदर्शन लीलासहित राजा आसकरनकुं भये जब राजा आसक-रननें येपद गायो ॥ रागकेदारो ॥ पोढीये पिय कुंवरक-न्हाई ॥ युक्तिनवलविविधकुसुमावलिमेंअपनेंकरसेजब-नाइ ॥ १ ॥ नाहिनसखी समयकाहूकोग्वालमंडलीसब-वोराई॥आसकरनप्रभुमोहननागरराधाकोंललितालेआई ॥ २ ॥ रागकेदारो ॥ तुमपोढोहौं सेजबनाउं ॥ चापूंचरन-रहूंपांयनतर मधुरेंस्वरकेदारोगाउं ॥ १ ॥ सहेचरिचतुर-

सबेजुरिआई दंपतिसुखनयननदरसाउं ॥ आसकरनप्रभुमोहननागरयहसुखश्यामसदाहौंपाउं॥ २ ॥रागकेदारो॥ पोढरहोघनश्यामबलैयालेहूं ॥ श्रमितभयेहोआजगोचारतघोषपरतहैघाम ॥ १ ॥ सीरीवियार झरोखनकेमगआवतअतिसीतलसुखधाम ॥ आसकरनप्रभुमोहननागरअंगअंगअभिराम ॥ २ ॥ या रीतीसुं राजाआसकरनजीकुं जैसी जैसी लीलाके दर्शन होते सोईसोई पद गावते और श्रीगुसांईजी इनके उपर सदैव प्रसन्न रहेते और गोविंदस्वामीके सतसंगतें नित्य श्रीनाथजी आसकरनजीसौं बातें करते और खेलते ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥ सो एकदिन राजा आसकरन श्रीजी द्वार आये ॥ और श्रीनाथजीके दर्शन करे ऐंसी लीलाके दर्शनभये सब ब्रजभक्तयशोदाजीके घर मिलके उरांहनो देवे आयेहैं और श्रीठाकुरजीकुं यशोदाजीके पास ठाडे देखके उराहनोदेवे भूलगयेहैं और श्रीठाकुरजीके स्वरूपमें विनकोमन मोहित भयोहै ऐंसी लीलाके दर्शन आसकरनजीकुं भये जब आसकरनजी चकित होयरहे जब चतुर्भुजदासजी दर्शन करते हते विननें येपद गायो ॥ राग आसावरी ॥ भूलीरीउराहनेकोदेवो ॥ परगयेदृष्टिश्यामघनसुंदरचकितभईचितेवो ॥ १ ॥ चित्रलिखीसी ठाडीग्वालिन कोसमजेसमझेवो ॥ चतुर्भुजप्रभुगिरिधरसुखनिरखत कठिनभयोघरजेवो ॥ २ ॥ ऐंसो पद आसकरनजी सुनकेबहुत प्रसन्न भये और विचार कर्‍यो जैंसे अनुभव मोकुं भयोहै ऐंसी कृपा चतुर्भुज दासके ऊपरहूं है ऐंसो विचारके श्रीगुसांई-

जीकुं बीनती करी जो महाराज आपकी कृपा चतुर्भुज-दासके उपर वहतहै तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो कुंमनदासजीके बेटाहें जिनकुं श्रीगोवर्धननाथजी बिना क्षणभर रह्यो नजाय ऐंसेनको बेटा ऐंसे होवे यामें कहा आश्चय ह फेर एकदिन आसकरनजी सांझके समय गोविंदकुंडके पास ठाडे हते देखे तो ब्रजभक्तनके यूथ चले आवेंहें और आयके सब गोपीजन ठाडी भई इतनेमें श्रीनाथजी गाय चरायके घरमे पधारतेहें गायनके संग गोरजसुं व्यापतहै मुखारविंद जिनको ऐंसे प्रभूके दरश-नकुं रस्तामें गोपीजन आवेंहें ऐंसे दर्शन आसकरनजीकुं भये जब आसकरनजीनें ये पद गायो ॥ राग गौरी ॥ मोहनदेखिसिरानेनैना ॥ रजनीमुखआवतगायनसंगमधुरबजावतबैना ॥ १ ॥ ग्वालमंडलीमध्यबिराजतसुंदरताकोऐना ॥ आसकरनप्रभु मोहननागर वारोंकोटिकमैना ॥ २ ॥ आसकरनजीनें ऐंसे पद बहोत गाये फेर आसकरनजी रातकुं श्रीगुसांईजीके पास कथा सुनवेको नित्य जाते जैंसे वचनामृत सुनते तैंसो अनुभव होतो हतो ॥ फेर एकदिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकुं जगायवेकुं पधारे वाहीसमय अपने अपने घरतें सब ब्रजभक्त सद्य माखण और मलाई और दूध और अनेक प्रकारकी सामग्री लैके सब पधारेहें और गोपीजन यशोदाजीकुं कहेहें हे यशोदाजी लालजीकुं जगाओ हम तुमारे लाल-जीके दर्शनकरके और सामग्री अरोगायके जो दही बे-चवे जायेंहें तो हमकुं दशगुणो लाभ होवेंहें यातें हम तु-

मारे घर आईहें सो लालजीकुं जगाओ तो इनको मुख देखके जावें ॥ तब ऐसे दर्शन आसनकरनजीकुं भये जब आसकरनजीनें पद गायो सो पद ॥ राग बिभास ॥ प्रातसमयघरघरतेंदेखनकोआईगोकुलकीनारी॥अपनो कृष्णजगाययशोदाआनंदमंगलकारी ॥ १ ॥ सबगोकुलकेप्राणजीवनधनयासुतकीबलिहारी ॥ आसकरनप्रभुमोहननागर गिरिगोवर्धनधारी ॥ २ ॥ राग बिभास ॥ उठोमेरेलाललाडिलेरजनीवीतीतिमिरगयोभयोभोर॥घरघरदधिमथनियाघूमेअरुद्विजकरतवेदकीघोर॥ १॥ करिकलेउदधिओदनमिश्रीबांटिपरोसोंओर ॥ आसकरणप्रभुमोहननागरवारोंतुमपरप्राणअंकोर ॥ २ ॥ फेर आसकरनजीकुं बाललीलाके दर्शन भये यशोदाजी दहीविलोवेहें और श्रीठाकुरजी बालकचेष्टा करेंहें और दोड दोडके दही मथन करतें रैकुं पकडेहें यशोदाजीकुं देवे नहींहें और यशोदाजी श्रीठाकुरजीकुं समझावेहें जो लाला बहुत अवार भईहें मोकुं दधि मथन करन दे ऐसे दर्शन राजा आसकरनजीकुं भये हें ॥ जब आसकरनजीनें ये पद गायो ॥ सो पद ॥ राग रामकली ॥ मोहेदधिमथनदेबलिगई ॥ जाउबलबलवदनऊपरछांडमथनीरई॥ ॥ १ ॥ लालदेउंगीनवनीतलोंदाआरघुमकितठई ॥ सुतहितजानविलोकयशोमतिप्रेमपुलकितमई ॥ २ ॥ लेउछंग लगायउरसोप्राणजीवनजइ ॥ बालकेलिगुपालजूकीआसकरणनितनई ॥ ३ ॥ ये पदसुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और ये विचारे जो आसकरनकुं प्रभुनको स्वरूप

लीलासहित हृदयारूढ भयेहै सो सब लीला सहित प्रभु इनकुं दर्शन देतेंहे ऐसे विचारके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये प्रसंग ॥६॥ फेर एकदिन आसकरनजी श्रीगोकुलमें आये श्रीनवनीत प्रियाजीके दर्शन करवेकुं गये तब आसकरनजीकुं ये लीलाके दर्शन भये श्रीयशोदाजी श्रीठाकुरजीकुं पालने झुलावेहें और गोपीजन मिलके यशोदाजीके पास आईहें और गोपीजन कहेहें जो हमारो ऐसो नेम है ज्यांसूधी तेरे लालकुं हम खेलावे नहीं और हम पालना झुलावे नहीं तहां सूधी हमारो चित्त घरके कासमें नहीं लगेहें और जो कदाचित घरको काम करे तो सब काम बिगडेहें जासुं हम सगरी सूती उठके तुमारे लालकुं खिलावन आईहें ऐसे सब गोपीजन कहेहें और यशोदाजी हसेंहें ऐसी लीलाके दर्शन आसकरणजीकुं भये जब आसकरणजीनें ये पद गायो ॥ राग रामकली ॥ यहनित्यनेमयशोदाजूमेरें तिहारोईलाललडावनकुं ॥ प्रातसमयउठपलनाझुलाउं शकटभंजनयशगावनकुं ॥ १ ॥ नाचतकृष्णनचावतगोपीकरकटताल बजावनकुं ॥ आसकरणप्रभुमोहननागरनिरखवदनसचुपावनकुं ॥ २ ॥ सो ऐसे अनेक प्रकारकी लीलाको अनुभव होतोहतो सो राजा आसकरण व्रजमें फिरते हते और ज्यास्थलमें जाते वाई स्थलमें श्रीठाकुरजी वैसी लीलाके दर्शन देते हते एकदिन राजा आसकरन दानघाटीपर जाते हते उहां देखेतो श्रीनाथजी कामली ओढके हाथमें लकुटी लेके सखामंडली

संग लेके ठाडेहें और व्रजभक्त दहीं वेचवेकुं जातहें और सब सखादेखके गोपिनकुं पकडतहें और कहेंहें हमारो दहिंको दान लगेहै सो देजाओ गोपीजन कहेंहें जो दहींको दान हमनें सुन्यो नहींहें और तुम कबके दानी भये जब आसकरणजीनें पद गायो सो ॥ राग बिभास ॥ नंदकिशोरयहवोहनीकरननपाई ॥ गोरसकेमिषरसहिढंढोरतमोहनमीठीताननगाई ॥ १ ॥ गोरसमेंरेघरहिविकेहेंक्योंवृंदावनजाय ॥ आसकरणप्रभुमोहननागरयशोमतिजायसुनाय ॥ २ ॥ राग बिभास ॥ कवतें भयोहेंदधिदानी ॥ मटुकीफोरतहरवातोरतयहवातमेंजानी ॥ १ ॥ नंदरायकीकानकरतहुं और जसोदारानी ॥ आसकरणप्रभुमोहननागरगुणसागरअभिमानी ॥ २ ॥ सो ऐंसी लीलाके दर्शन राजा आसकरणजीकुं दानघाटीपर भये फेर एकदिन राजा आसकरण परासोलीमें गये उहां श्रीठाकुरजी वेणुनाद करेंहें और व्रजभक्त पधारतहें अतिउत्कंठासहित श्रीठाकुरजीके पास गमन करतहें ऐंसे दर्शन आसकरणजीकुं भये तब ये पद गायो ॥ राग केदारो ॥ गोपमंडलीमध्यमनोहरअतिराजतनंदकेनंदा ॥ शोभितअधिकशरदकीरजनी उडुगणमानोपूर्णचंदा ॥ ॥१॥व्रजयुवतीनिरखसुखठाडीमानतसुंदरआनंदकंदा ॥ आसकरणप्रभुमोहननागरगिरिधरनवरसरसिकगोविंदा ॥२॥यारीतीसों राजाआसकरनकुं अनेक लीलाके दर्शन भये ॥ श्रीगुसांईजीकी कृपातें सो राजा आसकरण ऐंसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ ७ ॥ और राजा आसकरण व्रजमें फि-

न्यो करते हते कोईदिन श्रीगोकुलमें कोईदिन श्रीजी द्वार-
में कोईदिन व्रजके और स्थलनमें फिरते खान पानको
कछु उपाय न राखते विनकी ऐंसी दशा देखके
श्रीगुसांईजीनें सब वैष्णवनकुं और मुखिया भीतरिया-
नकुं और वहूबेटीनकुं कहि राख्यो हतो जो राजा आ-
सकरण जब आवे इनकुं खावेको जोहाजरहोवे सो ध-
रदेनो कारण जो दोदो चारचार दशदश दिनमें जो
यह और भगवदिछासुं जोमिलेहे सो लेलेवेहें ऐंसे श्रीगु-
सांईजीने कहेराखि सो एकदिन श्रीगोकुलमें आसकर-
णजी आये तब श्रीगोपिनाथजीके बेटीजी लक्ष्मि
बेटीजी सत्यभामा बेटीजी बालपणेसों विधवा हते
और श्रीनवनीतप्रियाजीकी रसोईकी सेवा करते हते
और नवनीतप्रियाजीके राजभोग साजवेके समय
आसकरणजीकुं आये देखके बेटीजीनें विचार क-
र्यो वैष्णव सूखो जायगो तो फेर पांच
सात दिनमें आवेगो और श्रीनाथजी याके हृदयमें वि-
राजेहें आपकोश्रम होवेगो येविचारके लक्ष्मी बेटीजीनें
सत्यभामा बेटीजीसुं कहि तुम श्रीनवनीतप्रियाजीके लीयें
दूसरी सामग्री तैय्यार करो और येमें आसकरणजीकुं
धरदेउं इनके हृदयमें श्रीनवनीतप्रियाजी अरोगेंगे ऐंसे
विचारके वो थार आसकरणजीके आगें धरदियो तब आ
सकरणजी सबलेगये फेर और सामग्री सिद्ध करके तब
श्रीनवनीतप्रियाजीकुं राजभोग धरे पाछें भोग सराये
तब श्रीगुसांईजी आरती उतारवेकूं पधारे तब श्रीनवनी-

तप्रियाजीको मुखारविंद बहुत प्रसन्न देखके श्रीगुसांईजीनें पूछी आजकहाहै तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें कहि आज हम दुगुणो राजभोग अरोगेहैं तब श्रीगुसांईजीनें कहि सामग्रीतो अधिक मैं नहिंहैं तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें कहि या बातकुं बेटीजी जानेहैं फेर श्रीगुसांईजीनें भोजन करवेकेसमय बेटीजीकुं पूंछि तब लक्ष्मी बेटीजी मनमेंडरपके और हाथ जोडके सब वात कही ये बात सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और आज्ञा करी जो वैष्णवको स्वरूप ऐसोहिहै जाण्यो जायतो ॥ परंतु जहांसूधी आप न जणावें तहांसूधी जीवको कोई उपाय नहिं है ऐसें कहेके आप चुप कररहे सो वे आसकरणजी ऐसे कृपापात्र हते जो विनके हृदयमें विराजके श्रीनवनीतप्रियाजी अरोगें सो ये बात श्रीगुसांईजीनें गोपालदासजीके हृदयमें प्रवेश करके वल्लभाख्यानमें गाईहै ॥ सोतुक ॥ लक्ष्मीसत्यभामाबेउअग्रजनीअनुहारेरेरसना ॥ श्रीनवनीतप्रियजेनें रीझव्या सेव्या विविधि प्रकारेरेरसना ॥ ॥ १ ॥ या आख्यानमें सातबालक और सात बहुजी और छे बेटीजीनको वर्णनहै परंतु श्रीनवनीतप्रियाजीकूं रिझाए ऐसो शब्द लक्ष्मीबेटीजी और सत्यभामा बेटीजी विना औरमें नहिं कह्योहै सोवे आसकरणजी श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥७३॥❀

।श्रीगुसांईजीके सेवक दोउ भाई साचोरा ति०।

सोवे दोउ भाई साचोरा गुजरातमें रहेते हते ॥ एक समय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे ॥ तब दोउ भा-

ईनकुं नाम निवेदन कराए तब वे दोनो भाई श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लगे और दिवसरात्र भगवद्वार्ता करते और श्रीसुबोधिनीजी वांचते और कछु धं. नहीं करते भगवदिच्छासुं निर्वाह करते एक दिन वैष्णवनको साथ श्रीगोकुलजातो हतो तब वा गाममें वा साचोरानके घरमें जाय के उतरे विनके घर कछु हतो नहीं जब विन दोनो भाईननें विचार कर्‍यो जो ये वैष्णव आयेहें सो हमारे घरते प्रसाद लीये विना न जाय तो ठीक तब वीननें ऐसोविचार कर्‍यो जो अमुक बनियाकी दुकान अपने परोसमें है और वो आपनो मित्र है वाकी दुकान खोलके जितनी सामग्री चहिये इतनी काढ लेवें फेर ये बनिया आवेगो जब दाम चुकाय देवेंगे ऐसे विचारके रातकुं वाकी दुकान खोली और जेसामग्री जितनी चहीती हती इतनी तोलके लीनी तब बडो भाई सामग्री लैके घर आयो और छोटो भाई दुकान बंद करवेकुं रह्यो जब सरकारके मनुष्यननें वाकुं चोर जानके पकर्‍यो फेर छोटे भाईनें बडे भाईकुं खबर दीनी जो तुम रसोई करके वैष्णवनकुं प्रसाद लेवाईओ और मैं राजसूं निवटके काल आवुंगो ये बात वासाचोराके परोसीननें जानी विनने राज्यमें जायके कही मैं इनके परोसमें रहूंहूं ये नित्य बहोत चोरी करके घरमें लावेंहें और लोगनकुं लुट लावेंहें और सब जगामें डाको पाडेहें ऐसे झूठी बातें बनायके सरकारके मनुष्यनकुं समझायो याकुं मारडारो तो बहुत आछो तब सरकारके

मनुष्यननें वा परोसीकी बात साँची मानके वाकुं मार-डा-यो और गामके दरवाजापर वाको माथो टांग दियो और वृक्षसों वाको धड बांध दियो और गाममें जाहेर क-यो जे कोई मनुष्य चोरी करेगो वाके ये हाल होवेंगे और वाको बडो भाई तो घरमें न्हायके रसोई करके भोग धरके वैष्णवनकुं प्रसाद लिवाये ॥ विन वैष्णवनकुं जावेकीउतावलहती सो दो पातर घरमें करधरी एक अप-नी और भाईकी जब भाई आवेगो तब प्रसाद लेउंगो ऐसे विचारके दो पातर ढांकके विन वैष्णवनकुं पहोंचावे ग-यो गामके दरवाजा पर देखे तो भाईको धड और माथो टांग्यो है ॥ देखके बहुत उदास भयो और सेवामें न्हायो हतो छोटो भाई मा-यो गयो ऐसी खबर बडे भाईकुं पेहेले पडी न हती जब दरवाजापर देखके रोवे लग्यो और वो धड हतो सो हाथ जोडके वैष्णवनकुं जयश्रीकृष्ण करन लग्यो सो वैष्णवदेखके बहुत चकित भये और वाको धड छोडके और शीश छोडके धडके ऊपर मिलाय दियो और श्रीनाथजीको प्रसादी वस्त्र हतो सो वाके गलामें बांध दियो और चरणामृत वाके मुखमें मेल्यो सो वैष्ण-वनकी कृपातें छोटो भाई जीवतो भयो और उठके वै-ष्णवनकुं दंडवत करन लग्यो और वैष्णवनकुं वीनती करी आजको दिन कृपा करके इहां रहो इतनेमें वा रा-जाके मनुष्यननें राजाकुं खबर करी जो वा ब्राह्मणकुं आज सवारे मरायो हतो सो वैष्णवननें जीवतो क-यो तब वे राजा सुनके बहोत डरप्यो आयके वैष्णवनके पां-

वन पऱ्यो और वीनती करी मेरे अपराध क्षमा करो औ-
र मोकुं तुमारो दास करो और जेसे बने तैसे मोकुं शरण
लेउ फेर वा राजानें वा साचोरा दोनो भाईनके परोसीकुं
पकडायके मार डारवेको हुकम कऱ्यो तब वैष्णवननें
छोडायो फेर राजानें कही ये वैष्णव द्रोही और धर्मद्रोही
मेरे गाममें नहीं चहिये राजानें वाकुं देशमेंसुं वाहेर का-
ढ्यो और वाको घर लूट लियो फेर राजा विन वैष्णवनके
संग श्रीगोकुल गयो और वैष्णव भयो सो वे दोनो भाई
साचोरा ऐसे कृपा पात्र हते जिनकी चित्तकीवृत्ती दिवस
रात्र श्रीगुसांईजीके चरणारबिंदमें और वैष्णवनकी से-
वामें रहेती हती ॥ फेर वाराजानें दोनों भाइ साचोरा-
नकुं आजीविकाकर दीनी सो वे दोउ भाई साचोरा ऐसे
कृपा पात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ७४ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक रामदास खंभातके
वासीकी वार्ता.– एक समें श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे
जब रामदासजीकुं नाम निवेदन करायो फेर रामदास-
जीन श्रीगुसांईजीसुं पूंछी अब कहा आज्ञा है तब श्री गु-
सांईजीनें कही अष्टाक्षर तथा पंचाक्षरको जप करो तब
रामदासजी एकांतमें बैठके जप करते ॥ फिर रामदास-
जीकुं श्रीगोवर्धननाथजीनें दर्शन दिये और कही जो
तुम व्रजमें आयके हमारी सेवा करो तब रामदासजी
व्रजमें जायके श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लैके श्रीनाथजीके
शाकघरकी सेवा करन लगे फेर श्रीनाथजी शाक घरमें
आयके रामदासजीसों बातें करे फेर एक दिन गुलाल

कुंडपर श्रीनाथजी पधारे और रामदासजीकुं कही गये तुम शीतल सामग्री लेके गुलालकुंडपर आईयो सो रामदासजी लेके गये उहां श्रीनाथजी आरोगे सब सखामंडली कुं वाट दीये सो रामदासजीकुं सब लीलाके दर्शन भये इतनेमें शंखनाद भये श्रीनाथजीतो झट मंदिरमें पधारे और रामदासजीतो धीरे धीरे भोगके दर्शन समे आय पहोंचे और अपने मनमें बहोत डरपे जो श्रीगुसांईजी कहा कहेंगे तब श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीसों कही जो रामदासजी मेरे संग गये हते जासुं तुम कछु इनकुं मत कहो तब श्रीगुसांईजीनें रामदासजीसों कही जो श्रीनाथजी तुमकुं संग लेजाय तहां नित्य जाओ तुमारे बडे भाग्यहैं शाकघरमें दूसरो मनुष्य करेंगे और तुमकुं अवकाश होवे जब शाकघरमें सेवा करियो फेर एकदिन श्रीनाथजी रामदासजीकुं कदमखंडीपर लेगये और उहां रासकिये और गोविंदस्वामी कीर्तन गाते हते और स्यामदास मृदंग वजावते हते ऐसे अनेक लीलानके दर्शन श्रीनाथजीनें रामदासजीकुं कराये सो वे रामदासजी ऐसें कृपापात्र अष्टाक्षरमंत्रके जप करके भये सो नारद पंचरात्रीमें कह्योहै ॥श्लोक॥ किंमंत्रैर्बहुभिर्विनश्वरफलैरायाससाध्यैर्मखैःकिंचिल्लोपविधानमात्रविफलैःसंसारदुःखावहैः॥एकःसन्नपिसर्वमंत्रफलदोलोपादिदोषोज्झितःश्रीकृष्णः शरणंममेतिपरमोमंत्रोयमष्टाक्षरः ॥ १ ॥ सो अष्टाक्षर जप करते रामदासजीकुं लीलानके दर्शन श्रीनाथजीनें पुष्टिमार्ग राखवेके लीयें कराये जो कोई वैष्णव अष्टाक्षर मंत्रको

जप करेंगे तिनके सब मनोरथ पूर्ण होएंगे ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ७८ ॥ ❀॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक ताराचंद भाईकी वार्ता ॥

सो ताराचंद भाई श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं आये तब श्रीगुसांईजीके दर्शन कीये साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तमके दर्शन भये फेर ताराचंदभाईनें नाम निवेदन किये और श्री नवनीतप्रियाजीके स्वरूपमें आसक्त भये फेर कोईदिन ताराचंदको मन चलायमान होवे लग्यो वृथा विचार करन लगे तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो वैष्णवनकुं वृथा लाप तथा वृथा क्रिया तथा वृथा ध्यान वर्जितहें सो ये सुनके ताराचंदभाईनें विचार कन्यो जो मेरे मनकी आपने अंतर्यामी पणेसुं जानीहे जासुं बडे भाग्य माने और बहुत शिक्षा मानी और अपने मनकुं स्थिर करवेकुं उपाय ढूंढवे लगे फेर सर्वोत्तमजीनें ढूंढ्यो सो ॥ श्लोक ॥ श्रद्धा विशुद्धबुद्धियःपठत्यनुदिनंजनः ॥ सतदेकमनासिद्धिमुक्तांप्राप्नोत्यसंशयः ॥ ॥ १ ॥ यारीतिसुं ताराचंदभाईनें विचार कियो जो श्रद्धा सहित शुद्धबुद्धिसहित जो श्रीसर्वोत्तमजीको पाठ करेंहें और एकसो आठ नामनको अर्थ चित्तमे धारण करेंहें तिनको मन स्थिर होवेंहें और कृष्णाधरामृतरूपी जो सिद्धीहै वा जीवकुं प्राप्त होवेंहे यामें संशय नहीं ऐंसे विचारके ताराचंदभाई श्रीगुसांईजीकी आज्ञातें सर्वोत्तमजीको पाठ करनलगे फेर थोडेदिनमें श्रीठाकुरजी अनुभव जतावन लगे सो वे ताराचंद श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृ-

पापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ७६ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक ब्राह्मणकी वार्ता ॥

सो वे ब्राह्मण पंडित बहुत हतो और कर्ममार्गमें आसक्त हतो फेर वह ब्राह्मण श्रीगोकुल आयो और श्रीगुसांई-जीको सेवक भयो और भगवत्सेवा करनलग्यो एकदिन वा ब्राह्मणवैष्णवनें श्रीगुसांईजीके मुखतें दैवीजीवनके लक्षण सुने जो लौकिककर्म तथा वैदिककर्म जो दैवीजीव करेंहें सो कपटतें करेंहे नहीं करें तो विनकुं कछु बाधा ना-हींहै ॥ लोकशिक्षार्थ करेंहें सो पुष्टिप्रवाहमर्यादाग्रंथमें क-ह्योहै ॥ सो श्लोक ॥ लौकिकत्वंवैदिकत्वंकापटयात्तेषुनान्यथा ॥ वैष्णवत्वंहिसहजंततोन्यत्रविपर्ययः ॥ १ ॥ ये वात सुनके मनमेंविचार कर्‌यो जो कर्ममार्गमें तें आसक्ती छोडी च-हीये फेर श्रीठाकुरजी पधरायके अपने देशमें आयके सेवा करन लग्यो चुकटी मागलावे और निर्वाह करे और श्री-ठाकुरजीकी मंगलातें सैन पर्यंत आखोदिन सेवा करे कर्मकरवेको अवकाश आवे नहीं फेर एकदिन बहुत अ-वारभई जब झटपट बुहारी करन लग्यो बुहारीकी दोरी तूटगई तब जनेउ उतारके बुहारी बांधी परंतु श्रीठाकु-रजीकुं अवार न होवें ऐसो मनमें समझो फेर श्रीठाकुरजी वा ब्राह्मणकुं देखके हँसे और कहने लगे जो मैं तेरेपर प्रसन्नहुं जो तुं जानेंहैं जो ब्राह्मण वेदकर्म न करे तो नर-कमें जाय ऐसे तु जानेहैं तोहुं मेरे लीयें नर्क जानो कबूल कर्‌यो जासुं मैं तेरेपर प्रसन्नहुं और तुं मागेंगो सो देउंगो तब वा ब्राह्मणनें हाथ जोडके कही जो महाराज मोकुं

कछु नहीं चहीये आप सदा मोसुं बोलो और वातचीत करों यासुं अधीक मैं कछु मानु नहींहुं श्रीगुसांईजीकी कृपातें मोकुं ऐसो सुख भयो है तब श्रीठाकुरजीनें कही जो अब जनेउ पेहेर लेवो तब वा ब्राह्मणनें कही जो अब मोकुं कर्ममार्गसों कहा काम है तब श्रीठाकुरजीनें कही जो लोगनके दिखायवेकुं जनेऊ पेहेर्यो चहिये तब वो ब्राह्मणनें जनेउ पहेरके सेवा करन लग्यो और नित्य श्रीठाकुरजी वासुं बोलते और सब अनुभव जतावते सो वे ब्राह्मण श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपा पात्र हतो जिननें न-र्कमें जानो कबूल कर्यो परंतु प्रभुनकुं अवार न होयवे दीनी ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ७७ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक हरिदास तथा मोहन-दासकी वार्ता॥ सो वे हरिदास घरमें श्रीठाकुरजीकी सेवा करते हते और मोहनदास विनके घर आयके उतरे हते सो दिवस रात दोनो जने भगवद्रसमें छके रहेते और ह-रिदासजी मोहनदासमें बहोत आसक्त भये सो मोहन-दास विना एक क्षण रहे न सकते और भगवत्सेवा कर्यो करते और ग्रंथ देखे करते और साक्षात् श्रीठाकुरजीको आविर्भाव मोहनदासजीमें मानते और जब मोहनदास जायवेकी बात करते तब सुनके हरिदासजीकुं मूर्च्छा आय जाती और ऐसी भावना करते जो जन्मपर्यंत मो-हनदासजी इहांसों न जायतो आछो तब एकदिन मोहन-दासनें निश्चय कर्योके सवारे जानोहै तब हरिदासजीनें स्त्रीसुं कही जोतूं घर और श्रीठाकुरजी और बेटा सब सं-

भार राखो मेरे प्राण नहीं रहेंगे जब मोहनदास इहांतें जाएंगे तब सर्वथा मेरे प्राण नहीं रहेंगे एंसे हरिदासजीनें स्त्रीसों कही तब स्त्रीनें सुनके विचार कियो जो मोहनदास न जाय और मेरे पतीके प्राण रहें एंसो उपाय करनो ये विचारके रातकुं बेटाकुं विष दियो जब पाछली रातभई तब बेटानें प्राण छोडे तब रोयउठी तब मोहनदास तैयारी करत हते सो कमर छोडके वास्त्रीकुं जायके पूंछी जो ये तुमारा बेटा रातकुं आछो हतो आज कहा भयो सो तुम साँच कहो तब हरिदासकी स्त्रीनें साँचो कह्यो ये सुनके मोहनदासजी चकित भये और ऐंसो विचार कियो जो इनको कैंसो स्नेह है और मैं कैंसो कठिन हुं एंसे विचारके वा बालकके मुखमें चरणामृत दियो और भगवन्नामको उच्चार कियो और श्रीठाकुरजीकुं वीनती करके वा बालकके कानमें अष्टाक्षर कह्यो तब वे बालक जीवतो भयो तबतें मोहनदासनें एंसो नेम लीयो जो आज पीछे हरिदासजी धक्का मारके काढेंगे तोहुं इहांतें नहीं जाउंगो फेर जन्मपर्यंत मोहनदास हरिदासके घरमें रहे सो वे हरिदास तथा हरिदासकी स्त्री ऐंसे कृपा पात्र हते जिननें वैष्णवको संग न छोड्यो या बातकेलीयें पुत्र जेसी वस्तु त्याग करी तब तें श्रीठाकुरजी हरिदासजीको ऐंसो स्नेहदेखके बहोत प्रसन्न भये और कहां तांइ कहिये वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ७८ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक चोरकी वार्ता ॥

सो चोर श्रीनवनीतप्रियाजीके मंदिरमें रातीकुं छिप रह्यो

पात्र तथा आभूषण तथा वस्त्र सब एकठे करके एक गांठ बांधी और उठायवे लग्यो तब गांठ उठी नहीं वानें आखी रात उपाय तो बहोत करे परंतु सवारसूधी गांठ न उठी फेर वह चोर पकड्यो गयो तब श्रीगुसांईजीके पास लेगये तब श्रीगुसांईजीनें कही जो याकुं छोडदेओ पृथ्वीपतीकुं खबर पडेगी तो याकुं मारडारेगो सो श्रीगुसांईजीकुं बहोत दया आई और चोरकुं छुडाय दियो फेर वा चोरके मनमें ऐसी आई जो मेरे प्राण जाते श्रीगुसांईजीनें मेरेपर कृपा करके मोकुं प्राण दान दियेहैं इनकी शरण जाउं तो ठीक फेर वो चोर श्रीगुसांईजीको सेवक भयो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो अब तु चोरी मत करे जब वा चोरनें हाथ जोडके कही जो महाराज चोरी करे विना मोसुं रह्यो नहीं जायगो तब श्रीगुसांईजीनें कही जो तुं निर्दय होयके चोरी मत कर जाके पास सो रुपैया जितनो द्रव्य होवे तब वा की दोरुपैया जितनी चोरी करे तो वाको मन न दूखे ॥ और सत्य भाषण करे तो श्रीप्रभुजी दयालुहै तेरो मन फेर डारेंगे और आपके चरणारविंदमें लगावेंगे ॥ ऐसे कहेके वा चोरकुं वैष्णवताकी रीती सिखायके विदा कियो फेर वा चोरनें ऐसो विचार कियो जो कोई राजाकी चोरी करुंतो एक वार काम होयजायगो गरीबकी चोरी अब नहीं करुंगो ऐसे वाके मनमें विचार आयो फेर वे चोर एक राजाके घरें चोरी करन गयो सो आछो मनुष्य बनके गयो राजाकी पोरी पर जो पूछे वाके आगें सत्य बोले जो तुम कहां जा-

ओहो जब वो कहे हम चोरी करवे जावेंहें तो श्रीठाकुरजीकी प्रेरनातें सबके मनमें ऐंसी आई जो ये मस्करी करेंहें जासुं वाकुं कोईनें रोक्यो नहीं वे राजाके घर निःशंक होयके भीतर घुस गयो फेर चोरी करके चल्यो आयो जो पूंछे जासुं सत्य कहे सो सबनें वाकी हांसी जानी फेर पीछे जब खबर परी जो घरमेंसुं जव्हरात गये फेर वाकुं पकडलाये ॥ फेर राजानें वा चोरवैष्णव सों पूंछ्यो जो तेनें कैसे चोरी करी वानें सब सत्य कह्यो और कह्यो जो मैंने सबकुं कहीहै परंतु तुमारे मनुष्यननें मेरी बात साँची मानी नहीं फेर राजानें या बातकी तपास करी तो सब बात वा चोरकी साँची निकसी तब राजानें वा चोरकुं नोकर राख्यो और सब काम सौंप्यो सो वे चोरनें सब राजाको काम माथे उठाय लीयो फेर श्रीगुसांईजीकुं पधरायके बहोत द्रव्य भेट कर्यो और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लग्यो सो श्रीगुसांईजीकी कृपातें परम भगवदीय भयो वा चोरकुं श्रीगुसांईजीकी आज्ञाको ऐंसो विश्वास हतो यातें वाके लौकिक अलौकिक सब सिद्ध भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ७९ ॥❋

श्रीगुसांईजीकेसेवक एक दयालदासबनीया०

सो वा दयालदासकें पास लाख रुपैया हते सो धरतीमें गाडदीये और एक पैसा खर्च न करनो ऐंसो नेम लीयो॥फेर एक दिन श्रीगुसांईजी उहां पधारे जब वो दयालदास सेवक भयो और कही जो महाराज एकपैसा खर्च न होवै और मेरो कल्याण होवै ऐंसी रीति सिखावो ॥ बारे आना

नित्य कमाई लाउंहुं और चार आना नित्य खरचुंहुं तब श्रीगुसांईजीनें कही जो तुं मानसी सेवा कर ॥ फेर वानें मानसी सेवाकी रीती सब सीख लीनी फेर नित्य वे मानसी सेवा करतो दोपेहर सूधी और कछु काम करतो नहीं ऐसे करते करते एक दिन मानसी सेवामें खीर करी वामें खांड बहुत पडगई सो फेर काढनलग्यो तब श्रीठाकुरजीनें वाको हाथ पकर्‍यो और आज्ञा करी जो यामें तो तेरो खर्च नहीं लग्यो है सो तूं खांड क्युं काढे है ये बात सुनके वाके अंतःकरण खुलगये और भगवत्स्वरूप साक्षात्कार होय गयो और लक्ष रुपैया हते सो श्रीगुसांईजीकुं पठाय दिये जैसो वाको द्रव्यमें चित्त हतो तैसो श्री ठाकुरजीमेंलग्यो ॥ सो वह दयालदासबनिया ऐसो कृपा पात्र हतो वाकुं फलरूप मानसी सेवा सिद्ध भई ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९० ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक स्त्री पुरुष हते तिनकी वार्ता– सो वे दोनो जनें श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे एकदिन स्त्री परोसीकें घर गई वाके घर वैभव बहुत देख्यो सो वाकुं पूंछी तुमारे घर वैभव कैसे भयो तब वानें कही हम देवीकी पूजा करें हें यातें भयोहै फेर वा परोसननें कही तुम देवीकी पूजा करो तो तुमारे घर वैभव बढजाय फेर वैष्णवकी स्त्री परोसनकी देवीकी मूर्ती लेआयके घरमें बैठाई और पतीसों कह्यो जो देवीकी पूजाको सामान लावो और वैष्णव पैसा वेंचतो हतो सो पैसा वेचन गयो

तब एक पसारीकी दुकानसुं देवीकी पूजाको सामान लेवें बैठो ॥ सो सामान लियो और पैसानकी कोथळीके बदले भूलमें पसारीकी रुपैयानकी कोथली उठायलीनी तब पसारी पकडके सरकारमें लेगयो उहांके हाकेमनें ये न्याय कन्यो याकुं गद्दापर बैठायके गाममें फेरनो तब वाकुं गद्दाके ऊपर बैठायके गाममें फेन्यो तब वैष्णवके मनमें आई मैंनें अन्याश्रय कन्यो जब ये फल भयो जब घरमें जायके तत्काल देवीको स्वरूप पाछो पडोसीके घर धराय दियो फेर चित्त लगायके श्रीठाकुरजीकीसेवा करन लगे तब वाके मनमें ऐंसो निश्चय भयो वैष्णवनकुं अन्याश्रय सर्वथा बाधा करे हैं जासुं वैष्णवनकुं अन्याश्रय न करनो अन्याश्रयतें अनिष्ट होवेहै और श्रीठाकुरजी अप्रसन्न होवेंहें जासुं सर्वथा अन्याश्रय न करनो ऐंसी शिक्षा वा वैष्णवकुं लगी सो वे स्त्री पुरुष ऐंसे कृपापात्र हते जिनसुं अन्याश्रय छुडायके श्रीठाकुरजी बोलन लगे ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८१ ॥ ❋ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक देवाभाई पटेलकी

वार्ता-सो देवाभाई पटेल गुजरातमें रहेते और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करते और नित्यनेमसुं वैष्णवनको प्रसाद लेवावते . जादिन कोई वैष्णव प्रसाद लेवेवालो न मिले तो तादिन देवाभाई तथा देवाभाईकी स्त्री भूखे रहते और भगवद्रसमें छकेरहेते ॥ फेर एकदिन श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे हते तब देवाभाईके बेटानें श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी जो महाराज जादिन वैष्णव नहीं आवे तब देवा-

भाई सूखे रहेंहैं ॥ और मैंतो प्रसाद लेके खेतीकरवे जाउंहुं और मातापिताकुं सूखो राखके मैं प्रसाद लेउंहुं ये अपराध कैसे मिटे ॥ ये बात देवाभाईके बेटाकी सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और आज्ञा करी जो तुम नित्य न्हायके श्रीठाकुरजीके चरणस्पर्शकरो॥ और भोगधरो तो तुमारो अपराध निवृत्त होवेगो ॥ और देवाभाईकुं श्रीगुसांईजीनें कही जादिन कोई वैष्णव नआवे तब गौकु पातर धरके तुमकुं प्रसाद लेनों ॥ तब ते देवाभाई ऐसे करन लगे और देवाभाईको बेटा खेती करतो हतो वामें द्रव्य बहोत आवतो सो जितनो द्रव्य घरमें खर्च होतो सो करते और अधिकीको द्रव्य श्रीनाथजीद्वार पठाय देते वे देवाभाई पटेल श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८२ ॥ ❀ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक डोकरीथानीपूनीवालीकी वार्ता ॥ वह डोकरीनें श्रीगुसांईजीकुं बीनती करके श्रीठाकुरजी माथे पधराये तब सेवा करन लगी ॥ तब वह डोकरी सूतकाँतके निर्वाह करती ॥ जब कातवे बैठे तब श्रीठाकुरजी वा डोकरीके पासकी पुनीमें आयके बिराजते और बाललीला करते और वा पूनीकी गादी तकीया करके बैठते और एक एक पूनी वा डोकरीके हाथमें काँतवेकुं देते और सूख लागती तो डोकरी पास थानी मागते सो एकदिन डोकरीकी व्यवस्था श्रीबालकृष्णजी श्रीगुसांईजीके तीसरे लालजीनें देखी और वा डोकरीसुं कही ये लालजी हमकुं दे तब वा डोकरीनें ला-

लजी पधराय दिये फेर डोकरी श्रीठाकुरजीविना बहुत दुःखी भई श्रीठाकुरजी वा डोकरीकी आर्ति सही न सके तब श्रीठाकुरजीनें वालकृष्णजीसुं कही जो डोकरीके घर पहोंचायदेव धानीपूनी विना मोकुं नहिं चले ॥ तब श्री-वालकृष्णजीनें वही रातमें आयके श्रीठाकुरजीकुं डोक-रीके घर पधराय लाये और कही जैंसे नित्य करते हो-वो तैंसेही करो श्रीठाकुरजी तेरेपर प्रसन्न हैं सो वे डोकरी ऐंसी कृपापात्र हती जिनविना श्रीठाकुरजी रहे न सके॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८३ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक वैष्णवक्षत्रीमथुरामें रहेते तिनकी वार्ता ॥ सो वे क्षत्री वैष्णव श्रीठाकुरजी प-धरायके सेवा भलीभांतिसुं करते और भगवद्वार्ता बहुत आछी करते और पुष्टिमार्गके ग्रंथ तथा विनके भावार्थ श्रीगुसांईजीसुं सुनते हते ॥ तब मथुराके वैष्णव भगव-द्वार्ता सुनवेकुं वा क्षत्रीवैष्णवके घर आवते हते ॥ और नित्य क्षत्रीवैष्णव अपने हाथनतें चना शेकके भोग धरते हते ॥ और मंडलीमें वांटते हते ऐंसे करते करते बहुत दिन भये एक शेठ द्रव्यपात्र वा मंडलीमें आयवे लग्यो॥ तब वो चनाको प्रसाद लेके डारदेवे ॥ तब श्रीमहादेवजी वैष्णवको रूपधरके भगवन्मंडलीमें नित्य आवते हते कोईकुं खबर न पडती ॥ एक वा क्षत्री वैष्णव पहेचानते हते सो जब चना वह शेठ डारदेतो हतो तब महादेवजी वीनलेते ॥ तब एकदिन क्षत्रीवैष्णवनें महादेवजीकुं चना वीनते देखे पाछें वा शेठकुं मंडलीमें आवेकी नहीं कही

तब वे शेठ श्रीगोकुल गयो तव श्रीगुसांईजी वासुं बोले नहीं और श्रीनवनीत प्रियाजीनें वा शेठकुं दर्शन न दीये फेर वो शेठ मथुरामें पाछो आयो और जायके वा क्षत्रीवैष्णवके पांवन पऱ्यो तब क्षत्रीवैष्णवनें कही तुमनें भगवत्प्रसादको अपमान कऱ्योहै जासुं तुमकुं मंडलीमें आयवेको अधिकार नाहींहै ॥ फेर वो शेठ दीनता करके पांवन पड्यो फेर वा शेठकुं मंडलीमें आयवे दियो तब श्रीगुसांईजीनें और नवनीतप्रियाजीनें दर्शन दीयो सो वैष्णवनकुं जहां न्यातिव्यवहार बाधा न करे ऐसो प्रसाद मिलेतो सर्वथा अपमान न करनो ऐसो विचार राखनो सो वह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते जिननें करोडपतीशेठकुं तुच्छ गण्यो और जिनके लियें श्रीगुसांईजीनें और श्रीठाकुरजीनें वा शेठकुं त्याग कियो सो वे क्षत्रीवैष्णव ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८४ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक निष्किंचन स्त्री पुरुषकी वार्ता ॥ सो वे स्त्रीपुरुष श्रीठाकुरजीकी सेवा करते हते सो वा गाममें एक शेठ रहेतो हतो वा शेठके घर वा वैष्णवकी स्त्री एक दिन श्रीठाकुरजीके दर्शन करवे गई सो वैभव बहुत देख्यो मनमें ऐसी आई जो मेरे घर ऐसो वैभव श्रीठाकुरजीकोहोय तो आछो फेर अपने घर आयके पतिसुं कही जो मैं तो वैभवसों सेवा करुंगी वाके पतिनें कही जो द्रव्य तो बहोत है परंतु द्रव्यमें अनर्थ बहुत होवेहैं जब द्रव्य होवे तब कोईकी वात मनमें आवे नहीं और

खरचवेको मन होवे नहीं और द्रव्यको अभिमान आयविना रहे नहीं और द्रव्यवान अपराधसुं ड-रपे नहीं और द्रव्यवान गरीवसुं प्रीती करे नहीं और द्रव्यवान आछे बुरेकी परीक्षा करे नहीं और द्रव्यवान गरीवनकुं अपमान बहुत करे जासुं द्रव्यमें बहुत अनर्थ होवेहें, और द्रव्यवान सत्संग करे नहीं और द्रव्यवान कोईको अहित करतें डरपे नहीं जासुं तुं द्रव्यकी अपेक्षा छोड दे परंतु वो स्त्री मानी नहीं कहिवे लगी वैभव विना सेवा नहीं करूंगी और रिसायके बैठ रही ऐसे दो दिन सूधी सेवा न करी ॥ वाको पति एकलो सेवा करे तीसरे दिन वाके पतिनें कही जो इहांतें एक कोश दूर एक वृक्ष है वाके नीचे जायके द्रव्य चहीये जितनो लेआवो तव वह स्त्री टोकरा लेके गई जब वा वृक्षके नीचे धरती खोदी तव द्रव्य बहुत निकस्यो तव वो स्त्री टोकरामें भरवे लगी तब वा वृक्षको भीतरसुं वाणी भई जो तुं हमकुं कछु देके द्रव्य लेजा तव वा स्त्रीनें कही जो तेरे कहा चहिये तव वानें कही जो तेरे घर श्रीठाकुरजी बिराजे हैं सो तुम झारी भरोहो जितनी झारीको फल दे जा और इतने टो-करा द्रव्यके भर लेजा और तव वा स्त्रीनें कही जो अब द्रव्य लेजाऊं जो झारी भरुंगी तो एकझारीको फल नित्य तोकुं देउंगी और नित्य टोकरी भरके लेजाउंगी और जब तेरो द्रव्य नहीं लेजाउंगी जब झारीको फल नहीं देउंगी तब वो वृक्ष बोल्यो अब जो तुं झारी भरेंगी वा झारीको फल नहीं चहिये कारण जो तेरे पास द्रव्य होय

सो जब तेरी झारी श्रीठाकुरजी अंगिकार न करेंगे ॥ वा स्त्रीनें कहि काहेते अंगिकार न करेंगे ॥ तब वृक्षनें कहि तेरो चित्त द्रब्यमें रहेगो श्रीठाकुरजी चित्त लगाय बिना अंगिकार कैसे करेंगे आज तें पेहेले जो तुमने झारी भरीहे विनको फल देवो तो द्रब्य ले जाव तब वा स्त्रीनें कही जो निष्किंनपणेकी झारी श्रीठाकुरजी अंगिकार करे हैं ये निश्चय मोकुं तुमारे कहेतें भयो है वा झारीको फल नहीं देउंगी और तेरो द्रब्य मोकुं चहिये नहीं मैं निष्किन्चन होयके नित्य झारी भरुंगी जो प्रभू अंगिकारतो करेंगे ऐंसे कहेके वा स्त्रीनें द्रब्य डार दियो और ऐंसी चली आई और आयके अपने पतीसुं कही मैं निष्किंचन होयके झारी भरुंगी मैंने तुमारो कह्यो न मान्यो और द्रब्यपात्र शेठके घर दर्शन करवेकुं गई जो मेरी दोदिन सेवा छूटी और द्रब्य मेरे घरमें आवेगो तो कहा जानें कितनी सेवा छूटेगी नोकर राखुंगी सब सेवा विनकुं देउंगी और मैं वैभवकी रक्षा करुंगी जासुं मेरे द्रब्य नहीं चहिये ऐंसे कहिके सेवा करन लगी सो वे स्त्री पुरुष श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिननें भगवत्सेवा छोडके द्रब्य ग्रहण न कियो ॥ ता तें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८५ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक पटेलवैष्णवकी वार्ता ॥

सो वे पटेल गुजरातसुं आयके श्रीगुसांईजीको सेवक भयो। तब सब व्रजयात्रा कर आयो एकदिन श्रीगुसांईजी कथा कहेते हते तब श्रीयमुनाष्टककी कथा वा पटेल वैष्णवनें

सुनी वा पटेलनें पूंछो हे महाराज आठ श्लोकमें अष्ट-
सिद्धि आपनें आज्ञा करीहै परंतु कौनसे श्लोकमें कौनसी
सिद्धी वर्णन करीहै सो कृपाकरके समझावो॥ तब श्रीगुसां-
ईजीनें आज्ञा करी साक्षात् सेवोपयोगी देहकी प्राप्ती जोसि-
द्धिसो पहेले श्लोकमें कहीहैतत्तल्लीलावलोकन जो सिद्धी
सो दूसरे श्लोकमें कहीहै और तद्रसानुभवरूपी जो सिद्धी
सो तीसरे श्लोकमें कहीहै॥ और सर्वात्मभावरूपी जो सि-
द्धी सो चोथे श्लोकमें कहीहै और यमुनाजीको स्वरूप षट्-
गुणसंपन्न सो चोथे श्लोकमें कह्योहै॥ और भक्तिदातृत्वरू-
पी जो सिद्धी सो पांचमें श्लोकमें कहीहै॥ और भगवत्तात्प-
र्यज्ञत्वरूपी जो सिद्धी सो छठे श्लोकमें कहीहै और भगवद्व-
शीकरणत्व रूपी जो सिद्धी सो सातमें श्लोकमें कही है और
भगवद्रसपोषकत्वरूपी जो सिद्धी सो आठमें श्लोकमें क-
हीहै और जिनके ऊपर भगवत्कृपाहै और श्रीयमुनाजी कृ-
पाकरेंहैं विनकुं एकएक श्लोकमें अष्टसिद्धी दर्शन देवेहैं
ऐसें श्रीगुसांईजीनें आज्ञाकरी तब वा पटेलकुं श्रीयमुना-
जीनें वैसेही दर्शन दीये जैसे श्रीगुसांईजीनें कहीहती तैसे
दर्शन वा पटेलकुं भये सो वे वैष्णव पटेल श्रीगुसांईजीके
ऐसें कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८६ ॥ ❈ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक ब्रजवासीकी वार्ता

सो वे व्रजवासी श्रीनाथजीकुं परे कहेतो ॥ सो ब्रजवासी
गायनकी खिरकमें सेवा करतो हतो और एक सीधो
भंडारमेंसुं लेजातो हतो और आठ पेहेरे गायनकी सेवा
मनलगायके बहुत आछी करतो हतो ॥ एकदिन कोई

वैष्णवकुं श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरजी पधराय देते हते सो वा व्रजवासीनें देख्यो फेर एकदिन श्रीगुसांईजीसुं वा व्रजवासीनें बीनती करी जो मोकुं श्रीठाकुरजी पधराय देवो ॥ वाही समय श्रीगुसांईजी न्हायके पधारते हते ॥ जब आगे एकपत्थर पड्यो हतो॥वा पत्थरकुं श्रीगुसांईजीके खडाउकी ठोकर लगी सो दूरजाय पड्यो और उहां वे व्रजवासी ठाडो हतो ॥ श्रीगुसांईजीनें कही परेपरे ऐंसे कहके श्रीगुसांईजी भीतर पधारे ॥ जब वो पत्थर व्रजवासीनें उठाय लियो फेर वा व्रजवासीनें मनमें ऐंसो समझो ये मोकुं श्रीगुसांईजीनें श्रीठाकुरजी पधरायदीये और परेपरे श्रीठाकुरजीको नाम कहि दीयोंहै ॥ ऐंसो भोरो हतो सो वे पत्थरकुं ठाकुरजी मानके पधराय लेगयो फेर मनमें समझ्यो जो सीधोतो एक आवै सो परे कहा खावेगो ॥ और मैं कहाखाउंगो ऐंसे समझके भंडारीसुं कही अब हमकुं दो सीधा देओ ॥ भंडारीनें दो सीधा दिये सो फेर जायके रसोई करी और व्रजवासी भोरो बहुत हतो ॥ जब वानें दो पात्र करदीनी फेर कही आव भाई परे एक पातर तेरी और एक पातर मेरी जब श्रीठाकुरजी आये नहीं तब वो व्रजवासी कहेनलग्यो जो भाई तुं आयके अपनी पातर संभार ले॥ जो बरोबर है के फेर फार है जो तुं नहीं आवेंगो तो मैं दोनो पातर तलावमें डार देउंगो तब श्रीठाकुरजी वाको शुद्ध भाव जानके और भोरो जानके पधारे और साक्षात्स्वरूप धरके जीमन लगे ॥ ऐंसे नित्य कृपा करके पधारते ॥ एकदिन

श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो तुं दो सीधा कहा करेंहें ॥ जब वानें कही जो आपने वो परे पधराय दीयोहै सो एकपातर वे खाय है और एक पातर में खाउंहुं ये वात सुनके श्रीगुसांईजी मुसकायके चुप कररहे फेर एक दिन भंडारीनें वा ब्रजवासी सुं कही जो तुम सूरत गाममें जायके भेट ले आवो ॥ जब ब्रजवासीनें कही सूरत गाम काहा होवेहे ॥ भंडारीनें कही सूरत गाम सहेर है जब वा ब्रजवासीनें कही भेटपत्र और प्रसादकी थेली देवो तो में सूरत जाउं ॥ जब उहांसुं प्रसाद और पत्र लेके और रसोई करके सूरतकी तैयारी करी और कही जो भैया परे में तो सूरत जाउंगो और तुं आवेगो के नहीं आवेंगो॥जब श्रीठाकुरजीनें कही जो में आवुंगो जब वानें कही जो तेरे छोटे छोटे पांव हें ॥ और छोटे छोटे हाथ हें तुं कैसे चलसकेंगो जब श्रीठाकुरजीनें कही में थोडो थोडो चलुंगो ॥ और थोडीवार तेरे कांधेपर वैठुंगो ॥ ये बात कहिके श्रीठाकुरजी ब्रजवासीके साथ चले वे उहांते ब्रजवासी चले जब दो तीन कोस आये तब श्रीठाकुरजीनें कही में थक्योहुं ॥ जब वा ब्रजवासीके कांधा ऊपर वैठे जब थोरी दूर चले तब सांझ भई तब श्रीठाकुरजीनें कही जो आज इहां सोएरहो फेर काल सूरत चलेंगे फेर उहां सोय रहे फेर सवारे उठे सो ऐसे ठिकाणे उठे जाहांसुं सूरत दोयकोश रही हती ॥ तब उहांतें चले फेर सूरत आये उहां गाम बाहिर डेरा कीये और उहां श्रीठाकुरजीकुं वैठायके वो ब्रजबासी पत्र और प्रसाद लेगयो ॥ गाममें वैष्णवनकुं पूंछके दियो ॥ वे पत्र वांचके वै-

ष्णवननें विचार कियो जो एकदिनमें पत्र कैसे आयो होय-गो॥ जब ये विचार कियो यामें भेद कछु अवश्य होयगो॥ तब वैष्णवननें वाकुं सामग्री दिवाई और एकदिनमें सब ठिकाने फिरके पांच हजार रुपैया एकठे करके और हुंडी करायके तब व्रजवासीकुं दीनी ॥ सो व्रजवासी लेके और परेकुं संग लेके उहांतें चले ॥ फेर रस्तामें आयके सोय रहे फेर सवारे उठके पेहेर दिन चढ्यो गोपालपुरमें आये फेर भंडारीके पास गयो और दो सीधा मागे ॥ जब भं-डारीनें कही सूरत क्युं गयो नहीं जब वानें कही सूरत जाय आयोहुं पत्र और वस्त्र लायोहुं ॥ सो भंडारीकुं दीये ॥ जब भंडारीनें पांच हजारकी हुंडी और वस्त्र और वै-ष्णवनके कागद देखके चकित होयगयो ॥ जो एकरातमें कैसे गयो होयगो और कैसे आयो होयगो सो ये बात-की बीनती श्रीगुसांईजीके आगें करी श्रीगुसांईजी सुनके ऐसी आज्ञा करी जो ए सब श्रीनाथजीके काम है आज पीछे या व्रजवासीकुं कछु काम मत बताईयो और जन्म सूधी दोय सीधा याकुं नित्य दीजियो और नित्य वा व्र-जवासीकुं बुलायके श्रीगुसांईजी परेकी वातें पूंछो करते आज परेनें ये कही आज परेनें ये कही ऐसें नित्य कन्या करे सो वे व्रजवासी भोलो हतो जन्मसुं श्रीठाकुरजीकुं परे समझो करे ऐसो कृपापात्र हतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८० ॥ ❋ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक स्त्री पुरुष हते ति०

सो वे स्त्रीपुरुष गरीब हते और नित्य लकडीको भारो ला-

यके गाममें वेचके निर्वाह करते और नित्य पैसा अधेला
जो वचे सो धरराखते और कोई वैष्णव आवे विनके संग
महाप्रसाद वांटके लेते ॥ एकदिन अचानक आठ वैष्णव
आये जब वा स्त्रीपुरुषनें विचार कऱ्यो जो कहा करणो
जब वा स्त्रीनें कही जो मेरी साडी पेहेरवेकी एक है सो
तुम वेचके सामग्री लावो सो वे पुरुष सामग्री लायो ॥
तब वा स्त्रीनें किवार ढाकके रसोई करी और श्रीठाकु-
रजीकुं भोग धऱ्यो फेर वाके पतीसुं कही जो मैं कोठीमें
बैठी हुं तुम भोगसरायके अनवसर करके वैष्णवनकुं पा-
तर धरो वा पुरुषनें ऐंसेही कऱ्यो तब वैष्णव कहने लगे
जो तुमारी स्त्री कहांहै तब वा वैष्णवनें कही स्त्रीको लाज-
को स्वभाव बहुत है जासुं वहार नहीं आवेहैं ॥ वाकी प्र-
कृती वडी खराव है ऐंसे वा पुरुषनें कही॥ जब वैष्णव वोले
वह आवेगी तो हम प्रसाद लेवेंगे याको कारण ये है॥वैष्णव
है के नहीं हमकुं खबर कैंसे पडे ॥ वैष्णव न होवे तो वाके
हाथकी रसोई कैंसे लेवे॥ये वात सुनके वो वैष्णव विचारमें
पडगयो॥जब मंदिरमें मदनमोहनजी श्रीस्वामिनीजीस-
हित बिराजते हते ॥ जब श्रीस्वामिनीजी बोल्ये श्री-
ठाकुरजीसुं कही जैंसे द्रौपदीके चीर बढाये हते तो या
बाईके चीर बढायतें तुमकुं कहा हरकत है ॥ ऐंसे कहेके
श्रीस्वामिनीजीनें और श्रीठाकुरजीनें कोठीमें जायके
वा लुगाईकुं दर्शन दिये ॥ ओर उहां वस्त्र पेहेराय दिये
वे बाई हाथ जोडके बोली हे महाप्रभु हे महामंगलरूप
हे शरणागतवत्सल हे अशरणशरण आपकुं ऐंसो श्रम

मेरे लीयें भयो ॥ मैंनें आपकुं श्रम दियो और मैंनें ऐसो काम कऱ्यो ऐसे आपकुं श्रम भयो सो मोकुं धिक्कारहै ऐसे कहिके वा बाईको हृदय भर आयो ये सुनके श्रीठाकुरजी बहुत प्रसन्न भये और अलौकिक वस्त्र दान कऱ्ये ॥ जलमें भीनें होजाय और बहार सूके होये जाएं ॥ नीचोवनें और सुकावनें न परें ॥ ऐसे वस्त्र सदा वाके पास रहें कोईदिन घटे नहीं ॥ तव वे बाई बाहेर आयके वैष्णवनकुं परोसन लगी तब वैष्णव प्रसन्न होयके प्रसाद लेन लगे फेर वे वैष्णव प्रसाद लेके बिदा होयके गये ॥ तबतें वा कोठीमेंतें कोईदिन अन्न खूटतो नहीं ॥ जब काढते तब भरी रहेती ॥ काहेतें श्रीठाकुरजीनें वा कोठीमें वा बाईकुं दर्शन दिये हते॥ सो वे स्त्रीपुरुष श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८८ ॥ ❀

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक विरक्त तथा शेठ आगरेमें रहेते तिनकी वार्ता ॥ सो वे विरक्त वैष्णव चुकटी मागके निर्वाह करते और श्रीठाकुरजीकी सेवा भलीभांतिसों करते ॥ और श्रीठाकुरजी वाके ऊपर बहुत प्रसन्न रहेते ॥ फेर कोईदिन वा शेठके वा विरक्त वैष्णवसुं मिलाप भयो ॥ तब वा शेठनें कही तुम श्रीठाकुरजी पधरायके मेरे घरमें रहो और तुम हम हिलमिलके सेवा करें सो तब विरक्तनें ऐसो कऱ्यो वा शेठके घरमें जायके रह्यो ॥ और बहारकी जे सामग्री चहीती सो विरक्त खरीद लावतो ॥ एकदिन बजारमें नयो खरबूजा पहेलो पहेलो आयो हतो सो वे विरक्त वैष्णव खरबूजा लेनें

लग्यो सो एक रुपैया खरबूजावालेनें कीमत करी हती सो विरक्त रुपैया देने लग्यो उहां वडी जातवालो आयो वो बोल्यो नें सवारुपैया देउंगो जब वैष्णव बोल्यो मैं देढ रुपैया देउंगो ऐंसे करते दोनोजनें सामा सामी बढे ॥ वो वडी जातवालो पांच बोल्यो तब वे वैष्णव दस बोल्यो जब वो वीस बोल्यो तब वैष्णव तीस बोल्यो जब वो चालीस बोल्यो ऐंसे करते हजार रुपैया सूधी दोनों जनें बढगये ॥ जब वा वैष्णवनें हजार रुपैया में खरबुजा लियो फेर घर लेके गयो और खर्च लिखायो तोहुं वा शेठनें कछु पूंछी नहीं ॥ के या खरबुजाके हजार रुपैया कैंसे दिये ऐंसो विश्वास वैष्णवके ऊपर हतो कछु मनमेंहुं ये वात नलाये फेर ठाकुरजीनें खरबूजा उठाय लीयो और सिंहासन ऊपर खेलवे लगे जब उत्थापन भये तब खरबूजा शेठनें श्रीठाकुरजीके पास देख्यो तब शेठ बहुत प्रसन्न भयो और श्रीठाकुरजीसुं वीनती करी जो खरबूजा मोकुं देवें तो समारके भोग धरुं तब श्रीठाकुरजीनें कही ये खरबूजा मैं काल आरोगुंगो ॥ ये खरबूजा मोकुं बहुत प्रिय है ॥ ये सुनके शेठ बहुत प्रसन्न भये और मनमें कही जो विरक्त धन्य हैं हजार रुपैया खरचते डऱ्यो नहीं सो वे विरक्त वैष्णव और शेठ ऐंसे कृपापात्र हते जिननें हजार रुपैया खरचे तोहुं शेठके मनमें दोष न आयो सो वे दोनो ऐंसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८९ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक परमानंददास सोनी

तिनकीवार्ता ॥ सो परमानंददाससोनीकुं श्रीमद्भागवत और चार वेद और पुराण और सुबोधिनीजी सब जिव्हाग्र हते और श्रीगुसांईजी कथा वांचते सो नित्य परमानंददास सुनते और विनको हार्द सब समजते और कथामें जो कोई वैष्णव प्रश्न करतो तब श्रीगुसांईजी आज्ञा करते के परमानंददासकुं पूंछलेउ तब श्रीगुसांईजी ऐसी कृपाराखते हते ॥ जो कोई आयके पूंछते तो परमानंददास उत्तर दे शकते, फेर एकदिन पंडित चार आये श्रीगुसांईजीके पास आये जब श्रीगुसांईजी सेवामें न्हाएहते जब वे चार पंडितनकुं परमानंददास सोनीनें आदर देके बैठाये ॥ फेर उहां चर्चा निकसी जो जगत सत्य है के असत्य है ॥ तब पंडिततनें कही जगत असत्य है ब्रह्मकें स्वरूपमें जगत कल्पना मात्र है ॥ जैसे डोरीमें सर्प जैसे सीपमें रूपो कल्पना मात्र है ऐसे जगत ब्रह्ममें कल्पना मात्र है ॥ जब परमानंद सोनीनें पूंछी जो जैसें डोरीमें सर्प और सीपमें रूपो कल्पना मात्र है सो दूसरे ठेकाणे सर्प तथा रूपो देखे विना कल्पना नाहीं होवेहै ॥ ऐसो जो ब्रह्ममें जगत मिथ्याहै तो कल्पना करवेवाले मनुष्यने सत्य जगत कहां देख्यो है सो बतावो ॥ ये सुनके पंडित पीछें फिरगये सो परमानंददास सोनी ऐसे विद्वान हते जिनकुं श्रीगुसांईजीकी वाणीपर अत्यंत विश्वास हतो सो परमानंददास ऐसे कृपापात्र हते जिनकुं सर्व शास्त्र हस्तामलक हते ॥ तिनकी वार्ता कहांतांईकहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९० ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक खंडनब्राह्मणकी० सो श्रीनंद गाममें रहेतो हतो ॥ सो वह खंडनब्राह्मण शास्त्र पढ्यो हतो सो जितने पृथ्वीपर मतहे सबको खंडन करतो ऐसो वाको नेम हतो याहीतें सब लोगनने वाको नाम खंडन पाडयो हतो ॥ सो एकदिन श्रीमहाप्रभुजीके सेवक वैष्णवनकीमंडलीमें आयो सो खंडन करन लग्यो वैष्णवननें कही जो तेरे शास्त्रार्थ करनो होवै तो पंडिनके पास जा हमारी मंडलीमें तेरे आयवेको काम नहीं॥ इहां खंडन मंडन नहींहे ॥ भगवद्वार्ताको काम है॥ भगवद्यश सुननो होवै अथवा गावनो होवै तो इहां आवो तोहु वानें मानी नहीं नित्य आयके खंडन करे ॥ ऐसे वाकी प्रकृती हती फेर एकदिन वैष्णवनको चित्त बहुत उदास भयो ॥ जब वो खंडनब्राह्मण घरमें सूतो तब चार जने वाकुं मुद्गर लैके मारन लगे जब वानें कही तुम मोकुं क्यों मारोहो॥ जब चार जनेननें कही तुम भगवद्धर्ममें खंडन करोहो॥ और भगवद्धर्म सर्वोपर है ॥ सर्व धर्मनतें श्रेष्ठ है॥ केवल भगवत्परायण हैं ॥ भगवदर्पण कऱ्यो हैं तन मन धन जिननें विनको कोई अर्थ वाकी रह्यो नहींहैं ॥ शास्त्रमें कह्योहै जिननें आत्मनिवेदन कऱ्यो है विनकुं कछु अर्थ बाकी रह्यो नहींहै ॥ सर्व सिद्ध भये हैं॥ ऐसें धर्मनकुं खंडन करेंहैं जासुं तोकुं मार देवेंहैं ॥ ये सुनके खंडनब्राह्मण विन चारजनेनके पांवन पडयो ॥ और दूसरे दिन भगवन्मंडलीमें आयके वैष्णवनके पांवन पडयो और वैष्णवनसुं वीनती करी के मोकुं कृपाकरके वैष्णव करो और वैष्ण-

वनकुं संग लैके श्रीगोकुल आयके श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और श्रीगुसांईजीके पास रहिके मार्गके अनुसार सब शास्त्र पढयो ॥ और भगत्सेवा करन लग्यो और भगवद्गुण गान करन लग्यो और अपनो जन्म सफल करमान्यो ॥ सो वे खंडनब्राह्मण श्रीगुसांईजीकी कृपातें मंडन भयो और साकार ब्रह्मको स्थापन करन लग्यो सो दैवीजीव हतो सो आसुरीजीवनकी संगतीतें वाकीबुद्धी फिर गई हती वाकुं दैवीजीव जानके श्रीठाकुरजीनें जोरसुं खेंचलीयो सो फेर मंडनब्राह्मण वाको नाम भयो ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव॥९१॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक पटेलकी वार्ता ॥

सो वे पटेल गुजरातमें रहेतो हतो ॥ सो श्रीगुसांईजी गुजरातमें पधारे तब वह पटेल सेवक भयो हतो ॥ सो परामें रहेतो हतो ॥ और गाममें नित्य भगवद्वार्ता सुनवे जातो हतो ॥ गामके और पराके बीचम एक कोसको रस्ता हतो ॥ सो नित्य वह पटेल भगवद्वार्ता सुनवे जातो हतो और एकदिन एकादशीको व्रत हतो सो भगवन्मंडलीमें जागरण भयो सो रातके दोबजे पाछे पटेल उहांसुं चल्यो और रस्तामें आवते एकप्रेत मिल्यो वा प्रेतनें रस्ता रोक्यो ॥ जब पटेल पाछें फिर्यो फेर आडो आयके प्रेतने रस्ता रोक्यो॥जब वो पटेल बोल्यो जो तुं को नहें॥और क्युं चरित्र करेंहें ॥ जब वो प्रेत बोल्यो मैं प्रेत हुं तोकुं खाउंगो॥ तब पटेल बोल्यो क्युं खावेनहींहै॥ जब प्रेतनें कही तेरे पास आवुंहुं ॥ परंतु आयो नहीं जाय है॥ जब पटेल बोल्यो ॥ जो तूं मोकुं स्पर्श कर-

वेकुं सामर्थ्य नहीं है ॥ जब ये सुनके प्रेत दोड्यो और पटेलके पास आयो तब प्रेतके अंगमें अग्नीको दाह होवे लग्यो ॥ जब प्रेत पुकारवे लग्यो महापापी हतो ब्रह्मराक्षस हतो ॥ ये देखके वा पटेलके मनमें दया आई तब जललेके प्रेतपर छांट्यो ॥ जब वो प्रेतकुं बोलवेकी शक्ती भई और भगवत् स्वरूपको ज्ञान भयो और विचार आयो जोये कोई महापुरुष है ॥ जब प्रेत कहेन लग्यो ॥ हे वैष्णवराज में तेरी शरणहुं मेरे अपराध क्षमा करो मेरो उद्धार करो तब वा पटेलनें तलावमेंसुं जल लेके और अष्टाक्षर मंत्र पढके वा प्रेतके ऊपर दूसरीवार डार्‍यो सो तत्काल वे प्रेतयोनीसुं मुक्त भयो और जय जय करतो वैकुंठ गयो सो वे पटेल वैष्णव श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र हतो सो वे प्रेत भगवत्पार्षद होयके जिनके चरित्रनकुं वैकुंठमें गायो करतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९२ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक निष्किंचन वैष्णव ति०

सो वे निष्किंचन वैष्णव स्त्री पुरुष मथुराजीमें रहेते हते॥ सो आंबके दिन हते सो वे वैष्णव दो पैसाके आंब लेवे गयो सो एक टोकरा आंबको एक मालीकेपास हतो सो मालीनें कही आखो टोकरा एक रुपैयामें ल्यो तो देउं तब वा वैष्णवनें रुपैयामें वह टोकरा लेनो कर्‍यो और टोकरा लेके यमुनाजीके किनारें आंब धोये ॥ और आंब धोय धोयके एक एक आंब श्रीठाकुरजीकुं भोग धरते गये और श्रीठाकुरजी आरोगते गये ॥ जब सब

आंब आरोग चुके तब वा मालीकुं निष्किंचन वैष्णवने कही जो रुपैया रोक नहीं हैं दश पंदरे दिनमें देउंगो ॥ तब मालीनें कही मेरे आंब पाछे देवो तब माली आंबले चल्यो फेर एक दूसरो शेठ गाममें रहेतो हतो वाके मनुष्यनें आंब लीये और शेठके घर लेगयो जब वा शेठनें आंबा लेके भोग धरन लग्यो जब श्रीठाकुरजीनें कही ये आंब तो में पेहेले अरोग्योहुं अमुक वैष्णवनें मोकुं भोग धऱ्ये हैं तब शेठनें कही हेमहाराज आप रस्तामें कैसे आरोगो तब श्रीठाकुरजीनें कही जो श्रीगुसांईजीकी वाणी सत्य करवेके लीयें अरोग्योहुं श्रीगुसांईजीनें वल्लभाष्टकमें कह्यो है ये मारग आपने आपकेलीयें प्रकट कऱ्यो है॥ कोई कछु वस्तु कोई ठेकाणें अर्पण करे है सो वस्तु आप साक्षात् वदनकमलमें आरोगोहो ऐसे मैं मानुंहुं॥ सो श्लोक ॥ प्रादुर्भूतेनभूमौव्रजपतिचरणांभोजसेवाख्यवर्त्मप्राकट्यंयत्कृतंतेतद्वतनिजकृतेश्रीहुताशेतिमन्ये॥यस्मादस्मिन्स्थितोयत्किमपिकथमपिक्वाप्युपाहर्तुमिच्छत्यद्धातद्गोपिकेशःस्ववदनकमलेचारुहासेकरोति ॥ १ ॥ ऐसे श्रीगुसांईजीनें कह्योहै जो कोई वैष्णव जा ठेकाणे कछु हमकुं समर्पेगो सो हम सब अरोगेंगे॥ ये सुनके वे शेठ बहुत प्रसन्न भयो और आंब उठायके प्रसादीमेंधरे और वा वैष्णवकुं बुलायो और वासुं पूंछी जो तुमने आंब क्युं लीये नहीं ॥ वानें कही रुपैया रोक नहीं हतो जासुं माली पाछो लेगयो॥ तब शेठनें कही तुमनें आंब तोआरोगायलीये तब लेवेकी मतलब कहा रही ॥ जब वो वैष्णव बोल्यो आरोगवेवारे जाने के तुम जानो॥

॥ तब शेठ उठके वा वैष्णवके पांवन पऱ्यो और छातीसुं लगाय लीयो और कही श्रीठाकुरजीकी आज्ञा है तुम इहां महाप्रसाद लेवो ॥ तब वा शेठके घर वा निष्किंचन वैष्णवनें महाप्रसाद लियो सो निष्किंचन वैष्णव ऐसो कृपा पात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९३ ॥ ❀॥

॥श्री गु० से० नानचंद बनिया राजनगरमें रहेते हते तिनकी वार्ता ॥ सो वे नानचंद द्रव्यपात्र हते ॥ और श्रीगुसांईजीकुं पूर्णपुरुषोत्तम जाणते हते ॥ इतनेमें श्रीगोकुलनाथजीको विवाह आयो तब नानचंदके ऊपर श्रीगुसांईजीनें कुंकुमपत्री लिखी ॥ जब नानचंदनें सब देशमें वैष्णवनकुं समाचार दिये॥ सब वैष्णव गुजरातके गोकुलनाथजीके विवाह उपर श्रीगोकुल आये ॥ सो जितने वैष्णव विवाह पर गये सबनके संग पांच पांच रुपैया भेटके दिये और हजार रुपैयाकी हुंडी भेट पठाई ॥ सो सब लोग कहेवे लग्ये नानचंद लोभीहै एक हजार रुपैया भेट पठाईहै ॥ ये बात कोईनें श्रीगुसांईजीके आगे कही तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो नानचंदके अंतःकरणकी हम जानत हैं वाको भाव गुप्तहै ॥ लोगनके देखत हजार रुपैया पठायेहैं ॥ परंतु दश हजार वैष्णवके संग पांच पांच रुपैया पठायेहैं सो गुप्तरीतीसुं पचास हजार पठायेहैं॥ सो वाके अंतःकरणकी बात हम जानतेहैं॥ सो वे नानचंद ऐसे कृपापात्र हते जिननें गुप्तरीतिसुं सेवा करी ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९४ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक डोकरीकी वार्ता॥

सो वा डोकरीके माथे बालकृष्णजी बिराजते हते॥ सो भलिभांतिसुं सेवा करती हती सो एकदिन वा डोकरीको काल आयो सो डोकरीकुं साक्षात् मूर्तिमान् काल देखायो जब वा डोकरीनें कालसों कह्यो अब मैंतो नहीं आवुं तब काल फिरगयो ऐसे करके डोकरीनें आठवेर कालकुं फेर्यो फेर कालनें धर्मराजासुं कही मैं आठवेर पाछो फिर आयोहुं ॥ जब जाउंहुं तब भगवत्सेवामें लगी होवे ॥ और दूरसुं मोकुं आवतो देखके हाथसुं नाहीं करे॥ फेर वाके शरीरमें ऐसो कछु तेज दीखे है कें वाके पास मोसुं गयो नहीं जाय ॥ जब यमराजानें कही वे डोकरी तेरे दंडमें नहीं आवेगी येतो भगवद्भक्तहै ॥ कालके माथे पांव धरके भगवल्लीलामें पहोंचेगी ॥ फेर एकदिन श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे तब वा डोकरीनें श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजीकुं पधराय दीये और देहत्यागके भगवल्लीलामें प्राप्त भई सो वे डोकरी कैसि हती जाने आपकी इच्छासुं देहत्याग करी ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९५ ॥ ❀ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक डोकरीकी वार्ता ॥

सो वा डोकरी राजनगरमें रहेती हती ॥ डोकरीके माथे श्रीगुसांईजीनें श्रीठाकुरजी पधराय दीयेहते ॥ सो भली भांतिसों सेवा करती हती॥ सो वह डोकरी निष्किंचन हती ॥ वाके घर चमचा नहीं हतो सो सामग्री सीरी करके नित्य भोग धरती ॥ एकदिन वो डोकरी सामग्री करचुकी हती ॥ तब ऐसी खबर भई कें श्रीगुसांईजी पधारेहैं ॥ तब श्रीठाकुरजीकुं ताती सामग्री

भोग धरी और चमचाके ठिकाणे एक दातन धऱ्यो और श्रीठाकुरजीसों बीनती करी जो आप ये सामग्री दातनसुं सीरी करकें अरोगेंगे मैं दर्शन करी आवुं जब श्रीठाकुरजीकी आज्ञा लेके गई फेर दर्शन करके आई दोचार वैष्णव वा डोकरीके संग आये फेर वा डोकरीनें भोग सरायके विन वैष्णवनकुं दर्शन करायके श्रीठाकुरजीके अनवसर कऱ्ये वैष्णव डोकरीके संग जो आये हते विनें दातन देख्यो जब अपने घरमें जायके कोईनें एक कोईनें दोय कोईनें चार कोईनें पचास कोईनें सो दातन श्रीठाकुरजीकुं भोग धऱ्ये सो ऐसे करते बहुत लोग धरवे लगे दोचार दिन पीछे एक वैष्णवके घर चाचाहरिवंशजी आये सो दातन भोग धऱ्ये देखे जब पूंछी ये दातन क्युं भोग धऱ्येहें तब वा वैष्णवनें कही और सब वैष्णव धरेहें ॥ जब चाचाजीनें श्रीगुसांईजीके पास सब वैष्णवनकुं एकट्ठे कऱ्ये और दातनकी पूंछी सबनें कही वा डोकरीके घर देखके हम सबननें धऱ्ये हैं जब चाचाजीनें वा डोकरीकुं पूंछी जब डोकरीनें कही मेरे घर चमचा नहीं हतो सो मोकुं दर्शनकी उतावल हती सो मैनें एकदिन एक दातन चमचाके ठेकाणे धऱ्यो हतो ॥ वादिन इन वैष्णवननें देख्यो है ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ये डोकरीनें तो ठीक कऱ्यो और तुमनें तो देखादेखी करी ॥ सो वाजबी नहीं ॥ जासुं वैष्णवकुं भगवत्सेवाकी रीती पूंछके और समझके करनी ॥ देखादेखी करनी नहीं ॥ देखादेखी करे तो भगवत्सेवामें कहे जो प्रतिबंधहैं सो

होंवे और समझके करेतो भगवत्सेवामें कहेंहें सो फल होंवें ॥ जासुं वैष्णवकुं सेवाकी रीति पूंछके करनी ॥ सो वे डोकरी जो सेवाकरती सो पूंछके और विचारके करती सो वा डोकरी ऐसी कृपापात्र हती ॥ वार्ता ॥ सं० वै०९६

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक भगवदीय और एक तादृशीकी वार्ता—सो वे गुजरातके वासी हते ॥ जिननें आपुसमें परीक्षा लीनी ॥ सो भगवदीय वैष्णव राजनगरमें रहेते हते ॥ और तादृशी वैष्णव धोलकामें रहेते हते ॥ और एक दूसरेकुं मिलवेकुं मन बहुत करते हते सो एक समय भगवदीयकी बेटीको विवाह आयो तब तादृशी वैष्णवकुं कुंकुमपत्री लिखी जब तादृशी वैष्णवजा समय कन्यादानको समय हतो तब भगवदीयके घर आये ता समय भगवदीय लौकिककार्य छोडके और तादृशी वैष्णवकुं मिले और घरमें लायके न्हवायके महाप्रसाद लेवायके और विनकुं सुवायके फेर कन्यादान करवेकुं बैठे ॥ फेर दूसरे दिन जब उठवेको समय भयो तब तादृशी वैष्णव श्रीठाकुरजीके मंदिर आगे सूते हते फेर दूसरे दिन भगवदीय वैष्णव न्हायके एक पेहेर ठाडे रह्ये परंतु वा तादृशीकुं जगायो नहीं ॥ मनमें ये जान्यो के इनकुं कैसे जगायो जाय ॥ और तादृशी जानके सोय रहे ॥ जब पहेर दिन चढयो जब जानके उठे जब तादृशीनें पूंछी तुम कबके न्हायेहो जब वा भगवदीयनें कही अबी न्हायोहुं ॥ जब वो तादृशी मनमें समझ्यो याके भगवदीयपनेंमें कसर नहींहे ॥ फेर तादृशी आपने गाम धौ-

लका गयो फेर तादृशी वैष्णवको लग्न भयो ॥ तब राज-
नगरसुं भगवदीय वैष्णवकुं धोलका बुलाये वाही समय
वरघोडो परणवेकुं चढ्यो हतो॥ वाई समय भगवदीय जाय
पहोंच्यो ॥ तब वे वैष्णव घोडा ऊपरसुं उतरके और वि-
नकुं घरमें लेगये और न्हवाय धोवाय महाप्रसाद लेवा-
यके फेर आयके परणवेकुं बैठे सो वे भगवदीय वैष्ण-
वनें या रीतिसुं परीक्षा लीनीऔर मनमें कह्यो याके ता-
दृशीपणामें कसर नहीं है सो वे दोउ वैष्णव ऐसे कृपापात्र
हते जिननें एक दूसरेकेलीयें लौकिक कारज छोडदियो
और देहकुं अनित्य जानके भगवदीयकोमिलाप मुख्य
राख्यो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९७ ॥ ❀ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक पटेलकी वार्ता ॥

सो वह पटेल वैष्णव राजनगरमें रहेतो हतो ॥ वा पटेल
वैष्णवके दो बेटा हते और एक स्त्री हती और बडेबेटाकी
दोय स्त्री हती और छोटे बेटाकी एक स्त्री हती ऐसे सात
मनुष्य श्रीगुसांईजीके शरण आये और श्रीठाकुरजी प-
धरायके सेवा करन लगें॥ तब छजनेनको मन तो श्रीठा-
कुरजीमें लग्यो हतो और एक बडे बेटाको मन लौकिकमें
बहुत हतो ॥ सो कछु भगवत्संबंधी कार्य करतो नहीं हतो
और लौकिकमें तद्रूप होय रह्यो हतो एकदिन वाके पि-
तानें एक वैष्णवसुं कही जो याको मन प्रभूमें लगे तो
आछो तब वा वैष्णवनें कही जब श्रीगुसांईजी कृपा क-
रेंगे तब लगेगो फेर बहुत दिन बीते एकदिन वो वैष्णव
वा पटेलकी दुकानपर गयो और वाको बडो बेटा चोप-

डामें नामो लिखतो हतो ॥ सो दो तीन घडीसूधी वैष्णव बैठरह्यो ॥ परंतु वा पटेलके बडे बेटानें कछु वैष्णवकुं बोलायो नहीं ॥ जब वा वैष्णवनें जायके वाके कानमें कही जो ऊठ चेत ॥ तीन दिन पीछे तेरो मृत्यु आयो हैं ॥ ऐसे कहेके वो वैष्णव चल्यो गयो ॥ सो वाको चित्त उदास होय गयो दुकान बंद करके सोय रह्यो ॥ कछु खावेमें पीवेमें मन, न लगे वैद्यको औषध करें तोहुं लगे नहीं फेर पितासों कही अमके ठेकाणे वैष्णव रहे है वाकुं बुलाय लावो ॥ वाकुं जब बुलायवे गये तब वो वैष्णव आनाकानी करके दोदिन आयो नहीं ॥ तीसरे दिन आयो जब वाकी नाडी देखके कही जो तुमारे दोघडीमें मृत्यु हैं कोई दूसरो तुमकुं आवरदा देवे तो बचोगे ॥ वानें सब घरकेनसुं पूंछी तब कोईनें आवरदा देनी कबूल करी नहीं फेर वो पटेलको बेटा रोयके कहेवे लग्यो हेवै-ष्णव मैं तेरी शरण हूं ॥ तुम मेरी रक्षा करो ॥ जब वा वैष्णवनें कही तुं नित्य भगवत्सेवा और भगवत्स्मरण और भकवत्कथामें चित्त राखे तो तेरो काल फिर जाय-गो ॥ तब वानें हाथ जोडके कही अब जो जीवतो रहुं तो दिवस रात भगवत्सेवा तुमारी कृपातें करूं ऐसो कह्यो॥ जब वा वैष्णवनें आशीर्वाद दियो ॥ तब वे मऱ्यो नहीं ॥ फेर भगवत्सेवा करन लग्यो ॥ जाकुं भगवत्सेवामें ऐसी आसक्ती भई जैसी लौकिकमें हती ॥ जासुं दशगुणी से-वामें भई सो वे पटेलवैष्णव ऐसो कृपापात्र भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९८ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक मा बेटाकी वार्ता ॥

सो वे मा बेटा तीर्थ करवेकुं गये सो तीर्थ करते करते श्रीगोकुल गये ॥ सो श्रीगुसांईजीके दर्शन साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके भये तब विन मा बेटानें बीनती करी हमकुं सेवक करो तब श्रीगुसांईजीनें विनको कृपा करके नाम निवेदन करायो ॥ और श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लेके श्रीनाथजीके दर्शन कर आये परंतु श्रीगुसांईजी विना एक दिन रहे न शकते ॥ वा बेटाकी ऐसी आसक्ती श्रीगुसांईजीमें भई ॥ फेर ऐसे कितनेक वर्ष श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके पास रहेते तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी अब देशमें जाओ तब विननें कही महाराज आपके दर्शन विना कैसे रह्यो जाय ॥ तब श्रीगुसांईजीनें विनकुं ऐसो स्वरूप पधराय दियो जो आप वा स्वरूपसुं नित्य दर्शन देवें और बातें करें ॥ और भोजनकरें और शृंगार सेवा करें ॥ ऐसी रीतीसुं वे मा बेटा जन्मपर्यंत श्रीगुसांईजीके स्वरूपकी सेवा घरमें करें और कछु जन्मपर्यंत आसक्ती संसारमें जिनकी भई नहीं ॥ वा स्वरूपमें आसक्त रहे और वेगुप्त रीतीसुं सेवा करते कोईकुं खबर न पडीकें जो विनके घर श्रीठाकुरजी बिराजते हैं ॥ ऐसे जन्मपर्यंत गुप्त रीतीसुं सेवा करी ॥ वे मा बेटा ऐसें कृपा पात्र भगवदीय हते॥वार्ता संपूर्ण॥वैष्णव॥९९॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक देवजीभाई पोरबंदरमें

रहेते हते तिनकी वार्ता–सो वे देवजी भाई लुवाणा वैष्णव हते ॥ सो नित्य भगवद्वार्ता सुनवेकुं जाते हते ॥

सो एक दिन देवजीभाईकुं ज्वर आयो सो सात दिन सूधी प्रसाद लेवायो नहीं और न्हायेहुं नहीं उठये हुं नहीं सातमें दिन सब वैष्णव मिलके देवजीभाईके घर आये और विन वैष्णवनकुं आये जानके देवजी भाईकुं अपार हर्ष भयो ॥ और आनंदके आवेशसुं नृत्य करण लगे ॥ आनंदके आवेशसुं ज्वर गयो और सर्व वैष्णवननें प्रसन्न होयके कहि जो कछु मागो ॥ जब देवजीभाईनें कही मोकुं जन्मपर्यंत तुमारे भगवदीयको सत्संग न छूटे ये माग्यो सो वे देवजीभाईकी सत्संगमें ऐसी आसक्ती हती जैसी सत्संगमें वृत्रासुरकुं हती ॥ यदर्थी ॥श्लोक ॥ ममोत्तमश्लोकजनेषुसख्यंसंसारचक्रेभ्रमतःस्वकर्मभिः ॥ त्वन्माययात्माऽत्मजदारगेहेष्वासक्तचित्तस्यननाथभूयात् ॥ १ ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १०० ॥ ❀

श्रीगुसांईजीके सेवक स्त्री पुरुष राजनगरवासी की वार्ता–सो वे स्त्री पुरुष राजनगरमें श्रीठाकुरजीकी सेवा करते हते ॥ दिवस रात जिनकी वृत्ती श्रीठाकुरजीमें हती ॥ और वैष्णव आये गयेको सत्कार बहुत करते ॥ ता पाछे एक समय दुष्काल पडयो अन्न बहुत महँगो हतो ॥ घास मिलतो नहीं हतो सो एकदिन वा वैष्णवके घर गेहूं खरीद लाये हते ॥ सो घरके चोकमें डारे हते ॥ सो एक गाय दूबरी बहुत हती ॥ सो आयके खावे लगी ॥ जब वे गाय हाकेसों जाय नहीं ॥ जब वा वैष्णवकी स्त्रीनें गाय हातसुं सरकाई जब गाय पडगई सो गायके प्राण छूट गये ॥ वा वैष्णवकुं बहुत पश्चात्ताप भयो ॥ सब वैष्णवननें वाके माथे हत्याको दोष देके दूर कऱ्यो ॥ तब

वा स्त्री पुरुषनें अन्नजलत्याग कियो और प्राण छोडदेवें ऐसो विचार कियो ॥ दो दिन पीछे श्रीगोकुलनाथजी राजनगर पधारे ॥ सब वैष्णव दर्शनकुं गये ॥ तब या बातकी श्रीगोकुलनाथजीकुं खबर परी जब श्रीगोकुलनाथजी परमदयालु अशरणशरण भक्तवत्सल दीनबंधु पतितपावन ऐसे आपकोविरद विचारके या वैष्णवकुं बोलायो ॥ वाकुं सब बात पूंछी और दूसरे वैष्णवनकुं पूंछी ॥ सब वैष्णवनकी बात सुनके ऐसी आज्ञा करीके याके माथे हत्या नहीं है जब वा वैष्णवकुं आज्ञा करीके तूं जायके सेवा कर और निष्किंचन वैष्णवकुं बुलायके प्रसाद लेवाय जब वा वैष्णवनें ऐसे कन्यो फेर श्रीगोकुलनाथजीनें वा वैष्णवके हाथको जल अरोगे सो वे वैष्णव ऐसो कृपापात्र हतो ॥ अवगुण छिपायो नहीं ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १०१ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक दोउ पटेल राजनगरमें रहेते तिनकी वार्ता—सो वे दोनोंभाईविननें भाईलाकोठारीके घरमें श्रीगुसांईजीके पास नाम पाये हते॥ और नित्य भगवद्वार्ता सुनवे जाते॥ और विनकेपर ऐसी कृपा हती जो भगद्वार्ता सुनते सो कंठ होय जाती ऐसे करते करते बहुत दिनमें सुबोधनीजी सर्व कंठाग्र होय गई ॥ फेर वे दोउ भाई श्रीगोकुल आय रहे और श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये ॥ फेर श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लेके व्रजयात्रा करवे गये ॥ और फेर श्रीनाथजीके दर्शन करके श्रीगिरिराजकी तरेटीमें कोठडी लेके रहे ॥ और नित्य श्रीनाथ-

जीकी सेवा करते और भगवद्वार्ता करते और भगवद्वार्ताके आवेशमें आवते तब श्रीनाथजी आयके सुनते ॥ और कहेते और श्रीनाथजीकुं दोउ भाई विना रह्यो नहीं जाय जैसे गायकुं बछडा विना रह्यो नहीं जाय ॥ या रीतीसुं श्रीनाथजी विनके पाछें फिरते ॥ सो वे दोउ भाई पटेल श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १०२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगु०से०एक श्रोता वक्ता दोनोनकी वार्ता॥

सो वे श्रोता वक्ता अपने देशमेंसुं श्रीगोकुल गये सो श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन करे और श्रीगुसांईजीके सुखारविंदसुं कथा सुनवे लगे ॥ और सुनके दिवस रात भगवद्वार्ता कर्‍यो करते ॥ सो भगवद्रसमें ऐसे लीन होयजाते ॥ पांच पांच सात सात दिन विनकुं देहकी शुद्धी न रहेती ॥ ऐसे भगवदावेशयुक्त होयजाते ॥ सो कोईदिनमें विन दोउ जनेनकी देह छूटी ॥ जब अग्नि संस्कार वैष्णवननें कर्‍यो तब एक श्रोता वैष्णवके हाडकानमें छेद देखे तब वैष्णवननें श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी जो महाराज या श्रोता वैष्णवके हाडनमें छेद क्युं पडगये ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो या वैष्णवकुं भगवद्वार्ता सुनवेकी ऐसी आतुरता हती जो याके रोम रोममें श्रवण होयजाते ॥ और भगवद्वार्ता सुनवेकी उत्कंठा रोम रोममें होजाती ॥ भगवद्वार्ता सुनवेकी ऐसी आतुरता चहिये ॥ ये वात सुनके वैष्णव बहुत प्रसन्न भये ॥ सो वे श्रोता वक्ता ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १०३ ॥ ❀

॥ श्रीगुसांईंजीके सेवक एक बनिया ति० ॥

सो वह बनिया वैष्णव गुजरातमें रहेते हते॥ सो श्रीठाकुरजीकी सेवा भली भांतिसुं करते और वैष्णव आवते तिनकी टहेल भली भांतिसुं करते और घरमें भगवद्वार्ता होती और वाके गाममें देवीको मंदिर हतो सो वे देवी वाके घर भगवद्वार्ता सुनवेकुं आवती और कोई देखतो नहीं हतो॥ और ये वैष्णव देखतो ॥ सो एकदिन वा वैष्णवके घर वैष्णव आये तब वरसाद बहुत भई हती॥ लकडी सब भिज गई हती ॥ रात बहुत गई हती॥ सो वा वैष्णव लकडी लेवेकुं चल्यो ॥ रस्तामें देवीको मंदिर हतो ॥ अंधारी रात हती सो देवी दरवाजामें बाहेर निकलके ठाडी हती देवीनें कही वैष्णव कहां जाओहो॥ जब वा वैष्णवनें कही लकडी लेवे जाउंहुं ॥ जब देवीनें कही अंधारी रात और वरसाद पडेहै लकडी कहां ढूंढोगे ॥ और मेरे कमाड नये करनेहैं जासुं एकजूनो कमाड उतार लेजाओ॥ जब वा वैष्णवनें एक कमाड उतार लियो और घरमें टूकटूक करके लेगयो ॥ और काम चलायो सब सामग्री करी और वैष्णवनकुं महाप्रसाद लेवायो ॥ वा वैष्णवके परोसमें एक ब्राह्मण रहेतो हतो वा ब्राह्मणकी स्त्रीनें वा वैष्णवकी स्त्रीसुं पूंछी जो तुमारे लकडी छाणा सब भीजगये वरसादमें तुम लकडी कहांसुं लाये ॥ वा स्त्रीनें कही हमतो देवीके कमाड उतार लायेहैं ॥ फेर दूसरे दिन वा ब्राह्मणकी स्त्रीनें अपने पतिसुं कही देवीके कमाड तुमहुं उतार लावो ॥ तब वा ब्राह्मण देवीके कमाड रातकुं उतारवे गयो ॥ जबवाके कमाडसुं

हाथ चोंट गये सो हाथ छूटे नहीं वे ब्राह्मण तो बहुत दुःखी भयो ॥ और एक पेहेर सूधी ठाडो रह्यो ॥ कछु उपाय लगे नहीं ॥ जब वा ब्राह्मणकी स्त्री पतीकुं ढूंढवे गई उहां जायके देखे तो पतीकी ये व्यवस्था भईहै ॥ तब वाकी स्त्रीनें कमाडकुं पकडके पतीके हाथ छुडावन लगी जब स्त्रीके हाथहूं चोंट गये ॥ जब वे स्त्रीपुरुष दोनों रोवन लगे और देवीकी प्रार्थना करन लगे ॥ सो आखीरात रोयो करे ॥ जब दोघडी रात रही तब देवी बोली जो तुम मेरे दो कमाड नये कराय द्यो और तुमारे परोसमें बनिया वैष्णव रहे हैं वाके घर एक भारो लकडीनको नित्य पहोंचावो तो तुमकुं छोडुं ॥ जब वा स्त्रीपुरुषनें ये बात कबूल करी ॥ फेर वे ब्राह्मण ब्राह्मणी घरमें आये नये कमाड करायके देवीके मंदिरकुंलगाये और बनिया वैष्णवके घर लकडीको भारो नित्य पोहोंचावन लगे ॥ ऐसे करत करत चातुर्मास बीत गयो और बनिया वैष्णवके घर लकडा बहुत होयगये तब वा बनिया वैष्णवनें ब्राह्मणकुं कही अब लकडी मत लाव ॥ मैं देवीकुं कहूंगो तब वा बनिया वैष्णवनें देवीसों कही ॥ जो अब या ब्राह्मणकुं छोड द्यो तब देवीनें छोडदियो तब वा ब्राह्मणनें बनिया वैष्णवकुं कही जो देवी तुमारो कह्यो मानेंहै याको कारण कहो ॥ तब वा बनियानें कही जो वैष्णवधर्म ऐसोहीहै तब वा ब्राह्मणनें कही हमकुं वैष्णव करो ॥ तब बनियावैष्णवनें वा ब्राह्मणकुं श्रीगोकुल पठायो तब वे स्त्रीपुरुष श्रीगोकुलमें जायके श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीनाथजीके द-

र्शन करके और सेवा पधरायके फेर देशमें आये सो वे बनियावैष्णवके ऊपर श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपाहती ॥ जिनसुं श्रीठाकुरजी वोलते चालते ऐसे परम कृपापात्रहते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १०४ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक वेश्याकी वार्ता ॥

जाको माधवदाससों स्नेह हतो ॥ वा वेश्याकुं जबसुं माधवदासनें त्याग करीतवतें वे लूण और टिकडा खाती हती ॥ और घी नहीं खाती हती ॥ और शाक दाल चावल तेल विगेरे खाती नहती ॥ ऐसे करते बारें बरस वीते ॥ तब श्रीगुसांईजी पधारे जब वह वेश्यादर्शनकुं गई और श्रीगुसांईजीके मनुष्यनसों कही जो श्रीगुसांईजीकुं वीनतीकरो मोकूं शर्णलेवें ॥ मनुष्यननें कही जो श्रीगुसांईजी तुमकुं शरण नहीं लेवेंगे जब वेश्यानें अन्न जल छोड दियो और प्राण छोडवेको संकल्प कर्‍यो ॥ दोदिन भये जब वानें अन्न जललियो नहीं ॥ तब उहांके वैष्णवननें श्रीगुसांईजीसों बीनती करी जो जादिनतें माधवदासजीनें वाको त्याग कियो है वादिनतें यानें वेश्यापनो छोडयोहै और वादिनसुं नोन टिकडा खायहै और आपके पधारवेकी बाट देखे है ॥ बारें वर्ष भये हैं और आपने वाकुं शरणलेवेकी नाहीं कही है ॥ जासुं वह देह छोडे है ॥ यातें आप कृपाकरके वाकुं शरणलेवेंतो ठीक ॥ सब वैष्णवनकी बीनती सुनके श्रीगुसांईजीनें आज्ञाकरी जो याकुं अबी बुलावो और याकुं शरण लेउंगो ॥ तब वा वेश्याकुं वैष्णव बुलायलाये और

श्रीगुसांईजीनें कृपा करके नाम निवेदन करायो और भगवत्सेवा पधराय दीनी ॥ तबतें वेश्या श्रीमदनमोहनजीकी सेवा करन लगी और तऱ्हेंतऱ्हेंके शृंगार और सामग्री करके श्रीमदनमोहनजीकुं अंगीकार करावन लगी ॥ फेरकितनेकदिन पीछे श्रीगुसांईजीकी कृपातें श्रीमदनमोहनजी सानुभाव जनावन लगे ॥ सो वे वेश्या ऐसी परम कृपापात्र भगवदीय हती॥ वार्तासंपूर्ण॥ वैष्णव ॥ १०५ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक पटेल वैष्णवकी वार्ता

सो वे पटेल गुजरातमेंतें एक संग श्रीगोकुल जातो हतो सो वा संगमें पटेल गयो रस्तामें घास खोद लावे और बेचके निर्वाह करे ॥ सो श्रीगोकुल गयो और घास खोदवेकी दरात बेचके श्रीगुसांईजीकुं भेट करी ॥ श्रीगुसांईजीतो अंतरयामी हैं तब वा पटेलकुं बुलावें और पास बैठावें तब दूसरे वैष्णवननें कही यामें कहा गुण है याकुं बुलावोहो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञाकरी यानें सर्वस्व अर्पण कऱ्यो है॥जासुं श्रीठाकुरजी याके उपर बहुत प्रसन्न हैं॥ दो दिनसूधी भूख्यो रह्यो और हातनसुं घास खोद लायो जब दरात लीनी कोईकी आशा नहीं राखे हैं ऐसे निष्किंचन वैष्णव हमकुं बहुत प्रिय हैं॥सो श्रीगुसांईजीनें सर्वोत्तमजीमें श्रीमहाप्रभुजीको नाम कह्यो है सो ॥ स्वार्थोज्झिताऽखिलप्राणप्रियः ॥ याकोअर्थसंपूर्ण स्वार्थ जिननें त्याग कऱ्यो हैं ऐसे जो वैष्णव है प्राणनसों प्रिय जिनकुं सो वे पटेल श्रीमहाप्र-

श्रुजीकुं प्राणनसों प्यारे लगेहें ॥ ऐसेनके हृदयमें श्री-
ठाकुरजी विराजे हैं जासुं याके भाग्यकी कहा वडाई
करनी ॥ सो पटेल वैष्णव ऐसो कृपापात्र हतो ॥ वार्ता
संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १०६ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक वेणिदास और दामो-
दरदासतिनकी वार्ता ॥ सो वे दोनों भाई राजनगरमें
कपडाखरीद करने गये ॥ उहां श्रीगुसांईजीके सेवक भये
और श्रीगुसांईजीकुं पधरायके सूरत गाममें लाये और
सव घरके मनुष्यनकुं नाम निवेदन कराये फिर सव
कुटुंब लेके व्रजयात्रा गये और व्रजमें श्रीठाकुरजी प-
धरायके सेवा करन लगे और कुटुंब सगरो देशमें पाछे
पठायो और वे दोउ भाई उहां रहे ॥ सांझ और सवार
और मध्यान श्रीगुसांईजीकी खवासी करते और रसोई
करते और श्रीठाकुरजीकी सेवा करते ॥ एक दिन श्री-
ठाकुरजी प्रसन्न होयके आज्ञा किये जो कछु मागो तव
विन दोउ भाईननें कही जो हरी गुरु वैष्णव तीनोंके
उपर हमारो सरखो भाव रहें और तीनोंके दास हम
होयके रहें ये मागे तव श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयके आज्ञा
दीनी जो ऐसेही होयगो तब ऐसे करते पांच सात वर्ष
उहां रहे फिर विनके वेटानकुं द्रव्य वहुत मिल्यो तव
विनके वेटा कुटुंब सहित व्रजमें आयके विन दोउ भा
ईनकुं और श्रीठाकुरजीकुं सूरत गाममें पधराय लाये
सब मिलके सेवा करन लगे हरी गुरु वैष्णवकी सेवा सि-
द्ध होवै लगी इच्छा आवे जेंसे मनोरथ करन लगे सो वे

दोनों भाई ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये और जेसे जो मनोरथ करते श्रीठाकुरजीकुं पूछके करते और संसारमें आसक्त न हते द्रव्यमें जिनको चित्त नहीं हतो केवल श्रीगुसांईजीके चरणारबिंदमें जिनको चित्त हतो इनके भाग्यकी बहोत बडाई कहांताई कहिये ॥ श्रीगुसांईजी जिनकी सराहना करते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥१०७॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक ब्रजवासीकीवार्ता

एक समय श्रीगुसांईजी द्वारका पधारे सो जामनगरमें एक बनिया सो जोडा वेचतो सो वाकी दुकानपर ब्रजवासी जोडा लेवे गये सो जोडालिये और वाकुं पैसा देवे लगे जब वा बनिया और काम लग्यो हतो तब वा ब्रजवासीकी बात सुनी नहीं॥ तब वा ब्रजवासीनें वा बनियाकुं लात मारी और पैसा दिये॥ फेर दूसरेदिन वा बनियाने वा ब्रजवासीकुं देख्यो ॥ जब बनियाके मनमें आई जो मैं देवीको उपासी हुं और जाकुं कहुं जोमरजा सो मनुष्य मरजायहै ॥ या ब्रजवासीकुं काल्ह मैंनें मरजायवेको शापदियोहतो सो ये मर न गयो ॥ याको कारण कहा ॥ तब वा बनियानें अपनी देवीकुं पूंछी जो वह ब्रजवासी मर्‍यो नहीं याको कारण कहा ॥ तब देवीनें कही येतो वैष्णव है यासुं तो मैं डरपुहुं वैष्णवसुंतो ब्रह्मारुद्रशेषलक्ष्मी इत्यादिक सब डरपेहैं तब वा बनियानें कही मैंहुं वैष्णव होउंगो ॥ फेर जायके वा ब्रजवासिसों मिलके श्रीगुसांईजीके शरण गयो नामनिवेदन करके रीतिभांती शीखके श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा

करन लग्यो ॥ सो वे व्रजवासी श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र हतो ॥ जिनकुं देवी प्रतिबंध न करसकी ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १०८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक बनियाकी वार्ता॥

सो वे वनियादेवीकी उपासना छोडके व्रजवासीके संगतें वैष्णव भयो तवतें जोडावेचनेको धंदा छोडदियो जब वाकुं दशपंधरे दिन सेवा करते भये हते ॥ वाकुं एक ब्राह्मण वैष्णव मिल्यो ॥ सो वह वनिया वैष्णव अपने घर लायो॥और आदरसत्कार कर्यो और अनसखडी महाप्रसाद लिवायो ॥ पाछें वा ब्राह्मणकुं खवर पडी जो ये वनिया थोडेदिन पहेले मोचीको धंदो करतो हतो ॥ तब वाके मनमें वहुत ग्लानी उपजी ॥ जो या वनियाके हाथकों क्यूं खायो ॥ तव वा ब्राह्मणकुं कोढ निकस्यो तब वा ब्राह्मण वडो दुःखी भयो तव श्रीगुसांईजीके पास वह ब्राह्मण गयो ॥ और जायके सब वात कही तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी हरिदासकी बेटीके घर जाओ वे तुमारो उपाय करेगी॥तब वह ब्राह्मण हरिदासजीकी वेटी के घर आयो ॥ तब हरिदासजीकी बेटीकुं सब वात कही ॥ तब हरिदासजीकी बेटीनें मनोरथ करके वैष्णववनकुं बुलाये और ध्वजा चढाई और सब वैष्णवनकुं प्रसाद लिवायो तब वैष्णवनकी जूठण वा कोढवाले ब्राह्मणकुं लिवाई तब वा ब्राह्मणको कोढ मिट गयो॥वैष्णवनकी जूठनको प्रताप श्रीभागवतमें लिख्योहै नारदजीनें व्यासजीनें व्यासजीसों कहिहै ॥ सो श्लोक ॥ तेमय्यपेता

खिलचापलेऽर्भकेदांतेऽधृतक्रीडनकेऽनुवर्तिनि ॥ चक्रुःकृपांयद्यपितुल्यदर्शनाःशुश्रूषमाणेमुनयोऽल्पभाषिणि॥१॥ उच्छिष्टलेपाननुमोदितोद्विजैःसकृत्स्मभुंजेतदपास्तकिल्बिषः ॥ एवंप्रवृत्तस्यविशुद्धचेतसस्तद्धर्मएवात्मरुचिःप्रजायते ॥२॥ चार महापुरुष चातुमार्समें एक ठेकाणे रहेहते ॥ विनकी टहेल नारदजीकी मा करती हती और जूठन लायके खाती हती और बेटाकुं खवावती हती वा जूठनके प्रतापसुं नारदजी कहेहें ॥ व्यासजी मैं नारद भयोहुं और साक्षात् भगवत्स्वरूपकोअनुभव करुंहुं ॥ और भगवदवतारनमें गिनती भईहै सो भगवदीयकी जूठनको ये प्रताप हैं॥तब वे ब्राह्मणको कोढ मिट गयो॥ और वैष्णव धर्मकुं सर्वोपर जानन लग्यो ॥ सो वे बनिया श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र भयो ॥ जाके वृथादोष देखेतें वा ब्राह्मणकुं तुर्त कोढ़ भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १०९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक श्रीनाथजीके बीनकारकी वार्ता ॥ सो वे बीनकारजी श्रीनाथजीके पास बीन बजावते हते ॥ और महाप्रसाद लेते हते और अधिकी महाप्रसाद मिलेतो वैष्णवनकुं लेवाय देतेहते ॥ फेर कोई समय बीनकारके विवाहको दिन आयो ॥ जब बीनकारनें विचार कियो परदेशमें जायके कछु द्रव्य लाउं तो ठीक ॥ विवाहको काम चलजाय तब श्रीनाथजीनें ऐसे विचाऱ्यो जो ये बीन बहुत आछी बजावेंहें न जायतो ठीक ॥ तब श्रीनाथजीनें वाकी बीनमें सोनाकी

कटोरी घरदीनी सवारे वीन बजावे आये सो वीनमेंसु कटोरी निकसी ॥ तब वीनकारनें श्रीगुसांईजीके आगें जायके वीनती करी जो ये कटोरी मेरी वीनमेंसुं निकसीहै ॥ तब श्रीगुसांईजी जानगये जो श्रीनाथजीनें दीनी होयगी ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुमनें परदेश जायवेको विचार कियोहै सो श्रीनाथजीकी आज्ञानहीं है जासुं तुम मतिजाओ तुमारो कारज होवे इतनो द्रव्य हमारे पास ल्यो ॥ तब वा वीनकारनें वीनती करी जो मैं देवद्रव्य और गुरुद्रव्य नहीं लेउंगो ॥ आपकी कृपातें सब कारज सिद्ध होऐंगे ॥ तब वा वीनकारजीनें विचार कियो अब परदेश जानो नहीं ॥ जो इच्छा होयगी सो होवेगो ॥ तब गुजरातमेंसों संग आयो और वा संगमें एक वैष्णव हतो वाकुं वीनकारजीकी वातकी सब खबर पडी तब वानें वीनकारकुं बुलायके वाको विवाह रुपैया पांचसे खर्चके कर दियो तब श्रीनाथजी वहुत प्रसन्न भये ॥ सो वे वीनकारजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनविना श्रीनाथजीकुं रह्यो न गयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ११० ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक प्रेमजीभाई लुवाणाकी वार्ता ॥ सो वे हालारमें रहेते हते सो वे प्रेमजीभाई ब्रजयात्रा करवेकुं गये सो उहां जायके श्रीगुसांईजीके सेवक भये औरब्रजयात्रा करके श्रीनाथजीके दर्शन करके फेर प्रेमजीभाईनें श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी जो महाराज मोकुं सूक्ष्म सेवा पधराय देवें ॥ तब श्रीगुसां-

ईजीनें कृपा करके वस्त्रसेवा पधराय दीनी ॥ फेर प्रेमजी-भाई श्रीठाकुरजी पधरायके देशमें आये ॥ फेर भलीभांतीसुं सेवा करन लगे ॥ फेर एकदिन प्रेमजीभाईके मनमें ऐसी आई जो और वैष्णवनके इहां तो स्वरूप बिराजेहें और अपने इहांतो वस्त्रसेवा है सो श्रीठाकुरजी कैसे अरोगत होएंगे ॥ फेर उत्थापनके समय ऐसे दर्शन भये जितने वस्त्रजीमें तारहते सब स्वरूपात्मक दीखवे लगे॥ जब प्रेमजीभाईकुं ऐसे दर्शन भये तब प्रेमजीभाईनें मनमें निश्चय कियो जो श्रीठाकुरजीके स्वरूप सब एकहिहें मोकुं वृथा संदेह होवेहें ॥ तब प्रेमजीभाईको संदेह श्रीठाकुरजीनें सब मिटाय दियो ॥ सो वे प्रेमजीभाई ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १११ ॥ ❋

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक वृंदावनदास छबीलदासकी वार्ता ॥ सो वे दोउभाई आगरेमें रहेते हते ॥ तब वे दोनो भाई संतदासजीके घरमें भगवद्वार्ता सुनवे जाते हते सो वे नित्य कथा प्रसंग सुनते हते ॥ एकदिन ऐसो प्रसंग आयो जो नामनिवेदन विना भगवत्प्राप्ति नहीं होवेहै ॥ और भगवत्सेवाको अधिकार न होवे ॥ तब विन दोनों भाईननें ऐसो नेम लियो जो नाम निवेदन विना जल न लेनो ॥ सवारे उठके श्रीगोकुलगये सो रातकुं श्रीगोकुल पहोंचे ॥ तब श्रीगुसांईजीके दर्शन किये॥ दंडवत करी ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो महाप्रसाद ल्यो तब विननें बीनती करी जो हमनें रातसुं ऐसो नेम लियो है जो नामनिवेदन विना जल न

लेनो ॥ तब श्रीगुसांईजी विनकी आर्त देखके कृपा करके नाम सुनाये ॥ और जल लेवेकी आज्ञा करी फेर दूसरे दिन श्रीनवनीतप्रियाजीके संनिधान निवेदन करवायो तब वे दोनो भाईनकुं बहुत आनंद भयो ॥ फेर श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी जो अब हमारे कहा करनो॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ॥ भगवत्सेवा करौ और आगरेमें हृषीकेशजीको सत्संग करौ ॥ तब सुनके बहुत प्रसन्न भये तब श्रीठाकुरजीकी सेवा माथे पधराई और भलीभांतिसुं सेवा करन लगे और वृंदावनदास और छविलदास ऐंसे कृपापात्र भये जिनकुं निवेदनकी ऐंसी आरति भई जिनसों एक दिन रह्यो न गयो॥ तातें इनके भाग्यको पार नहीं ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥११२॥ ❀॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक धोबीकी वार्ता ॥

सो वे धोबी श्रीनाथजीके वस्त्र धोवतो हतो सो श्रीगुसांईजीनें एक दिन देख्यो तब श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो तुम ऐंसो प्रयत्न करके श्रीनाथजीके वस्त्र धोवै है सो इनको तुं कहा स्वरूप जाने हैं ॥ तब वा धोबीनें कही जो महाराज ये वस्त्र श्रीनाथजीके श्रीअंगको स्पर्श भये हैं सो साक्षात् भगवत्स्वरूप हैं और मैंनें इन वस्त्रनको स्पर्श कियो हैं सो मेंहुं भगवत्स्वरूप होउंगो तब श्रीगुसांईजीनें हँसके कही अस्तु फेर वा धोबीकी देह छूटी जब भगवत्स्वरूप होय गयो मारवाडमें एक राजाके गाममें राजाके इहां वे धोबी श्रीठाकुरजीभयो तब सेवा पूजा प्रतिष्ठा बहुत भई और बडे वैभवसुं राजा सेवा क-

रन लग्यो तब वा गाममें चाचाहरिवंशजी गये और एक बनियाकी दुकानपर उतरे तब वा बनियानें वा गामके श्रीठाकुरजीकी बहुत बडाई करी फेर चाचाजीनें संगके वैष्णवनसुं कही चलो देखें कहा है तब चाचाजी देखके कही ये तो श्रीनाथजीको धोबी है परंतु दिव्यदृष्टीसुं देख्यो जायहै तब चाचाजीनें माथो धुणायो तव राजा सेवा करतो हतो तब राजानें देख्यो तब राजानें मनुष्य पठायके चाचाजीकुं बुलवायो और कही जो तुमनें माथो क्युं धुणायोहै तब चाचाजीनें सब बात कही ॥ तब राजानें कही जो ये बात मेरे मानवेमें कैसे आवे ॥ तब चाचाजीनें कृपा करके वा राजाकुं दिव्यदृष्टी दीनी ॥ तब वा राजाकुं सब पदार्थ अलौकिक दीखवे लग्ये ॥ जैसे अर्जुनकुं श्रीठाकुरजीनें दिव्य नेत्र दिये जब वानें श्रीठाकुरजीको विश्वरूप देख्यो और जैसे प्राचीनबर्हिराजाकुं नारदजीनें दिव्य दृष्टी दीनी ॥ तब जितने पशु यज्ञमें मारे हते सो सब पशु दीखवे लगे ॥ ऐसे चाचाजीनें श्रीगुसांईजीकी कृपातें वा राजाकुं दिव्यदृष्टी दीनी ॥ तब वे ठाकुरजी राजाकुं धोबी दीखे तब वे राजानें तत्काल चाचाजीसुं बीनती करी मोकुं शरण ल्यो तब चाचाजीनें श्रीगुसांईजीकुं पधरायके वे राजा और राजाको गाम सब श्रीगुसांईजीके सेवक कराये सो वे धोबी श्रीनाथजीके वस्त्र धोवत धोवत तद्रूप भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ११३ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीको सेवक एक राजा धोबी ठाकु-

रजी सेवतो तिनकी वार्ता ॥ जब राजाकुं श्रीठाकुरजी धोवी निश्चय भयो तब राजानें चाचाजीकुं कही जो श्रीगुसांईजीकुं पधरावो तब श्रीगुसांईजीकुं पधरायके राजा वैष्णव भयो और भगवत्सेवा करन लग्यो और भगवद्वार्ता करन लग्यो ॥ और श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी जो चाचाजी सदैव मेरे पास रहें ॥ तब श्रीगुसांई-जीनें आज्ञा करी जो वर्ष एकमें पांचदिन तुमारे पास चाचाजी रहेंगे ॥ तब राजानें कह्यो जो महाराज पांच दिन बारे महिनामें आवें तो मेरो निर्वाह कैसे होय ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो श्रीमद्भागवतमें कह्यो है॥ एक क्षण भर चाचाजी जैसेनको सत्संग होवे तो वाके बरोबर स्वर्गको सुख और मोक्षको सुख वा एक क्षणभ-रके बरोबर नहीं होवेहें ॥ सो श्लोक ॥ तुलयामिलवेना पिनस्वर्गनापुनर्भवम् ॥ भगवत्संगिसंगस्यमर्त्यानांकि-मुताशिषः ॥ सो या श्लोकमें कह्यो है एक क्षणभर जो भ-गवत्संगीके संगको सुखहै वाके बरोबर और कोईसुख नहीं सो तुमकुंतो पांच दिन प्रतिवर्ष ये सुख मिलेगो ॥ तब राजानें हाथजोडके बीनती करी महाराज एक वर्षतो जरूर चाचाजीकुं मेरेपास राखें ॥ तब श्रीगुसांईजीनें हां कही ॥ फेर एकदिन वा धोबी ठाकुरनें राजासुं कही जो मोकुं तुमारे श्रीठाकुरजीके मंदिरके गोखलामें बैठाय देवो ॥ और एक पातलमहाप्रसादकी मोकुं नित्य धराय देवो और मेरो सब वैभव उठायके श्रीनाथजीके उहां पठायदेवो ॥ तब राजानें वैसेंही कर्‍यो ॥ और एकवर्ष-

सूधी चाचाजीनें उहां रहेके राजाकुं सब रीती पुष्टिमार्गकी सिखाई ॥ सो वह राजा श्रीगुसांईजीको ऐसो भगवदीय भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ११४ ॥ ❀ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक पटेलको बेटा और पटवारीकी बेटीकी वार्ता—सो वे दोउनको बालपनेसों आपसमें स्नेह बहुत हतो ॥ तब वे पटवारीकी बेटीको विवाह भयो और परदेशमें सासरे गई सासरे जायवेके समय वाके सगे पहोंचायवे गये और पटेलको बेटाहुं गयो ॥ जब वे सब पहोंचायके पाछेंफिरे तब पटेलको बेटा एक झाडपर चढके वाकी गाडी देख्यो कऱ्यो॥ जब वे गाडी दूर गई तब पटेलके बेटाकुं विरहताप भयो॥ तब वाके प्राण छूटगये तब वा वृक्षके नीचे वा पटेलके बेटाको चोतरा बनायो ॥ फेर बहुत दिन बीते ॥ पीछे पटवारीकी बेटी पिहरमें आई सो वा वृक्षके नीचे गाडी ठाडी राखी और पूंछयो ये चोतरा इहां क्युं बन्योहै ॥ तब लोगननें सब समाचार कहे ॥ तब वा पटवारीकी बेटीको प्राण छूटगयो तब वाको चोतरा वा वृक्षके नीचे बनायो ॥ फेर थोडे दिन पाछे श्रीगुसांईजी वा देशमें पधारे और वा वृक्षके नीचे डेरा किये सो वा वृक्षके ऊपर दोनो भूत होयके रहे हते ॥ सो विननें श्रीगुसांईजीको पधारे जानके मनमें विचार कऱ्यो हमारो उद्धार होवे तो ठीक ॥ तब वे दोनो रातकुं श्रीगुसांईजीके डेराकी चौकि देवे लगे सिपाईनकुं जायके कही तुम सोय जावो हम चौकि करेंगे तब सिपाईनें पूंछि तुम कौनहो ॥ तब

विननें अपनी सब बात कहि ॥ तब वा सिपाईनें आयके वीनती करी तब श्रीगुसांईजी विनकुं देखवे पधारे जब श्रीगुसांईजीकी द्रष्टि विनभूतनके ऊपर पडी तब वे दोनो भूतयोनीसुं छूटके दिव्य रूप होयगये ॥ और श्रीगुसांईजीनें कृपाकरके विनको द्रष्टिद्वारा नामनिवेदन करायो और आपके प्रतापबलसुं तुरत भगवल्लीलामें प्रवेश कराये ॥ सो वे श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ११५ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक दोप्रेत उद्धरे तिनकी वा०

एक समें श्रीगुसांईजी गुजरात पधारते हते एक गाम बाहेर डेरा कियो ॥ श्रीगुसांईजी कोईदिन वा गाममें पधारे नहीं हते ॥ तब सांझ पडगई तब श्रीगुसांईजीनें डेरा कियो तब उहां दो प्रेत रहते हते सो विननें विचार कियो ॥ जो श्रीगुसांईजी इहां पधारेहैं इनके शरण जाय तो कल्याण होय ॥ तब वे दोउ प्रेतननें श्रीगुसांईजीके जलघरियाकुं दिखाई दीनी ॥ तब जलघरियानें श्रीसांईजीकुं वीनती करी जो महाराज या कूवापें दोय प्रेत ठाडेहैं ॥ विनकी द्रष्टीको जल अपने काम आवेके नहीं ॥ तब श्रीगुसांईजी देखवेकुं पधार्‍ये तब वे दोनों प्रेतननें साष्टांग दंडवत करी ॥ तब श्रीगुसांईजीनें विनके ऊपर कृपाद्रष्टी करके नामनिवेदन करायो ॥ सो तत्काल प्रेतयोनीसुं छूटके भगवल्लीलामें गये ॥ तब वा गाममें वैष्णव रहेते हते ॥ विननें श्रीगुसांईजीसुं पूछी जो ये दोनो आगले जन्ममें कौन हते ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ॥ ये दोनों

आगले जन्ममें स्त्रीपुरुष कान्यकुब्ज ब्राह्मण हते ॥ और मर्यादामार्गके वैष्णव हते ॥ सो मर्यादारीतीसुं सेवा करते हते ॥ जब वा ब्राह्मणकी देह छूटवे लगी तब वाकी स्त्रीनें पूंछ्यो जो अब मैं कैसे करूं ॥ तब वा ब्राह्मणनें कही तुं अन्नजल त्यागके देह छोड दीजो ॥ सो वा स्त्रीनें वैसेंहि कर्‌यो ॥ सो वानें भगवत्सेवा छोडके देह त्याग करी और वाके पतीनें देहत्यागको रस्ता बतायो ॥ या अपराधसुं दोनों प्रेत भये ॥ सो अब इनको उद्धार भयो है ॥ जासुं वैष्णवकूं सहज भगवत्सेवा न छोडनी और कोईकुं भगवत्सेवा छोडावनीहुं नहीं॥भगवत्सेवाके आगे सब धर्म तुच्छ हैं॥ यासुं अधिकी कोई धर्म नहीं है॥श्रीठाकुरजीनें गीताजीमें कही है॥श्लोक॥सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकं शरणंव्रज ॥ इत्यादि वचननतें भगवत्सेवाके आगेंसब धर्म तुच्छहैं॥ प्रल्हादजीनें कहीहै॥सो श्लोक ॥ देवोसुरोमनुष्योवायक्षो गंधर्वएवच ॥ भजन्मुकुंदचरणं स्वस्तिमान्स्याद्यथावयं ॥ या रीतीसुं भजनसो सेवा याके आगे सब धर्म तुच्छहैं ॥ ये सुनके सब वैष्णव बहोत प्रसन्न भये ॥ सो वे दोनो प्रेत श्रीगुसांईजीकी कृपातें भगवल्लीलामें गये ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ ११६ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक राजा जोतसिंहजी-

की वार्ता–सो वे राजाके पुरोहितको बेटा बडो पंडित हतो और भगवद्धर्ममें कुशल हतो और श्रीगुसांईजीको सेवक हतो और भगवल्लीलाको अनुभव करतो हतो ॥ एकदिन राजाके पास गयो ॥ तब राजा रासाई देवीकी

पूजा करतो हतो ॥ तब वा पुरोहितनें राजासुं कही जो ऐसी देवीतो हजारनपंढरपुरमें जलभरेहें तब वा राजानें कही मोकुं दिखायदे फेर वे राजा और पुरोहितको बेटा पंढरपुरमें आये श्रीविठ्ठलनाथजीके दर्शन किये॥ औरवैभव कछु देख्यो नहीं॥ तब वा पुरोहितसुं कही॥ जो मेरी देवीको वैभव जितनोहे यासुं वीसमो भाग श्रीविठ्ठलनाथजीको नहींहें तुम मोकुं काहेकुं लायेहो॥ तब वा पुरोहितनें श्रीगुसांईजीकीकृपातें वा राजा जोतसिंहकुं दिव्यदृष्टी दीनी॥ तब श्रीविठ्ठलनाथजीके सब वैभवके दर्शन होंवे लगे ॥ अनेक प्रकारकी रचना और अनेक प्रकारकी कुंज और अनेक प्रकारके मनुष्यनकुं सेवा करते और अनेक प्रकारके वैभव रत्नजडित स्तंभ किवाड सब दीखवे लगे ॥ तब राजा देखके विस्मित होय गयो ॥ और पुरोहितके बेटाके पांवन पऱ्यो ॥ फेर पुरोहित वा राजाको हाथ पकडके दूसरी आडी लेगयो॥ उहां देखे तो हजारन स्त्री जलभरके आवेंहें॥ और सब स्त्रीनसुं पाछे वा राजाकी रासाई देवी जलभरके आवती हती ॥ सो वे राजानें देखी ॥ तब राजानें देवीसुं पूंछ्यो जो येकहाहे ॥ सो वा देवीनें कही जो मैंतो सेवा करुंहुं तेरे जो कछू पूंछनो होवे सो पुरोहितसुं पूंछ लीजो ॥ मैं तो अबी सेवामें जाउंहुं ऐंसे कहिके वे देवी चलीगई फेर राजाके पुरोहितनें दिव्यदृष्टि खेंचलीनी तब साधारण रीतीसुं जैंसे नित्य दर्शन होते ऐसे श्रीविठ्ठलनाथजीके दर्शन होंवे लगे तब वे राजा हाथ जोडके पुरोहितसुं कह्यो जो मोकुं तुमारो

सेवक करो॥तब पुरोहितनें कही जो मैं अडेलमें श्रीगुसां-
ईजीको सेवक भयोहुं तिनकी कृपातें असाधारण सुख हो-
वै है ॥ तुमहुं श्रीगुसांईजीके शरण जाओ तो सब कारज
सिद्ध होवेंगे॥तब राजा पुरोहितकुं संग लैके अडेल जाय-
के श्रीगुसांईजीकोसेवक भयो और नामनिवेदन कियो।जब
श्रीठाकुरजी पधरायके ब्रजमें श्रीनाथजीके दर्शन करके
वे राजा अपने घर आयो॥ और पुरोहितकुं पास राखके
सब सेवाकीरीती सीखी ॥ और स्नेहसुं भगवत्सेवा करन
लगे ॥ थोडेदिन पीछे श्रीगुसांईजीकी कृपातें श्रीठाकुरजी
सानुभाव जतावन लगे सो वे राजा पुरोहितके संगतें भ-
गवदीय भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ११७ ॥ ❀ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक दोउविरक्त ति० ॥

सो एक विरक्त तादृशी भगवदीय हतो और एक साधा-
रण हतो॥ तादृशी भगवदीय परदेश जायवे लग्यो तब वा
साधारण वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसों बीनती करी अब मेरे
कहा करनो॥तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तुम याकें संग
परदेश जावो और याको सत्संग करो ये कहे जैसे करो॥
तब वा वैष्णवनें कहि जो आज्ञा॥ सो तादृशी भगवदीय
परदेश चल्यो ॥ तब वो दूसरो विरक्त तादृशीके संग च-
ल्यो ॥ सो श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लैके चल्यो ॥ रस्तामें
एकदिन तादृशी भगवदीय पाछे रह्यो और साधारण
आगे चल्यो ॥ सो एक गाम हतो वा गाममें बैठ रह्यो सो
जहां बैठो हतो वाके परोसमें वेश्याको नृत्य होवे लग्यो
और साधारण वैष्णव देखने लग्यो सो ऐसो मग्न भयो

जो कछु देहकी शुद्दी रही नहीं ॥ फेर वो तादृशी भगवदीय वाकुं ढुंढवे निकस्यो ढुंढत ढुंढत वा गाममें आयके मिल्यो ॥ परंतु वो वेश्याकी नृत्यमें ऐसो मग्न हतो जो कछु वैष्णवकुं पहेचान्यो नहीं, फेर वैष्णव वाकुं वहार खेंच लेगयो तोहुं कछु शुद्धि आई नहीं, फेर भगवदिच्छासुं वा तादृशीकेपावनकी रज उडी सो पवनसुं वाके मुखमें गई तव वाको विषयावेश मिटयो तव वाको चेत भयो फेर सुद्ध आई ॥ देखे तो वे तादृशी पास ठाडे है उठके वाके संग चल्यो फेर कोईदिन श्रीगुसांईजीके पास जव गये तव वा तादृशीनें श्रीगुसांईजीसुं सव समाचार कहे फेर श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो याकुं वेश्याकी रजको स्पर्श भयो हतो जासुं आवेश आयगयो ॥ फेर तेरे चरणकी रजको स्पर्श भयो जव याको विषयावेश उतर्‍यो ॥ सो वैष्णवकी चरण रजको ऐसो माहात्म्य है जिनके पांवनकि रजकुं ब्रह्मा और शिव और शेष और सनकादिक इच्छा करे हैं परंतु प्राप्ती नहीं होवे हैं ऐसे वैष्णवके पांवनकि रजसों विषयावेश मिटे यामें कहा आश्चर्य है सो तादृशी वैष्णव सुनके चुप होय गयो सो वे वैष्णव ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ११८ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक ब्राह्मणी अडेलमें रहेती तिनकी वार्ता ॥ सो वे ब्राह्मणीकुं श्रीगुसांईजीनें नामनिवेदन करायके आज्ञा करी जो श्रीनवनीतप्रियाजीकी परिचारगी करो ॥ सो परिचारगी करन लगी ॥ एकदिन दारकी तपेलीमें माजतीवखत दाग रहिगयो तब कोईकुं

खबर न परी ॥ तब श्रीनवनीतप्रियाजीकुं राजभोग धरवेकुं श्रीगुसांईजी पधारे ॥ तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें कही जो राजभोगकी सामग्री छिवायगईहै तपेलीमें दाग रहिगयोहै ॥ तब श्रीगुसांईजीनें दूसरी सामग्री कराई और श्रीनवनीतप्रियाजीकुं समर्पी और वा ब्राह्मणीकुं यमुना पार उतार दीनी ॥ वे ब्राह्मणी यमुनाजीके घाटपर झूपडी बनायके पडी रती और घाटपर गाय भैंस आवें सो गोबर थापे और उपला वेचे॥घाट उतरवेकुं लोग आवे उहां रसोई करे ॥ विनकुं उपलादेवे ऐसे करके वो ब्राह्मणी निर्वाह करे ॥ परंतु गोबर बहुत हतो जासुं उपलानको ढगलावहुत होयगयो ॥ एकदिन एक व्रजवासी नाव लैके उपला लेवेगयो तब वा ब्राह्मणीसुं पूंछो ये उपला वेचेगी ॥ तब वा ब्राह्मणीनें व्रजवासीकुं पेहेचान्यो तब वा ब्राह्मणीनें कही उपला काहेको चहिये मंदिरके लीयें चहिते होवे तो लैजावो सब श्रीगुसांईजीकेहैं मैंहुं श्रीगुसांईजीकी दासीहुं ॥ तब ये सुनके उपला भरायके नाव लेगयो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें पूंछी ये सुंदर उपला कहांसुंलायोहै ॥ तब वा व्रजवासीनें वा ब्राह्मणीकी दंडवत कही और सब समाचार कहे तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न भये ॥ और आज्ञाकरी जो वा ब्राह्मणीकुं बुलाय लावो ॥ फेर वे व्रजवासी दूसरी नाव लेगयो ॥ और उपला भरके वा ब्राह्मणीकुं संग ले आयो फेर वे ब्राह्मणीनें श्रीगुसांईजीके दर्शन कर्‍ये ॥ बहुत दिन भये हते तब अपनो दोष विचारके आंखनमेंसुं जलबहेवे लगगयो श्रीगु-

सांईजी देखके वा ब्राह्मणीकुं धीरज दीनी और आज्ञाकरी जो रोवोमति अब श्रीनवनीतप्रियाजी तुमारेऊपर प्रसन्न भयेहैं ॥ जावो परिचारगीकी सेवा करो ॥ फेर वे ब्राह्मणी अत्यंत श्रद्धासहित बहुत संभारराखके परिचारगी करन लगी ॥ थोडेदिन पीछे श्रीनवनीतप्रियाजी अनुभव जतावन लगे और वा ब्राह्मणीके उपर कृपाकरके बोलन लगे॥ फेर एकदिन श्रीनवनीतप्रियाजीके खीरमें मेवा थोडो हतो सो वा ब्राह्मणीकुं श्रीनवनीतप्रियाजीनें आज्ञाकीनी जो खीरमें मेवा थोडो है ॥ तब वा ब्राह्मणीनें श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी तब श्रीगुसांईजी सुनके बहुत प्रसन्न भये और विचार किये जो याके धन्यभाग्य है ॥ श्रीनवनीतप्रियाजीनें ऐंसीकृपाकरीहैं सो वे ब्राह्मणी श्रीगुसांईजीकी ऐंसी कृपापात्र हती जाकुं काढदीनी तोहुं दोष न आयो और सदैव वा ब्राह्मणीको चित्त श्रीगुसांईजीके चरणारविंदमें रहेतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ११९ ॥ ❀॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक दुर्गादासकी वार्ता ॥

सो वे दुर्गादास पूरवदेशमें रहेते सो तीर्थयात्रा करवेकुं आये तब वे दुर्गादास श्रीगोकुलमें आये तब श्रीगुसांईजी यमुनाजीके घाटपर विराजते हते ॥ तब साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम कोटिकंदर्पलावण्यस्वरूपके दर्शन भये तब दुर्गादासनें श्रीगुसांईजीकु बीनती करी जो महाराज मोकुं शरणे ल्यो ॥ मैं बहुत जन्ममें भटकत हुं ॥ तब श्रीगुसांईजीकुं दया आई तब कृपा करके नामनिवेदन कराये॥ फेर दुर्गादास व्रजमें बहुत दिन रहे ॥ और श्रीगोवर्धन

नाथजीके सेवा दर्शन किये ॥ फेर दुर्गादास विदा होयके देशकुं गये और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे जिनके संगतें बहुत वैष्णव भये और श्रीठाकुरजी दुर्गादासके पास बालककीसी न्याई जो चाहे सो माग लेते॥ और बाललीलाको संपूर्ण अनुभव करावते ॥ सो वे दुर्गादास ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥१२०॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक चतुरबिहारीकी वार्ता॥

सो चतुरबिहारी श्रीगोकुलमें आये हते ॥ और श्रीगुसांईजीके दर्शन किये तब श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी मोकुं शरणलेउ ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके नाम निवेदन करायो ॥ तब श्रीनवनीतप्रियाजीके राजभोगको समय हतो और चतुरबिहारीकुं लीला सहित दर्शन भये ॥ तब चतुरबिहारीनें नयो पद बनायके गायो॥ सो पद॥ "कीयें जोचटकमटकठाडोरहतनघटपर" ॥ ये पद गायो और ये सुनके श्रीगुसांईजी वहोत प्रसन्न भये ॥ तब श्रीगुसांईजीनें जाण्यो के श्रीनवनीतप्रियाजीनें इनकुं लीलाको अनुभव करायो ॥ तब श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये ॥ फेर चतुर बिहारीजी श्रीजीद्वारमें आयके श्रीगुसांईजीके संग श्रीनाथजीके दर्शन किये ॥ तब मंगलाको समय हतो चतुरबिहारीनें नये पद गाये॥ और राजभोगके समय श्रीनाथजीके संनिधान चतुरबिहारीजीनें पद गायो ॥ सो पद ॥ "अनतनजईएहोपियेरहियेमेरेमेहेल" ॥ ये सुनके श्रीगुसांईजी वहोत प्रसन्न भये ॥ सो वे चतुरबिहारीजी श्रीगुसांईजी पोढते तब पंखा करते और पद गा-

वते सो वे चतुरविहारी श्रीगुसांईजीके चरणारबिंदकी जन्मपर्यंत सेवा करते हते॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव॥१२१॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक क्षत्राणीकी वार्ता ॥

सो श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे तव वा क्षत्राणीनें बीनती करी महाराज मोकुं शरण ल्यो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें मनुष्यनकुं समस्या करिके कही याकुं न्हवाओ सो न्हायके श्रीगुसांईजीके संनिधान आई ॥ जब श्रीगुसांईजी नाम सुनायवे लगे तब वा क्षत्राणीके मनमें ऐंसी आई जो श्रीगुसांईजी ऊंचेस्वरसुं बोलें तो ठीक तब श्रीगुसांईजी वाकुं धीरे धीरे नाम सुनावन लगे ॥ परंतु वे क्षत्राणी जानके बोले नहिं ॥ तब श्रीगुसांईजी हेला करके बोले जो सुनेहे के नहीं ॥ तब वे क्षत्राणी बोली जो आपके वचनामृत सुनवेके लीयें मैं जानके नहीं बोलीहुं ॥ तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न भये तब वा क्षत्राणीकुं नामनिवेदन कराये ॥ फेर श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगी ॥ थोडेदिन पीछे श्रीठाकुरजी वा क्षत्राणीकुं यशोदाजी जैसो अनुभव करावन लगे ॥ श्रीठाकुरजी घरमें जैसे यशोदाजीसुं बालचेष्टा करते जैसे वा क्षत्राणीसुं बालचेष्टा करन लगे सो वे क्षत्राणी ऐंसी परम कृपा पात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १२२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक माधोदास कपूरकी ॥

सो माधोदास आगरेमें रहेते ॥ एकसमय श्रीगुसांईजी आगरे पधारे ॥ सो जनार्दनदास चोपडा क्षत्रीके घर उ-

तरे ॥ उहां माधवदासजी दर्शनकुं गये ॥ सो साक्षात् श्री गोवर्धननाथजीके दर्शन भये ॥ तब माधवदास देखके विस्मित भये ॥ तब श्रीगुसांईजीसुं बीनती करी महाराज मोकुं शरणल्यो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके नाम निवेदन करायो ॥ और सेवा पधरायदीनी ॥ तब माधव दासजी सेवा करन लगे॥सेवा करते करते माधवदासजीकुं श्रीठाकुरजीकी लीलाको अनुभव भयो ॥ कोईसमय तो श्रीनाथजी रासलीलाके दर्शन करावते और कोई समय दानलीलाके दर्शन करावते और कोई समय बाललीलाके दर्शन करावते ॥ ऐसि अनेक प्रकारकी लीलानके दर्शन माधवदासजीकुं होते॥ सो वे माधवदासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १२३ ॥ ❀

श्रीगुसांईजीके सेवक भीष्मदास क्षत्रीकी वा०

सो भीष्मदास पूर्वदेशमें रहेते सो तीर्थ यात्रा करवेकेलियें श्रीगोकुल आये ॥ सो श्रीगुसांईजीके दर्शन कीये ॥ और श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी मोकुं शरण लेउ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके भीष्मदास और भीष्मदासके कुटुंबकुं नाम निवेदन करायो ॥ और भीष्मदासनें श्रीनाथजीके दर्शन किये॥और दर्शन करके बहोत प्रसन्न भये॥और श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी महाराज मोकुं भगवत्सेवा पधराय दीजे॥ तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके पधराय दीनी ॥ और श्रीबालकृष्णकी सेवा भीष्मदास भलीभांतिसुं करन लगे॥फेर एकदिन भीष्मदासजीकुं श्रीबालकृष्णजीनें स्वप्नमें कही जो हमकुं नयो मंदिर करायदेवो॥ तब भीष्मदा-

सजीनें श्रीगोकुलमें नयो मंदिर करायो ॥ और श्रीगुसांईजीकुं वीनतीकरके और श्रीठाकुरजीकुं नये मंदिरमें पधराये॥और भीष्मदास तथा विनकी स्त्री भलीभांतिसुं सेवा करन लगे और जन्मपर्यंत श्रीगुसांईजीके जरणारविंद छोडके कहुं गये नहीं ॥ और भीष्मदास नित्य सांझके समें रमणरेतीमें जाते और उहां रासलीला आदिक सब लीलानके दर्शन होते ॥ सो वे भीष्मदास परम कृपा पात्र भगवदीय भये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १२४ ॥ ❀ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक नारायणदास सनाढ्य ब्राह्मणकी वार्ता ॥ सो वे नारायणदास अन्योरगाममें रहेते हते ॥ नारायणदास श्रीगुसांईजीके दर्शन करवेकुं आये ॥ सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके भये ॥ तव नारायणदास श्रीगुसांईजीके शरण आये ॥ और नित्य श्रीनाथजीकी सेवा कन्यो करते ॥ तव नारायणदासकुं लौकिकमें सगे दुःख बहुत देते ॥ तव नारायणदास श्रीगोकुलमें आयके रहे ॥ और जन्मपर्यंत श्रीनवनीतप्रियाजीकी सेवा करते रहे ॥ विन नारायणदासकुं सेवामें ऐसी आसक्ती हती जैसे अफीमखायवेवालेकुं अफीमविना रह्यो न जाय ॥ ऐसे नारायणदासजी सेवाविना न रहेशके ॥ और श्रीनवनीतप्रियाजी विनकुं सूतें जगायके सेवा करावते और सेवाके समय विनके पास आयके बैठते और वातें करते और सेवा करवावते॥ सो नारायणदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १२५ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव जमनादास
दक्षिणमें रहेते तिनकी वार्ता ॥ सो वे वैष्णव दक्षिणमें
रहेते हते एक समय श्रीगुसांईजी दक्षिण पधारे हते ॥
तब वे जमनादास श्रीगुसांईजीके सेवक भये हते ॥ और
श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे ॥ वा देशमें
म्लेछनको राज हतो ॥ जब चैत्र महिना आयो तब एक
माली गुलाबके फूल बेचवे आयो और वे जमनादासजी
फूलनके शोकी बहुत हते ॥ फेर वा मालीसों वा जमना-
दासनें पूंछी जो या फूलनको कहालेवेगो ॥ तब वानें
कही एक रुपैया लेउंगो ॥ तब उहां एक तुर्क आयो ॥
वानें कही फूल हमारे सरदारकुं चहिये ॥ में दो रुपैया
देउंगो ॥ तब जमनादासनें पांच कहे ॥ तब वा तुर्कनें दस
कहे ॥ ऐसे आपसमें दोउ जने बढवे लगे जब लाख रुपैया
सूधी वधे ॥ तब वे जमनादास लाख रुपैया देके एक फूल
लाये ॥ और लायके श्रीठाकुरजीकी पाग ऊपर धरायो॥
वाई समय श्रीगुसांईजी गिरिराजजी ऊपर श्रीनाथजीको
शृंगार करते हते ॥ तब श्रीनाथजी झुक झुक जांएं॥ तब
श्रीगुसांईजीनें पूंछ्यो जो बाबा क्युं झुकोहो ॥ तब श्रीगो-
वर्धननाथजीनें श्रीगुसांईजीसुं कही जो आपके सेवक
जमनादास दक्षिणमें रहेहैं सो वानें लाख रुपैयामें एक
फूल लेके अपनें श्रीठाकुरजीकुं धरायो है॥ सो वाके भा-
वके बोझसुं लचक लचक जाउंहुं ॥ ऐसो वाको भावहै ॥
जानें मेरे लीयें एक फूलके लाख रुपैया खरचेहैं ॥ ये बात
सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये ॥ और वा वैष्णवकुं

श्रीगुसांईजीने पत्र लिखके एक व्रजवासी पठायो ॥ जो तुमनें असकेदिन फूल धरायो है सो श्रीगोवर्धननाथजीनें अंगिकार कियो है ये समाचार वा यमुनादास वैष्णवके पास पहोंचे सो पत्र बांचके बहुत प्रसन्न भयो ॥ और पांचलाख रुपेयाको हीरा लेके श्रीगुसांईजीकुं पठायो ॥ सो वे यमुनादास वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते द्रव्यकुं तुच्छ जाणते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥१२६॥ ❀

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक बंगालीकी वार्ता ॥

सो वे गोडिया वृंदावनमें रहेतो हतो ॥ और मजूरी करतो हतो ॥ एकसमय श्रीगुसांईजी वृंदावन पधारे तब वे श्रीगुसांईजीको सेवक भयो तब वाकुं वैष्णवजानके लोग मजूरी अधिकी देवे लगे ॥ तब वानें अपने मनमें विचार कियो जो धर्म वेचके खानो सो अनुचितहै ॥ शास्त्रमें लीख्योहै जो भगवानके नाम लेके भिक्षा मागे सो भिक्षा देवेवाले नरकमें जाय जासुं धर्म देखायके भिक्षा और रोजगार करनो नहीं ॥ ये विचारके वो गोडिया जब मजुरी करवे जातो तब तिलकमुद्रा धोतो और कंठी छिपाय राखतो ॥ ऐसें धर्म गुप्त राखके मजूरी करतो ॥ फेर एकदिन वो तिलक धोवते भूलगयो ॥ और मजूरी करवेकुं तैयार भयो ॥ तब श्रीठाकुरजी बोले जो तिलक धोयके जावो ये सुनके बहुत प्रसन्न भयो ॥ फेर नित्य श्रीठाकुरजी वासुं वातें करते और सब सुख देते वे गौडिया श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र हतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १२७ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक ब्राह्मण भागनगरमें रहेते तिनकी वार्ता ॥ सो वे एक समय श्रीगुसांईजी दक्षिण पधारे और वा ब्राह्मणकुं वेद पढते देखे ॥ तब श्रीगुसांईजीनें विचार्‍यो ये ब्राह्मण वेदको पाठ बहुत आछो करे है ॥ परंतु कछु समझे नहीं है ॥ कछु समझेतो आछो॥ इतनेमें वा ब्राह्मणके मनमें ऐंसी आई जो इनकी शरण जाऊं तो ठीक ॥ तब वह ब्राह्मण श्रीगुसांईजीके शरण गयो ॥ और कथा सुनवे लग्यो ॥ तब श्रीगुसांईजीकी कृपातें वा ब्राह्मणकुं वेदको अर्थ स्फुरित भयो ॥ तब वह ब्राह्मण श्रद्धासहित वेदको पाठ करन लग्यो ॥ तब एक दिन श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीसों ऐंसी आज्ञा करी जो ये ब्राह्मण हमारे निज मंदिरके आगे नित्य वेद पढे ॥ तब शृंगारसुं लेके राजभोग पर्यंत नित्य निज मंदिरके आगे वेद पढतो ॥ और कहुं अक्षर और मात्रा खूल तो श्रीठाकुरजी आयके बतावते ॥ वे ब्राह्मण ऐंसो कृपापात्र भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १२८ ॥ ❁ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक माधुरीदास माली तिनकी वार्ता ॥ सो वे माधुरीदास नित्य फूलवीनके हार कर लावते ॥ सो एकदिन श्रीनाथजीनें माधुरीदासकुं शिखायो जो तूं या रीतीको हार गूथ ॥ तब माधुरीदासनें हार तैयार करके श्रीगुसांईजीकुं दियो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें मुखियाकुं दियो ॥ तब मुखियानें श्रीनाथजीकुं धरायो ॥ सो वह हार बडो बहुत भयो ॥ तब मुखियानें श्रीगुसांईजीसों कही जो हार बडो है तब श्रीगुसां-

ईजीनें माधुरीदाससों कही नित्य तुमहार करोहो ॥ आज ऐसो क्युं कन्यो ॥ तव माधुरीदासनें कही जो मोकुं श्रीनाथजीनें पास बैठके शिखायोहै ॥ तव श्रीगुसांईजी आप न्हायके हार धरायवेकुं पधारे ॥ तव श्रीनाथजीकुं हार धरायो ॥ तव हार पूरो भयो तव श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीसुं पूछी याको कारण कहा ॥ तव श्रीनाथजीनें तीनकारण वताये एक तो तुमारे हाथ विना कोईको हाथ सुहाय नहीं है ॥ और दूसरो कारण ऐसो हार रतन नको चहिये सो वनवाओ ॥ और कारण ये सुखियाके सुखसुं वास आवे है तव तें श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी सुखियासुं लेके जितने सेवक हैं सो सव सुख वांधके सेवा करौ वा दिनतें सव सेवक सुख वांधके सेवा करें हें ॥ सो वे माधुरीदासमाळी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १२९ ॥ ❀

॥ **श्रीगुसांईजीके सेवक धर्मदास सो अडींगमें** रहेते तिनकी वार्ता ॥ सो वे धर्मदास आंखनसुं नहीं देखते हते श्रीगुसांईजी नित्य घोडापर बैठके श्रीजीद्वार पधारते और श्रीगोकुलतें दोय घडीमें गोपालपुर आवते॥ और गोपालपुरसुं दोय घडीमें श्रीगोकुल पधारते ऐसे आवजाव नित्य होती ॥ एक दिन श्रीगुसांईजी अडिंगसुं बाहेर निकसे ॥ रस्तामें एक आंधरो ब्राह्मण ठाडो हतो॥ और घोडा वाके ऊपर आवे लग्यो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें घोडो थाम्यो ॥ तो हुं वह ब्राह्मण घवराय गयो ॥ रस्तामेंसुं इतउत जाय नसक्यो ॥ तब श्रीगुसांईजीकुं बहुत

दया आई ॥ तब श्रीगुसांईजीनें नीचे उतरके वाके नेत्रऊपर जल छांट्यो ॥ तब वाके नेत्र खुलगये ॥ तब श्रीगुसांईजी तो घोडाऊपर अस्वार होयके गोपालपुर पधारे॥ तब वह ब्राह्मणहुं पीछे पीछे धीरे धीरे गोपालपुर पोहोंच्यो॥ और जायके श्रीगुसांईजीके दर्शन कर्ये और बीनती करी रस्तामें आपने मोकुं नेत्र दिये हे में वोही ब्राह्मण हुं मोंकुं शरण लेवो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें दूसरे दिन वा ब्राह्मणकुं नाम निवेदन करायो॥ और श्रीनाथजीके दर्शन कराये॥ और श्रीगुसांईजीनें कृपा करके ग्रंथ पढाये जहां सूधी वाकी देह रही तहां सूधी वे उहांही रहे॥ तब थोडे दिनमें वाकी देह छूटी॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करीजो धर्मदास बहुत आछो वैष्णव हतो॥ वार्ता सं० ॥ वैष्णव॥ १३०॥❀

॥श्रीगुसांईजीको सेवक एक वैष्णव हतो जाने खोटे कर्म करके श्रीगुसांईजीकी परीक्षा लीनी तिनकी वार्ता ॥ सो एक दिन चार वैष्णव मिलके भगवद्वार्ता करते हते ॥ और श्रीगुसांईजीको प्रताप वर्णन करते हते ॥ तब एक अन्यमार्गी बोल्यो मेरो उद्धार करें तब खरी बात है ॥ तब वैष्णवननें कही तेरो उद्धार करेंगे यामें संदेह नहीं है ॥ तब वैष्णवनकी बात सुनके और श्रीगुसांईजीके पास जायके सेवक भयो ॥ फेर जायके स्मशानमें बैठो और उहांही रसोई करके खावे ऐसो भ्रष्ट भयो ॥ फेर आयके विन वैष्णवनसों कहे में ऐसे कर्म करुं हुं ॥ अब श्रीगुसांईजी मेरो उद्धार करेंगे तो खबर परेगी ॥ ये सब समाचार विन वैष्णवननें श्रीगुसांईजीसों बीनती करी

तव श्रीगुसांईजी कछु बोल्ये नहीं ॥ फेर एक राजा हतो तीर्थ करतो करतो श्रीगोकुल आयो ॥ तब वा राजानें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो महाराज मोकुं गलित-कोढ भयोहे मैनें औषध बहोत कीयेहे सो मिटयो नहींहैं ॥ और फेर तीर्थ करवेके लीयें निकस्योहुं तोहुं रोग मिटयो नहींहे ॥ अब आप कछु उपाय बतावें तो मिटेगो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो हमारो सेवक अमुकगाममें स्मशानमें बेठोहे वाकी जूठन खावोतो मिटजायगो ॥ तब वे राजा श्रीगुसांईजीकी बातपर विश्वास राखके वा गाममें जायके और उहां स्मशानमें गयो और वासुं जूठन मागी तब वानें नाहीं कही ॥ जब वे खायवे बेठो और थोडो खायवो रह्यो तब राजानें औरसुं वाकी पातलमेंसुं उठायके जूठन खाई ॥ तब तत्काल वा राजाको कोढ मिटगयो ॥ और देह निर्मल भई ॥ फिर वानें राजासुं पूंछी जो याको कारण कहाहे तब वा राजानें श्रीठाकुरजीकी सब बात वाके आगें कही ॥ फिर वाके मनमें बहोत पश्चात्ताप भयो ॥ जो मैं ऐसो भ्रष्ट हुं तोहुं श्रीठाकुरजी मोकुं याद करेंहें ॥ और मेरेमें इतनी सामर्थ्य धरदीनीहै फेर वो वैष्णव श्रीगुसांईजीके पास जायके अपराध क्षमा कराये ॥ और रोयवे लग्यो तब श्रीगुसांईजीनें शास्त्र प्रमाणें प्रायश्चित्त करायके फिर वाकेउपर कृपा करकेवाकुं सेवा पधराय दीनी ॥ तब वो भगवत्सेवा करन लग्यो ॥ भगवत्सेवाके प्रतापतें वाको चित्त निर्मल होयगयो और श्रीठाकुरजीके चरणारबिंदमें चित्त लग्यो वह परीक्षा करवे

आयो तोहु श्रीगुसांईजीनें वाकुं छोडयो नहीं ॥ ऐंसे परम दयाल हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १३१ ॥ ❀ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक राजा पूरव देशमें रहेतो तिनकी वार्ता ॥ सो वे राजा अन्य मार्गीहतो ॥ और वाके देशमें वैष्णव रहेते विनकी निंदा करतो ॥ ऐंसे कहेतो जो वैष्णव मार्ग आछो नहींहे ॥ पेहेले दूसरे वैष्णवकुं प्रसाद लेवावेहें और पीछे आप खावेहें जासुं ये सबको जूठन खावेहें ॥ तब ऐंसे कहेके फिर लोगनसुं कहे वैष्णवतो उच्छिष्टभोगीहै ऐंसे कहेके निंदा बहुत करतो तब तो वैष्णवनकी निंदा श्रीठाकुरजी सही नहीं शके ॥ तब वा राजाकुं कोढ भयो जैसे जैसे राजा निंदा करे तैसे तैसे कोढ बढतो जाय ॥ तब आखा शरीरमें कोढ बढगयो ॥ तब राजा बहुत दुःखी भयो बहुत औषध कर्‍ये और कर्म विपाक देखके बहुत प्रायश्चित्त कर्‍ये परंतु कोढ तो बढतो जाय ॥ तब वा राजाकुं वैष्णवननें कही जो तुम तीर्थयात्रा करो ॥ तब राजा तीर्थयात्रा करवे निकस्यो और जा तीर्थमें जाय जैंसी विधी और जैंसे दान लिखे होवें वैंसे करे ॥ ऐंसे करतेकरते श्रीगोकुल आयो श्रीगुसांईजीके दर्शन किये और कोढ संबंधी वीनती करी तब श्रीगुसांईजी तो अंतरयामीहै सो जानगये ॥ जो यानें वैष्णवनकी निंदा करीहै यातें कोढ भयोहै तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी स्मशानमें हमारो सेवक बैठोहै बिनकी जूठन खावोगे तो तुमारो कोढ मिटैगो ॥ तब वा राजानें वेसेही कियो ॥ सो जूठन लेतेही

कोढ मिटगयो ॥ जैसे सूर्यउदयतें अंधकार मिट जाय॥ जैसे अमृत पीयेतें मृत्युको भय मिटजाय ॥ जैसे ज्ञान भये ते संसार मिटजाय ॥ जैसे भक्तीके उदयतें त्रिविध-ताप मिटजाय ॥ ऐंसे जूठनलेतमात्रसुं कोढ मिटगयो ॥ सो वा राजाकी देह निर्मल भई ॥ तव श्रीगोकुल आयके श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ और वीनती करी महाराज मैंने वैष्णवनकी निंदा बहुत करीहै ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो वैष्णवको द्वेष बहुत बुरो है ॥ श्रीठाकुरजी और श्रीमहाप्रभुजी वैष्णवनको अपराधक्षमा नहीं करें॥ वैष्णवको अपराध वैष्णवसुंक्षमा होवै है जासुं हमनें वैष्णवके पास तुमारो अपराध क्षमा करायो है ॥ सो श्री-ठाकुरजीनें गीताजीमें कह्यो है ॥ श्लोक ॥ अपिचेत्सुदुराचारोभजतेमामनन्यभाक्॥साधुरेवसमंतव्यःसम्यग्व्यवहितोहिसः ॥ अर्थ॥ याप्रकारसुं गीताजीमें कह्यो है ॥ जो दुराचारी होवै और अनन्य होयके मोकुं भजतो होवै वाकुं साधु समजणो ॥ वानें भलो निश्चय कऱ्यो है ॥ जासुं वैष्णवकी निंदा करनी नहीं ॥ यह सुनके वा राजानें अपनो अपराध क्षमा करायो॥ और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लग्यो ॥ दिन दिन वा राजाकुं सत्संग लगतो गयो ॥ तैसे भगवद्भाव बढतो गयो ॥ तब वा राजाके ऊपर श्रीठाकुरजी प्रसन्न भये ॥ सो श्रीगुसांईजीकी कृपातें अनुभव भयो सो वे राजा ऐंसो कृपापात्र हतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १३२ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक शेठको बेटा और दासी

तिनकी वार्ता—सो वह शेठ श्रीगुसांईजीको सेवक हतो ॥ सो वह शेठकी देह छूटी तब अपने घर दासी हती सो बेटा और ठाकुरजीकी सेवा वा दासीकुं सोंपगयो हतो॥ सो वो शेठको बेटा दासीकुं माजी कहेतो ॥ सो एक समय वा गाममेसुं वैष्णव श्रीनाथजीद्वार जायवे लगे ॥ तब वह शेठके बेटानें कही मैं माजी यात्रा जाउंहूं ॥ तब वा दासीनें कही तुम अबी श्रीनाथजीके दर्शनकुं मति जावो श्रीनाथजीकी इच्छा नहीं है ॥ तब वो शेठको बेटा मान्यो नहीं और वा संगमें चल्यो गयो ॥ रस्तामें एक राजाको गाम आयो वा राजाके गाममें सरकारके मनुष्यनके संग वा साहुकारके बेटाकी लडाई भई ॥ तब वा गामके राजानें आखो संग कैद कर्यो ॥ दोदिन पाछे सब संगकुं छोड दियो॥ और एक शेठके बेटाकुं कैद राख्यो॥ और वे संगतो श्रीजीद्वार गयो ॥ श्रीनाथजीके दर्शन करे और यात्रा करके फेर देशकुं आये ॥ तब रस्तामें वो गाम आयो ॥ तब वह शेठको बेटा कैद हतो सो वे संगवालाननें वा राजाकुं कहेके छुडायो ॥ फेर वाके गाम आयो तब वा दासीकुं कही जो माजी मोकुं श्रीनाथजीके दर्शन न भये उलटो दुःख पायो ॥ तुमारी कृपा होवेगी तब श्रीनाथजी दर्शन देवेंगे ॥ फेर वा दासीकुं दया आई तब वा शेठके बेटाकुं कही जो तुम वैष्णवनकी टहेल करो तब तुमकुं श्रीनाथजी दर्शन देवेंगे ॥ तब शेठको बेटा वैष्णवनकीटहेल करनलाग्यो॥सो जो वैष्णव आवे तिनकुं न्हवावे और महाप्रसाद लिवावे और पंखा करे जलपान

और पांवदावे ॥ आखोदिन आपके अंगसुं टेहेल करे ॥ एकदिन तादृशीभगवदीय अद्भुतदासजी आये ॥ तब विनकी टहेल वहुत करी ॥ तव वा अद्भुतदासनें कही कछु मागो ॥ तव वा शेठके बेटानें कही मोकुं श्रीनाथजीके दर्शन होवें और व्रजयात्रा होवें ॥ फेर अद्भुतदासनें कही होवेंगे ॥ श्रीगुसांईजीकी कानतें श्रीनाथजीदर्शन देवेंगे॥ तब वह शेठको वेटा दासीकुं संग लेके श्रीनाथजीके दर्शनकुं गयो और जायके दर्शन करे ॥ और श्रीगुसांईजीके दर्शन करे ॥ फेर वा दासीनें श्रीगुसांईजीकूं वीनती करी जो महाराज याके करममें दर्शन नहीं हते और वैष्णवनकी कृपासुं भये हें ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी श्रीनाथजी वैष्णवनके वशमेंहे ॥ वे चाहेतो ब्रह्मांड फेरडारे ॥ जव वैष्णव प्रसन्न होवै तव कर्मरेख खोटी खरी सव मिटजाय ॥ ऐसे श्रीगुसांईजीके बचन सुनके वह दासी वहुत प्रसन्न भई ॥ तव वे शेठको बेटा यात्रा करके अपने घर आयो ॥ और सेवाकरन लग्यो ॥ वह दासी और शेठको बेटा ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १३३ ॥ ❀ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक रूपा पोरियाकी वार्त्ता ॥

सो वह रूपा पोरिया श्रीनाथजीकी सिंघपौर पर बैठते हते ॥ और रातकुं धौल गावतेहते ॥ एक दिन गोविंदस्वामीनें कही जो तुम धौल मत गाओ ॥ तुमारो राग आछो नहीं है ॥ तव विननें न गायो तव श्रीनाथजीकुं आखीरात नींद न आई ॥ सवारे जब श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीकुं जगाये तब श्रीनाथजीके नेत्र लाल देखे ॥ फेर श्रीनाथ-

जीसों श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो आपकुं उजागरा क्यूं है ॥
तब श्रीनाथजीनें कही जो रूपा नित्य घौल गावे हैं ॥
जब हमकुं नींद आवे हैं सो रात्रकुं गायो नहीं ॥ जासुं
नींद नहीं आई तब रूपाकुं श्रीगुसांईजीनें कही जो तेनें
घौल क्यूं नहीं गायो ॥ तब रूपापौरियानें हाथ जोडके
कही जो गोविंदस्वामीनें नाहीं करी है ॥ तब गोविंद-
स्वामीसौं श्रीगुसांईजीनें कही तुमनें रूपाकुं गायवे कि
नहीं क्युं करी ॥ श्रीनाथजीकुं नींद नहीं आई ॥ तब गो-
विंदस्वामीनें कही जो मोकुं ये खबर नहीं हती ॥ जो
खांड और गुड एक भाव है तब श्रीगुसांईजीनें कहीकर्म
तें कृपा न्यारी है ॥ तब गोविंदस्वामी चुप कर रहे ॥ तब
रूपापौरिया नित्य घौल गाते तब श्रीनाथजीकुं नींद
आवती ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ एक दिन रातकुं श्रीनाथजीकुं
भूख लगी तब श्रीनाथजीनें रूपापौरियाकुं लात मारके
जगायो और आज्ञा करी जो मोकुं भूख लगी है ॥ तब
रूपापौरियानें श्रीगुसांईजीकुं जगायके बीनती करी तब
श्रीगुसांईजी न्हायके सामग्री लेके भीतर पधारे ॥ और
श्रीनाथजीकुं अरोगाये ॥ फेर रूपापौरियापर श्रीगुसां-
ईजी बहुत प्रसन्न भये ऐंसे अनेक प्रकारकी लीला रूपा-
पौरियासूं श्रीनाथजी करते और केतनेक लोग ऐंसे लि-
खेहै जो रूपापौरिया श्वान भये ॥ सो ये बात झूठी है
कारण जो जानके अन्नप्रसादी रूपापौरिया खाय नहीं
और अजानको इतनो दंड होय नहीं जासुं ये बात
सर्वथा झूठी है वे रूपापौरिया श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपा-

पात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैंष्णव ॥ १३४ ॥ ❀ ॥ . ॥

श्रीगुसांईजीको सेवक एक चूहुडो तिनकीवा०

र्ता वह चूहुडो गोवर्धनमें रहेतो हतो ॥ सो श्रीनाथजी नित्य बिलछूकुंड पर खेलवे पधारते और वेचूहुडो नित्य घास खोदवे जातो ॥ तव श्रीनाथजीनें वाकुं दर्शन दिये नित्य श्रीनाथजीवासुं वातें करते ॥ एक दिन वह चूहुडो गोपालपुर सूधीश्रीनाथजीके संग वातें करते आयो तव श्रीगुसांईजीनें देख्यो ॥ तव श्रीगुसांई-जीनें बोलायके वाकुं पूंछी श्रीनाथजीनें तोसुं कहा वात करी ॥ तव वानें कही महाराज वनकी वात करते हते नित्य मोकुं आपकी कृपातें वनमें दर्शन देवे हें और जा दिन मोकुं दर्शन न होंवे वा दिन में अन्न जल नहीं लेऊं ॥ तव दूसरे दिन सवारकुं आयके दर्शन दे जाएं और कोई दिन रातकुं दर्शन दे जाएं॥ ये सुनके श्रीगुसांईजीनें मनुष्यनकुं कही जो राजभोगकी माला बोले तव याकुं सवसुं पेहेले दर्शन कराय देवो ॥ ये करके बहार जाय तव औरनकुं करावो सो वे मनुष्य ऐंसे करनलगे ॥ फेर एक दिन वह चूहुडा श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमाणें आय न शक्यो ॥ राजभोग होयचुके और ताला मंगल भयो तब आयो ॥ ताला लाग्यो देखतेही वाको चित्त उदास होय-गयो और तव ज्वर जढगयो ॥ फेर मंदिरके पीछे जायके पडरह्यो और बहुत विरहताप भयो ॥ फेर वाको दुःख श्रीनाथजी सही न सके ॥ फिर श्रीनाथजीनें छडी लेके भीतकुं खोदके मोखो करदियो और मोखामेंसुं वाकुं

बुलावे लगे तब वह उठके ठाडो भयो ॥ और श्रीनाथजी-के दर्शन किये॥ और श्रीनाथजीनें वाकुं दोय लड्डवा दिये ॥ तब वह उहांसुं लड्डवा लेके गिरिराजसुं नीचे आयके एक लड्डवा खाय लियो और एक लड्डआ बांध राख्यो तब गाममें ऐसी बात होय गई॥कोईने दिनकुं श्रीनाथजीके मंदिरके पाछें मोखो कियोहे ॥ ये सुनके श्रीगुसांईजी उदास भये और सब भीतरियाने सामानकी तपास करवाई तब भीतरियानें कही कछु सामान गयो नहीं॥ तब वा चूहडानें श्रीगुसांईजीसों जायके बीनती करी ॥ ये मोखो तो श्रीनाथजीनें कियो है ॥ मोकुं दर्शन देवेके लीयें सब बात श्रीगुसांईजीसो बिनती करी और लड्डवा देखायो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें मनुष्यनकुं कही ॥ जब ये दर्शन करवे आवे तब सबसुं पेंहेले सब समयमें दर्शन करायदेनें ॥ और याकुं नित्य पातर धरनी ॥ तब श्रीगुसांईजीके मनुष्य वैसेंही करते वह चूहडो श्रीनाथजीको ऐसो कृपापात्र हतो जाकुं श्रीनाथजी बिना सब संसार फीको लगतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १३९ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक वैष्णव कुनबीकी वार्ता॥

सो वह कुनबी वैष्णव गुजरातिके संग श्रीगोकुल आयो ॥ उहां जायके श्रीगुसांईजीको सेवक भयो ॥ और श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी मोकुं गायनकी सेवामें राखो ॥ सो वह वनमें गाय चरावतो और गायनकुं चादरसों पहोंचतो और गायनके नीचे नित्य सूकी जगा राखतो ॥ और तनमनसुं गायनकी सेवा करतो वाकी ऐसी सेवा

देखके श्रीगोवर्धननाथजी वहोत प्रसन्न भये ॥ और वा पटेलकुं खीडकमें दर्शन देवे लगे ॥ और खेलवे लगे और जहां छाक मंडली करते तव वा पटेलकुं गोपग्वालनके संग बेठायके खवावते ॥ तव वह पटेल महाप्रसादकी पातल लेवे जातो नहीं ॥ नित्य एकवार श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं जातो तव श्रीगुसांईजीनें एक वार पूंछो ॥ जो पटेल तुम प्रसाद कहां लेवोहो ॥ तव वा पटेलनें हाथ जोडके कही जो श्रीगोवर्धननाथजी वनमें छोकरानके संग नित्य भोजन करन पधारेहें और मोकुंहुं खवावेहें ॥ तव पातल काहेकुं लेवे आवुं ॥ ये सुनके श्रीगुसांईजी वहुत प्रसन्न भये ॥ फेर एक दिन वैष्णव मंडलीमें एक वैष्णवनें पद गायो ॥ नाचत रासमें गोपाल ॥ तव वा पेटलनें कहीं नाचत घासमें गोपाल ॥ तव वे वैष्णव पटेलकुं पकडके श्रीगुसांईजीके पास लेगये ॥ तब श्रीगुसांईजीके आगें वैष्णवनें वीनती करी ॥ जो महाराज ये पटेल ऐंसे कहेहे ॥ तव श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ॥ जो यानें घासमें नाचत देखे तव कही और तुमनें रासमें नाचत देखे तव कही सो दोनोंकी बात साचीहे ॥ श्रीगोवर्धननाथजीकी इच्छा होवे जहां जाकुं दर्शन देवे दोनोंकी बात साचीहे ॥ ये सुनके वे वैष्णव बहुत प्रसन्न भये ॥ सो वे पटेल श्रीनाथजीके सखा भावसों रहते ॥ श्रीगुसांईजीकी कृपातें ऐंसो अनुभव भयो हतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १३६ ॥ ❀ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक द्वारकादासजीकी वार्ता

सो वे सीलगाममें रहेते हते ॥ सो हथीयार बांधते हते और

श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शनकुं आवते ॥ विनकी देहकी दशा भूलजाती ॥ और दूसरे मनुष्य मंदिरके बाहार उठायके लावते ॥ तब श्रीगुसांईजी पधारके द्वारकादासकुं हेला पाडते ॥ तब देहकी शुद्धि आवती जब दर्शनकुं आवते॥ जब सदैव ऐसी दशा होती ॥ सो वे नित्य श्रीनाथजीके स्वरूपरसमें छके रहेते॥वह द्वारकादास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १३७ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक पठानके बेटाकी वार्ता

सो वे पठानके बेटानें श्रीगुसांईजीके पास नाम सुन्यो ॥ और जातको व्यवहार छोडके वैष्णवकी चाल चलन लग्यो ॥ तब वाके माबाप और सब सगा पृथ्वीपतीके आगें पुकारवे गये ॥ तब पृथ्वीपतीनें कही जो तू कंठी तोडडार ॥ जब वानें कही जासुं मेरो दिल लग्योहै वाकुं कंठी बहुत प्रियहै ॥ और वे यहि बानासुं रीझतहै ॥ तब पृथ्वीपतीनें कही तलवार लावो ॥ याको माथो काटडारें ॥ तब वो पठानको बेटा बोल्यो ॥ दूसरी तलवार काहेकुं मंगावोहो ॥ ये मेरे पास है सो लेउ ॥ ये सुनके पादशाह विचार करन लग्यो ॥ विचार करके कही देखो याकी कैसी धर्ममें निष्ठा है ॥ याके उपर मैं बहुत खुश हुं ॥ याकुं कोई कछु मति कहो ॥ और ये बडो साचो मनुष्य है ॥ फेर पादशाहनें वाकुं नोकर राख्यो॥ सो वह पठानको बेटा श्रीगुसांईजीको ऐसो टेकको कृपापात्र हतो॥ वानें कंठी न तोडी माथो कटावनो कबूल कर्यो॥वार्ता सं० ॥ वैष्णव॥१३८

श्रीगुसांईजीके सेवक एक रजपूत और रजपू-

तकी बेटीकी वार्ता ॥ सो एक समय वे रजपूत अपनी बेटीकुं विनके सासरेतें बुलायके घर लेजाते हते और चाचाहरिवंशजी गुजराततें श्रीजीद्वार आवते हते ॥ रस्तामें विनको संग भयो ॥ तब चाचाहरिवंशजीनें विचार कियो ये दोनो बापबेटी जीवतो दैवीहैं ॥ सो विचार करके विनके संग आये और सांझकुं विनके घर उतरे ॥ और भगवद्वार्ता करी और सबके मन भिजाय दिये और वा रजपूतके घरके मनुष्यनकुं सबकुं नाम सुनाये ॥ और सबकुं अपरसकी रीति शिखाई ॥ और रजपूतकी बेटीकी वार्ता सुनके श्रीगोवर्धननाथजीमें मन लग गयो ॥ और विरहताप भयो ॥ और श्रीगोवर्धननाथजी वा रातकुं वाके पास पधारे ॥ और सब सुखदिये फेर श्रीनाथजीनें कृपा करी ॥ तब वा रजपूतकी बेटीकुं श्रीनाथजी संग लेके पधारे ॥ और वा रजपूतकी दिव्यदृष्टी भई ॥ चाचाजीकी कृपातें सो वे बेटी श्रीनाथजीके संग लीलामें गई ॥ वा रजपूतनें जाती देखी ॥ तब वे रजपूत आयके चाचाजीके पांवन पर्यो ॥ जो वा बेटीकुं श्रीनाथजी ले गये और हमकुं क्युं नहीं लेगये ॥ सो याको कारण कहो ॥ तब चाचाजीनें कही जो तुमकुंहूं लेजायंगे परंतु हाल तुमसुं काम करावनो है और वे रजपूत सुनके प्रसन्न भयो ॥ और चाचाजीके संग आयो और आयके श्रीगुसांईजीके तथा श्रीनाथजीके दर्शन किये ॥ और नाम निवेदन कर्यो और श्रीठाकुरजी पधरायके अपनें देशमें आये ॥ और घरमें भगवत्सेवा करन लगे ॥ और श्रीगोवर्धन-

नाथजी नित्य वा रजपूतकुं दर्शन देते और वा रजपूतकी बेटी सहित कोई कोई दिन दर्शन देते ॥ वे रजपूतके संगसों आखो गाम वैष्णव भयो ॥ सो वे रजपूत श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १३९ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक विरक्त वैष्णव तिन०

सो वे विरक्त वैष्णव गुजरातसुं श्रीजीद्वार गये और श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीनाथजीकुं तथा श्रीगुसांईजीकुं और भगवदीयनको एक स्वरूप जानते हते ॥ और व्रजमें फिर्‍यो करते एक दिन रस्तामें जाते हते ॥ एक डोकरीके बेटाकुं सर्पने काट्यो सो मरगयो ॥ सो डोकरी बहुत रुदन करती हती ॥ वाकुं देखके और वा विरक्तकुं दया आई ॥ तब भगवन्नाम सुनायके वाके बेटाकुं जीवतो कर्‍यो ॥ ये बात देखके सब लोक विनके पाछें लगे॥हमकुं ये मंत्र शिखावो तब वानें अष्टाक्षरमंत्र कह्यो ॥ विन लोगननें कही ये मंत्र तो हमकुं आवेहें ॥ तब वा वैष्णवनें कही विश्वास राखनो तोहु विन लोगनकुं विश्वास न आयो ॥ तब वह वैष्णव चल्यो गयो सो वे विरक्त वैष्णवकुं भगवन्नामपर ऐसो विश्वास हतो ॥ यासुं अधिक कोई मंत्र मानतो न हतो और जो कारज करते तो ये नामके प्रतापतें करते सो ऐसे कृपापात्र हते॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १४० ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक विरक्त वैष्णवकी वार्ता॥

श्रीगुसांईजी द्वारका पधारे और रस्तामें वह वैष्णव श्री-

गुसांईजीके संग चल्यो और द्वारका होयके श्रीगुसांईजीके संग श्रीगोकुल गयो ॥ और जन्मपर्यंत श्रीगोकुलमें रह्यो ॥ तव श्रीनाथजीकी सेवा शुद्ध चित्तहोयके करतो ॥ और जहां सूलजातो तव विनकुं श्रीनवनीतप्रियाजी सिखावते ॥ जो ऐसे यह वस्तु यारीतीसुं होयहै ॥ वे विरक्त वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनके संग श्रीनवनीतप्रियाजी वालभावसुं खेलते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १४१ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक क्षत्राणीकी वार्ता॥

सो वह क्षत्राणी श्रीगुसांईजीके पास नाम सुनवेकुं बैठी॥ परंतु वाकुं अष्टाक्षरमंत्र आयो नहीं ॥ तव श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तोकुं मेरो नाम आवेहैं ॥ तव वा क्षत्राणीनें कही हा प्रभु आवेहैं तव श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ये नाम लियो कर तव वह क्षत्राणी श्रीगुसांईजीको नाम लियो करती ॥ दिवस रात वा नामके प्रतापतें श्रीनाथजीनें वा क्षत्राणीकुं दर्शन दिये और वाके घर आयके माखन मागते ॥ और दूध अरोगते सो वे क्षत्राणी ऐसी श्रीगुसांईजीकी कृपापात्र हती॥वार्ता सं०॥वैष्णव॥१४२॥

॥ श्रीगु०से०आनंददास साचोरा ब्राह्मणकी ॥

सो वे आनंददास गुजरातमें रहेते हते और श्रीगुसांईजीके कृपापात्र हते और आनंददास ब्रजयात्रा करन गये॥ वा देशमें एक वैष्णव हतो बहुत द्रव्य पात्र हतो और वा शेठकुं श्रीठाकुरजीनें कही जो आनंददास साचोराके हाथकी सामग्री मोकुं बहुत भावह ॥ जासुं तुम आनंददा-

सकुं बुलावो ॥ तब वे शेठ आनंददासकुं बुलायलाये और ऐसी कही जो जन्मपर्यंत तुम हमारे घर रहो॥प्रभु तुमारे ऊपर रीझेंहें ॥ जासुं इनकुं प्रसन्न करो और वे आनंददास आछी रीतीसुं न्हायके सामग्री करन लगे और अनेक प्रकारके मनोरथ करते सो वा गाममें एक ढग्रुजाट रहेतो हतो ॥ वाकुं सब लोग ढग्रु पांडे कहेते ॥ वह आखो दिन अपरसमें रहेतो हतो ॥ सो एक दिन वा शेठके इहां प्रसाद लेवे गयो ॥ तब आनंददासकुं देखके खूब चिल्लायो॥कही जो में अजानेके हाथको नहीं लेउं ॥ रिसाय गयो तब कोई कछु बोल्यो नहीं॥परंतु आनंददासको चित्त उदास भयो फेर रातकुं वा ढग्रुजाटकुं श्रीठाकुरजीनें स्वप्नमें कही जो तूं याके हाथको प्रसाद नहीं लेवेगो तो वहिर्मुख होवेंगो ॥ तब सवारे प्रसाद लेवेके समय वे ढग्रुजाट आयके आनंददाससों बीनती करी जो मेरे अपराध क्षमा करो॥ में तुमारे हाथको प्रसाद लेवेकुं आयोहुं ॥ तब आनंददासनें विनकुं प्रसन्नतासों प्रसादकी पातर धरी ॥ और कछु मनमें दोष लाये नहीं वे आनंददास साचोरा ऐसे कृपापात्र हते जिनकुं श्रीठाकुरजी सब सामग्री शिखाय जाते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १४३ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥

॥ **श्रीगुसांईजीके सेवक एक नाऊ वैष्णवकी** वार्ता ॥ सो वे नाऊ द्वारकाके रस्तामें रहेते हते ॥ उहां श्रीगुसांईजी पधारे और श्रीगुसांईजीके नख उतारे जहां सूधी नख उतार्‌या करे तहांसूधी तो मनुष्य देखे ॥ और जब नख उतार चुक्यो और राछबांधे तब साक्षात् पूर्ण-

पुरुषोत्तमके दर्शन भये और श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी महाराज मोकुं शरण लें ॥ तव श्रीगुसांईजीनें नामनिवेदन करायो ॥ और वे नाऊ परम भगवदीय भयो और सव राछ कुवामें डार दिये ॥ और ऐसो विचार कर्यो के व्यवहार करके निर्वाह करुंगो ॥ ऐसे विचारके वे नाऊ भगवत्सेवा करन लग्यो ॥ और व्योपार करन लग्यो तव श्रीठाकुरजी धीरेधीरे प्रसन्न भये ॥ वे नाऊ श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनकुं थोडे दिननमें भगवल्लीलाको अनुभव भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १४४ ॥ ॥

॥ **श्रीगुसांईजीके सेवक भीमजी दुबे साचोरा** ब्राह्मणकी वार्ता ॥ सो वे भीमजी दुबेको गाम गुजरातके रस्तापर हतो ॥ और श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे तव वा गाममें मुकाम कर्यो हतो ॥ और भीमजी दुबे तलावपर न्हावे आयो हतो ॥ उहां भीमजी दुबेकुं श्रीगुसांईजीके दर्शन भये ॥ तव साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये ॥ तव भीमजी दुबे श्रीगुसांईजीको सेवक भयो ॥ और ग्रंथ और मारगकी रीती सीखवेके लीयें भीमजी दुबे श्रीगुसांईजीके संग गये और सव रीती सीखे ॥ और ग्रंथ सीखे और श्रीठाकुरजी पधरायके फिर आयके अपने घरमें रहे ॥ और जव नागजीभाई श्रीगोकुल आवते जावते दो चार दिन भीमजीके पास रहेते और भगवद्वार्ता करते और भगवद्रसमें छके रहेते ॥ और एक समय नागजी भाई भीमजीभाईके घर गये ॥ तव भीमजीभाई घरमें हते नहीं ॥ तव नागजीभाई आपनो नाम कहेके श्रीगोकुल चलेगये॥

जब भीमजीभाई आये और खबर सुनी जो नागजीभाई पाछे गये ॥ तब भीमजीभाईकुं बडी उदासी भई ॥ और महाप्रसाद लिये नहीं ॥ तब रातकुं रस्तामें नागजीभाई सूते तब श्रीगोवर्धननाथजी पधारके आज्ञा करी जो तुम भीमजीभाईकुं मिलेविना आयेहो और भीमजीभाई सूखेहैं जो तुम भीमजीभाईके मिलेविना आवोगे तो हम तुमकुं दर्शन नहीं देवेंगे ॥ तब नागजीभाई सूते उठके पाछे गये ॥ और भीमजीभाईकुं जायके मिले ॥ और चार पांच दिन रहे ॥ तब भीमजीदुबेकी प्रसन्नता राखके नागजीभाई श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं गये ॥ और श्रीनाथजीनें पेहेलेतें श्रीगुसांईजीकुं कही ॥ जो नागजीभाईनें भीमजीकुं दोदिन सूखे राखेहैं ॥ तब नागजीभाई श्रीगुसांईजीके पास गये ॥ और दर्शन किये तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो वैष्णवको और श्रीठाकुरजीको एकस्वरूप जाननो ॥ वैष्णव कछु ओछी वस्तु नहींहैं ॥ जिनके लियें पूर्णपुरुषोत्तमकुं अपेक्षा भईहै ॥ और पृथ्वीपर जन्मलेनो पडयोहै ॥ ऐसे वैष्णवनकुं श्रम देनों न चहिये ॥ ये सुनके नागजीभाईनें अपराध क्षमा करायो ॥ सो वे भीमजीदुबे श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ जिनकी आर्ति श्रीनाथजी न सहिशके ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १४६ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक राजनगरमें रहते तिनकी वार्ता ॥ सो वे वैष्णवको ऐसो नेम हतो ॥ एक दो चार वैष्णवनको प्रसाद लेवायके लेतो ॥ और जा दिन

वैष्णव कोई नहीं आवतो तब स्त्री पुरुष प्रसाद न लेते ॥ ऐसो विनको आग्रह हतो सो कोई दिन वे शेठ परदेश गये॥ और स्त्रीकुं कही गये जो तूं नित्य वैष्णवनकुं प्रसाद लेवाइयो और जितनें वैष्णव प्रसाद लेजाय इतने पैसा गागरमें डारदीजो ॥ तब वा स्त्रीनें ऐसेही करी ॥ फेर जब शेठ परदेशतें आयो तब आयके पैसा गिनें तो पैसामेंसुं पांच रत्न निकसे॥ तब स्त्रीसुं पूंछी तब स्त्रीने कही मैंनें तो पैसा डारे हैं कछु रत्न डारे नहीं ॥ तब विन दिननमें श्रीगुसांईजी राजनगरमें विराजते हते ॥ तब वे वैष्णव पांच रत्न लेके श्रीगुसांईजीके पास गये ॥ तब श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो महाराज याको कारण कहा होयगो॥तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो ये पांच भगवदीय तादृशी आये होयेंगे ॥ जासुं ये पांच रत्न होय गयेहें ॥ जासुं वैष्णवनकुं अवश्य करके जेंसे बने तेंसे आदर करनो ॥ वे वैष्णव श्रीगुसांईजी को ऐसो कृपापात्र हतो ॥ जिनकुं रत्नद्वारा वैष्णवके स्वरूपको ज्ञान भयो॥ सो श्रीठाकुरजीनें करवायो॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव ॥ १४६ ॥ ❋

॥ श्रीगुसांईजीको सेवक चूहडोबहारवालाकी वार्ता ॥ सो वह चूहडो नित्य गोकुलकी गली झाडतो और मनमें ऐसे जानतो श्रीगुसांईजी ठकुरानी घाटपर पधारेहें ॥ इनके चरणारबिंदमें कूरो कचरो न लगे तो आछी वातहे ॥ और वैष्णव जूठनकी पातर डारते सो वह लेतो ॥ वैष्णवनकी जूठन जो खाई तब वाकुं दिव्यदृष्टी भयी ॥ सब मारगकी रीती वाकुं समज पडगई ॥

और वेदशास्त्रको ज्ञान होय गयो ॥ जैसे नाभाजीकुं भयो हतो ॥ सो विननें भक्तमाल करीहैं ऐसे या चूहडाकुं ज्ञान भयो ॥ एक दिन श्रीगोकुलमें कासीके पंडित आये ॥ सो विननें रसोई करी तब खायके वा चूहडाकुं जूठन देवे लगे तब वा चूहडानें कही मैं तो कोईको जुठन नहीं लेउं ॥ तब वे दूसरी रोटी देवे लगे ॥ तब कही ये तो अनप्रसादीहै ॥ श्रीठाकुरजीकुं भोग नहीं धरीहै ॥ सो मैं नहीं लेउंगो ॥ तब विननें कही भोग धरीहै ॥ तब वा चूहडानें कही ये रोटी श्रीठाकुरजी अरोगे नहींहै ॥ तुमारी ये रसोई सब जूठनकीहै ॥ चूला फूंकके रसोई करीहै ॥ तब वेदनके तथा शास्त्रनके वचन वा चूहडानें कहे॥ जब वे पंडित सुनके चकित होयगये ॥ और कहन लगे जिनके चूहडा ऐसे पंडितहै ॥ वे कैसे होवेंगे इनसुं आपणे वाद करणो खोटो है ॥ ऐसे विचारके पंडित पाछे गये ॥ ये बात कोई वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसौं कही जो पंडित या चूहडाकी बातें सुनके पाछे गये हैं ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो या चूहडानें शुद्ध भावसों वैष्णवनकी जूठन लीनी है ॥ सो याकुं सब ज्ञान होय गयो यामें कहा आश्चर्य है ॥ वैष्णवनकी जूठन लीयेसुं तो हृदय शुद्ध होवे हैं ॥ और ज्ञानदृष्टी होवेहैं वे अन्यमार्गी पंडित कहा जाने ॥ ऐसें कहेके श्रीगुसांईजी चुप होय रहे ॥ सो वे चूहडो ऐसो कृपापात्र हतो ॥ जो वैष्णवनकी जूठन खायके ऐसो भाग्यशाली भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १४७ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णवकी वार्ता॥

सो वे वैष्णव पूरवदेशमें रहेतो हतो ॥ सो श्रीगुसांईजी पूरवकुं पधारे हते तब सेवक भयो और फेर वाके मनमें ऐसी आई जो श्रीगुसांईजीके दर्शन कर आऊं तो ठीक सो वे वैष्णव गोपालपुर आयो ॥ और आयके श्रीगुसांईजीके दर्शन करे ॥ साक्षात् नंदकुमारके दर्शन भये ॥ और श्रीगिरिराज पर जायके श्रीनाथजीके दर्शन कर्‍ये॥ और उहां देखे तो श्रीगुसांईजी तथा श्रीनाथजी एक स्वरूप दीखे है ॥ कोई समय तो श्रीनाथजीमें श्रीगुसांईजी दीख पडें और कोई समय तो श्रीगुसांईजीमें श्रीनाथजी दीख पडें ॥ तब वा वैष्णवनें निश्चय कर्‍यो ॥ जो ये दोनो एकहीहै॥ जो इनकुं न्यारे न्यारे समझे सो मनुष्यकी गणतीमें नहीं है॥ सो वे वैष्णव ऐसो विचार करन लग्यो॥ ये दोनो सेव्य और सेवक एक हैं॥ सेवार्था दोय दीखे है वास्तवते एकही है॥ सो गोपालदासजीनें गायोहे॥ "रूप वेउ एक ते भिन्न थई विस्तरे विविधलीलाकरे भजनसारे" ॥ जो ऐसे श्रीगुसांईजीको रूप धरके सेवा करके न बतावते तो सेवाकी खबर कैसे पडे ॥ वस्तुतः एकही है सो वे वैष्णव श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपा पात्र हतो ॥ दोनो स्वरूपनकुं एक जानके मग्न रहेतो ॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव ॥ १४८ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक श्रावककी बेटीकी०

सो श्रीगुसांईजी आगरे पधारे हते ॥ और रूपचंदनंदाके घर बिराजते हते ॥ और दशपंदरें लुगाई रस्तामें जा-

ती हती ॥ वाई समय एक मनुष्यनें तकसीर करीहती ॥ वाकुं पृथ्वीपतीके हुकमसुं फांसी चढावते हते ॥ वा दसपंदरे लुगाईमें एक श्रावककी बेटी हती॥ सो मनुष्य-कुं फांसी देते देखके परगई ॥ और मूच्छी आई या बा-तकी खबर श्रीगुसांईजीकुं पडी ॥ तब श्रीगुसांईजीनें वि-चार कऱ्यो जो याको कैसो दयाको स्वभावहै देवी जी-वविना औरकुं ऐसी दया होय नहीं ॥ ये विचार करके श्रीगुसांईजीनें वाकुं अचेत जानके एक व्रजवासीकुं कही ॥ याके ऊपर जल छांटो ॥ तब वा व्रजवासीनें जल छां-ट्यो ॥ दोघडी पाछें वाकी मूर्छा खुली ॥ तब वा श्रावक-की बेटीनें वा व्रजवासीसों पूंछी जो तुं कोणहै ॥ तब वानें कही श्रीगुसांईजीको मनुष्य हुं॥ तब वे श्रावककी बेटी श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं आई ॥ और व्रजवासीनें सब बात वाकुं मूर्छा आई सो कही ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ये शुद्धभाववाली है ॥ याके ऊपर जितनो रंग चढावो इतनो चढे ॥ तब वे श्रावककी बेटी बोली ॥ आप जें-सो कारीगर रंग चढावेवालो और कोन मिलेगो ॥ ये सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और वाकुं नाम सु-नाये और निवेदन कराये ॥ फेर घरमें आयके सब धोवे लीपवे लगी॥ तब वाके धनीनें पूंछी ये तूं कहा करेहै॥ तब वानें कही मैं श्रीगुसांईजीकी सेवक भई हुं ॥ तब वा-के पतीनें कही मैंहुं श्रीगुसांईजीको सेवक होय आउंहुं तब वाको धनी सेवक भयो ॥ सो दोनो स्त्रीपुरुष श्रीठा-कुरजीकी सेवा पधरायके करन लगे ॥ और नित्य श्री-

गुसांईजीके दर्शन करवेकुं आवते॥ फेर श्रीगुसांईजी श्री-
गोकुल पधारे तब वा श्रावककी बेटीनें वीनती करी जो
मोकुं आपके दर्शनविना रह्यो नहीं जायगो॥ तब श्रीगु-
सांईजीनें आज्ञा करी॥ जो तुं नित्य यमुनाजल भरवेकुं
आईयो ॥ और जब तू यमुनाजीमें नहावेगी ॥ हम
तोकुं दर्शन देवेंगे ॥ तब वा श्रावककी बेटी ऐसें
करन लगी ॥ फेर कोई दिन व्रजवासी श्रीगोकुलतें
आगरे आये ॥ सो वाके घर उतरे सो वे व्रजवासी-
को जप करवेको समय भयो ॥ तब कही जो मैं श्री-
गुसांईजीकी बैठकमें गौमुखी भूलगयोहुं सो श्रीगोकुल
पाछे जाउंगो जब प्रसाद लेउंगो॥ तब वा श्रावककी बे-
टीयें कही बैठो बैठो मैं श्रीगुसांईजीके दर्शन जाउंगी तब
तुमारी गौमुखी लेती आउंगी॥ इतनो कहेके जलभरवेकुं
गई सो यमुनाजीमें न्हाई और श्रीगुसांईजीके दर्शन कऱ्ये
और गौमुखी लेचली॥ तब वा व्रजवासीकुं दीनी तब वे व्रज-
वासी और विचारमें पडगयो ॥ ये श्रीगोकुल जायके कैं-
से लाई होएगी तब उठके पांवन पऱ्यो तब वानें कही ये
सब श्रीगुसांईजीको प्रताप है श्रीगुसांईजी जब अलौकिक
देहको दान करें तब सब कारज सिद्ध होंवें ॥ ये सुनके वे
व्रजवासी चुपकर रह्यो सो वे श्रावककी बेटी ऐंसी कृपा-
पात्र भई जिनकुं अलौकिक पदार्थ सर्वत्र सर्वमें व्यापक
दीखते हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १४९ ॥ ❋ ॥ ॥

**॥श्रीगुसांईजीके सेवक दोय भाई पटेल सो म-
लियागिरी चंदन लाये तिनकी वार्ता** ॥ वे पटेल गुजरा-

तसुं ब्रजमें गये और श्रीगुसांईजीके सेवक भये॥ सो उहां श्रीगोवर्धननाथजीकी सेवामें रहे ॥ सो श्रीगोवर्धननाथजीकी सेवा तन मन धन सों करके एकदिन श्रीगुसांईजीनें मलियागरचंदन लेवेकुं दोभाईनकुं पठाये सोवे दोनो भाई मलियागर पर्वत उपर जायके चंदनको झाड काटवे लगे तब एक भाईकुं तो सर्पनें फूंक मारी सो दूसरे भाईनें श्रीगोवर्धननाथजीको नाम लेके जल छांट्यो तब वाको विष उतर गयो तब श्रीगुसांईजीकुं जायके मलियागर चंदन दियो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तुम कछु मागो तब विननें वीनती करी जो हम हाथनसुं श्रीनाथजीकुं चंदन धरावें तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी भलें धरावो॥ फेर एक भाईनें चंदन धरायो और दूसरो भाई पंखा करन लग्यो फेर दूसरे दिन दूसरे भाईनें चंदन लगायोने दूसरो भाई पंखा करन लग्यो सो वे दोनो भाई श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनसुं श्रीनाथजी बोलते चालते और बनमें संग लेजाते सो वे श्रीगुसांईजीकी कृपातें ऐसे दोनो भाई भगवदीय भये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १५० ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक किशोरीबाई हती तिन०

सो वे किशोरीबाई एक वैष्णवकी बेटी हती और बालकपणामें श्रीगुसांईजीकी सेवक भई हती पाछें शीतला निकसी और शीतलाके रोगसुं किशोरीबाईके हाथपांव लुले भये और माबापतो मरगये हते॥ और एक किशोरीबाईकी बेहेन एकवार आयके खवाय जाती और किशोरी-

बाई बालकपणेंसुं यमुना अष्टकको पाठ सीखी हती सो अष्टप्रहर यमुना अष्टकको पाठ कर्‍यो करती ॥ सो एक दिन किशोरीबाईकी बेंहेनकुं रिस चढी सो किशोरीबाईकुं खवायवे न आई ॥ तब श्रीयमुनाजी पधारके किशोरीबाईकुं रसोई करके प्रसाद लेवाय गये ॥ बाई दिन आधो रोग मिट गयो फेर दूसरे दिन यमुनाजीनें ऐसी कृपा करि तब सघलो रोग मिटगयो॥ तीसरेदिन किशोरीबाई आप रसोई करन लगी और महा प्रसाद लियो ॥ चौथे दिन किशोरिबाई रसोई करन लगी बाईसमय किशोरीबाईकी वेनके मनमें ऐसी आई जो चारदिन भये किशोरीबाईनें कछू खायो नहींहे ॥ तब वे वेहेन खबर काढवे आई तब किशोरीबाईकी वेंहेन देखे तो किशोरीबाई रसोई करेंहें ॥ तब वे वेहेन देखके चकित होयगई ॥ और मनमें विचार कियो ये लूली कैसे मिटगई होयगी ॥ फेर किशोरीबाईकी बेंहेननें लोगनकुं कही तब सब गामके लोग देखवे आये सो विस्मय भये तब किशोरीबाईके लीयें वा गाममें श्रीगुसांईजी पधारे तब किशोरीबाई चलके दर्शन करवेकुं आई और श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी जो महाराज मोंकुं सेवा पधराय देउ ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुमारे ऊपर श्रीयमुनाजीकी कृपा भईहे सो यमुनाजीकी रेती एक थेलीमें तुमकुं पधराय देउ विनकी सेवा सब साजसु करो तब किशोरीबाई प्रसन्न भई और श्रीगुसांईजीनें रमणरेतीकी थेली दीनी॥ सो वे पधरायके सिंघासन ऊपर मार्गकी रीतीसुं सेवा करन लगी ॥ सो

किशोरीबाईके ऊपर ऐंसी कृपा भई ॥ कोईदिन तो श्रीनाथजी वा गादीके ऊपर दर्शन देवे और कोईदिन श्रीनवनीतप्रीयाजी और कोई दिन श्रीमथुरानाथजी कोईदिन श्रीविठ्ठलेशजी कोईदिन श्रीद्वारकानाथजी कोईदिन श्रीगोकुलनाथजी कोईदिन श्रीगोकुलचंद्रमाजी कोईदिन श्रीबालकृष्णजी कोईदिन श्रीमदनमोहनजी यारीतीसुं किशोरीबाईकुं सब स्वरूपनके दर्शन लीलासहित होवन लगे ॥ सो वे किशोरी बाई श्रीगुसांईजीकी ऐंसी कृपापात्र भई ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १५१ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक दोउभाई पटेल ति० ॥

सो वे श्रीगुसांईजीके सेवक दोउ पटेल हते ॥ सो एक गाममें रहेते हते ॥ सो वा गाममें एक देवीको मंदिर हतो सो जूनो होयगयो हतो ॥ तब वा गामको राजा देवीको भक्त हतो सो राजानें ऐंसो विचार कऱ्यो जो देवीको नयो मंदिर बने तो ठीक ॥ तब गामके मनुष्यनके ऊपर कर डाऱ्यो यथाशक्ति सबके पास लेनो ॥ वे दोनो भाई पटेलनके उपर दो रुपैया डारे तब वे दोनो भाईनने विचार कियो जो अपनो द्रव्य तो श्रीठाकुरजीको है॥ सो कैंसे दियो जाय तब वा राजा कैंसे छोडे सो उपाय करनो फेर दोनो भाईननें ऐंसो विचार कियो या देवीकुं कूवामें डारदेनी ॥ तब रातकुं आयके वा देवीकुं कूवामें पटक आये और घरमें आयके सूते ॥ तब वो देवी राजाकी छातीपर जायके चढी जो कूवामें पडीहुं सो तुं मोकुं काढ और वे वैष्णव पटेल दोयभाई तेरे गाममें र-

हैंहें विनकुं दो रुपैया दंड कऱ्योहैं सो छोड देउ ॥ तब राजा चौकउठयो वाईसमय वे दोनो पटेलनकुं बुलायके दंड माफ कऱ्यो और देवीकुं कूवामेंसुं कढाई सो दोनो पटेलनको श्रीठाकुरजी ऊपर एंसो विश्वास हतो ॥ सो देवीकुं तुच्छ गणी और देवी विनकुं कछु पराभव न करसकी ॥ सो वे दोनो पटेल एंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १५२ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णवकी वार्ता ॥

वाके शरीरमें कोढ़ भयो हतो तव वे वैष्णव जायके व्रजमें रह्यो ॥ और श्रीगुसांईजीके दर्शन तथा श्रीनाथजीके दर्शन नित्य करतो और श्रीगुसांईजीसुं वीनती करतो महाराज मेरो कोढ़ मिटजाय ऐसी कृपा करो तब श्रीगुसांईजी आज्ञा करते जो श्रीठाकुरजी करेंहें सो विचारकरके करेंहें फेर वा वैष्णवसुं श्रीनाथजी बोलन लगे तब वा वैष्णवनें श्रीनाथजीसुं कही मेरो कोढ मिटे सो उपाय बतावो तब श्रीनाथजीनें कही हम कछु वैद्य नहींहें एंसे केहेके वाकी परीक्षा करते तब वो वैष्णव कहेतो जो प्राणजायेंगेतो कबुलपरंतु अन्याश्रय न करुंगो ॥ एंसे केहेके बैठ रहेतो ॥ एक दिन वाकुं श्रीनाथजीनें कही जो तुं अमकागाममें अमका वैष्णवके घर जायके दर्शन करिआव ॥ वो वैष्णव कहेगो तब तेरो कोढ जायगो ॥ तब वो वैष्णव वा गाममें वा वैष्णवके घर गयो और उहां जायके दर्शन करे ॥ देखेतो वा वैष्णवनें वेश्या राखीहै ॥ परंतु वाकुं अभाव न आयो तब

वा वैष्णवनें पूंछी जो तुम कैसे आये तव विननें कही श्रीनाथजीनें ऐसी आज्ञा करी है ॥ तब वा वैष्णवकुं पश्चात्ताप भयो तब वानें कही जो मैं ऐसो पतित हुं तोहु मोकुं श्रीनाथजी नहीं भूलेहें ॥ मैनें काहेकु ऐसे कर्यो है॥ तब वाकुं बहुत विरहताप भयो सो वा तापसुं वाकी देह छूटगई और वा वैष्णवको कोढ मिटगयो और नूतन अंग होय गयो ॥ सो ये दोनो कारज श्रीनाथजीनें एक समय कर्यें एक वैष्णवकुं लीलामें लियो ॥ और एकको कोढ मिटायके सेवाकी योग्यता दीनी ॥ सो वे कोढी वैष्णव श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र हतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १५३ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक मेहाधीमरकी वार्ता॥

सो वे मेहा रावलके पास गोपालपुरमें यमुनाजी किनारापर रहेतो हतो ॥ सो श्रीगुसांईजी गुजरातनें श्रीगोकुल पधारे सो गोपालपुरके घाट उतरे ॥ और गोपालपुर डेरा किये वाई दिन श्रीगोकुल पधारवेको मुहूर्त नही हतो॥ सो वे मेहाधीमर माछली पकडवेके लीयें यमुनाजीके किनारापर बैठो हतो ॥ तब मेहाधीमरकुं एक वैष्णवनें कही जो तोकुं एक रुपैया देउं श्रीगुसांईजी ईहां बिराजे तहांसूधी जाल मति डारियो ॥ तब मेहाधीमर रुपैया लेके घर गयो और मेहाधीमरनें वैष्णवकुं ऐसी कही मोकुं खायवेको दिवाईयो श्रीगुसांईजी भोजन करचुके और सब वैष्णवनकुं पातर धराइ ॥ और वा वैष्णवनें व्रजवासिसों कही या गाममें मेहाधीमर रहेहे याकु बुलाय लाव ॥ तब

मेहाधीमर आयो और श्रीगुसांईजीके दर्शन किये ॥ सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये और बीनती करी जो महाराज मोकुं शरण लेउ ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कृपाकरके नाम सुनायो और मेहाके घरके सबनकुं नाम सुनायो ॥ तब वा मेहाकुं श्रीगुसांईजीके स्वरूपको ज्ञान भयो ॥ तब मेहाधीमरनें ये पद गायो ॥ सो पद ॥ राग भैरव॥ श्रीविठ्ठलप्रभुमहाउदार ॥ महापतितशरणागतलीनें निर्भयपददीनोनिर्धार ॥ १ ॥ वेदपुराणसारजोकहिये सोपुरुषोत्तमहायदियो ॥ मेहाप्रभुगिरिधरप्रगटे पुष्टिमारगरसप्रकटकियो ॥ २ ॥ सो ये पद सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और वैष्णव कहेनलगे जो मेहा सवारे जाल डारके बैठो हतो ॥ और दर्शनमात्रसुं याकी निर्मल बुद्दी कैसी भईहै और प्रभूकी कृपाको पार नहीं ॥फिर श्रीगुसांईजीनें मेहाकुं जूठन धरी सो वे मेहानें लीनी॥तब भगवल्लीलाको अनुभव भयो फेर श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके संग आये ॥ श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे ॥ फेर अन्नकूटपर श्रीनाथजीके दर्शनकुं आये तब मेहानें अन्नकूटके पद गाये ॥ सो पद ॥ राग सारंग ॥ हमारोदेवगोवर्धनपर्वत । गोधनजहांसुखारो ॥ सुरपतिकों बलिभागन दीजे कीजेमतोहमारो ॥ १ ॥ पावकपवन चंदजलसूरज पर्वतआज्ञालीने ॥ ताईश्वरकोकह्योकीजीयेंकहाइंद्रकेदीने ॥ २ ॥ जाकेआसपासबब्रजकुलसुखीरहेप्रभुपारे ॥ जोरसकटअछूतोलेलेभलोमतोकोटारे ॥ ३ ॥ बडेबडेबैठविचारमतोकरिपर्वतकोबलिदीजे ॥ नंदलालकोंकुंवरला

डिलोकान्हकहेसोकीजे ॥ ४ ॥ माखनदूधदह्योघृतपायस सबलेलेब्रजवासी ॥ यज्ञस्वरूपधरेबलिभुक्तपर्वतशैलनिवासी ॥ ५ ॥ मिथ्योभागसुरपति जियजान्योमेघदियेसुकुराई ॥ मेहाप्रभुगिरधरकरराख्योनंदसुवनसुखदानसुखदाई॥६॥राग सारंग॥ सुनियेतातहमारोमतोश्रीगोवर्धनपूजाकीजे ॥ जोतुमयज्ञरच्योसुरपतिकोसोबलीइहांलेदीजे ॥ १ ॥ कंदमूलफलफूलनकीनिधिजोमागोसोपावो ॥ यहगिरिवासहमारोनिशिदिननिर्भय गायचरावो ॥२॥दूधदहींकेमाठभरायेव्यंजनअमृतअपार ॥ मधुमेवापकवानमिठाईभरिभरिराखेथार ॥ ३ ॥ बडेबडेबैठिविचारमतोकरिकान्हकहेसोइकीजे ॥ विविधभांतिकोअन्नकूटकरिपर्वतकोबलिदीजे ॥ ४ ॥ यहनगनानारूपधरतहैव्रजजनकोरखवारो ॥ देवनमेंयहबडोदेवतामोहूकोअतिप्यारो॥५॥ नंदनंदनऔररूपआपधरिआपनभोजनकीनो ॥ मेहाप्रभुगिरिधरनलाडिलोमागमागसबलीनो ॥ ६ ॥ ये पद गाय चुक्यो तब मेहाकुं मूर्छा आई ॥ तब मेहाकुं श्रीगुसांईजीनें कृपादृष्टि करके ठाडोकियो ॥ और आज्ञा करी जो श्रीनाथजीकी आज्ञा ऐंसी है कछुक दिन भूतलपर रहो ये सुनके उठ बैठे और दंडवत करी और कही जो ॥ निजेच्छातःकरिष्यति ॥ ऐसे कहेके ठाकुरजीकी सेवामें तत्पर भयो ॥ फेर मेहा गोपालपुरमें आयके सेवा करन लग्यो फेर मेहाकी स्त्रीके गर्भ भयो और प्रसवको समय भयो ॥ मेहा गाममें नहीं हतो ॥ तब मेहाकुं बेटा भयो॥ तब मेहाकी स्त्रीकुं बडो पश्चात्ताप भयो ॥ ये दुष्ट बेटा

क्युं भयो मेरी भगवत्सेवा छूटी ॥ ऐसे विचारके रुदन करवेलगी तब श्रीठाकुरजीनें आज्ञा करी जो रो मति ॥ नाहायके मेरी सेवा कर तब वे स्त्रीनें रीतीप्रमाणें नाहायके भगवत्सेवा करी ॥ फेर जब मेहा आयो तब मेहानें कही तेनें ऐसी अवस्थामें सेवा क्युं करी ॥ तब वा स्त्रीनें कही मोकुं श्रीठाकुरजीनें आज्ञा करीहै ॥ तब मेहा सुनके बहुत प्रसन्न भयो ॥ और मेहानें बहुत नवे पद करके भगवल्लीला अनेक प्रकारसुं गाईहे ॥ सो वे मेहा श्रीगुसांईजीके ऐसे भगवदीय कृपापात्र हते॥ वा० स० ॥ वै० ॥१५४॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव मोहनदास हते तिनकी वार्ता ॥ सो वे मोहनदास गोपालपुरमें रहेते हते ॥ तब गोविंदकुंडपें नित्य नाहावे जाते ॥ गोपालपुरसुं चढके और गोविंदकुंडकी आडी उतरते ॥ एकदिन उतरवेके रस्तापर गोबर पऱ्यो हतो ॥ तब वे वैष्णव दूसरी आडी उतऱ्यो सो श्रीगुसांईजीनें उतरतो देख्यो तब श्रीगुसांईजीनें माथो हलायो ॥ फेर वे मोहनदासनें श्रीगुसांईजीकुं दंडवत करके पूंछन लग्यो जो आपनें मोकुं देखके माथो क्युं हलायो ॥ तब श्रीगुसांईजी बोले जो तुम श्रीगिरिराजपर कारण विना पांवधरोहो ॥ और पावनसुं खूंदोहो सो गिरिराजको माहात्म्य कछु जानो नहींहो ॥ तब दूसरे वैष्णवननें पूंछी जो श्रीगिरिराजजीको माहात्म्य आप कृपाकरके कहो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें पद्मपुराणकी कथा कही ॥ जो एक दिन श्रीठाकुरजी तथा नारदजी वनमें ठाडे हते ॥ तब श्रीठाकुरजीनें कही नारदजी जल

लावो ॥ तब नारदजी जल लेवेकुं गये उहां जायतो एक सरोवर हतो ॥ और दोय ऋषी तपस्या करते हते और तलावके पास मनुष्यनके हाडनको पर्वत हतो ॥ और नारदजी देखके विस्मय होय गये सो नारदजी जल लीये विना पाछें आये ॥ तब श्रीठाकुरजीनें पूंछी जो जल क्युं लाये नहीं तब नारदजीनें समाचार कहे और कारण पूंछे तब श्रीठाकुरजीनें कही जो दो ऋषी तपश्चर्या करेहें ॥ गोवर्धन पर्वतके दर्शनके लीयें फेर देह छोडेहें ॥ फेर जन्मेहें फेर तपश्चर्या करेहें ॥ इनके इतने जन्म भयेहें ॥ जिनके शरीर छूट छूटके हाडनको पर्वत होय गयोहै ॥ तो हुं गोवर्धन पर्वतके दर्शन नही भये हें ॥ ये सुनके नारदजी बहुत विस्मय भये ॥ सो श्रीगुसांईजी आज्ञा करेहें जो आपनकुं गोवर्धन पर्वत श्रीमहाप्रभुकी कानतें दर्शन देवेहें और ऐसे रूप श्रीगोवर्धनपर्वत साक्षात् लीलामध्यपाती सो ऐसे गोवर्धनपर पांव कैसे घऱ्ये जाय॥कछु भगवत्सेवाको कार्य होवे तो ऊपर चढनो नहीं तो सर्वथा पांव धरनो नहीं ॥ ये सुनके वा मोहनदासकुं बहुत पश्चात्ताप भयो ॥ और श्रीगुसांईजीसों अपनो अपराधक्षमा कराये॥ फेर श्रीनाथजीकी सेवा दर्शन विना कोईदिन गिरिराजपर पांव धरते नहीं हते ॥ सो ऐसे श्रीगुसांईजीके कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १५५ ॥ ❀ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवकचतुर्भुजदासब्राह्मणकी०

सो वे चतुर्भुजदास पंडित बहुत हते और विद्याको अभ्यास विशेष हतो और अकबर पादशाहसों मिलाप वि-

शेष हतो अक्बर पादशाह जो कछु पूंछते सो जवाव तु-रत देते एकदिन पादशाहनें चतुर्भुजदासकी सराहना करी तव वीरवलनें कही ये तो मेरी चाकरी करतो हतो ॥ तव पादशाहनें पूंछी तव चतुर्भुजदासनें कही जो आपके मिलवेके लीयें कोनकोनकी चाकरी न करी चहीये ये सु-नके पादशाह वहुत प्रसन्न भयो ॥ और चतुर्भुजदासकुं महिनाके हजार रुपैया कर दिये और जो कोई पंडित आवतो तिनके संग चतुर्भुजदास वाद करते और सव पं-डितनकुं जीत लेते ॥ फेर एक समय चतुर्भुजदास मथु-राजीमें आये और विश्रांतघाटपर न्हाये और उहां कहेन लगे ॥ जो 'विद्या भागवतावधि' ॥ येसुनके एक वैष्णव वोल्यो चातुरी 'विठ्ठलेशावधि' ॥ तव चतुर्भुजदासनें कही जो मोकुं विठ्ठलनाथजीको मिलाप करायदे ॥ तव वो वै-ष्णव चतुर्भुजदासकुं श्रीगुसांईजीके पास लेगयो तव श्री-गुसांईजीके दर्शन किये ॥ सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम को-टिकंदर्पलावण्य ऐसे स्वरूपके दर्शन भये तव चतुर्भुज-दास श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन किये ॥ और श्रीगोवर्धननाथजीके कवित वनाये॥ और आखा जन्मपर्यंत श्रीजीद्वार छोडके कहुं गये नहीं ॥ एकदिन पृथ्वीपतीकूं खवर पडी जो चतुर्भुजदास गो-पालपुरमें है ॥ तव मनुष्य बुलायवेकुं पठाये तव चतुर्भु-जदासनें पृथ्वीपतीकुं पत्र लिख्यो वा पत्रमें लिख्यो ॥ जाको मन नंदनंदनसुं लाग्यो नीको ॥ सुखसंपतकी कहां लग वरनो सव जग लागत फीको ॥ ये पत्र लेके वा मनु-

ष्यनें पृथ्वीपतीकुं दियो तब पृथ्वीपतीनें विचार कियो जिनकुं जगत फीको लग्यो तो तिनकुं अपने कैसे मीठे लगेंगे ॥ सो वे चतुर्भुजदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १८६ ॥ ❋ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक विरक्त वैष्णवकी वार्ता

सो वह ब्राह्मण वैष्णक एक गामडामें रहेतो हतो ॥ सो चुकटी मागके निर्वाह करतो ॥ और श्रीठाकुरजीकी सेवा भली भांतीसों करतो ॥ और श्रीठाकुरजी सानुभाव जतावत हते ॥ सो वे वैष्णवनके घरनतें चुकटी मागतो तब एक वैष्णवके घर चुकटी लेवे गयो सो वाके बेटाकी देह छूटी हती ॥ तब वे वैष्णव वाईसमय गयो तब वा वैष्णवनें विचार कियो जो याको आवरदा बहुत हतो ॥ क्युं याकी देह छूटी ॥ ऐसो विचार कियो याको अकालमृत्युभयो है ॥ तब वा वैष्णवनें चरणामृत वाके मुखमें दियो ॥ और चरणांमृतको श्लोक पढ्यो ॥ अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधि विनाशनम् ॥ विष्णुपादोदकं तीर्थं जठरे धारयाम्यहम् ॥ १ ॥ ये अक्षर बोल्यो तब श्रीठाकुरजी वा वैष्णवकी वाणी सत्य करवेके लीयें वा वैष्णवके बेटामें प्राण संज्ञा धरी ॥ तब वा वैष्णवको बेटा जीवतो भयो ॥ जासमय वा ब्राह्मण वैष्णवनें वाकुं जीवतो कर्यो वाई समय वा ब्राह्मण वैष्णवमें भगवदावेश भयो हतो ॥ फेर जब बहार आयो तब लोगननें वा ब्राह्मण वैष्णवसों पूंछी ये कैसे जीयोहै तब वानें कही चरणामृत और अष्टाक्षरमंत्रसुं जीवतो भयोहै ॥ लोगननें ये बात झूंठी मानी सो

ब्राह्मण वैष्णव ऐसो कृपापात्र हतो ॥ जाको चरणामृत
ऊपर दृढ विश्वास हतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥१५७॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गुलाबदास क्षत्रीकी वा-
र्ता ॥ सो वे गुलावदास परम कृपालु जो श्रीगुसांईजी ति-
नके शरण गये ॥ फेर थोडेदिन पाछे म्लेछके देशमें जा-
यके रहे और भ्रष्ट होय गये और भक्षाभक्ष करन लगे ॥
और गुलावखान नाम धरायो ॥ फेर ये बात श्रीगुसांई-
जीनें सुनी तव श्रीगुसांईजीनें एक वैष्णव पठायो विनकुं
बुलायवेके लीयें तव वा वैष्णवनें जायके कही गुलावदास
तुमकुं श्रीगुसांईजी बुलावेंहें ॥ तव गुलावदास वेश्याके
पास वैठे हते सुनके कही जो में ऐसो भ्रष्टहुं तोहुं श्रीगु-
सांईजी संभारेंहें ॥ ऐसे तीनवार वैष्णवसुं पूंछी जो श्रीगुसां-
ईजी मोकुं संभारेंहें ॥ तव विरहताप भयो तव गुलावदा-
सके प्राण छूटगये ॥ वे वैष्णव देखके चकित भये फेर उ-
हांसुं चल्यो और मनमें विचार कियो ये संदेह श्रीगुसां-
ईजीसों पूछुंगो तव श्रीगुसांईजीके पास आयके देखे तो
गुलावदास श्रीगुसांईजीकुं पंखा करत देख्यो ॥ तव वा
वैष्णवको संदेह दूर भयो ॥ सो वे गुलावदास श्रीगुसांई-
जीके ऐसे कृपापात्र हते जिनके कर्म विरहतापसुं जरगये
और शुद्ध होयके भगवल्लीलामें चलेगये ॥ वार्ता संपूर्ण॥
वैष्णव ॥ १५८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक धोंधी कलावत तिनकी
वार्ता ॥ सो वह धोंधी बडीजातवालो हतो और गान
विद्या में कुशल हतो और श्रीगुसांईजीको सेवक भयो ॥

तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके वा धोंधीकुं श्रीनवनीतप्रियाजीके कीर्तनकी सेवामें राखे सो वे धोंधी श्रीनवनीतप्रियाजीके संनिधान कीर्तन करते हते ॥ एकदिन कीर्तन सुनके श्रीनवनीतप्रियाजीनें ताल दियो तब श्रीगिरिधरजी ठाडे हते सो एकहजार रुपैयाके सोनाके कडा पहेरे हते ॥ सो उतारके धोंधीकुं दीये तब श्रीगुसांईजीनें येबात सुनी और श्रीगिरिधरजीकुं कह्यो जो श्रीनवनीतप्रियाजीनें ताल दियो जो तेनें इकेलो कडो क्युं दियो सब गहेनो क्युं नहि दियो इतनो तुमारो लोभीपणो अधिकी है ॥ तब श्रीगिरिधरजी बोले जो मैं आपसुं डरप्यो जासुं नहीं दियो तब श्रीगुसांईजी सुनके बहोत प्रसन्न भये ॥ तब वा धोंधीकुं आज्ञा करी जो नित्य तेरे मन लगायके कीर्तन करनें तब वे धोंधी नवे पद करके गायवे लग्यो ॥ वे धोंधी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण॥

वैष्णव ॥ १६९ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक बनियाकी वार्ता॥

सो वे बनिया गोपालपुरमें रहेते हते और जे कोई श्रीनाथजीके दर्शन करके आवे वासुं शृंगार पूंछलेते ॥ सो पाछें जो आवे विनके आगे शृंगार कहे ॥ सब लोग जाने जो ये बडो वैष्णव है वैष्णव जानके विनके पाससुं सोदा लेवे ॥ ऐसे करके लोगनके पास ठगके बहुत रुपैया एकठे करे ऐसे करते करते साठवरसके भये और साठ हजार रुपैया एकठे करे एकदिन सूरदासजी भगवदिच्छातें वा बनियाके पास कछु लेवेकुं आये तब वा बनि-

या सूरदासजीके आगें श्रीनाथजीके शृंगारकी बडाई करन लग्यो तब सूरदासजीनें मनमें जान्यौ ये पाखंडी है तब सूरदासजीनें कही श्रीनाथजीके दर्शनकुं चल तब वानें कही सांझकुं आउंगो फिरसांझकुंसूरदासजी आये तब कही काल आउंगो ऐसें करते दोचारदिन काढे एकदिन सूरदासजीनें ये पद गायो ॥ आज काम काल काम परसुं काम करना ॥ पहेले दिन बहुत काम काममें पचमरना ॥ १ ॥ जाग्रत काम सोवत काम विमुखभयो चरणा ॥ छांड कामसुमरश्यामसूरपकरशरणा ॥ २ ॥ ये पद सूरदासजीनें वा बनियाकुं सुनायके खेंचके लेगये फेर जायके श्रीगुसांईजीके दर्शन कराये तब सूरदासजीनें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी जो याकुं शरण ले तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके नाम निवेदन करवायो फिर भेट करवेको समय भयो तब वा बनियानें एक रुपैया भेट कर्‍यो तब सूरदासजीनें वा बनियाकुं उपदेश करवेके लीये एकपद गायो ॥ सो कीर्तन ॥ ॥ सूरसाठी प्रारंभः ॥ ॥ राग सारंग ॥ कृष्णसुमरतनपावनकीजे ॥ जोलोंजगस्वपनासोजीजे ॥ १ ॥ अवधिउसासगिनतसबतेरे ॥ सोवीततभईआवतनेरे ॥ २ ॥ जोयेस्वपनेंन्याईविचारे ॥ कबहुंनजन्मविषयलगहारे ॥ ३ ॥ गहींविवेकबीजजोबोवें ॥ कबहुंनजठरअग्निमेंसोवें ॥ ४ ॥ वारवारतोकुंसमझावे ॥ जोछिनजायसोबहोरिनआवे ॥ ५ ॥ ठगनीविषयठगोरीलाई ॥ घटिकाघटतजोछिनछिनजाई ॥ ६ ॥ गनतहिंगनतअवधिनियरानी ॥ छांडचल्योनिधिभईबिरानी ॥ ७ ॥ होत

कहाअबकेपछतानें ॥ तरुवरपत्रनमिलैंपुराने ॥ ८ ॥ पवन उडेसोबहुरिनआवैं ॥ कर्ताऔरअनेकबनावैं ॥ ९ ॥ जल थलपशुपंछीसूकरक्रिमि ॥ मानसतनुपायोसबजगभ्रमि ॥ ॥ १० ॥ कबहूंनीकेनाथनगायो ॥ एकमदनदशदिशहिं भ्रमायो ॥ ११ ॥ सोतनुतूंखोवेंरतिविगतनि ॥ काचगहैं छोडीचिंतामनि ॥ १२ ॥ मनहींमनमायाअवगाहत ॥ नायकभयोतिहूंपुरचाहत ॥ १३ ॥ स्वर्गरसातलभूरजधा नी ॥ तोउनतृप्तभयोअभिमानी ॥ १४ ॥ ऐसेहिकरतअव धिसबबीती ॥ गयोनज्ञानरह्योमदरीती ॥ १५ ॥ कबहूंस जनमिलिकरतबडाई ॥ कबहूंललनाललितलडाई ॥ १६ ॥ कबहूंहयहाथीरथआसन ॥ कबहूंपलकासुखदसुवासन ॥ ॥ १७ ॥ कबहूंचमरछत्रसिरढोरे ॥ कबहूंसुभटपशुनचढि दोरे ॥ १८ ॥ कबहूंतोरनछत्रबनावे ॥ कबहूंमदगजयूथल डावे ॥ १९ ॥ नौवतद्वारबजतहींठाडी ॥ त्योंत्योंतृष्णाश तगुणबाढी ॥ २० ॥ दिव्यवसनफलफूलसुवासी ॥ नवयौ वनअबलासुखरासी ॥ २१ ॥ द्वारकपाटसहस्रएकलागें ॥ सुभटपेहेरुवाचहुंदिशजागें ॥ २२ ॥ रमणीरमतनरजनी जानी ॥ मायामदपीयोअभिमानी ॥ २३ ॥ सुतबितवनि ताहेतलगायो ॥ तवचेत्योजबकालचितायो ॥ २४ ॥ झूठो नाटकसंगनसाथी ॥ नोबतद्वारनहयरथहाथी ॥ २५ ॥ भूपछिनकमेंभयोभिखारी ॥ क्योंकतशूलसहेंअबभारी ॥ ॥ २६ ॥ भयोअनाथसनाथनबांध्यो ॥ त्रिजगशूलशरसन्मु खसांध्यो ॥ २७ ॥ मनुषदेहधरिकर्मकमायो ॥ तेतिरछेदुखदा रुणआयो ॥ २८ ॥ जेहितनकाजजीवबधकीनें ॥ रसनारस

आमिपरसलीनें ॥ २९ ॥ सोतनछूटतप्रेतकरिडान्यो ॥ प्रेत प्रेतकहिनगरनिकान्यो ॥ ३० ॥ हिंसाकरपालनकरिजाकी ॥ विष्टाकिरमीभस्मभइताकी ॥ ३१ ॥ रोगभोगअरुविषय भयानक ॥ हरिपदविमुखविषयरसपानक ॥ ३२ ॥ जागजा गइहांकोतेरो ॥ मायास्वप्नकहतसबमेरो ॥ ३३ ॥ कृष्णविना तोहिकोनछुडावे ॥ कोकरुणामयविरदकहावे ॥ ३४ ॥ अन्य देवकोनहींभरोसो ॥ वातनखटरसलाखपरोसो ॥ ३५ ॥ जेजनकह्योत्पतिकीन्याई ॥ मृगतृष्णाकरिकोनअघाई ॥ ॥ ३६ ॥ ऐसेअन्यदेवसुखदायक ॥ हरिविनकोनछुडावन लायक ॥ ३७ ॥ धर्मराजमुनिकृतीतिहारी ॥ तूंविषयनर तसुरतविसारी ॥ ३८ ॥ गर्भअग्निरक्षाजिनकीनी ॥ संकट मेटिअभयतादीनी ॥ ३९ ॥ हस्तचरणलोचननासामुख ॥ रुधिरबूंदतेंलह्योअधिकसुख ॥ ४० ॥ सोसुखतेंस्वपनेंनहिं जान्यो ॥ प्राणनाथनिकटनपहिचान्यो ॥ ४१ ॥ कितयह शूलसहेंअपराधी ॥ ममसिखतेंएकोनहिसाधी ॥ ४२ ॥ कोटिकवारमानसतनुपायो ॥ हरिपथछोडअपथकूंधायो ॥ ४३ ॥ समयगयेअसमयपछतैये ॥ मानसजन्मबहुरि कितपैये ॥ ४४ ॥ पारसपायजलधिमेंबोरें ॥ पुनगुनसुनत कपालहिंफोरें ॥ ४५ ॥ चिंतामणिकौडीलेदीनी ॥ सुनिप रमितकरुणाअतिकीनी ॥ ४६ ॥ जूझतसामेंपीठदेभागे ॥ पुनपुरुषारथकहेनहिंलागे ॥ ४७ ॥ पायकल्पतरुमूलछिदा वे ॥ सोतरुपुनकेसेतूंपावे ॥ ४८ ॥ मधुभाजनपूरणविधि दीनो ॥ सोतेंछांडहलाहलपीनो ॥ ४९ ॥ कामधेनुतजअ जाविसाई ॥ हरिबलछांडविषयअवगाही ॥ ५० ॥ यहनर

देहस्यामबिनखोई ॥ कदिकौतुकलोंबाधिबिगोई ॥ ५१ ॥ काहेनकर्मकियोतैंऐसो ॥ ध्रुवशुकसनकसनंदनजैसो ॥ ॥ ५२ ॥ सुरनरनागअसुरमुनिदेवक ॥ हरिपदभजतसबे व्हैंसेवक ॥ ५३ ॥ परदक्षिणादेसीसनमावें ॥ मनसिजतो हिनपरसनपावें ॥ ५४ ॥ जाकेभजतएतोसुखलहिये ॥ सुनशठसोंकैसेविसरैये ॥ ५५ ॥ अगनितपतितनामनिस्तारे॥जन्ममरणसंतापनिवारे ॥ ५६ ॥ निर्भय होय भक्तिनिधिपाई ॥ कबहुंकालव्यालनहिंखाई ॥ ५७ ॥ सबसुखजीवनकृष्णनामपद ॥ भवजलव्याधिउपायपरमगद ॥ ५८ ॥ श्रीभागवतपरमहितकारी ॥ द्वाररटतहरिसूरभिखारी ॥ ॥ ५९ ॥ परमपतितकूंशरणहिलीजे ॥ पदरजदानअभयतादीजे ॥ ६० ॥ ॥ ॥ इति सूरसाठी संपूर्ण ॥

ऐंसे एक तुक कही जब वा बनियानें हजार रुपैया भेट कर्‍ये ऐंसे सूरदासजीनें साठतुकको पद गायो ॥ जैंसे जैंसे एक एक तुक सुनतो गयो और एक एक हजार रुपैया भेट करतो गयो ॥ साठतुक सूधी साठ हजार रुपैया भेट करे ॥ सूरदासजीके वचन वा बनियाके हृदयमें कैसे उतरे जैंसे सूरजउदय होवे और अंधकार मिटजाय तैंसे सूरदासजीके वचननतें वाके हृदयको अंधारो सब मिटगयो और प्रफुल्लितमन होय गयो ॥ और मनमें ऐंसो विचार कियो जो आज मेरो जन्म सफल भयो॥सो वे बनिया दुकानपें आयके साठ हजार रुपैया काढके श्रीगुसांईजीके उहां पठाय दीने फिर दुकानपर बैठो और कोईके आगें फेर शृंगारकी बात करतो नहीं और नित्य श्रीनाथजीके

और श्रीगुसांईजीके दर्शन करके प्रसाद लेतो ॥ पाछें थोडेदिन भये तब श्रीनाथजी वा वनियासुं वोलन लगे और आयके दूध दही लेजाय और दूसरो रूप घरके दाना लेके वा वनियाकी दुकानपें सौदा ले जाय ॥ और दाना पटक जाय विन दानानके हीरा मोती होयजाय तव वे वनिया हीरा मोती सब वीनके श्रीगुसांईजीके आगें धर आवे ॥ घरमें कछु राखे नहीं ऐंसे मनमें समझे जो द्रव्य घरमें राखुंगो तो प्रभुनमेंसों चित्त निकस जायगो ॥ जासुं निर्वाह जितनो राखतो सो वे वनिया श्रीगुसांईजीको ऐंसो कृपापात्र हतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १६० ॥ ❀ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक राजारानीकी० ॥

सो वे राजा और विनकी स्त्री दोउ वैष्णव भये और भगवत्सेवा करन लगे ॥ फिर वा राजाकी एक वेटी भई और वडी भई ॥ सो राजाके मनमें ऐंसी हती जो कोई राजासों विवाह कर्‍यो चहिये ॥ और रानीके मनमें ऐंसी आई जो मैं अन्य मार्गीकुं वेटी नहीं देउंगी ॥ तव वैष्णव ढूंढवेके लीयें वहुत प्रयत्न करे ॥ सो एक राजा वैष्णव मिल्यो फिर वाकुं वेटी दीनी ॥ तव राजा विवाह करन आयो ॥ सो विवाह करके अपनें देशमें लेगयो ॥ फिर रानीनके पास वाकुं बैठाय दीनी और वह राजातो भगवत्सेवा करे ॥ और कोई स्त्रीकुं सेवाको काम न सौंपे ॥ और वह जो राजाकी वेटी नवी पर्णी हती वाके पतीके पास सेवा करवेकुं जाय परंतु वो सेवा न करवे देवे ॥ तव वा राजानें कही जो तेरी सेवा करनकी इच्छा होवे तो अ-

मका शेठके घर जायके जलकी गागर भरलायदे॥ और वा गागरके पैसा लायके मोकुं दे॥ तब तोकुं सेवा करन देउंगो॥ फिर वाने जायके वा शेठके घर गागर भर लाई॥ तब वा शेठनें वा गागरके जलसुं झारी भरी तब वा राजाकी स्त्रीनें कही जो या गागर भरवेके पैसा मोकुं देवो॥ तब वा शेठनें कही जो या जलकी झारी श्रीठाकुरजी अरोगेहें सो याकी न्योछावरतो सर्वस्व है॥ जासुं जितनो मेरे घरमें द्रव्य है सो लेजाओ॥ फिर वा राजाकी रानीकुं ज्ञान भयो जो मेरे घर श्रीठाकुरजी बिराजेहें सो एक जलकी गागरकी इतनी कीमत है तो आखो दिन सेवा करे इनकी कहा कीमत होयगी॥ फिर घर जायके पतीके पांवन परी जो अब मैंनें तुमारी कृपातें भगवत्सेवाको स्वरूप जान्यो है॥ जासुं अब तो सेवाविना अन्न जल न लेउंगी॥ तब वह राजा प्रसन्न होयके वा रानीकुं सेवा करवे दीनी॥ तब दोनो स्त्रीपुरुष सेवा करन लगे॥ सो वे राजारानी ऐंसे कृपापात्र हते॥ जिननें अन्य मार्गीकुं बेटी न दीनी॥ और बेटी ऐंसी कृपापात्र भई वानें शेठके घर जायके एकदिनमें भगवत्सेवाको स्वरूप जान्यो॥ सो वे राजारानी और जमाई और बेटी वे चारो जने श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र भये॥वा०सं०॥वै० १६१

॥ **श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव शकुन देखके चलतो तिनकी वार्ता** ॥ सो वे वैष्णव गुजरातमेंसों जायके श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीको सेवक भयो॥ वह वैष्णव जो कछु काम करतो सो शकुन देखके करतो॥

एक दिन शकुनकी बात निकसी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो दर्शनके आगें शकुनको कहा काम है॥ और श्रीगुसांईजीनें वाई समय सूरदासजीको कीर्तन कह्यो सो पद॥ मिल हैं गोपालसोंई दिननीको॥ जोतिषनिगमपुराण बडेठगजानोफांसीजीको ॥ १ ॥ जेबूझेंतोउत्तरदेहुंविनबूझेंमतफीको ॥ कमलमीनदाढुरखुंतरसतसबघनपरतअमीको॥२॥भद्राभलीभरणीभवहरणीचलतमेघअरुछीको॥ अपनेठोरसवेग्रहनीकेहरणभयोक्यूंसीको ॥ ३ ॥ सुनसूढमधुकरब्रजआयोलेअपयशकोटीको ॥ सूरजहांलोंनेमधमेत्रतसोंप्रेमीकौडीको ॥ ४ ॥ ये पद श्रीगुसांईजीनें श्रीमुखसों आज्ञा करी तब वा वैष्णवकुं निश्चय भयो॥ जो आज पीछे सर्वथा शकुन नहीं देखुंगो ॥ सो वा वैष्णवको श्रीगुसांईजीके वचनपर ऐसो विश्वास हतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १६२ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक बाईकी वार्ता ॥

सो वह बाई गोलवाडमें रहेती हती ॥ तब श्रीगुसांईजी द्वारका पधारे तब गोलवाडमें वा गाममें मुकाम कर्‍यो॥ तब वह बाई जल भरवेकुं जाती हती॥ सो श्रीगुसांईजीके दर्शन किये ॥ तो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये ॥ तब वह बाई श्रीगुसांईजीके शरण आई और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगी ॥ फिर वा बाईको बेटा हतो ॥ सो वाट मारतो जो कोई रस्तामें वेपारी मिले विनकुं मारके धन लूट लावतो ॥ तब वा बाईनें अपनें बेटासुं कही जो तूं कोई दिन वैष्णवकुं मति मारियो ॥ तब

वाके बेटानें कही जो मैं कैसे पेहेचानू ये वैष्णव है ॥ तब वा बाईनें कही जो तूं जाकुं लुंटे जब विनकुं इहां पकड लाव मैं पेहेचानुंगी तब वाको बेटा वैसेंही करतो पकड लावतो ॥ तब वा बाईकुं दिखावतो सो एक दिन ११ वेपारीनकुं पकड लायो तब विनमें एक वैष्णव हतो ॥ सो वाकी मानें देखके कही जो याकुं छोड दे ॥ तब वा वैष्णवनें कही ये१०मनुष्य मेरे भाई हैं सो मैं इनके पाछें प्राण देउंगो तब वा बाईनें वा वैष्णवको आग्रह देखके सबकूं छुडाय दिये और वा वैष्णवसुं कही तुम रसोई करो और महाप्रसाद लेउ तब वा वैष्णवनें रसोई करी॥और१० जनेनकुं महाप्रसाद लेवायो फिर वा बाईकुं और वाके बेटानकुं लिवायो औरवे बाईके बेटानके संग १५० असवार चोरी करवेकुं फिरते हते ॥ सबकुं प्रसाद लिवायो तो हुं महाप्रसाद खूटयो नहीं तब वा बाईके बेटानें पूंछी जो तुमनें रसोई तो ११ मनुष्यनकी करी हती परंतु सबकुं महाप्रसाद पूरो कैसे भयो ॥और अगीयार मनुष्य खावे इतनो वधी पऱ्यो है॥ याको कारण कहा॥ तब वा वैष्णवनें कही जो हककी खावे है और अपनी मेहनतको द्रव्य कमायके खावे हे विनको कोई दिन घटे नहीं है ॥ तब वो पटेलबोल्यो हमकुं ऐसो सिखावो तो बहुत आछो तब वा वैष्णवनें कही तुम चोरी करनो छोड देवो ॥ और खेती करके खावो तो तुमकुं ऐसे होवेगो तब वा बाईके बेटा पटेलनें चोरी करनो छोड दियो और सब गामकुं चोरी करनो छुडाय दियो और खेती करन लगे सो वह बाई श्रीगुसां-

ईजीकी ऐसी कृपा पात्र हती ॥ जिनके संगतें आखो गाम श्रीगुसांईजीकुं पधरायके वैष्णव भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १६३ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक कुमनदासजीके वेटा कृष्णदास तिनकी वार्ता ॥ सो वे कृष्णदास श्रीनाथजीकी गायनकी सेवा करते और एकदिन कुमनदासजीकुं श्रीगुसांईजीनें पूंछी तुमारे कितने वेटाहैं ॥ तव विननें कही हमारे दोढ वेटाहे ॥ तव आपनें आज्ञा करी दोढ कैसे होवे आधे वेटाकी समजण पाडो ॥ तव कुमनदास-जीनें कही पुष्टिमार्गमें भगवत्सेवा और भगवद्गुणगान ये दोनो मुख्यहे तव दो काम करे सो वेटा आखो और एक करे सो आधो ॥ सो चतुर्भुजदास दो काम करेहें सेवा और गुणगान ॥ और कृष्णदास एक सेवा करेहें जासुं आधो वेटाहे ये सुनके श्रीगुसांईजी मुसकाये और आज्ञा करी वैष्णवकुं ऐसेही चहिये ॥ सो वे कृष्णदास दिवसरात गायनकी सेवा करते और गाय चरावते हते॥ एक दिन गायनमें सिंघ आयो जव गाय बचावेके लीयें कृष्णदासने आपणे प्राण दिये और सिंघकी झपाटसेहे गये और जब कृष्णदासके प्राण छूटे वाही समय श्रीना-थजी खिरकमें गोपीनाथदास ग्वालके पास गाय दोहते हते ॥ और कृष्णदास बछरा पकड रहे हते सो गोपीना-थदास देखते हते सो ये बात कुमनदासजीकी वार्तामें लिखीहे ॥ यातें इहां लिख्येनहीहे सो कृष्णदासजी ऐसे कृपापात्र भये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १६४ ॥ ❀ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक गोकुलभट्ट और गोविंदभट्ट कृष्णभट्टजीके बेटा तिनकी वार्ता ॥ सो वे दोनों भाई बालपणेसुं श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीगुसांईजीके पास पढे हते ॥ सो पुष्टिमार्गके श्रीसुबोधिनीजी आदिक ग्रंथनमें बडे प्रवीण हते ॥ और शास्त्रार्थमें बडे कुशल हते ॥ जब वे बडे भये तब एक भाई उज्जेनमें रहेते और एक भाई श्रीजीद्वारमें रहेते ॥ सो वर्षके वर्षमें श्रीनाथजीकी सेवा और घरके श्रीठाकुरजीकी सेवा करते॥ जा वर्षमें गोविंदभट्ट श्रीजीद्वार जाते तब गोकुलभट्ट उज्जैन आवते और गोकुलभट्ट श्रीजीद्वार जाते तब गोविंदभट्ट उज्जैन आवते और श्रीगुसांईजीकी कृपातें जिनको चित्त श्रीनाथजीविना क्षण एक रही न शकतो ॥ और श्रीगोवर्धननाथजी और घरके श्रीठाकुरजी दोनों स्वरूपनमें जिनकी एकसारखी प्रीति हती ॥ यातें घरके श्रीठाकुरजी और श्रीनाथजी विनके उपर बहुत प्रसन्न रहेते और शृंगार धरते और भूल जाते तो श्रीनाथजी विनकुं शिखावते वे दोनो भाई श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपा पात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १६५ ॥ ❋ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक यादवेंद्रदास आग्रेमें रहेते तिनकी वार्ता ॥ सो वे यादवेंद्रदास श्रीगुसांईजीके सन्निधान रहते सो वे यादवेंद्रदास श्रीसुबोधनीजीकी सब पंगती कंठाग्र राखते और दिवसरात भगवल्लीलाको अवगाहन करते ॥ और भगवद्रसके प्रतापसुं सखी भाव विनको होय गयो ॥ सब लीलानको दर्शनको अधिकार

भयो ॥ एक दिन श्रीगुसांईजीके दर्शन श्रीगोवर्धननाथ-जीके संग युगल स्वरूपके भये ॥ जैसे गोपालदासजीनें गायो है आख्यानमें ॥ रूप वेउएक ते भिन्न थई विस्तरे विविध लीलाकरे भजन सारे ॥ विविधवचनावली नयन-सेनेंमली सांगना सूचवे निश विहारे ॥ १ ॥ विविध मु-क्तावली पाठसूत्रें करी गलसरी शोभतां कर सिंगारे ॥ विविधकुसुमावली ग्रथित हाथें करी एकएकनें कंठ आ-रोपें हारे ॥ २ ॥ विविध मेवा भोग मधुर मिष्टान्न रस द-समस्यां अर्पते वहुप्रकारे ॥ विविध वीडा सुगंध कर्पूरनें एलची लौंगपूगी पानखेरसारे ॥ ३ ॥ ऐसे दर्शन यादवें-द्रदासजीकुं भये ॥ ऐसी कृपा यादवेन्द्रदास पर श्री-गुसांईजीनें कीनी और जैसे दर्शन करते तैसे पद नूतन करके गावते ॥ सो वे यादवेंद्रदास क्षत्री श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र हते॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव ॥ १६६ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक मथुरामल और हरजी-मल दोउ भाईनकी वार्ता ॥ सो जब पुरुषोत्तमदास चो-पडाक्षत्री वृद्ध भये और श्रीलाडलेशजीकी सेवा न वन-वेलगी तब श्रीलाडलेशजीनें श्रीगुसांईजीसों आज्ञा करी जो अब मेरी सेवा मथुरामल और हरजीमलकुं करवेकी आज्ञा देवें तो बहुत आछो है ॥ पुरुषोत्तमदास वृद्ध भये है ॥ तब श्रीगुसांईजीनें विनके माथे श्रीलाडलेशजी पध-राय दिये ॥ सो वे दोनो भाई श्रीलाडलेशजीकी सेवा ब-हुत प्रीतीसुं करन लगे ॥ और श्रीलाडलेशजी विन दोनो भाईनसुं बालककी सीन्याई झगडा करकरके अनेक प्र-

कारके पदार्थ मागते ॥ और वे दोनो भाई श्रीलाडलेश-जीकुं प्रसन्न राखते जैंसे बालक उदास न होवे वैंसे करते॥ छेलो जन्म जिनकुं होवे तिनकी ऐंसी वृत्ती होवे सो वे दोनो भाई श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ जिननें मनक्रम वचन करके श्रीलाडलेशजीकुं प्रसन्न किये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १६७ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक बलाईकी वार्ता ॥

एकसमय श्रीगुसांईजी गुजराततें व्रजकुं पधारते हते ॥ रस्तामें आवते एक ठेकाणे रस्ता भूलगये सो उहां एक बलाई मिल्यो ॥ सो वा बलाईसुं वैष्णवनें रस्ता पूंछ्यो तब वा बलाईनें कही या रस्तामें तो चोर लूंटे हें ॥ जासुं तुम चलो में दूसरो रस्ता लेजाउं तब विन वैष्णवनकुं संगलेके दूसरो रस्ता चल्यो ॥ सो आछो रस्तो ले आयो और फेर वा बलाईकुं कही जो तेरो गाम कहाहे ॥ तब बलाईनें कही तुम जावो वही रस्तामें मेरो गाम आवेगो तब श्रीगुसांईजीके मनुष्यननें कही जो हमारे संग चलें तो खावेको देवें और खरचीहुं देवेंगे तब वो संग चल्यो रस्तामें डेरा भये रसोई भई श्रीठाकुरजी अरोगें और श्रीगुसांईजीनें भोजन किये पाछें सब वैष्णवननें प्रसाद लिये और सब वैष्णवननें वा बलाईकुं जूठन दीनी सो जूठन लेत मात्रही वा बलाईको अंतःकरण निर्मल भयो और श्रीगुसांईजीके दर्शन साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके भये और श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी जो मोकुं आप शरण ल्यो तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके नाम सुनायो ॥ तब

वो नित्य श्रीगुसांईजीके संग चले और नित्य वैष्णवनकी जूठन लेवे और दिन दिन वाको भाव वढतो जाय ऐसे करते करते वाको गाम आयो वा गाममें श्रीगुसांईजीनें डेरा किये और वाकी स्त्रीकुं लायके वैष्णव कराई और जूठन खवाई जूठन लेतमात्रही वा स्त्रीके मनको मैल छूटगयो और दिव्यदृष्टी होयगई ॥ फिर दर्शन करके अपने घर चली वाकुं घरके रस्तामें विरहताप भयो॥ मूर्छा खायके परी तव वो वलाई उठाय लायो और श्रीगुसांईजीके दर्शन कराये तब वाकुं चेत भयो सो वे स्त्रीपुरुष श्रीगुसांईजीके संग चले और श्रीगोकुल आये ॥ और दूर दूरसुं चले आवे कोई मनुष्यनकुं छीवें नहीं फेर श्रीयमुनाजीके घाटपें श्रीगुसांईजी पधारे और वे स्त्रीपुरुष उहां वैठरहे नावपर कोई बैठावे तोहु बैठे नहीं जो सब छीजाय जासुं वे पार न उतरे दूसरे दिन विनकुं श्रीगुसांईजीके दर्शन न भये तब विनकुं ज्वर चढ आयो और मूर्छा खायके पररहे ॥ या बातकी खबर श्रीगुसांईजीकुं परी तब श्रीगुसांईजीनें मनुष्य पठायके वे दोनो मूर्छा खायके पररहे विन दोउनकुं उठायके पार उतराये और मूर्छा तो खुली नहीं तब श्रीगुसांईजी पधारके दोउनकुं चरणस्पर्श कराये तब विनकी मूर्छा खुली तब विननें श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी जो आपके दर्शन विना हमारे प्राणनहीं रहेंगे तब श्रीगुसांईजीनें पादुकाजीकी सेवा विनके माथे पधराय दीनी तब आज्ञा करी तुम इनकी सेवा करो जब तुमारो मनोरथ होवेगो तब मैं इनमेंसुं

रूप धरके तुमकुं दर्शन देउंगो फेर आज्ञा करी फल फूल मेवा दूधकी सामग्री इनकुं भोग धरियो और एकांतमें जायके सेवा करो तब वे बलाई एक निर्जनवन हतो जहां पर्वतकी गुफा हती उहां जायके रहे और पादुकाजी पधरायके सेवा करन लगे फेर फल फूल लायके नित्य भोग धरे और सांजसवारे नित्य श्रीगुसांईजी विनकुं दर्शन देते ॥ कोई समय तो पुस्तक वांचते दर्शन देते कोई समय जप करते दर्शन देते कोई समय संध्या वंदन करते दर्शन देते जैंसे विनके मनोरथ होते तैंसे दर्शन देते ॥ फेर वा स्त्रीनें कही मेरे मनका वेचके पूणी और चरखा लाय देवो तब वे बलाइले आयो सो वे लुगाई चरखा कांते और सूत वेचके पूणी लावे ऐंसे करत करत रुपैया पांचसात ऐकठे भये तब एक गाय ले आये और सामग्री करे और गायके कानमें अष्टाक्षरमंत्र कहिदियो ॥ सो वे गाय निर्भय होयके वनमें चरे और वे गाय एक गोंवळद विना दूसरेनकुं सिंह जेसी दीसे और निर्भय होयके वनमें चरे ॥ कोई मनुष्य और पशु वाके पास न आवे और सदा काम धेनुकी सिन्याई दूध देवे ऐंसे वे दोनो स्त्रीपुरुष वा कंदरामें सेवा करते ॥ फेर एक दिन चार ब्राह्मण भूलके वा निर्जन वनमें आये तब विन ब्राह्मणको बडो सत्कार कियो और पूंछी क्युं आयेहो ॥ तब विननें कही जो हमारे गामके राजाने सब ब्राह्मण केद करेहे और कहेहें जो तुम लाखनरुपैया दानधर्मके मेरे पिताके पाससूं खायगयेहो अब मेरे पिताके

हाथको पत्र लावो जब मैं साचो मानुंगो नहींतो सब द्रव्य पाछें लेउंगो या दुःखसुं हम भाग आयेहैं तब वा स्त्रीनें कही तुमारे राजाको पितातो नरकमें पऱ्योहै मैं इहासुं बेठी बेठी देखुंहुं तुम कहोतो तुमकुं मिलायदेउं ॥ तब ब्राह्मण हाथ जोडके बोले ॥ जैसे बने तैसे मिलायद्यो तो बहुत आछो तब वा बलाईकी स्त्रीनें कही तुम आंखे मीच ल्यो तब वे चार ब्राह्मण आंख मीचके बैठे तब वा स्त्रीनें भगवत्कृपाके बलतें विनकुं यमलोकमें पहोंचाय दिये ॥ फेर वे चारों ब्राह्मण यमराजासुं कहेके वा राजाके पिताकुं मिले और सब समाचार कहेके वासुं पत्र लिखाय लियो ॥ सो वा पत्रमें लिख्यो जो जादिनतें ब्राह्मण कैद पडेहैं वा दिनतें मैं नरकमें पऱ्योहुं और तेरे द्रव्य चहिये तो अमका कोठामें अखूट खजानोहै वामेंसुं तेरे हाथनसुं जितनो काढें इतनो द्रव्य मिलेगो ॥ दूसरो मनुष्य काढेगो तो नहीं मिलेगो एसो पत्र लिखायके वे चार ब्राह्मण आंखे मीचके बैठे॥ तब वा बलाईकी स्त्रीको ध्यान कियो तो झट आंखे खोलेतो वे पर्वतकी गुफामें जाय पहोंचे और बलाईकी स्त्रीसों कही हमकुं जीवत दान तुमनें दियो ॥ तब वा बलाईनें कही ये सब प्रताप श्रीगुसांईजी श्रीविठ्ठलनाथजीको है ॥ हमतो जातके बलाईहैं हमारी छायासुं तुम छीजावोहो परंतु ये सब श्रीविठ्ठलनाथजीको प्रतापहै प्रकटनंद कुमार श्रीगोकुलमें बिराजे हैं तब वे ब्राह्मण श्रीगोकुल गये और श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ पाछें वा राजाके पास पत्र लेके गये ॥ वे बलाई

ऐंसो श्रीगुसांईजीको कृपापात्र हतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १६८ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीकेसेवक एक राजाकी वार्ता ॥

सो वा राजानें सब ब्राह्मण बंदीखाने डारे और राजानें कही जो मेरे पिताकेपास तुमनें दान पुण्यके नामसों लाखन रुपैया खायेहैं जासों मेरे पिताको पत्र लाव ॥ तब चार ब्राह्मण भाग गये सो पत्र ले आये ये बातें बलाईकी वार्तामें लिखीहै ॥ फेर वा राजाके बेटानें पत्र बांचके अखूट खजाना वा राजाके बेटानें खोल्यो सो राजाके बेटाकुं विश्वास आयो ॥ और जितनो द्रव्य चहिये इतनो काढ्यो और सब ब्राह्मणनकुं छोडदिये ॥ फेर चार ब्राह्मणनसुं राजानें पूंछी ये पत्र कैसे लाये ॥ तब वे चार ब्राह्मण बोले श्रीविठ्ठलनाथजी श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलमें विराजे हैं ॥ विनकी कृपातें लाये और विनकी कृपातें सब कारज सिद्ध भयो ॥ तब वे राजा ब्राह्मणनके संग आयके श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीको सेवक भयो ॥ और श्रीनाथजीके दर्शन किये और ब्रजयात्रा करी ॥ और भगवत्सेवा पधरायके अपने देशमें आयो ॥ और भलीभांतिसों सेवा करन लग्यो ॥ और वैष्णवनको संग करन लग्यो ॥ और वैष्णवनके संगतें और भगवत्सेवाके प्रतापतें और श्रीगुसांईजीकी कृपातें वा राजाकी बुद्धी निर्मल भई और दिव्यदृष्टी भई ॥ और वाको पिता नरकतें निकसके वैकुंठ गयो और दिव्यदृष्टीसुं देख्यो ॥ तब वे राजा भगवत्सेवा छोडके और कछु काममें चित्त न लगावतो

॥ दिवस रात भगवल्लीलाको चिंतवन करतो सो वे राजा श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १६९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक सगुणदास ति०॥

सो सगुणदास रूपसनातनके सेवक हते और व्रजमें फिरते हते ॥ और श्रीगोकुल गये और श्रीगुसांईजी ठकुरानी घाटपर विराजते हते ॥ तव सगुणदासजीनें दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये ॥तव श्रीगुसांईजी बोले सगुणदासआगें आवो ॥ तव सगुणदासनें अपनें मनमें विचाऱ्यो मोकुं कोईदिन आपनें देख्यो नहीं ॥ और जानगयेहें जासुं ये साक्षात नंदकुमारहै इनकी शरण जाउं तो ठीक ॥ तव सगुणदासनें वीनती करी महाराज मोकुं शरण लेउ ॥ तव श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी न्हाय आवो॥ तव सगुणदास न्हाय आये तव श्रीगुसांईजीनें कृपाकरके नाम निवेदन कराये तव सगुणदासजीकुं भगवल्लीलाकी स्फूर्ति भई ॥ सो श्रीमहाप्रभुजीके तथा श्रीगुसांईजीके तथा श्रीठाकुरजीके सहस्रावधी नये नये पद करके गाये सो पद ॥ इहां लिखे नहींहें ॥ सो सगुणदासजीकुं श्रीठाकुरजी जैसी लीलाको अनुभव करावते तैसे पद गावते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १७० ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक मन्नालाल और गोवर्धनदास दोउ भाईनकी वार्ता–

सो वे दोनों भाई श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीगुसांईजीनें कृपाकरके विनके माथे सेवा पधराय दीनी ॥ तब वे दोनो भाई व्रजमें रहेके

सेवा करनलगे सो श्रीगुसांईजीके इहां दर्शन करके फेर सेवा करके अपने घर आवते॥ फेर बहुत दिन व्रजमें रहेके सब रीती शीखे फेर अपने देशकुं आये॥ सो आयके अपनें घरमें सेवा करन लगे फेर इतनेमें खेलके दिन आये तब राजभोग धरके और राजभोग सरायके फेर श्रीठाकुरजीकुं खेलावन लगे तब श्रीठाकुरजीनें कही जो तुम हमकुं पेहेले खिलायके पाछें राजभोग धरो तो बहोत आछोहै ॥ तब विननें कही याको कारण कहा तब श्रीठाकुरजीनें आज्ञा करी जो जब खेल होवेंहैं तब सखा और व्रजभक्त मेरे संग खेलन आवेंहैं जब खेल चुकें और राजभोग तुर्त आवे तो व्रजभक्त जो खेलवे आवेहैं सो और सखा आये होवे सो मेरे संग भोजन करे तब मोकुं बहोत आनंद होवें और विनकुं देखके मोकुं भोजन बहोत भावे हैं तब वे सुनके दोनो भाईननें ऐंसी कही जो हम श्रीगुसांईजीकुं पूछेंगे वे आज्ञा करेंगे तैसे हम करेंगे ॥ काहेतें जो नवरत्नग्रंथमें श्रीमहाप्रभुननें कह्योहै सो वाक्य ॥ सेवाकृतिर्गुरोराज्ञा ॥ सेवाकी कृती गुरुकी आज्ञा प्रमाणें करणी ॥ तब मन्नालाल श्रीगोकुल जायके श्रीगुसांईजीसों बीनती करी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो पुष्टिमार्गमें दोनो क्रमहें सो श्रीठाकुरजीकुं रुचे ऐसेही करो तब फेर श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लेके मिन्नालाल तुर्त आयके राजभोग धरेसुं पेहेले खिलावन लगे॥ सो वे मन्नालालतथा गोवर्धनदास श्रीगुसांईजीकें ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनकुं श्रीगुसांईजीकी वाणीपर अति विश्वास हतो और श्रीठाकुरजीकुं तो

बालक समझते हते॥ ऐसे विनके निर्मल भाव हते॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव॥ १७१॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक भगवानदास भीत-रियाकी वार्ता॥ सो वे साचोरा ब्राह्मण हते॥ सो वे भग-वानदास गुजराततें आयके श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके सेवक भये॥ और श्रीगुसांईजीनें कृपा करके श्रीनाथजीकी सेवामें राखे॥ तव भगवानदासजी श्रीनाथजीकी सेवा नीकी भांतिसों करन लगे॥ शुद्ध अंतः करणसुं राजा जि-तनो डर राखते और बालक जैसी वात्सल्यता राखते और सर्वसुं अधिक स्नेह राखते॥ सो श्रीनाथजी विनके ऊपर वहोत प्रसन्न रहेते॥ एकदिन भगवानदासके देखते श्रीगु-सांईजीके संग श्रीनाथजी वातें करते हतेतव श्रीगुसांईजीने पूंछी जो श्रीनाथजीनें कहा कहीं॥ तुम समझे तव भग-वानदास हाथ जोडके वोले जो मैं तुच्छजीव कहा स-मझुं जासुं आपकी कृपा विना कैसे समझो जाय॥ तव ये सुनके श्रीगुसांईजी वहोत प्रसन्न भये॥ तव श्रीनाथजी भगवानदासजीसों वोलन लगे और सब वात जतावन लगे सो वे भगवानदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव॥ १७२॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक शेठ और विरक्तकी० सो वे दोनो श्रीगुसांईजीके संग व्रजयात्रा चले और सं-गमें वैष्णव वहोत हते॥ सो वे विरक्त वैष्णव चुकटी मा-गके निर्वाह करते॥ सो एकदिन विरक्त वैष्णवनें रसोई करी हती॥ सो वा रसोईकी मेंडपर कुत्ता निकस गयो॥

तब वानें श्रीगुसांईजीसों पूंछी॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तेरी रसोई नहीं छीगई ॥ फेर दूसरे दिन वा शेठकी रसोईकी मेंडपरसुं कुत्ता निकस गयो ॥ तव वा शेठनें श्रीगुसांईजीसों पूंछी ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तेरी रसोई छीगई॥ तब शेठनें दूसरी सामग्री मंगायके रसोई कराई ॥ फेर दूसरे दिन समयपायके वा शेठनें श्री-गुसांईजीसों वीनती करी जो हे महाराजाधिराज या वि-रक्त वैष्णवकी रसोई छिवाय न गई और मेरी छिवाय गई ॥ याको कारण कहा ॥ कुत्ता तो दोनोनकी मेंडपर सरखो निकस्यो हतो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो याके पास द्रव्य नहीं है॥ पचीस घरसुं मागलावे जब निर्वाह करे ॥ और तुमारे पास द्रव्यहै चाहे जासमय जितनी रसोई कराय सको इतनी रसोई होय इतनो ता-रतम्यहै ॥ जासुं याकी नहीं छिवाई और तुमारी छिवाई॥ तब वा शेठके मनमें जो द्रव्यको अभिमान हतो सो मि-टगयो और ये निश्चय कर्‍यो ॥ जो द्रव्य भगवदर्पण न होवे तो वा द्रव्यसुं अनर्थ उत्पन्न होवे और वा विरक्तके मनमें चिंता हती जो मेरे पास द्रव्य नहीं है सो चिंता मिटगई ॥ जो बहोत द्रव्य होतो तो मेरी कैसी बुद्धी होती तब मनमें बहोत प्रसन्न भयो और सो विरक्त और शेठ श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनकुं तत्काल ज्ञान प्राप्त भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १७३ ॥ ❋ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक मा बेटीकी वार्ता ॥

सो वे मावेटी राजनगरमें रहेती हती ॥ एकसमय श्री-

गुसांईजी राजनगर पधारे हते ॥ और वे मावेटी श्रीगुसां-ईजीकी सेवक भई ॥ तव श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तुम सेवा करो ॥ विननें कही हमारे पास द्रव्य नहीं है ॥ तव श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुम घरमें करते होवो ऐसे-ही करो परंतु मार्गकी रीतीसुं भोग धरो ॥ तव विननें वीनती करी जो वंटा भरवेके लीयें और उत्थापन भोग धरवेके लीयें हमारे पास द्रव्य नहीं है॥ तव श्रीगुसांईजी-नें आज्ञा करी वाजरी भिजायके सव काम चलावनों ॥ तव श्रीगुसांईजीनें विनके माथे सेवा पधराय दीनी ॥ तव वे भली भांतीसुं सेवा करन लगी ॥ एकदिन श्रीगुसांईजी गाममें पधारे ॥ तव रस्तामें घंटानाद भयो॥ तव आपनें पूंछी कोनको घरहै ॥ तव वैष्णवननें कही मावेटी इहां रहेहें ॥ साठ वरसकी वेटी है ॥ और पंचोतर वरसकी मा है सो वे इहां सेवा करेहें ॥ कछु विनको आचार विचार वरावर नहीं है ॥ ऐसें वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसुं कही ॥ तव श्रीगुसांईजीनें कही पहेलेतो विनको घर देखें ॥ तव श्री-गुसांईजी कृपाकरके विन मावेटीके घर पधारे ॥ तव श्री-गुसांईजीकुं पधारे देखके वहुत प्रसन्न भई ॥ तव आपनें पूंछी कहा समयहै तव वाईनें कही उत्थापन भोग सर-वेकी तैयारीहै एसी बीनती वा डोकरीनें करी ॥ तब श्री-गुसांईजी भीतर पधारे देखे तो श्रीठाकुरजी वाजरीके दाणा आरोगेंहें ॥ तव श्रीठाकुरजीनें आज्ञा करी जो आप ये प्रसाद लेवो ॥ तब श्रीगुसांईजी भोग सरायके वहार लेआये ॥ तव वे डोकरीकुं कहेके आप अरोगन-

लगे ॥ तब विनको स्नेहसुं हृदय भर आयो और मनमें समझी श्रीगुसांईजी कैसे दयालहैं ॥ तब दूसरे वैष्णव वा डोकरीसुं व्यवहार नहीं करते हते ॥ सो सबनें बाजरीके दाणा लिये और नित्य बडे बडे वैष्णव भगवदीय वा डोकरीके घर प्रसादी बाजरीके दाणा नित्य लेवे आवते ॥ जा दिन श्रीगुसांईजी उहां अरोगे वा दिनतें सब वैष्णव वा डोकरीको बहुत मुलाजो राखते ॥ सो वे माबेटी श्रीगुसांईजीकी एसी कृपापात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १७४ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक गोपालदासकी वार्ता॥

सो वे गोपालदास वडनगरा नागर हते ॥ सो वडनगरमें रहेते हते जब श्रीगुसांईजी वडनगर पधारे तब सेवक भये और श्रीठाकुरजीकी सेवा पधरायके सेवा करन लगे ॥ फेर गुजरातमेंसुं संग गयो तब गोपालदास वा संगके संग श्रीगोकुल गये और नवनीतप्रियाजीके दर्शन किये ॥ वा संगमें पांचसो मनुष्य हते ॥ सबनें राजभोगके दर्शन किये जब हो चुके तब दर्शन करके और सबनें श्रीगुसांईजीके दर्शन किये और श्रीगुसांईजीनें भोजन करके गोपालदासजीकुं जूठनकी पातर धरी ॥ तब गोपालदासनें बाहेर आयके संगवाले पांचसों वैष्णवनकुं कही ॥ सब महाप्रसाद लेउ तब वैष्णव लेवे बैठे तब श्रीगुसांईजीकी जूठनमेंसुं गोपालदासजीनें पांचसो वैष्णवनकुं पातर धरी और पांचसेंनें प्रसाद लियो तो हुं जूठन घटी नहीं ॥ फेर

गोपालदास आप लेवे बैठे तव जूठन घटे नहीं ॥ और गोपालदास उठे नहीं तव श्रीगुसांईजीनें गोपालदासजी सुं पूंछी जो कैंसे है ॥ तव गोपालदासनें वीनती करी जहांसूधी ये जूठन रहेगी तहांसूधी कैंसे उठ्यो जाय ॥ तव श्रीगुसांईजी न्हावे पधारे ॥ तव तुर्त वह जूठन घट गई तव गोपालदासजी उठे तव श्रीगुसांईजीनें कही ॥ श्रीनाथजी तुमारे मनोरथ पूर्ण करेंहें तव गोपालदासनें कही आखी विश्वकुं पूर्ण तृप्ती आप करेंहें सो मेरी कामना आप क्युं पूर्ण नहीं करे आपकी कृपासों मेरे सब काम पूर्ण हैं ॥ सो वे गोपालदासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १७५ ॥ ❋ ॥

श्रीगुसांईजीकेसेवक रणछोडदास वैष्णवकी०

सो वे रणछोडदास गुजरातमें रहते हते ॥ द्रव्यपात्र बहुत हते ॥ और श्रीठाकुरजी और वैष्णवकी सेवा भली भांतीसों करते हते ॥ और वैष्णवके ऊपर विश्वास बहुत हतो ॥ फेर एक ठग वैष्णव बनके विनके घरमें उतर्‌यो ॥ और विननें बडो आदर सत्कार कर्‌यो ॥ फेर वा ठगनें रणछोडदासको बेटा एकांतमें मार डार्‌यो ॥ और गहेनो उतार लियो ॥ और गांठडी बांधके चल्यो ॥ रस्तामें वाकुं रणछोडदास मिले ॥ तव वा वैष्णवसों कही प्रसाद लिये विना जायवे नहीं देउंगो ॥ वाकी गांटडी उठाय लीनी और हाथ पकडके लेचले ॥ फेर घरमें आयके वा वैष्णवकुं न्हवायके बैठायो ॥ और गांठडी भीतर धरदीनी ॥ ये वैष्णव मिलेविना नजाय ॥

यासुं गांठडी भीतर धरी ॥ फेर वाकी स्त्री बोली छोरो सवारको गयोहै सो आयो नहींहै ॥ वाकुं ढूंढलाव ॥ फेर घरके पाछे एक बगीचो हतो सो बगीचा रणछोड दासको हतो ॥ सो बगीचामें छोराकुं ढूंढवे गयो ॥ सो छोरातो मिल्यो नहीं ॥ एक माटीको ढगलो देख्यो ॥ मनमें आई ये माटीको ढगलो इहासुं काढडारूं तो ठीक ॥ तब माटीके ढगलेमें हाथ डाऱ्यो तो वो छोरो मऱ्यो पऱ्यो हतो ॥ देखके वाके कानमें अष्टाक्षर मंत्र कह्यो और कही उठउठ घरमें वैष्णव आयेहे विनकुं जय श्रीकृष्ण कर ॥ तब वह छोरा उठके ठाडो भयो ॥ फेर छोराकुं घरमें लायके न्हवायो और श्रीठाकुरजीके द-र्शन करवाये॥तब वे ठग रणछोडदासके पांवनपऱ्यो और कही जो मैनें ये दुष्टकर्म कऱ्यो है सो तुम क्षमा करो ॥ और मोकुं वैष्णव करो ॥ तब वा रणछोडदासनें खर्ची देके श्रीगोकुल पठायो ॥ और श्रीगुसांईजीके उपर त्र लिखदियो ॥ सो वे रणछोडदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृ-पापात्र हते ॥ जिननें बेटा जीवतो कऱ्यो॥वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव ॥ १७६ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक दोउ ठग जिननें नाराय-णदासकी स्त्रीकुं फांसी दीनी तिनकी वार्ता ॥ सो फांसीकी बात सगरी नारायणदासकी वार्तामें लिखीहै ॥ और जब नारायणदासकी स्त्री जीवती भई तब वे ठग नारायणदा-सजीके पांवन पऱ्ये ॥ तब कही हमकुं वैष्णव करो ॥ तब नारायणदासनें श्रीगुसांईजीके उपर पत्र लिख दीनो ॥

सो वे पत्रलेके ठग श्रीगोकुलआये॥ तब श्रीगुसांईजीनें
तिनको मन फिन्यो देखके तब शरण लिये ॥ और कृ-
पाकरके विनकुं पावन किये और भगवत्सेवा पधराय
दीनी ॥ तब वे ठग बडे वैष्णव भये और अत्यंत कृपा-
पात्र भये और जन्मपर्यंत नारायणदासजीको सत्संग न
छोडयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १७७ ॥ ❋ ॥ ॥

श्रीगु० सेवक एक राजाको बेटा बत्रीस लक्षणो

तिनकी वार्ता ॥ जब वे राजा वृद्ध भयो तब वाको अंत-
काल आयो ॥ तब वा राजानें अपनें बेटाकुं बुलायके
कही वा गाममें श्यामदास वैष्णव रहे हे याको सत्संग
करियो ॥ वाकेऊपर विश्वास राखेगो तो तेरो भलो होवे-
गो ॥ ऐसे कहेके वो राजा भगवच्चरणारविंदकुं पहोंच्यो
तब राजाके बेटाने वा वैष्णवकुं बुलायो और सब वात
कही ॥ फेर एकदिन वा राजाके बेटाको हाथ कट गयो॥
तब वा श्यामदासनें कही प्रभु जो करे सो भली करे ॥
और फेर एकदिन वा राजाके बेटाकी स्त्री मरगई सब
लोक कहे बुरो भयो॥ तब श्यामदासने कही प्रभु करे सो
भली करे ॥ ये सुनके वा राजाकुं गुस्सो चढयो ॥ फेर थो-
डेदिन पीछे वा राजाको बेटा मरगयो॥ तब सब लोगनने
कही बुरो भयो ॥ तब श्यामदासने कही प्रभु करे सो
भली करे ॥ तब वे राजाकुं बडो गुस्सो चढयो ॥ तब वे
राजा मनमें ये समझ्यो ये मेरे बुरेमें खुब राजीहै ॥ तब
वा राजानें विचार कियो याको छानो छानो मार डा-
रनो ॥ तब वा राजाके बेटाने नीचनकुं बुलायके कही

जो ये श्यामदास सवारे तीनबजे जलभरवे जाय है तुम याको मारडारो॥ परंतु कोई औरकुं खबर न पडेये सुनके वे नीचलोग रस्तामें बैठरहे॥ सवारे श्यामदास आवेगो तो मारेंगे ये विचार कर लीयो तब भगवदिछातें श्यामदासके मनमें ऐंसी आई जो आज दूसरे कुवापर जलभरन जाऊंतो ठीक॥ तब श्यामदास सवारे उठके जल भरने चल्यो॥ सो रस्तामें ठोकर लगी तब वा श्यामदासको पांव टूट गयो॥ तब वाकुं उठायके घरमें लाये घरमें आयके परे॥ फेर वा राजाकुं खबर परी जो जलभरवेकुं नहीं गयो॥ और पाव टूट गयोहे॥ एक दोदिन पीछे वे राजा श्यामदासके घर आयो और आयके कही तुमारा पांव टूट्यो सो बुरो भयो॥ तब श्यामदासनें कही प्रभुजो करेंहें सो भली करेंहें तब वा राजानें जानी॥ याके बोलवेको स्वभाव ऐंसो है॥ आपने बुरेमें ये राजी नहींहे॥ सब बात भली मानेहे॥ तब नित्य श्यामदासके घर आवे और श्यामदासको सत्संग करे फेर एक और बडो राजा हतो॥ सो सब राजानके पास खंडणी लेतो हतो॥ सो वा बडे राजानें वा राजाकुं बुलायो तब वा राजानें श्यामदाससुं पूंछी तब श्यामदासनें कही जावो॥ प्रभु करे सो भली करें॥ तब वे राजा बडे राजाके पास गयो॥ तव वा राजानें पंडितनकुं एकठे करके याके लक्षण तपासे॥ सो शास्त्रमें बत्तीस लक्षण कहेहे और तो सब मिले॥ एक तीन लक्षण मिले एक तो याकी स्त्री मरगई हती॥ और बेटा मरगयो हतो और आंगरी कटी हती ये तीन न मिले॥ तब वा

राजानें वाकुं कही तुमारे घर पाछा तुमारे राजपर जावो ॥ तब राजाके बेटानें पंडितनसुं पूंछी जो मोकुं बडे राजानें काहेकुं बुलायो हतो ॥ तब पंडितननें कही या राजानें पांच करोड रुपैय्या खरचके एक तलाव खोदायो है ॥ सो वा तलावमें जल नहीं निकस्यो ॥ तब पंडितनसुं वा राजानें पूंछी हती जो कैसे निकसे तब पंडितननें कही ॥ जो बत्तीस लक्षणो मनुष्य या तलावमें वध करो तो पाणी आवे ॥ तब बत्तीस लक्षणो कोई मिल्यो नहीं ॥ तब तुमकुं बत्तीस लक्षणो जानके बुलायो है ॥ जो ये मिलवेको आवेगो याकुं अजानमें तलाव दिखावे जाएंगे ॥ तब याकुं मार डारेंगे तब तलावमें पाणी आवेगो ॥ तब तुमारे लक्षण बत्तीसमें तीन घट गये हैं जासुं मरायवेकी नाहीं ठेरी है ॥ और तुमकुं घर जावेकी रजा मिली है॥ ये बात सुनके वे राजा प्रसन्न भयो और विचार कियो जो श्यामदास वैष्णवनें कही हती जो श्रीठाकुरजी करेंसो भली करें ॥ जो मेरो बेटा और स्त्री और आंगरी खंडित भई न होती तो आज मेरो जीव जातो ॥ ऐसे कहेके वे राजा उहांसुं चल्यो ॥ और गामके बहार आयके वा खाली तलावकुं देखवे गयो ॥ सब मनुष्यनकुं नीचे ठाडे किये और एकलो वा तलावकी पालपर चढगयो ॥ और अष्टाक्षर कहेके वा तलावपर दृष्टी करी ॥ तब सब तलाव भरगयो तब सब लोक देखके विस्मय होय गये॥ और पंडितनकी बुद्धीहुं विचारमें परी ॥ और कछु समजन नहीं परी ॥ कारण जो भगवन्नामको प्रताप तथा

वैष्णवधर्मको प्रताप वे पंडित जानते नहीं हते ॥ तब वा गामको राजा ये बात सुनके तुर्त उहां आयो और देखके बहुत प्रसन्न भयो ॥ तब वा राजाकुं अधिक देश दियो ॥ और राजी करके अपनें देशमें पठायो ॥ फेर वह राजा अपनें गाममें आयो ॥ और आयके श्यामदासके पावन पर्‍यो और अपराध क्षमा कराये और फेर वा श्यामदासके सत्संगतें श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लग्यो ॥ सो वा राजाके बेटापर श्रीगुसांईजीनें ऐंसी कृपा करी हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १७८ ॥ ❀ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक पुरुषोत्तमदास काशीमें रहेते तिनकी वार्ता ॥ एकसमय श्रीगुसांईजी काशी पधारे हते ॥ पुरुषोत्तमदास तथा विनकी स्त्री श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ फेर श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथरायजी पधारे तब पुरुषोत्तमदास श्रीगुसांईजीके संग आये ॥ फेर पुरुषोत्तमदासनें सखडी महाप्रसाद अरोगवायो ॥ जगन्नाथक्षेत्रमें अबसूधी वल्लभकुलके बालक पुरुषोत्तमक्षेत्रमें सब वैष्णवकेहाथको श्रीजगन्नाथरायजीको महाप्रसादसखडीको अरोगेहैं ॥ सो पुरुषोत्तमदासकी कृपासुं अबसूधि रीती चलेहैं ॥ फेर श्रीगुसांईजी काशी होयके श्रीगोकुल पधारे और सब खटला लेके पुरुषोत्तमदास श्रीगुसांईजीके संग आये और श्रीगोकुलमें रहे ॥ और श्रीगुसांईजीके सुखसुं कथा सुनते ॥ एकदिन पुरुषोत्तमदासनें श्रीगुसांईजीसों पूछ्यो जो मरियादामार्गमें और पुष्टिमार्गमें भेद कहा ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी मरियादा मार्गमें साधन और क्रिया

और कर्मवल और कर्मके फलकी इच्छा और साधनकी मुख्यता जाको नाम मरियादामार्ग है ॥ और पुष्टिमार्गमें स्नेहपूर्वक कृष्णसेवा मुख्यहै और भगवदीयको सत्संग और केवल भगवदनुग्रहको वल और केवल निःसाधनपणो और भगवद्धर्म मुख्य ॥ तब लौकिक वैदिक लोगनके दिखायवेके लीयें करेहें मुख्यता भगवद्धर्मनकोंहे सो पुष्टिमार्ग कहिये ॥ ये सुनके पुरुषोत्तमदास वहोत प्रसन्न भये और सिद्धांत रहस्य इत्यादि ग्रंथ अभिप्राय सहित श्रीगुसांईजीके पास सीखे ॥ और श्रीठाकुरजी पधरायके भगवत्सेवा करन लगे ॥ और जो भगवद्रससंबंधी वातें अष्टप्रहर श्रीगुसांईजीसुं सुन्योकरते एकदिवस पुरुषोत्तमदासनें पूछी जो श्रीठाकुरजी पीतांवर काहेकुं धरतेंहें और श्रीस्वामिनीजी नीलवस्त्र काहेकुं धरतेंहें ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो श्रीस्वामिनीजीको गौरवर्ण है कंचन जैसो ॥ ताविना श्रीठाकुरजीसों रह्यो नहीं जायहै ॥ श्लोक ॥ रूपंतवैतदतिसुंदरनीलमेघप्रोद्यत्तडिन्मदहरंव्रजभूषणांगि ॥ एतत्समानमिति पीतवरंढुकूलमूराबुरस्यपिबिभर्तिसदासनाथः ॥ १ ॥ यातें पीताम्बर धरेहें और श्रीठाकुरजीको श्यामवर्ण है ॥ शृंगाररसरूपहैं जामें अगाध रस भऱ्योहै ॥ या स्वरूपविना श्रीस्वामिनीजी रही न सके ॥ जासुं यातें श्रीस्वामिनीजी नीलाम्बर धरें हें ये सुनके पुरुषोत्तमदास या रसमें मग्न होयगये ऐसी कितनी बात पुरुषोत्तमदासकी लिखें ॥ कोई दिन श्रीगुसांईजीके चरणारविंद छोडके

कहुं जाते नहीं ॥ सो वे पुरुषोत्तमदास ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १७९ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक वेणीदासकी वार्ता ॥

सो वे वेणीदास पूर्वके संगमें श्रीगोकुल आये और श्रीगुसांईजीके दर्शन किये ॥ सो साक्षात् कोटिकंदर्पलावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम ऐसे स्वरूपके दर्शन भये ॥ तब वेणीदासनें ऐसो विचार कियो इनके शरण जईये तो बहोत आछो ॥ तब श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ और श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये ॥ तब भगत्स्वरूपको ज्ञान भयो ॥ तब श्रीनाथजीके दर्शन किये ॥ तब वेणीदासकुं देहानुसंधान रह्यो नहीं ॥ दो घडी पाछे स्मृती आई तब वेणीदासकुं श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो श्रीनाथजीके दर्शन किये तब वेणीदासनें वीनती करी ॥ जो आपकी कृपातें श्रीनाथजीनें दर्शन दिये ॥ जीवकि कछु सामर्थ्य नहींहे ॥ श्रीनाथजी आपके वशमें है ॥ आपकी इच्छा होवे जिनकुं श्रीनाथजी दर्शन देवें ॥ फेर वेणीदासनें वीनती करके श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराई ॥ और भगवत्सेवा करन लगे ॥ सो बहोत दिन पर्यंत श्रीगुसांईजीके पास रहे ॥ और पुष्टिमार्गकी रीती शीखे ॥ फिर वेणीदास आज्ञा मागके अपनें देशकुं चले ॥ सो रस्तामें एकदिन बरसाद बहोत पडयो और गाममें जग्या ढूंढवेकुं गये सो एक बडी जग्या हती उहां वेणीदासजी उतरे और श्रीठाकुरजीकी सेवा करी और महाप्रसाद लिये फेर रातकुं वेणीदासजी भगवद्वार्ता कर चुके ॥ तब

देखे तो एक वडो प्रेत ठाडो है ॥ तब वाकुं पूछी तुं कोण है ॥ तब वानें कही जो मैं प्रेतहुं ॥ इहां जो कोई आयके उतरे है सो पाछे जाय नहीं ॥ सो मैं वहोत वखतको ठाडो हुं ॥ परंतु तेरे ऊपर मेरो दाव चले नहीं है ॥ तब वेणीदासजीकुं दया आई सो वाके ऊपर जल छांटयो ॥ तब वा प्रेतकी प्रेतयोनी छूटी और दिव्य देह होय गई ॥ और वेणीदासजीकुं हाथ जोडके प्रेतनें कही ॥ जो तुं धन्य है मेरी प्रेतयोनी छुडायके मेरो कल्याण कियो अब मैं तेरी कृपातें वैकुंठकुं जाउंगो और मेरी प्रेतयोनी छुडायवेकुं कोई समर्थ नहीं हतो ॥ ऐसे कहेके और वेणीदासजीकुं दंडवत करके वो प्रेत वैकुंठ गयो ॥ तब वेणीदास अपने देशमें जायके श्रीठाकुरजीकी सेवा भलीभांतिसों करन लगे ॥ सो वे वेणीदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १८० ॥❀

श्रीगुसांईजीके सेवक हंसहंसनीकी वार्ता ॥

एकदिन श्रीगुसांईजी बद्रिकाश्रम पधारे हते ॥ उहां निर्जन बन हतो और मानससरोवर हतो और हंस बहुत हते ॥ वाईदिन कोई जीव शरण न आयोहतो ॥ यातें श्रीगुसांईजीनें भोजन न किये ॥ तब चाचाहरिवंशजी पांचदश हंस पकडलाये ॥ और श्रीगुसांईजीनें विनकुं नाम सुनाये और छोडदिये और महाप्रसाद धराये ॥ तब तें विन हंसननें महाप्रसाद लिये ॥ जब आगले जन्मकी स्मृती भई ॥ और भगवल्लीलाकी स्फूर्तीभई ॥ फेर श्रीगुसांईजी उहांतें पधारे जब वा तलावपर कोई वैष्णव आ-

वतो वाके पास हंस आयके बैठते ॥ और दूसरेके पास नहीं आवते ॥ और कोई देशमें एक राजाहतो वाकुं कोढ़ भयो सो बहोत भयो ॥ कोई उपायसुं मिटे नहीं ॥ तब कोई वैद्यनें कही जो हंसनको रुधिर चोपडे सों मिटेगो ॥ तब राजानें पारधीलोगनकुं बुलायके कही जो हंसलावेगो वाकुं लाखरुपैय्या इनाम देउंगो॥ तब पारधी वा देशमें हंस पकडवेके लीयें गये परंतु हंसतो हाथमें आवें नहीं ॥ बहोत प्रयत्न किये और बहोत दिन उहां रहे ॥ एकदिन एक वैष्णव उहां आयो वाकुं देखके हंस वाकेपास आये ॥ सो ये बात पारधीनें देखी तब दूसरेदिन पारधी वैष्णवबनके उहां गयो ॥ तब वे हंस वैष्णव जानके वाकेपास आये तब वानें पकडलिये तब वा राजाकुं लाय दिये और लाखरुपैय्या इनामके लेगयो ॥ तब श्रीठाकुरजीनें विचारी जो मेरे भक्तको दुःख मैं कैसें सहुं तब श्रीठाकुरजी वैद्य बनके बजारमें आये जे कोई रोगको औषध पूछे तब श्रीठाकुरजी वाकुं औषध देवे तब तत्काल वाको रोग मिटजाय ॥ ऐसें दोचार घडीमें सैंकडे मनुष्यनके रोग मिटगये॥तब वा वैद्यको यश बहोत फैल्यो फेर वा वैद्यकुं राजाकेपास लेगये ॥ तब वैद्यनें कही मैं अबी थोडो औषध देउंगो॥ थोडो कोढ मिटेतो आखो शरीर पर पीछे लगाउंगो ॥ फेर औषध दिये थोडा शरीरपर लगायो तब थोडो शरीर निर्मल भयो ॥ तब राजा उठके पांवन पऱ्यो ॥ और कहीजो सब कोढ मिटाओ तो जो मागो सो देउंगो ॥ तब श्रीठाकुरजीनें

कही हंसनकुं छोडदेउ ॥ तव वा राजानें छोड दिये ॥ तव श्रीठाकुरजीनें औषध लगायके सब कोढ मिटायो॥ फेर वा राजानें कही तुम मनुष्य नहींहो देवहो के ईश्वरहो ॥ सो मैं जानत नहींहुं ॥ और कृपा करके जनावो तो ठीक ॥ तव श्रीठाकुरजीनें कही तुम श्रीगोकुलमें जायके वैष्णव होवो तव मोकुं पहेचानोगे ॥ तब वह राजा श्रीठाकुरजीके वचन सुनके श्रीगोकुल जायके श्रीगुसांईजीके सेवक भये॥और वैष्णवको सत्संग करके श्रीगुसांईजीकी कृपाते भगवत्सेवा करन लगे ॥ तब धीरे धीरे श्रीठाकुरजीनें अपनो स्वरूप वा राजाकुं जनायो ॥ सो वे हंसहंसनी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते॥ जिनकुं श्रीठाकुरजी वैद्य बनके छुडाये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १८१ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक पारधीकी वार्ता ॥

सो वह पारधी राजाके पास लाख रुपैया लेगयो ॥ और श्रीठाकुरजीनें वैद्य बनके विन हंसनकुं छुडाये ॥ तव वा पारधीनें विचार कियो जो वैष्णवधर्म सबते श्रेष्ठ है॥ मैने वैष्णवको वेष पेहेर्‍यो तो हंस पकडाये ॥ और हंसनकुं श्रीठाकुरजीनें छुटाय दिये ॥ ये विचारकरके वह पारधी वैष्णव होयवेके लीयें श्रीगोकुलमें जायके श्रीगुसांईजीके शरण गयो॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तूं कैसे निर्वाह करेगो ॥ तब वानें हाथ जोडके वीनती करी जो महाराज मैंने वैष्णवको झूठो वेष पेहेर्‍यो हतो तो मोकुं लाख रुपैय्या मिले अब वैष्णवको साचो वेष पेहरुंगो तो श्रीठा-

कुरजी कहा नहीं देवेंगे ॥ ये सुनके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये॥और वा पारधीकुं शरण लियो और श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन कराये ॥ और वाके माथे भगवत्सेवा पधराई ॥ और कृपा करी तब वह पारधी मार्गकी रीतीप्रमाणें सेवा करन लग्यो ॥ तब थोडे दिन पीछे श्रीठाकुरजी वा पारधीकुं अनुभव जतावन लगे ॥ और तब बहुत दिन वा पारधीनें सेवा करी ॥ और द्रव्य जितनो हतो सब श्रीगुसांईजीकुं भेटकर दियो ॥ वे पारधी श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र हतो॥वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव॥१८२॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव जानें भैरवकुं तुच्छ गण्यो तिनकी वार्ता ॥ सो वे वैष्णव आगरेसुं सामग्रीके दोय गाडाभरके गोपालपूर लावतो हतो ॥ रस्तामें भैरवको मंदिर आयो ॥ वाके पास गाडा ठाडे रहे ॥ सो गाडावालाननें कही जो इहां दो नारियल चढावो जब गाडा चलेंगो सब लोग चढावेहें ॥ तब वा वैष्णवने भैरवके मंदिरमें जायके कही तेनें गाडा क्युं अटकाये हें गाडाचलनेदे ॥ नहीं तो गाडानके बैलके ठेकाणे तोकुं जोडुंगो ॥ तब भैरव उठके हाथ जोडके ठाडो भयो और कही जो मेरी सामर्थ्य तुमारे गाडा अटकायवेकी नहींहै परंतु तुमारे दर्शनकी अभिलाष मोकुं हती और श्रीनाथजीके प्रसादकी अभिलाष है ॥ जासुं इहां गाडा ठाडे राखेहै नहींतो श्रीनाथजीके गाडा तीनलोकमें अटकायवेको समर्थ कोई नहींहे ॥ तब वा वैष्णवनें श्रीनाथजीको प्रसाद गांठडीमेंसुं काढके भैरवकुं दियो ॥

तब भैरवनें प्रसाद लियो फेर भैरव गाडाकी धुरीमें बैठके एक घंटामें गोपालपुर गाडा पहोंचाय दिये ॥ तब वे गाडाके मनुष्यननें ऐसो जाण्यो विननें नारियल दिये होएंगे ॥ ये वात श्रीगुसांईजीनें सुनी तब श्रीगुसांईनें आज्ञा करी जो भैरवकुं नारियल दियो होयतो ये सब सामग्री छीगई ॥ तब वा वैष्णवनें श्रीगुसांईजीके आगें आयके यथार्थ वीनती करी ॥ जो महाराज भैरवनें महाप्रसाद माग्यो और मैंनें दियो नारियल दिये नहींहै ॥ और गाडामें जोडके भैरवकुं लायोहुं सो अबी वह भैरव बहार ठाडोहै ॥ श्रीनाथजीके मंगलाके दर्शन करके जायगो ॥ ये सुनके श्रीगुसांईजी वहोत प्रसन्न भये और सामग्री भंडारमें धरवेकी आज्ञा दीनी ॥ सो वे वैष्णव श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र हतो ॥ जिननें भैरवकुं तुच्छ जाण्यो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १८३ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव सूरतमें रहेतो

तिनकी वार्ता ॥ सो वे वैष्णव प्रतिवर्ष व्रजयात्रा करवेकुं आवते ॥ और श्रीनाथजीके दर्शन करके और व्रजयात्रा करके फेर जाते ॥ और व्रजकी हांडी राखते सो नित्य वेकिंवे राखते रसोई करके धोयके और कामलमें बांधके वृक्षसुं लटकावते ॥ एकदिन श्रीगुसांईजीसों वैष्णवननें कही जो ये वैष्णव अनाचार मिलावेहै ॥ तब वा वैष्णवकुं श्रीगुसांईजीनें पूंछी जोये सब कहा कहे है ॥ तब वा वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी हे महाराज ये सगरे बाहिर दृष्टि है ॥ व्रजके स्वरूपको नहीं जानें हैं

तो हुं आपकी कृपातें इनकुं व्रजको स्वरूप दिखाउंहुं ॥ इतनो कहेके वा वैष्णवनें सबनकुं व्रजको स्वरूप दिखायो ॥ तब सब वैष्णव देखेंतो सब व्रज सुवर्णमय दीखवे लग्यो ॥ तब सब वैष्णवनकुं श्रीगुसांईजी कहने लगे ॥ याने व्रजकी रजको स्वरूप जान्यो है ॥ जासुं याकुं कछु दोष नहीं है ॥ ये सामर्थवान हैं ॥ याकुं कछु बाधा नहीं है तुम ऐसे मत करो ॥ ये सुनके सब वैष्णव वाकुं धन्य धन्य कहेनलगे ॥ सो वे वैष्णव श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र हतो ॥ जिननें व्रज सुवर्णमय दिखाय दीनी ॥ व्रजकी रजकी हांडी सुवर्णमय जानके काढते न हते ॥ ऐसे परम भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ १८४ ॥ ❀॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक राजाकी वार्ता ॥

सो वे राजा श्रीगुसांईजीके सेवक हते ॥ सो वे राजा श्रीठाकुरजीकी सेवा भलीभांतिसुं करते ॥ तब वैष्णव बहोत आवते ॥ तब वैष्णवनसुं राजा पूछतो जो गृहस्थको धर्म आछोके विरक्तको धर्म आछो ॥ तब वे राजा सबकुं पूछतो परंतु राजाको संदेह नहींजातो ॥ जैसें बने तैसें वैष्णव उत्तर देजाते हते ॥ परंतु फेर पूछते ॥ एकदिन अद्भुतदास भगवदिच्छातें वा राजाके घर आये तब वा राजानें अद्भुतदासजीसुं पूछी ॥ तब अद्भुतदासनें कही जो दोचार दिनमें इहां रहुंगो और तुमकुं कहुंगो ॥ परंतु तुम घोडापर बैठके या गामसुं दूर पांच सातकोश एक वैष्णवहे विनकुं मिल आवो ॥ तब वे राजा घोडापर

बैठके वा वैष्णवकुं मिलवे चल्यो ॥ रस्तामें जाते पवन चल्यो ॥ सो घोडा कहुंको कहुं चल्यो गयो ॥ रात परी तब वह राजा उहां एक वृक्षके नीचे बनमें रह्यो ॥ तब वा वृक्षके ऊपर होलाहोली दो पक्षी रहेते हते सो बचानके लीयें फल लाये हते और वा वृक्षपर फल बहोत हते ॥ फेर वा राजाकुं आयो देखके वा होलानें कही जो आपने घर पावनो आयो है सो याकुं ये फल देउंगो ॥ और दोनो स्त्री पुरुषननें विचार करके फल दे दिये और वृक्षके ऊपर जायके सर्व फल पाडडान्ये॥ तब वा राजानें फल खाये ॥ और होलाहोली सूखे रहे और सवारो भयो तव राजा घोडापर बैठके चल्यो ॥ सो एक नगर आयो वामें गयो उहां जायके देखे तो सब राजा येकठे भयेहैं और वा गामके राजाकी बेटीको स्वयंवर हतो सो तेलकी कढाई चढाई हती ॥ वामेंसुं सुदरी जो काढे वाकुं कन्या देनी ॥ ऐसे वा राजानें नेम लियो हतो ॥ सो ताते तेल ठंडो करके अथवा कोई दूसरे उपायसुं उघाडो हात डारके सुदरी काढी चहीये ॥ नीचे आंच बलती हती ॥ सो तेल ठंडो होय नहीं शकतो ॥ जासुं सब राजा अटकरहे हते ॥ विनमें वो राजाहु बैठ रह्यो ॥ इतनेंमें अद्भुतदासजी आये और वा तेलकी कढाईमें हाथडारके सुदरी काढलीनी ॥ तब सब लोग देखके चकित होयगये ॥ और वा गामके राजानें कही तुम मेरी कन्या परणो॥तब वा अद्भुतदासनें कहीजो ये राजा अमके गामको है याकुं तेरी बेटी परणायदेवो ॥ फेर अद्भुतदास

चले गये ॥ तब वो राजा विवाह करके अपनें घर आयो फेर अद्भुतदास मिल्ये तब अद्भुतदासनें वा राजासुं पूछी तुम घोडेपर बैठके गये हते सो कहा कहा देखे ॥ तब वा राजानें सब बात कही ॥ तब अद्भुतदासजी बोले जो वो होली होलामें गृहस्थके धर्म हते ॥ गृहस्थको ऐंसेही चहिये ॥ जो घरमें आवे विनकुं भूखे न राखे ॥ आप भूख्यो रहे और विरक्तके धर्म ऐंसे हैं जानें तेलमेंसुं सुदरी काढी हती ऐंसे चहिये और तुमको राजाकी कन्या परणाय दीनी ॥ आप दुःखपायके औरकुं सुखी करे सो ये दोनो धर्म तुमकुं दिखाय दिये ॥ तब वे राजा सुनके बहोत प्रसन्न भयो और भली भांतिसुं श्रीगुसांईजीकी सेवा करन लग्यो ॥ और श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लग्यो ॥ वे राजा श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जाकुं तत्काल विश्वास आय गयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥१८९॥*॥

॥ **श्रीगुसांईजीके सेवक जीवनदास ब्राह्मणकी** वार्ता ॥ सो लाहोरमें रहेते हते सो वे जीवनदास हरिद्वारमें श्रीगुसांईजीके सेवक भये हते ॥ तब श्रीठाकुरजीकी सेवा पधरायके लाहोरमें रहेते और भगवत्सेवा करते और कहुं बाहार जाते आवतेनहीं ॥ सो वाकी निंदा ज्ञातीके लोग वृथा करते ॥ ऐंसे बहुत वर्ष पीछे वा जीवनदासकी देह छूटी ॥ फेर लोगननें वाकुं अग्नि संस्कार कर्यो ॥ सो एक वृक्षके नीचे कर्यो ॥ और वा वृक्षके ऊपर दो प्रेत रहेते हते ॥ सो एक प्रेत तो वाईसमय कहूं गयो हतो ॥ और एक प्रेत वा वृक्षपर बैठो हतो ॥

सो वा प्रेतकुं जीवनदासकी चिताको धूवां लग्यो ॥ तब प्रेतयोनिसुं छूटके और दिव्य देह पायके वो प्रेत स्वर्गमें गयो ॥ और दूसरो प्रेत आयो और वानें ये बात जानी तब वो रोवन लग्यो और हाय हाय करके पुकारन लग्यो ॥ तब वा रस्ता ऊपर एक पंडित ब्राह्मण जातो हतो ॥ तब वा पंडितने वा प्रेतकुं रोवतो देख्यो तब वा पंडितनें पूछी जो तुं कोन है ॥ और क्युं रोवे है तब वा प्रेतनें कही जो ब्राह्मण तूं मेरी बात सुन ॥ में प्रेतहुं और एक प्रेतको उद्धार भयो है ॥ सो बात कही ॥ और मेरो उद्धार नहीं भयो यातें दुःखपावुंहुं ॥ तब वा ब्राह्मणनें कही ये बात साची कैसे मानी जाय ॥ तब वा प्रेतनें कही जो तुं या चितामें दोचार लकडी डारदे सो वा चितामेंसुं धूवां मोकुं लगेगो तो मेरो उद्धार हो जायगो ॥ तव वा ब्राह्मणने वैसेंही कर्‌यो ॥ तब वो प्रेत जयजय करतो दिव्यदेह धरके वा जीवनदासकी स्तुती करतो स्वर्गमें गयो ॥ तब वा ब्राह्मणनें देख्यो वा ब्राह्मणकुं बडो विस्मय भयो ॥ तब गाममें आयके वा ब्राह्मणनें खबर काढी जो आज कोण मर्‌यो हतो जब वाकुं खबर परी जीवनदासकी देह छूटी है ॥ तब वा ब्राह्मणनें खबर काढी कोनसे धर्ममें हतो ॥ तब वैष्णव हतो ऐसी खबर परी ॥ तब वह ब्राह्मण अपनें कुटुंबसहित श्रीगोकुलमें जायके वैष्णव भयो॥ सो वे जीवनदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनकी चिताके धूवां लागतें प्रेतनकी दिव्य देह भई ॥ वार्ता संपूर्ण वै० ॥ १८६ ॥ ❋

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक लाहोरको पंडित तिनकी० ॥ सोवे ब्राह्मण जीवनदासके चरित्र देखके श्रीगोकुल आये ॥ और कुटुंबसहित श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ और नवनीतप्रियाजीके दर्शन किये ॥ और श्रीनाथजीके दर्शन किये ॥ और श्रीगुसांईजीके मुखारबिंदतें पुष्टिमार्गको सिद्धांत समझ्यो ॥ और श्रीठाकुरजीकी सेवा पधरायके और व्रजयात्रा करके फेर अपनें देशमें गये। और भलीभांतिसुं मार्गकी रीतीप्रमाणें सेवा करन लग्ये ॥ एक दिन एक मनुष्य हत्यारो भिक्षा मागवे आयो ॥ सो वह ब्राह्मण हतो ॥ तब वानें पुकार्‍यो राधाकृष्ण राधाकृष्ण तब वे वा ब्राह्मण वैष्णवने वाकुं बुलायके भोजन करायो ॥ तब वा पंडितको ज्ञातीके लोग और दूसरे पंडित सब एकठे होयके वा वैष्णव पंडितकुं कही तुमनें हत्यारेको स्पर्श क्युंकर्‍यो ॥ तब वा पंडितनें कही यानें कृष्णनाम लियो है ॥ याकीहत्त्या रही नहीं ॥ तब दिन्न पंडितननें कही जो हम ये बात नहीं मानें तब वा वैष्णव पंडितनें कही तुम शास्त्र पढे हो ॥ परंतु तुमारो हीयेको अंधारो गयो नहींहे सो वाकुं दूर करो तब साच मानोंगे ॥ तब पंडितननें कही जो हरिद्वारमें श्रवणनाथ महादेवजी हैं सो वाको नंदीश्वर याके हातको खावेतो साचो मानेंगे ॥ तब वे वैष्णव पंडित और सब दूसरे पंडित मिलके हरिद्वार आये ॥ और नंदीश्वरके आगें वा हत्यारेनें प्रसादको थाल धर्‍यो और वैष्णव पंडित बोल्यो जो याकी हत्त्या कृष्णनाम लियेसुं गई होवे तो याके

हाथको भोजन करो तब वह नंदीश्वर महादेवजीको वाहनसो महाप्रसाद खायवे लगगयो ॥ तब वह सब पंडित वा वैष्णव पंडितके पावन परे ॥ सो वे ब्राह्मण श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र हतो ॥ जिनके कहेतें नंदीश्वरनें तुर्त भोजन किये ॥ और जिनके दर्शनसुं हत्यारेकी हत्त्या गई सो वे पंडित वैष्णव ऐसे श्रीगुसांईजीके कृपापात्र भये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १८७ ॥ ❀ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक विरक्तवैष्णवकी वार्ता॥

सो वे विरक्त वैष्णव चुकटी मागके निर्वाह करतो ॥ और नित्य श्रीगिरिराजकी परिक्रमा करतो ॥ फेर वाके पास दोय वैष्णव दूसरे आयके रहे ॥ सो वे विरक्त वैष्णव चुकटी मागके रसोई करके और दोनोनकी पातर धरते ॥ एकदिन वा विरक्त वैष्णवकुं श्रम बहोत भयो और थाक गयो तब वाको श्रम श्रीनाथजी सहन न कर सके ॥ तब तिन दोनो वैष्णवनकुं श्रीनाथजीनें आयके कही जो तुम दोनो रसोई करो और ये विरक्त वैष्णव चुकटी माग लावेगो ॥ तब वे दोनो रसोई करन लागे ॥ और तीनोजने हिलमिलके महाप्रसाद लेते ॥ सो विरक्त वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनको श्रम श्रीनाथजी सही न सके ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १८८ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक भीमसेनराजाकी वार्ता।

सो वे भीमसेनराजाकुं और भीमसेनकी स्त्रीकुं पूर्व जन्मको ज्ञान हतो और भीमसेनराजाकुं श्रीठाकुरजीनें स्वप्नमें कही जो तुम तीर्थयात्रा जावो ॥ और तुमकुं जो

पूर्वजन्मकी बात कहे विनके शरण जइयो ॥ ये सुनके भीमसेनराजा बडो प्रसन्न भयो ॥ तब भीमसेनराजा तीर्थकरनेकुं चल्यो ॥ तब जा तीर्थमें जाय उहां कोई पंडित अथवा महापुरुष होवेतो वाकुं तुर्त जायके मिलते ॥ परंतु पूर्वजन्मकी बात कोई कहेतो नहीं ॥ फेर बहुत तीर्थ करके राजा भीमसेन श्रीगोकुल आये और आयके श्रीगुसांईजीके दर्शन किये ॥ सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये ॥ तब भीमसेननें दंडवत करी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो भीमसेनजी तुम प्रसन्न हो ॥ और तुमकुं पूर्वजन्मकी बात पूछनीहै सो हम कहेंगे ॥ तब भीमसेनराजानें श्रीगुसांईजीकुं हाथ जोडके वीनती करी ॥ जो महाराज बात कहेवेकी कछु जरूर नहींहे ॥ आप हमकुं शरण लेवें ॥ तब श्रीगुसांईजीनें श्रीनवनीतप्रियाजीके सन्निधान दोनो स्त्रीपुरुषकुं नाम निवेदन कराये ॥ तब राजा भीमसेन श्रीगुसांईजीकी बैठकमें गये ॥ और एकांतमें श्रीगुसांईजीनें भीमसेनके पूर्वजन्मकी वात कही॥ जो आगले जन्ममें तुम कुणबी हते और खेती करते हते॥ और एक बनियाकी स्त्रीको और तुमारो स्नेह हतो ॥ तब वे स्त्री तुमारेपास खेतमें आवती हती ॥ सो वा खेतमें खोदतें एक भोंयरो निकस्यो ॥ वा भोंयराकुं वा स्त्रीनें और तुमनें झाडके सफा कऱ्यो ॥ वामेसुं एक ठाकुरजीको स्वरूप निकस्यो और वा स्वरूपकी सेवा तुम दोनोमिलके करन लगे ॥ फेर एकदिन अकस्मात् भोंयरो पडगयो ॥ जब तुम दोननकी देह छूटी ॥ तब तुमकुं यमदूत लेवेकुं आये फेर विष्णुदूतननें आयके तुमकुं छुडाये ॥ तब य-

मदूतननें कही जो यानें व्यभिचार कियो है याकुं यम-
लोकमें ले जाएंगे ॥ तब विष्णुदूतननें कही जो यानें भ-
गवदमंदिर मार्जन कियो है ॥ तब यमदूत तुमकुं छोड-
गये ॥ तब तुमनें राजवंशमें जन्म लियो और या स्त्रीनेंहु
राजवंशमें जन्म लियो और फेर स्वकीयत्व भावसुं तु-
मकुं प्राप्त भई ॥ अब तुम भगवत्सेवा करो ॥ फेर जन्म
नहीं लेने पडेंगे ॥ ये सुनके राजा भीमसेन बहोत प्रसन्न
भयो ॥ और आगले जन्मकी सब बात मिलगई ॥ तब
राजा भीमसेन श्रीठाकुरजीकी सेवा पधरायके और श्री
नाथजीके दर्शन करके और पुष्टिमार्गकी रीती शीखकें
फेर अपने देशमें आये ॥ और श्रीठाकुरजीकी सेवा भ-
लीभांतिसुं करन लगे ॥ सो वे भीमसेन श्रीगुसांईजीके
ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १८९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक उत्तमदासकी वार्ता ॥

सो उत्तमदास गुजरातमें रहेते हते ॥ और उत्तमदासके
पास द्रव्य नहीं हतो ॥ भगवदिच्छातें विनके पास थोडो
द्रव्य भयो ॥ तब उत्तमदासनें हजार रुपैय्याको परका-
लो लियो और श्रीगोकुल जायके श्रीगुसांईजीकुं वीनती
करके श्रीनाथजीकुं जरीको परकालो अंगिकार करा-
यो ॥ और श्रीनाथजीके दर्शन करके ॥ फेर गुजरातमें
आये और परकालो लियो जाको करज रह्यो सो चुका-
यो ॥ तब घरमें उत्तमदासकुं श्रीठाकुरजीनें कही जो
मोकुं परकालाकी खोट नहीं हती तूं क्युं इतनो श्रम क-
रके लेगयो ॥ तब उत्तमदासनें बीनती करी जो महाप्रभु

आपकुं सर्व सामर्थ है ॥ और सर्वत्र सर्व वस्तु तैयार हैं ॥ जो कछु आप चाहें सो सब ठेकाने होय शके ॥ परंतु दासको धर्म सेवा विना और नहींहें ॥ जासु हमारो अंगिकार कोनसी रीतिसुं होवें ॥ तब ये सुनके श्रीठाकुरजी बहोत प्रसन्न भये ॥ और परकाला सहित श्रीठाकुरजीनें उत्तमदासकुं घरमें दर्शन दिये ॥ सो वे उत्तमदास ऐसें कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव १९० ॥ ❀ ॥

श्रीगु० सेवक जनभगवानदास और रजपूत-

की वार्ता ॥ सो वे जनभगवान व्रजमें फिर्‍यो करते और श्रीगुसांईजीकी कथा सुनते और अहर्निश भगवल्लीलाको विचार करते और श्रीगुसांईजीके सेवक विना दूसरेसुं भाषण नहीं करते ॥ और कोईदिन श्रीजीद्वार कोईदिन श्रीगोकुल फिर्‍यो करते ॥ और नये पद बनायके गावते ॥ एकसमय जन्मअष्टमी उपर श्रीनाथजीके दर्शन करवेकूं गये ॥ तब एक पद बनायके गायो ॥ सो पद ॥ ॥ राग सारंग ॥ ग्वालवधाईमागनआये ॥ गोपीगोरससकलीयेसंगसबहि आयसिरनाये ॥ १ ॥ अबयेगर्वगिनत नहिकाहुकरियतमनकेभाये ॥ जहां नंदबैठेनांदीमुखजहांगहनकोधाये ॥ २ ॥ बरनवरनपायेपटब्रजजनउरआनंदनसमाये ॥ जनभगवानजशोदारानीजगकीजीवनजाये ॥ ३ ॥ सो यह वधाई जनभगवानदासनें गाई ॥ सो श्रीगुसांईजी ये पद सुनके बहोत प्रसन्न भये ॥ सो ऐसे अनेक पद जनभगवानदासनें गाये ॥ सो वे जनभगवानदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥

॥ वैष्णव ॥ १९१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक राजाकी वार्ता ॥

जिनके गाममें साचोराकुं मार डाऱ्यो सो जीवतो भयो॥ सो वे साचोरा दोनो भाईनकुं लेके वह राजा श्रीगोकुल गयो ॥ और जायके श्रीगुसांईजीके दर्शन किये ॥ सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये वा राजानें हाथजो-डके वीनती करी जो कृपाकरके मोकुं शरणलीजिये॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुम थोडे दिन श्रीगोकु-लमें रहो पाछे तुमकुं विचार करके शरण लेवेंगे ॥ फेर श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीकुं पूछी जो या राजानें साचोरा भक्तकुं मरायो सो याकुं शरण लियो चहियेके नहीं ॥ तब श्रीनाथजीनें आज्ञा करी जो भक्तको अपराध भक्त क्षमा करे ॥ सो या साचोराको अपराध साचोरानें क्षमा कऱ्यो ॥ तब याकुं शरण लेवेमें चिंता नहीं ॥ अब याको अपराध रह्यो नहीं ॥ फेर श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे और वा राजाकुं शरण लिये ॥ फेर वे राजानें श्रीगुसांई-जीकुं वीनती करके और सेवा पधराई और श्रीगुसांई-जीसुं वीनती करी जो आप कृपा करके मेरे गाममें पधारें और सब गामकुं वैष्णव करें ॥ और ये साचोरा दोनो भाई कोईदिन मोकुं त्याग न करें ये कृपा करो ॥ तब श्रीगुसांईजीनेंवा राजासुं कही ये दोनो भाई तुमकुं त्याग नही करेंगे परंतु तुम इनको त्याग मत करियो ॥ ये सु-नके वे राजा बहोत प्रसन्न भयो ॥ और श्रीठाकुरजी पध-रायके और साचोरा दोउ भाईनकुं संग लेके अपने देश-

में आयो ॥ और आयके भगवत्सेवा करन लगे ॥ जैसे वे दोनो भाई कहे तैसे राजा करतो॥तब वा राजासुं श्रीनाथजी सानुभाव जतावन लगे ॥ सो वे राजा श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव ॥१९२॥

श्रीगुसांईजीके सेवक रेडाउदंबर ब्राह्मण ति०

सो वे रेडा कपडवनमें रहेते हते ॥ और अवधूतदशामें रहेते हते ॥ सो श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे ॥ तब रेडानें नाम निवेदन किये ॥ फेर श्रीठांकुरजी पधरायके रेडा सेवा करन लग्यो ॥ फेर थोडेदिन पीछे रेडा श्रीगोकुल जायके श्रीगुसांईजीकी खवासी करन लग्यो ॥ एक ब्राह्मणी डोकरी रहेती हती॥वाके घर रेडानें श्रीठाकुरजी पधराये और उहां प्रसाद लेते हते ॥ एकदिन रमणरेतीमें श्रीठाकुरजीनें रेडाकुं दर्शन दिये तब देखकेरेडा देहानुसंधान भूलगयो॥और श्रीठाकुरजी प्रसादीमाला रेडाकुं पेहेराय गये ॥ सो रेडा तो उहां आखीरात पडेरहे ॥ दूसरे दिन खबर परी जो रेडा रमणरेतीमें पऱ्योहै ॥ तब श्रीगुसांईजी रमणरेतीमें पधारे और रेडाकुं चरणस्पर्श कराये तब रेडाकुं देहानुसंधान भयो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी अबी लीलामें प्रवेश करवेकी ढीलहै ॥ तब रेडा पाछें श्रीगोकुल आये॥एकदिन रेडा श्रीगुसांईजीकुं पंखा करते हते ॥ तब श्रीगुसांईजी जागे और रेडाकुं आज्ञा करी तुम देशमें जायके विवाह करो॥तब रेडानें कही मेरे पास द्रव्य नहींहै ॥ कौन कन्या देवेगो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञाकरी श्रीठाकुरजीनें सब सिद्ध कर राख्योहै ॥

वाईसमय रेडा आज्ञा लेके चल्यो सो देशमें आयो ॥ कपडवनपास एक संजाई गाम है ॥ वा गाममें रेडा मुकाम कियो ॥ सो वा संजाईमें एक उदंवर ब्राह्मण रहेतो हतो ॥ द्रव्यपात्र हतो वाकी एक वारेंवर्षकी वेटी हती ॥ सो वा वेटीकुं सर्पनें काटी हती सो वे मरवे लगी ॥ तव वा ब्राह्मणनें गामके वाहेर खवर काढी कोई आछी कर जीवायदेवे तो आछो ॥ तव रेडानें वा ब्राह्मणकुं कही मेरे पास एक उपाय है तव वा ब्राह्मणनें कही सो उपाय करो ॥ तव रेडानें चरणामृत दियो और कही तुम याके मोढामें डारो तो वचजायगी सो वाके मोढामें तो कछु जातो नहीं हतो वाके होठनपर चोपडयो ॥ तव वा छोकरीको विष उतरगयो ॥ तव वा छोकरीकी मानें वाधा लीनी हती जो ये छोकरी जीवेगी तो कोई निष्कंचनकुं देउंगी ॥ तव वा ब्राह्मणनें छोकरी जीवती देखके रेडाकुं पूछी तुम कोण जातहो ॥ तव रेडानें आपणी जात वताई ॥ तव वह कन्या रेडाकुं दीनी सो रेडा परण्यो और श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लग्यो ॥ वा रेडाकुं भगवत्सेवा करते देखके सव लोग बहुत राजी होवें ॥ तव रेडाको एक पुत्र भयो ॥ फेर कोई दिन वा देशमें श्रीगोकुलनाथजी पधारे ॥ तव रेडानें आपनी जातकुं और यजमान नीमा वनीयनकुं श्रीगोकुल नाथजी के सेवक कराये सो अव सूधी श्रीगोकुलनाथजीके सेवक होवें हें ॥ फेर वह रेडाको वेटा वडो भयो ॥ तव रेडा श्रीठाकुरजी पधरायके श्रीगोकुल जाय रहे और श्रीगुसांईजीकी सेवा करन लगें

॥ फेर वा रेडाकुं रास लीलाके दर्शन होवें ॥ कोई दिन बाललीलाके दर्शन होवें ॥ ऐसे अनेक प्रकारके दर्शन श्रीठकुरजी रमणरेतीमें रेडाकुं देते हते सो रेडा श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १९३ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक पर्वतसेन हते तिनकी वार्ता ॥ सो वे पर्वतदासके मनमें ऐसो हतो जो श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीके साक्षात् स्वरूप हैं ॥ परंतु ऐसे दर्शन होवे तो बहुत आछो ॥ एक दिन बैठकमें श्रीगुसांईजी बीराजते हते और पर्वत सेनकु आज्ञा करी जो चंदन लगावो तब वा पर्वतसेननें श्रीगुसांईजीकुं चंदन समर्प्यो तब श्रीगुसांईजीके रोमरोममें पर्वतसेनकूं श्रीनाथजीके दर्शन भये ॥ तब पर्वतसेननें विचार कर्‍यो मोकुं स्वप्नहैं केकहाहै ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो पर्वतसेनजी तुमकुं कहा संदेहहै ॥ तब पर्वतसेननें कही जो आपकी कृपातें सब संदेह मिट्यो ॥ तब वा पर्वतसेनके मनके संदेह दूर भये ॥ और लीलाको अनुभव भयो ॥ और नवे पद करके गायवे लगे ॥ सो ऐसे करके नवे पद गाये ॥ सो वे पर्वतसेन श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १९४ ॥ * ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक सासु वहु तिनकी वार्ता॥ सासुको नाम जमनाबाई और वहुको नाम रेवाबाई हतो सो वहु भोरी बहुत हती ॥ एक समय जमनाबाईको बेटा गाम जायवे लग्यो ॥ और मासुं कही जो दोचार दिनमें श्रीगुसांईजी पधारेंगे ॥ याकुं नाम निवेदन कर-

वाईयो ॥ ऐसे कहेके वाको वेटा परदेश गयो ॥ तव श्रीगुसांईजी पधारे ॥ तव वे जमनावाई वहुकु लेके श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं गई और श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी ॥ याकुं नाम सुनावो ॥ और वहुसुं कही जो श्रीगुसांईजी कहें सो कहियो ॥ तव श्रीगुसांईजीन आज्ञा करी वहु वैठ तोकुं नाम सुनावें ॥ तव वहु वोली वहु वैठ तोकुं नाम सुनावें ॥ ये सुनके श्रीगुसांईजी हंसे और जान्यो जो ये वहुत भोरी है ॥ तव श्रीगुसांईजी उठके वाके पास आयके तीनें वेर अष्टाक्षरमंत्र कह्यो ॥ और वहुनें अष्टाक्षर मंत्र कह्यो वहुकुं अत्यंत भोरी जानके वाईसमय श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी याकुं न्हवाय लावो ॥ तव न्हवाय लाये तव श्रीगुसांईजीनें श्रीठाकुरजीकुं शृंगार करके निवेदन कराये ॥ और वाकी सासुकुं कही अव श्रीठाकुरजीकी सेवा याके पास कराईयो ॥ तव सासुनें कही ये तो वहुत वावरी है ॥ कहा सेवामें समझेगी ॥ तव श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो श्रीठाकुरजी आप सिखाय लेवेंगे फेर दूसरे दिन वा जमनावाईकुं अटकाव आयो ॥ तव वहुकुं कही तुम सेवा करियो ॥ और में नदीपर जाउंहुं सो वहु सेवामें न्हाई और मंदिरमें गई ॥ सो कछु सेवामें समझे नहीं ॥ तव श्रीठाकुरजीकुं जगाये॥ तव श्रीठाकुरजी कृपाकरके सब रीत सेवाकी सिखावन लगे ॥ सो झारी उठावनी और माझनी रसोई करनी भोगधरनो शृंगारकरनो और प्रसादी अणप्रसादी अणप्रसादीको विचार श्रीठाकुरजीनें वा वहुकुं सब शिखायो॥

तब वा बहूनें श्रीठाकुरजीसुं कही जो कसरपडेगी तो मेरी सासु खीजेगी ॥ तब मैं रिसायके पीहर जाउंगी ॥ तब श्रीठाकुरजीनें कही जो नहीं खीजेगी ॥ ऐसें चार दिनपर्यंत वा बहूनें सेवा करी ॥ फेर पांचमेंदिन सासु सेवामें न्हाई तब वा जमनाबाईकुं शृंगार करते नींदको झोको आयो ॥ तब श्रीठाकुरजीनें स्वप्नमें कही जो मोकुं शृंगार बहूके हाथको बहुत आछो लगेहे ॥ तब वा जमनाबाईनें बहूकुं बुलायके शृंगार करवे बैठाई ॥ और आप रसोईकी सेवा करनलगी ॥ तब वा बहूंसो श्रीठाकुरजी हास्यविनोद करते और सब बातें जतावते ॥ सो वे सासु बहू श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १९५ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक मानकुंवरबाईकी वार्ता॥

सो वह शेठकी बेटी दशवरषकी विधवा भई ॥ तब थोडेदिन पाछे श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे ॥ तब वा शेठकी बेटीकुं ब्रह्मसंबंध करायो ॥ और श्रीमदनमोहनजीकी सेवा पधरायदीनी ॥ सो वह शेठकी बेटी मानकुंवरबाई श्रीमदनमोहनजीकी सेवा करन लगी सो वा मानकुंवरनें श्रीमदनमोहनजीकी जन्मसूधी सेवा करी ॥ और जन्मसूधी श्रीमदनमोहनजी विना कोई स्वरूपके दर्शन किये नहीं ॥ और घरसों बाहेर सेवा छोडके गई नहीं ॥ और श्रीमदनमोहनजी जैसे सबके ठाकुरजी होवेंगे ऐसें मनमें निश्चय कररारूयो हतो ॥ जब वे मानकुंवरबाई साठवर्षकी भई तब वाको पिता भगवच्चरणारविंदमें प-

होंच गयो ॥ तब मनुष्य राखके सेवा करती ॥ फेर एक-
दिन एक विरक्त वैष्णव वा गाममें आयो ॥ सीतकालके
दिन हते ॥ सो वा मानकुंवरके घरमें उतऱ्यो ॥ तव वा
मानकुंवरकुं श्रीठाकुरजीकी झांपी देके तळावपर न्हावे
गयो ॥ तव मानकुंवरवाईनें श्रीठाकुरजी जगाये ॥ सो
श्रीठाकुरजी वाळकृष्णजी हते ॥ और वानें श्रीमदनमो-
हनजी विना और श्रीठाकुरजी देखे नहीं हते ॥ तव मा-
नकुंवरवाई ऐंसी समझी जो श्रीठाकुरजी ठंढकेलीयें ऐसे
सकुचाय गयेहैं ठंढ वहुत पडेहैं वा वैष्णवनें कछु यत्न
राख्यो नहीं ॥ ऐंसे विचार करके वाके नेत्रनमेंसुं जल
आयगयो ॥ और वहुत मनमें तापभयो ॥ तब अंगीठी
लेके और तेलमें अनेक प्रकारके गरम ओषध डारके
और तेलकुं जरायके तातो करके श्रीठाकुरजीके हाथ-
पाव मीडवे लगी और मनमें समझी जो श्रीठाकुरजीकुं
वहोत श्रम भयोहै॥ आप कृपाकरके अपराध क्षमा करो
॥ ऐंसी वाकी प्रार्थना और शुद्धभाव देखके श्रीठाकुरजी
मदनमोहनजीको स्वरूप होयगये॥ तव वा डोकरीनें रा-
जभोग धऱ्यो फेर वा वैष्णवनें आयके दर्शन किये ॥
परंतु श्रीठाकुरजीनें गदल ओढे हते ॥ कछु वाकुं समजण
नहीं परी ॥ ऐंसे करते दशपंधरदिन वो रह्यो ॥ तव वा
मानकुंवरवाईनें कही शीतकालके दिन इहां रहो ॥ श्रीठा-
कुरजीकुं ठंढ वहोत लगेहे फेर थोडे दिन वो रह्यो फेर
जब फागणमहिना आयो तव चलवेकी तैयारी करी ॥
श्रीठाकुरजी पधरावेके समय वा मानकुंवरसुं वा वि-

रक्तवैष्णवनें झगडो कियो॥ कही तुमनें मेरे श्रीठाकुरजी पलटायलीये है ॥ जो मेरे श्रीठाकुरजी न देवेंगी तो तेरे माथे प्राण छोडुंगो ॥ जब बाईनें कही मैं तो तेरे श्रीठाकुरजी पलटाये नहींहै तब बहुत झगडा भयो ॥ फेर दोनोजना श्रीगोकुल गये और श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी ॥ तब श्रीगुसांईजीनें दोनोनकी बात सुनके तब झांपी श्रीगुसांईजी लेके खोलके श्रीठाकुरजी देखे॥ और श्रीठाकुरजीनें श्रीगुसांईजीसों कही जो मैं डोकरीके भावसुं मदनमोहन भयोहुं ॥ यानें कोईदिन और स्वरूपके दर्शन कीये नहींहैं ॥ जासुं वाको भाव शुद्धहै ॥ तब श्रीगुसांईजीनें झगडो चुकाय दियो ॥ वा वैष्णवकुं आज्ञा करी येही श्रीठाकुरजीहैं ॥ तब वा डोकरीनें कही जो ऐसे श्रीठाकुरजीकुं ठंड मारे हैं ॥ ऐसेनकुं श्रीठाकुरजी पधराय देने नहीं चहिये ॥ ये सुनके श्रीगुसांईजी हंसे और विचार कियो जो डोकरीको कैसो शुद्ध भावहै ॥ तब वो विरक्त वैष्णव डोकरीके पावन पऱ्यो और कही जन्मसूधी तुमारे द्वार पऱ्यो रहुंगो॥ और तुमारी टेहेल करुंगो ॥ तब श्रीयमुनाजी पान करके श्रीनाथजीके दर्शन करके फेर अपने देशमें आयके वह डोकरी सेवा करन लगी ॥ सो वह मानकुंवरबाई श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १९६ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक माधवदास वडनगरमें रहेते तिनकी वार्ता ॥ वे माधवदास बडे पंडित हते ॥ और अन्यमार्गीय हते ॥ और वैष्णवनकुं टीलवा कहेते॥

एक समय श्रीगुसांईजी वडनगर पधारे ॥ तव पंडितनकी सभा करी ॥ सव पंडितनमें वडे माधवदास हते ॥ सो वे माधवदास सव पंडितनकुं लेके सभामें आये ॥ तव साकार निराकारको वाद भयो ॥ तव श्रीगुसांईजीनें साकार ब्रह्मको प्रतिपादन कियो ॥ और सभामें वहोत विवाद भयो ॥ माधवदासके मनमें जो हतो पुष्टिमार्ग वेदनिर्मूलकहे ॥ सो संदेह निकस गयो ॥ तव माधवदासजी वाही समय श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ तव और पंडित कहेनलगे जो सवमें मुख्यतो तुमहते ॥ अव काहेकुं वैष्णव भयेहो ॥ तव माधवदासजीनें कहीजो दुराग्रही होंवे सो न समझे ॥ परंतु सारवेत्ता होवे तो तुर्त समझे ॥ यासुं मोकुं सर्वोपर पुष्टिमार्ग वेदमें मालम पऱ्योहे ॥ जासुं मैंनें दुराग्रह छोड दियोहे ॥ तव पंडित सुनके अपने२घर गये॥ और वे माधवदासजी श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे ॥ और वैष्णवनको संग करन लगे ॥ वे माधवदासके ऊपर श्रीठाकुरजी वेग प्रसन्न भये ॥ सो माधवदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भये ॥ जिननें दुराग्रह छोडके सुंदर मार्ग पकऱ्यो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥१९७॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक कुनबी पटेलकी वार्ता ॥ सो गुजरातमेंसुं एकसाथ श्रीगोकुल जातो हतो॥ वाके संग कुनवी वैष्णव चल्यो ॥ मेहेनत मजुरी करके रस्तामें वैष्णवनके इहां प्रसाद लेतो ॥ जब गोपालपुर आठ कोस रह्यो तव सव वैष्णवननें गांठडीमेंसुं भेट काढराखी॥तव वा पटेलकुं चिंता भई जो मैं कहा भेट करूं॥

तब घासमें शंखावलीकी लता हती सो वानें देखी ॥ तब फूल लेके माला गूंथी ॥ और भीजे वस्त्रमें लपेटी ॥ और लेके सबसुं आगे चल्यो ॥ मनमें विचार कियो ये माला कुमलाय न जाय तो बहोत आछो॥ शृंगारको समों श्रीनाथजीको भयो ॥ तब श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीसुं कही एक पटेल माला लेके आवे है ॥ सो वाके अंतःकरनमें ताप बहोत है ॥ वे माला आवेगी तब मैं राजभोग अरोगुंगो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आपकी अस्वारीको घोडा एक अस्वार बैठायके पठायो सो घोडा एक घंटामें १२ कोस जातो हतो ॥ सो वे अस्वार जायके वा पटेलकुं लायो ॥ और माला श्रीनाथजीनें अंगिकार करी और वा पटेलनें राजभोगके दर्शन किये ॥ श्रीनाथजीकी ये लीला देखके सूरदासजीनें कीर्तन गायो ॥ सो पद ॥ श्याम गरीबनहींके गाहक ॥ दीनानाथहमारेठाकुरसाचीप्रीतनिवाहक ॥ १ ॥ कहाविदुरकीजातपातकुल प्रेमप्रीतकेलायक॥कहासुदामाकेधनहतो॥साचीप्रीतकेचाहक ॥ २ ॥ कहापांडवघरकीठकुराईअर्जुनरथकेवाहक ॥ सूरदाससठतातेहरिभज आरतदुःखकेदाहक ॥ ३ ॥ ये पद सूरदासजीनें गायो ॥ ये सुनके श्रीनाथजी और श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये ॥ और वा पटेलनें श्रीनाथजीकुं माला पेहेरी देखके अपनो हियो सिरायो और मननें जानी जो श्रीनाथजीनें मेरी करी माला अंगीकार करीहै ॥ सो वे पटेल श्रीगुसांईजीकों ऐसो कृपापात्र हतो॥ जिनकी आरति श्रीनाथजी सही न सके ॥ वार्ता संपूर्ण

॥ वैष्णव ॥ १९८ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक लाडबाई तथा धारबाई-

की वार्ता ॥ सो वे लाडवाई और धारबाई दोनो वेहेन हती ॥ मानिकपूर चित्रकूट पास दशकोस है सो उहां लाडवाई और धारवाई श्रीगुसांईजीकी सेवक भई ॥ तव वे लाडवाई और धारबाई श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगी ॥ तव लाडवाई जो कोई वैष्णव आवे तिनकी टेहेल भलीभांतिसों करन लगी ॥ और ऐसें करत करत लाडबाई और धारवाई वृद्ध भई सो सब द्रव्य नव लक्ष रुपैया एकठे करके श्रीगोकुल गई ॥ और श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी जो ये द्रव्य अंगिकार करो ॥ तब श्रीगुसां-ईजीनें जान्यो ये द्रव्य आसुरी है और दुःख दायक है॥ सो अंगिकार नकियो फेर दश पंदर वर्ष पीछे श्रीगोकुल-नाथजी भूतलपर विराजत हते ॥ फेर लाडवाईनें श्रीगो-कुलनाथजीकुं द्रव्य आसुरी जाणके अंगिकार न कियो॥ तब श्रीगोकुलनाथजीके अधिकारीनें श्रीगोकुलनाथजीके पूंछे विना एक छातमें बिछायके ऊपर कांकर डरायके चूनो लगाय दियो सो वा छातमें द्रव्य रह्यो आयो ॥फेर साठ वर्ष पीछे औरंगजेब बादशाहकी जुलमीके समयमें म्लेच्छलोक लूंटवेकुं आये तब श्रीगोकुलमेंसुं सब लोग भागगये ॥ और मंदिर सब खालीहोय गये कोई मनुष्य गाममें रह्यो नहीं ॥ तब विन म्लेच्छननें वे छात खोदी ॥ सो नवलक्ष रुपैय्यानको द्रव्य निकस्यो ॥ तब गाममें जितनें मंदिर हते सब मंदिरनकी छात खुदायडारी ॥ सो

आसुरी द्रव्यके संगतें सब गोकुलको छांत खुदाई सो वे लाडबाई धारबाई श्रीगुसांईजीके सेवक ऐसे हते ॥ जिनकी बुद्धि आसुरी द्रव्य आसुरी द्रव्यके प्रभावते फिरी नहीं और भगवद्धर्म छोडे नहीं और जितनें द्रव्यमें अनर्थ हैं सो विनकुं बाधा न कर सके ॥ भगत्सेवा करती रही ॥ भगवच्चरणारबिंदमें जिनके चित्त है विनकुं कोई बाधा नहीं कर शके ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १९९ ॥ ❀

श्रीगुसांईजीकेसेवक दोय वैष्णव जिननें ईंटपर अक्षर किये तिनकी वार्ता ॥ सो एक वैष्णव एक गाममें रहेतो हतो ॥ और दूसरो दूसरे गाममें रहेतो हतो॥ एकको नाम वल्लभदास हतो और दूसरेको नाम बलदेवदास हतो सोवे दोनो रस्तामें एक वावडीऊपर एक दूसरेकुं आपसमें मिले भगवद्वार्ता करन लगे ॥ सो बलदेवदासनें पूछ्यो श्रीठाकुरजी मोरपंखको मुकुट धरे हैं वाको कारण कहा॥ और जनावरकी पांख क्युं नहीं धरेहैं ॥ अनेक प्रकारके पंखीनकी बहुत सुंदर पांख हैं ॥ तब ये सुनके वल्लभदास बोले जो श्रीठाकुरजीको स्वरूप आनंदरूप है ॥ विषई जीवनकुं दुर्लभ है ॥ और विषय रहित जिनके स्नेह है ॥ तिनके वशहैं जैंसे मोर विषय रहितहै सो दृष्टिद्वारा रसदान करेहैं ॥ सो श्रीठाकुरजी अपनें दासकुं ऐंसी सूचना करेहैं जैंसे मोर विषय रहितहै ॥ और दृष्टिद्वारा रसदान करेहैं सोकोनसी रीतसों ॥ जब मोर नृत्य करेहैं तब अपनें शरीरकुं देखेहैं ॥ सब शरीरकुं देखके बडो प्रसन्न होवेहै ॥ जब आपनें पांव देखेहै तब कारेकारे दीसेहै तब

मोर श्यामतारूपी अपनो दोष देखके रुदन करेहैं ॥ मेरेमें इतनो दोष न होतो तो आछो ॥ तब मोरके नेत्रनमेंसुं जल पडेहे ॥ तब मोरकी स्त्री मुखमें लेहे तब वाकुं आनंद होवेहै ॥ और कामनिवृत्त होवेहैं दृष्टिद्वारा वाके सब मनोरथ पूर्ण होय जायहे ॥ और गर्भस्थिती होवेहैं॥ ऐसे जो वे मोर श्रीठाकुरजीकुं बहुत प्रिय है और जैसे मोर दृष्टिद्वारा कामनिवृत्त करेहैं ऐसे श्रीठाकुरजी सब जीवनको दृष्टिद्वारा कामनिवृत्त करेहैं निर्विषयी जो जीवहै सो हमकुं बहुत प्रियहैं ॥ मोर पंख श्रीमस्तकपर धरेहैं ॥ तब बलदेवदासनें पूछी ॥ काछनी काहेकुं धरेहैं ॥ तब वल्लभदासनें कही जो काछनीको घेर होवे सो घेर बहुत एकठोकरे सो घेर होवे सो ऐसे अनेक भक्तनकुं एकठे करके एककालावच्छिन्न सबके मनोरथ पूर्ण दृष्टिद्वारा करे जैसे मोर एकस्त्रीको मनोरथ पूर्ण करे ऐसेही सब व्रजभक्तनके मनोरथ पूर्ण होवेहै ॥ ये सूचना करवेके लीयें श्रीठाकुरजी मुकुट काछनीको शृंगार धरेहैं॥ ये सुनके बलदेवदास बहुत प्रसन्न भये तब एक ईटपर लिखगये॥हम दोयघडी जीवे फेर वो ईट उहां भीतमें लगी हती सो एकराजा फिरतो आयो सो वानें ईटपर ऐसे अक्षर देखे तब राजाकुं संदेह भयो ॥ तब राजानें विचार कियो जो लिखवेवालो ऐसे लिखेहैं ॥ हम दोघडी जीवे ॥ सो ये जन्म्यो कब होवेगो और पढयो कब होवेगो और इहां वावडीपर आयो कब होवेगो ॥ और लिख्यो कब होवेगो ॥ दोघडीमें यानें इतनें काम कैसे करे होंयगे ॥ सो राजाकुं बहुत संदे-

ह भयौ ॥ सो राजा वे ईंट अपने घर लेगये ॥ जो आवे ताकुं ऐंसे पूछे ॥ जो ये लिखवेवालो मनुष्य दोघडी जीवतो रह्यो ॥ दोघडीमें यानें इतनें कारज कैंसे करे होएंगे ॥ राजाकुं बडो संदेह भयो तब राजा ये बातमें लगरह्यो ॥ जो आवे जाकुं पूछे इतनेमें भगवदिच्छातें एक वैष्णव आयो ॥ वाकु राजानें पूछी तब वा वैष्णवनें कही जो दो वैष्णव रस्तामें मिले होएंगे ॥ और आपसमें भगवद्वार्ता करी होयगी ॥ तब विन वैष्णवननें चलवेके समय लिख्यो होयगो ॥ तब राजाको संदेह मिटयो सो वे राजाहुं वैष्णवके संगतें वैष्णव भयो सो वे दोनों वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र हते ॥ तिनके अक्षरनसुं राजा वैष्णव भयो ॥ वार्ता संपूर्ण॥ वै० ॥ २०० ॥ ❀

श्रीगुसांईजीके सेवक एक राजाकी वार्ता ॥

सो वे राजाके गाममें दो ब्राह्मण रहेते हते ॥ एक ब्राह्मण वैष्णव हतो और एक शैव हतो॥ वे दोनो पंडित हते और शैव ब्राह्मण राजाके पास बहुत आवते जावते हते ॥ राजानें विनकुं कही हमारे पुत्र होयसो उपाय करो ॥ सो वानें बहुत उपाय किये परंतु वीसवर्षसूधी पुत्र नहीं भये॥ फेर एकदिन वा राजानें वैष्णवब्राह्मणसुं कही जो मेरे बेटा होवे तो ठीक ॥ तब वा वैष्णव पंडितनें कही बेटा एकके चार होजायगें परंतु वैष्णव होवोगेतो तब वा राजानें कही मैंहुं वैष्णव होजाउंगो ॥ फेर एक वर्षके भीतर वा राजाकी चार राणीनके चार बेटा भये ॥ तब राजानें वा वैष्णव ब्राह्मणसुं कह्यो हमकुं वैष्णव करो॥ तब

वा ब्राह्मणनें कही वैष्णवतो श्रीगुसांईजी करेंहें ॥ जब श्रीगोकुलमें चलो तब वे राजा और दोनो पंडित श्रीगोकुल गये ॥ जायके श्रीगुसांईजीके दर्शन किये ॥ तो साक्षात् पूर्णपूरुषोत्तमके भये॥ तब वह राजा श्रीगुसांईजीको सेवक भयो ॥ और शैव पंडितहुं श्रीगुसांईजीको सेवक भयो॥ और श्रीगोकुलमें रहेके पुष्टिमार्गकी रीती शीख्यो और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लग्यो ॥ और जैंसी बेटानमें आसक्ती हती वैसी श्रीठाकुरजीमें आसक्ती भई ॥ और सकामबुद्धी हती सो सब मिटके निष्कामबुद्धी होयगई ॥ अंतःकरणसुं सब कामना त्याग दीनी और भगवत्सेवा पधरायके अपनें देशमें आयो ॥ और घरमें भगवत्सेवा करनलग्यो ॥ थोडेदिन पीछे श्रीगुसांईजीकुं अपनें देशमें पधराये ॥ और सब कुंटुबकुं वैष्णव किये और गामके लोगनकुं वैष्णव कराये सो वह राजा ब्राह्मणके संगतें ऐसो वैष्णव भयो॥ वा० सं०॥वै० २०१

श्रीगुसांईजीके सेवक मदनगोपालदास कायस्थ हते तिनकी वार्ता ॥ सो वे मदनगोपालदास महाबनमें रहेते हते और नित्य सवारे आयके श्रीगुसांईजीके दर्शन करते ॥ और फेर जायके घरमें श्रीठाकुरजीकी सेवा करते ॥ और श्रीठाकुरजी मदनगोपालदाससों हसते बोलते बातें करते जो चहिये सो मागलेते ॥ और एकदिन मदनगोपालदासके बेटाकुं बहोत ज्वर आयो॥ तब मदनगोपालदासकी स्त्रीनें छानो छानो एकयोगीके पाससुं दोरा करायके और बेटाकुं बांध्यो ॥ तब मदन-

गोपालदासके श्रीठाकुरजीनें श्रीगुसांईजीसों कही जो मदनगोपालदासकुं अन्याश्रय भयोहै ॥ अब मैं यासुं बोलूंगो नहीं तब श्रीगुसांईजीनें श्रीठाकुरजीसुं वीनती करी जो याकुं थोडेदिन दंड देणो॥ परंतु एकाएक त्याग कऱ्यो नहीं चहिये ॥ तब श्रीठाकुरजी चुप कररहे ॥ फेर मदनगोपालदासनें उत्थापन किये ॥ देखेतो श्रीठाकुरजी उदास बिराजेहें ॥ तब मदनगोपालदासनें भोगधरे॥ तब श्रीठाकुरजीनें लातसुं थाल फेंकदियो तब मदनगोपालदास रोवेलगे और प्रणती करवे लगे तोहूं श्रीठाकुरजी माने नहीं ॥ तब मदनगोपालदास श्रीगुसांईजीके पास आये और नेत्रनमेंसुं जल चलवे लगगयो ॥ और गदगद कंठ होयगये और धूजवे लगे ॥ और श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तेरी स्त्रीनें अन्याश्रय कऱ्यो है जासुं श्रीठाकुरजी अप्रसन्नहै॥ ये बात सुनके मदनगोपालदास घरमें आये और स्त्रीकुं वाई क्षणमें जुदे घरमें राखी ॥ और श्रीठाकुरजीकी सब टेहेल हाथसुं करन लगे॥तब श्रीगुसांईजीके श्रीमुखतें वचनामृत सुने जो अन्याश्रय बहोत बाधकहै विवेक धैर्य आश्रयग्रंथमें लिख्योहै ॥ श्लोक ॥ अन्यस्य भजनंतत्रस्तोगमनमेवच ॥ प्रार्थनाकार्यमात्रेपिततोऽन्यत्रविवर्जयेत् ॥ याको अर्थ ॥ अन्य देवको भजन अन्यदेवके स्थानपर स्वतः गमन उद्देश करके जानो॥ और कार्यमात्रमें अन्यदेवकी प्रार्थना करणी ॥ ये तीनोंबातें वर्जित हैं ॥ अन्यसंबंधकीहूं गंध नहीं चहिये ॥ सो वाक्य ॥ अन्यसं-

बंध गंधोपिकंदरामेववाध्यते ॥ यारीतीसुंग्रंथनमें अनेक वचनहे ॥ सो ये सुनके मदनगोपालदासनें दूसरो विवाह कर्‍यो ॥ वा स्त्रीकुं त्याग दियो तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयके बोलन लगे ॥ सो वे मदनगोपालदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते जिननें अन्याश्रय केलीयें स्त्रीको त्याग किये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २०२ ॥ ❀ ॥ ॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक क्षत्रीवैष्णव गुजरातकेवासी तिनकी वार्ता ॥

सो वे क्षत्री वैष्णव चाचाजीके संग गुजरात जाते हते ॥ सो वे क्षत्री वैष्णव जब भगवद्वार्ता करते तब भगवद्रसमें मग्न होय जाते ॥ और विनकी रहस्य वार्ता श्रीगोवर्धननाथजी सुनते ॥ सो वे क्षत्री वैष्णव रस्ता भूलगये और चाचाजीसुं न्यारे पडगये ॥ सो एक गाममें गये सो वा गाममें एक वैष्णव रहेतो हतो सो वे क्षत्री वैष्णवकुं अपने घरमें लेगयो और उहां भगवद्वार्ता करन बैठे ॥ सो वे रसावेश होयगये कछु देहानुसंधान रह्यो नहीं ॥ और श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाडे ठाडे विनकी वार्ता सुन्यो करते ॥ तब चाचाविनकुं ढूंढवे गये सो जायके चाचाजी विनकुं मिले तब भगवद्रसमें छक रहे हते॥ और आखी रात बीतगई हती और श्रीगोवर्द्धननाथजीकुं उजागरा भयो तोहु वाकुं कछु देहानुसंधान न रह्यो ॥ भगवद्वार्ता मुखसुं कर्‍ये जाते ॥ चाचाजी विनके पास जायके ठाडे रहे तोहु खबर नही रही ॥ तब चाचाजीनें विनकुं हाथ पकडके उठाये तब देहानुसंधान भयो ॥ तब चाचाजीनें कही तुमको

भगवद्रसमें मग्न होय रहेहो और श्रीगोवर्धननाथजी आखी रात ठाडे रहेहैं ॥ श्रीप्रभुनको श्रम होवेहैं ॥ जासुं संभारके करो ये कहेके चाचाजी विनकुं लेगये सो वे क्षत्री वैष्णव ऐसे कृपापात्र हते जिनके मुखकी वाणी सुनवेकुं श्रीगोवर्धननाथजी आप पधारते ॥ जासुं विनके भाग्यकी कहा बडाई करणी॥वार्ता संपूर्ण॥वैष्णव२०३॥

श्रीगुसांईजीके सेवक कृष्णदासस्वामी मथुरामें रहेते तिनकी वार्ता ॥ सो वे कृष्णदासस्वामी श्रीगोकुल आये तब श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके भये ॥ तब कृष्णदास स्वामी श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ तब एक महिना श्रीगोकुलमें रहे सब मार्गकी रीती शीखे और श्रीगोकुलचंद्रमाजीको स्वरूप पधरायके मथुराजीमें आयके भगवत्सेवा करन लगे ॥ फेर एकदिन श्रीगुसांईजी मथुरा पधारे तब कृष्णदासस्वामीके घरमें उतरे तब कृष्णदासस्वामीनें श्रीगुसांईजीसुं पूछी जो श्रीगोलचंद्रमाजीको दक्षणचरणारबिंद टेडो क्युं है ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो श्रीठाकुरजीके बामचरणारबिंदमें पुष्टिरस है ॥ और दक्षिणचरणारबिंदमें मर्यादा है ॥ तब श्रीठाकुरजी मर्यादाकुं उलंघके और पुष्टिकुं आश्रय करे हैं ॥ और बामचरणारबिंदसुं पुष्टिरसकुं स्थापन कियोहै ॥ तब कृष्णदासस्वामीनें पूछी जो कटी और ग्रीवा काहेकुं नमेहे ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो रस भर्‍यो पात्र खालीपात्रमें रस डारेतो भर्‍योपात्र नमे तब कृष्णदासस्वामीनें पूछी जो दक्षण-

परावृत्त दृष्टि क्युं है ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो सन्मुख दृष्टी होवे तो स्थावर जंगम जीवनकुं मोह करे ॥ और नीचे दृष्टि होवे तो पातालके जीवनकुं मोह करे ॥ और बामपरावृत्त दृष्टी होवेतो देवांगनाकुं मोह करे ॥ और उंची दृष्टी होवे तो स्वर्गवासीनकुं मोह करे ॥ और दक्षिण परावृत्त दृष्टी होवे तो स्त्री पुरुषनकुं मोह करे॥ ये सुनके कृष्णदासस्वामी बहुत प्रसन्न भये ॥ और श्रीगोकुलचंद्रमाजीकी सेवा भलीभांतीसुं करन लगे और जो वैष्णव मथुराजीमें आवे जिनकुं आदर सत्कार बहुत करते ॥ और भगवद्रसमें छके रहते ॥ संसारकी कछु अपेक्षा राखते नहीं ॥ एकदिन चाचा हरिवंशजी कृष्णस्वामीकुं मिले ॥ तब कृष्णस्वामीनें पूछी जो मुरलीके सप्तरंध्रनको स्वरूप कहो ॥ तब चाचाहरिवंशजीनें कही जो छे धर्म ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान और वैराग्य और सातमें धर्मी सात प्रकारको भगवत्स्वरूप पुरुषाकार सुधा वेणुतें प्रकट होवेहें ॥ याहीतें सप्तरंध्रहें ॥ श्रीठाकुरजीको स्वरूप श्रीमहाप्रभुजी और वेणुस्थानापन्न श्रीगुसांईजी और सप्तरंध्ररूपी सात बालकनको प्राकट्य जाणनों पद्मनाभदासजीनें गायो है ॥ सो पद ॥ मधुरव्रजदेशवस मधुरकीनो ॥ मधुरवल्लभनाममधुरगोकुलगाममधुरविठ्ठलभजनदानदीनो ॥ १ ॥ मधुरगिरिधरनआदिसप्ततनुवेणुनादसप्तरंध्रनमधुररूपलीनो ॥ १ मधुरफलफलितअतिललितपद्मनाभप्रभुमधुरगावतसरसरंगभीनो ॥ २ ॥ यारीतीसुं वेणुको स्वरूप चाचाजीनें कह्यो

सो सुनके कृष्णस्वामी बहोत प्रसन्न भये ॥ और श्रीगो-कुलचंद्रमाजीमें बहुत आसक्तिवान भये ॥ दिनदिन प्रीती जिनकी बढवे लगी ॥ सो कृष्णस्वामी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥वैष्णव ॥ २०४ ॥ ❋॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक वैष्णव ईश्वरदासकी वार्ता ॥ सो भगवन्नाम खूब लेते अष्टप्रहर भगवत्सेवा करते ॥ सो एक दिन रस्तामें जाते अजानमें सर्पके माथे पाव आयो ॥ सो सर्प मरगयो तब सर्पकी सर्पिणीने वा वैष्णवके पाछें लगी याके प्राण लेउंगी तब छोडूंगी ॥ सो वे वैष्णव अष्टप्रहर भगवन्नाम लेतो ॥ तब ज्यांसूधी वे वैष्णवजीव्यो कोई दिन भगवन्नाम छोड्यो नहीं सो वे सर्पिणी जन्मसूधी वाके पीछे फिऱ्या करी परंतु कोईदिन भगवन्नाम विना वाकुं देख्यो नहीं ॥ सो वे वैष्णव ऐसो कृपापात्र हतो ॥ जाने जन्मपर्यंत भगवन्नाम छोड्योनहीं जन्मसूधी सर्पिणीके दावमें आयो नहीं ॥ सो वे सर्पिणी मृत्युपाय गई परंतु वा वैष्णवकुं स्पर्श न कऱ्यो ॥ श्रीगु-सांईजीकी कृपातें सो वे वैष्णव ऐसो कृपापात्र हतो ॥ वा-र्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २०५ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक **स्यामदास आजना कु-**नबीकी वार्ता ॥ सो वे स्यामदास गुजरातमें रहेते ॥ तव श्रीगुसांईजी द्वारका पधारे ॥ तब स्यामदास श्रीगुसांई-जीके सेवक भये ॥ फेर स्यामदास बहुत दिन रहेके श्री-गोकुलगये ॥ और श्रीनवनीतप्रीयाजीके दर्शन किये ॥ फेर स्यामदास श्रीगुसांईजीके संग गोपालपूर गये ॥ तब स्या-

मदासजीको मन उहां बहुत लग्यो ॥ तब श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी जो मैं जन्मपर्यंत इहां रहुंगो॥सो कछु सेवा मोकुं बतावें ॥ तब श्रीगुसांईजीनें स्यामदासकुं श्रीनाथजीके फूलघरकी सेवा सोंपी ॥ तब स्यामदासनें श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी जो महाराज फूलनको स्वरूप कृपाकरके मोकुं समझावें तो बहुत आछो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञाकरी ब्रजभक्त जो गोपी जन तिनके चित्त हैं सो पुष्प होयके श्रीठाकुरजीके श्रीअंगकुं स्पर्श करेंहें ये सुनके स्यामदास बहुत प्रसन्न भये ॥ और फूलनकुं ब्रजभक्तनको चित्त जानके पाव न लगावते और धोएविना हाथ न लगावते और कुमलाय न जाय ऐंसे प्रयत्नराखते ॥ फेर एकदिन स्यामदासनें श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी जो महाराज फूलनको ऐंसो स्वरूप विनकुं सुईमें कैंसे परोएजाय ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञाकरी जो सुई है सो सूचीहै ॥ ब्रजभक्तनके चित्तमें भगवत्संबंधकी सूचना करेंहैं ॥ वा सूचनासुं ब्रजभक्तनके चित्त बहुतप्रसन्न होवेंहैं ॥ ऐंसें जाणेंहैं जो अब भगवत्संबंध हमकुं सूचन भयोहैं ॥ अब तुर्त अंगिकार करेंगे ॥ ये सुनके स्यामदासको सब संदेह गयो॥ एक दिन स्यामदासजी देखे तो ब्रजभक्तनके यूथनके यूथ फूलघरमें देखे ॥ तब स्यामदासनें पूछीजो मैं तुमकुं पहेचाणुं नहींहुं॥तब ब्रजभक्तननें आज्ञा करी जे पुष्पनकी माला तू अंगिकार करावेंहैं सो हमारो स्वरूपहै हम तेरेपर प्रसन्न होयके तोकुं दर्शन देवेंहैं ॥ सो तूं कछु मांग ॥ तब स्यामदासनें हाथ

जोडके वीनती करी जो मेरो चित्त कोईदिन ये सेवा छो-
डके और कहुं न जाय ॥ तब व्रजभक्तननें अस्तु कही ॥
ऐंसेहि होयगो ॥ फेर स्यामदासनें ये बात श्रीगुसांईजीकुं
वीनती करी ये सुनके श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो जि-
नको छेलो जन्म होवेहें विनसुं श्रीठाकुरजी कछु अंतराय
नहीं राखेहें ॥ और ऐंसे जीवनके लीयें ये मार्ग प्रगट भ-
योहे ॥ ये सुनके स्यामदास बहुत प्रसन्न भये ॥ सो वे
स्यामदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता सं-
पूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २०६ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक वेणीदास छीपाकी वार्ता

सो वे वेणीदासजी गुजरातमें रहते हते ॥ जब श्रीगुसां-
ईजी गुजरात पधारे तब वेणीदासनें श्रीगुसांईजीके दर्शन
किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये तब वेणी-
दास श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ और श्रीगुसांईजीकुं वी-
नती करके श्रीठाकुरजी पधराये ॥ तब वेणीदास सेवा
करन लगे ॥ थोडेदिन पाछें वेणीदासनें एक हजार रुपै-
याको परकाला लियो ॥ सो वेणीदास वांसकी लकडीमें
भरके श्रीगुसांईजीके पास श्रीगोकुलमें लेआये ॥ और
श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये ॥ फेर वेणीदास श्रीगु-
सांईजी संग श्रीजीद्वार आये ॥ और परकाला श्रीनाथ-
जीकुं धराये ॥ तब वेणीदास छीपानें दर्शन किये और
तन्मय होयगये देहानुसंधान भूलगये॥तब उहां मंदिरमें
मूर्छा खायके पडरहे ॥ तव श्रीगुसांईजीनें वेणीदासकुं च-
रणस्पर्श कराये ॥ और चरणोदक दिये ॥ तब वेणीदास

चेत भये ॥ तब श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी जो महाराज ऐसे आनंदसुं वहार क्युं काढ लिये ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी अबी तो तुमकुं कारज वहुत करनेहें ॥ फेर वेणीदास व्रजयात्रा करके श्रीगुसांईजीसों विदा होयके आये और श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी मेरे घरमें श्रीठाकुरजी विराजेहें सो श्रीनाथजीके स्वरूपसों दर्शन देवें ऐसी कृपाकरो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी श्रीठाकुरजी पुष्टिमार्गीयजो जीव है विनके सब मनोरथ पूर्ण करेहें ॥ सो तुमारे मनोरथ पूर्ण करेंगे ॥ तब वेणीदास विदाहोयके गुजरातमें आये ॥ और घरमें श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लगे ॥ तब वेणीदासके श्रीठाकुरजी वेणीदासके मनोरथप्रमाणे दर्शन देवे लगे ॥ जेंसे मनोरथ करते तेंसे दर्शन देते ॥ सो वेणीदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २०७ ॥ ❀ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक साचोरा ब्राह्मणकीवा०

सो वे पुरुषोत्तमदास गुजरातमें रहेते ॥ फेर एक समय श्रीगोकुलगये ॥ तब श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ और श्रीगुसांईजीकी कृपातें ग्रंथनको ज्ञान भयो ॥ फेर पुरुषोत्तमदास व्रजयात्रा करवेकुं गये॥और कदमखंडीमें रसोई करी॥सों दालवाटी करी तब भोगधरे श्रीनाथजी पधारके अरोगे और पुरुषोत्तमदाससुं आज्ञा करी जो तुमकुं दालवाटी करते वहुत सुंदर आवे हें ॥ हमारी रसोईमें तुम नाहाओ ॥ तब पुरुषोत्तमदासनें वीनती करी जो महाराज ये बात तो श्रीगुसांईजीके हाथ हे ॥ तब श्रीनाथ-

जीनें श्रीगुसांईजीकुं आज्ञा करी पुरुषोत्तमदास रसोई बहुत सुंदर कर जाने हैं ॥ तब श्रीगुसांईजी पुरुषोत्तमदासकुं श्रीनाथजीके भीतरियापनेकी सब सेवा सोंपी ॥ जब पुरुषोत्तमदासजी रसोई करते तब श्रीनाथजी पुरुषोत्तमदासकुं शिखावते ऐसे रोटी ऐसे बाटी करो सो वे पुरुषोत्तमदास जन्मपर्यंत श्रीनाथजीकी सेवा छोडके कहुं गये नहीं ॥ और द्रव्यको संग्रह न कियो॥वे पुरुषोत्तमदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ महाप्रसादकी पातर लायके वैष्णवनकुं प्रसाद लेवावते ॥ जिनकी श्रीगुसांईजी श्रीमुखसुं सराहना करते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २०८॥

श्रीगुसांईजीके सेवक लक्ष्मीदासजोशीकी०॥

सो वे लक्ष्मीदास जोसी गुजरातमें रहेते हते ॥ उहां श्रीगुसांईजी पधारे तब लक्ष्मीदासनें श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये ॥ सो लक्ष्मीदासनें वीनती करी मोकुं शरण लेउ ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके नामनिवेदन करायो ॥ फेर एकदिन लक्ष्मीदासनें श्रीगुसांईजीसुं पूछी जो गुरूको सूतक लगे के न लगे ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो गुरुशिष्यको आपसमें सामान्यसूतक हे॥ सो गुरु तो एक और शिष्यतो अनेक जो ऐसे सूतक पाळेतोगुरु जन्मसूधी भगवत्सेवा न कर सके ॥ जासुं ऐसे सूतकको विचार करनो॥ शास्त्रके वचन तो अनेक रीतीके हैं परंतु विचारके मानने चहिये ॥ जैसे छाछ कोईको नहीं छीजाय हे ऐसे वचन निकसेंगे परंतु क्षत्री तथा वैश्य तथा शूद्र और असच्छूद्र

इनके वासनकी और इनके जलकी छाछ आपणे कैसे लई जायगी और शास्त्रमें ऐसेहूं कह्यो है जितनी वस्तु ताकडीमें तुलाय जाय सो सब शुद्ध है परंतु ये वचन सत्य मान के अग्राह्यपदार्थ इन वचननके बलतें ग्रहण नहीं होंवेहें ॥ ऐसे सूतकके वचनहूं अनेक प्रकारके ऋषीनके मतकेहै सो विचारेविना कैसे लिये जाय ॥ ये सुनके लक्ष्मीदास बोले जो महाराज संन्यास ग्रहण करनो के नहीं ॥ तव श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो श्रीमहाप्रभूजीनें विरहदशामें त्याग कह्यो हैं जहांसूधी भगवद्विरह उत्पन्न न होवे वैसे संन्यास लेवे तो कलियुगमें पश्चात्ताप होवे जासूं अत्यंत विरह उत्पन्न भये विना ग्रहस्तपणो त्याग नहीं करनो ॥ तब लक्ष्मीदासनें वीनती करी॥ जो मेरो चित्त कहूं लगे नहीं है ॥ तव श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी भगवत्सेवा करो ॥ तब लक्ष्मीदास श्रीगुसांईजीके संग श्रीगोकुल गये और श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये ॥ और श्रीनाथजीके दर्शन किये ॥ तव भगवत्सेवामें मन बहुत लग्यो ॥ फेर श्रीगुसांईजीसों मार्गकी रीती सीखके और भगवत्सेवा पधरायके गुजरातमें आये ॥ घर आयके श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लगे ॥ और वैष्णवनको सत्संग करन लगे ॥ सो वा लक्ष्मीदासजोसीनें या रीतीसुं काल व्यतीत कियो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वै० ॥ २०९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक महीधरजी और फूलबाई

तिनकी वार्ता ॥ सो वे महीधरजी क्षत्री अलीयाणा गाममें रहेते और फूलबाई विनकी बेहेन हती ॥ और नरहर

जोसीके यजमान हते ॥ और नरहरजोसीके सत्संगतें वैष्णव भये हते ॥ सो एक दिन अलीयाणामें आग लागी हती ॥ सो नरहरजोसीनें खेराळु गाममें बैठेबैठे बुझाई हती सो ये बात जगन्नाथजोसीकी वार्तामें लिखीहै ॥ फेर महीधर जब सरकारके कामदार भये और श्रीगुसांईजीकुं पधरायलाये ॥ और श्रीगुसांईजी विनके घर बहुत दिन बिराजे ॥ जब श्रीगुसांईजी भाईलाकोठारीके इहां पधारते ॥ तब महीधरजीके उहां पधारते ॥ सो महीधरजीको चित्त श्रीगुसांईजी विना कहुं लगतो नहीं॥ अबसूधी श्रीगुसांईजीकी बैठक अलियाणामें प्रसिद्ध है ॥ जिनके घरमें अबसूधी श्रीगुसांईजी दर्शन देवेहैं ॥ और महीधरजीकुं श्रीगुसांईजीके दर्शन जा दिन न होते ॥ वाई दिन विनके पेटमें पीडा होजाती ॥ जासुं महीधरजीकुं श्रीगुसांईजी एकांतमें प्रकट होयके नित्य दर्शन देते ॥ वे महीधरजी ऐसे कृपापात्र हते॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २१० ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव भूधरदास०

सो वे वैष्णव बाराडीमें रहेते हते ॥ श्रीगुसांईजी द्वारका पधारे तब भूधरदास श्रीगुसांईजीके सेवक भये॥और श्रीगुसांईजीके संग द्वारका गये ॥ और श्रीरणछोडजीके दर्शन किये ॥ कितनेक दिन रहेके श्रीगुसांईजी पीछे पधारे भूधरदासहुं संग चले ॥ रस्तामें एक मुकाम भयो ॥ उहां भूधरदासके मनमें ऐसी आई श्रीगुसांईजी कछु माहात्म्य दिखावे तो ठीक ॥ इतनेमें एक बादल चढयो और सब

घटाछाय गई ॥ रसोई आधी भई हती ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुम इहां मत वरसियो ॥ हमारो डेरो छोडके वरसो तब मेह वरसन लग्यो श्रीगुसांईजीके डेरासुं सो सो हाथ दूरसों ऐसो वरस्यो सो वारे बारे महिनाके जल तलावनमें भर गये और नदी सब पूर आय गई ॥ और श्रीगुसांईजीके डेरापें एक बूंद न परी ॥ और चारो आडी सब ठिकाणें जल फैल गये ॥ सो माहात्म्य सूघरदासनें देख्यो ॥ तब वा दिनसुं ऐसो नेम लियो जन्मपर्यंत श्रीगुसांईजीकी टेहेल करुंगो ॥ फेर श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे ॥ सो सूघरदासकुं श्रीनाथजीकी सेवामें राखे सो थोडे दिन पीछे श्रीनाथजी सूघरदाससुं वोलन लगे ॥ सो वे सूघरदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २११ ॥ ❀

श्रीगुसांईजीके सेवक मगनभाई खंभातमें रहते तिनकी वार्ता ॥ सो वे मगनभाई वनिया वैष्णव हते॥ एक समय श्रीगुसांईजी खंभात पधारे हते ॥ तब माधवदास दलालके घर उतरे ॥ और उहां वहुत वैष्णव आवते सो वैष्णवनकी भीड देखके मगनभाईनें माधवदाससुं पूछी जो श्रीगुसांईजीके सेवक भये सो कहा अधिकी है ॥ तब माधवदासजीनें कही ॥ इनके सेवक भये तें नयो जन्म होतहैं और याही देहसुं जन्म पलट जाय हैं और श्रीठाकुरजीकी कृपा होवे है ॥ और या जीवकुं श्रीठाकुरजी अपनो जाने है ये बात सुनके वे मगनभाई श्रीगुसांईजीके सेवक भये मगनभाईके पास द्रव्य वहुत

हतो ॥ नित्य श्रीगुसांईजीकेपास दर्शनकुं जाते ॥ सो वे मगन भाईनें लाख रुपैया श्रीगुसांईजीकुं भेट कर दिये॥ तब थोडे दिन पीछे वा मगनभाईके मनमें ऐसी आई जो नयो जन्म ब्रह्मसंबंध करेतें होवेहे ॥ याकी परीक्षा करुं तो ठीक ॥ तब मगनभाई विचार करन लग्यो ॥ जो अमका ब्राह्मण मेरे पास पांच हजार रुपैया धरके तीरथ करन गयो है मैंनें वाके गये पीछे ब्रह्मसंबंध कियो है अबके आवेगो वाके रुपैया न कबूल करुंगो तब परीक्षा होय जायगी ॥ ऐसे मगनभाईनें विचार कियो तब वे ब्राह्मण आयो जब वानें मगनभाईसुं रुपैया मागे तब मगनभाईनें कही तुम झूठो बोलोहो ॥ मैंनें या जन्ममें-तो तेरे पास लिये नहीं है ॥ तब वे ब्राह्मण राजमें पुकाऱ्यो तब राजानें मगन भाईसों कही या ब्राह्मणके रुपैया देउ तब मगनभाईनें कही जो मैंनें या जन्ममें रुपैया लिये नहीं है ॥ तब राजानें पांचशेरी लोहकी मंगायके अग्नीमें ताती कराई और मगनभाईके हाथमें धराई ॥ तब मगनभाईनें श्रीगुसांईजीको ध्यान करके कही जो मैंनें या जन्ममें रुपैया लिये होवें तो मेरे हाथ जर जावो ॥ तब मगनभाईके हाथ जरे नहीं तब राजानें कही पटक देउ ॥ तब ब्राह्मणनें कही ये बरोबर ताती नहीं भई॥सो वा मगनभाईनें पटकी तब ब्राह्मणनें उठाई तब वा ब्राह्मणके दोनों हात जरगये ॥ तब राजानें हुकमकऱ्यो या ब्राह्मणकुं कैदमें लेजावो ॥ याको घर लूटलेउ ये ब्राह्मण बहोत झूठो है तब मगनभाईनें राजासुं कही ॥ या ब्राह्मणको कछु दोष

नहीं है ॥ ये साचो है याको घर मत लूटो मैनें परीक्षा करवेके लीयें ये काम कर्‍यो है॥ तब राजानें कही काहे-की परीक्षा करी है ॥ तब मगनभाईनें सब बात कही ॥ तब सुनके वा राजाकी सभा सब चकित होयगई॥ और श्रीगुसांईजीकुं पधरायके वे राजा और ब्राह्मण और दूसरे समासद सब श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ और सब भ-गवत्सेवा करन लगे और वे मगनभाईहुं श्रीठाकुरजी पधरायके मार्गकी रीती प्रमाणें सेवा करन लगे ॥ सो मगनभाईकुं श्रीगुसांईजीके ऊपर ऐसो विश्वास हतो॥वा-र्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २१२ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक ब्राह्मण जिननें म-गनभाईके पास पांचहजार रुपैया धर्‍ये तिनकी वार्ता॥

सो वा ब्राह्मणको नाम गोवर्धनभट्ट हतो जब राजाकी कचेरीमें वाके हाथ जरगये और राजानें वा ब्राह्मणके ऊपर दंडको हुकम कीनो और वा मगनभाईनें छुडायो तादिनतें वा गोवर्धनभट्टनें ऐसी प्रतिज्ञा लीनी जो मैं श्रीगुसांईजीके शरण जाऊंगो जब अन्न लेउंगो तहांसुधी फलहार करुंगो ॥ ऐसो आग्रह वा गोवर्धनभट्टको देखके वा मगनभाईनें और वा गामके राजानें श्रीगुसांईजीके ऊपर पत्र लिखदियो तब वे गोवर्धनभट्ट पत्र लेके श्रीगो-कुल आये ॥ और श्रीगुसांईजीके दर्शन किये और मग-नभाईकी सब बात श्रीगुसांईजीसों कही ॥ ये सुनके श्री-गुसांईजीनें आज्ञा करी पुष्टिमार्गमें विश्वास फलीभूत होवेहैं पुष्टिमार्गमें भगवान स्थित है जीवकी लौकिक-

गति नहीं करेहें ॥ जीवकुं विश्वास चहिये जिनके सब कार्यसिद्ध होवेंहें ॥ श्रीमहाप्रभुजीनें आज्ञा करीहे सो ॥ श्लोक ॥ भगवानिपुष्टिस्थोनकरिष्यतिलोकिकिंचगतिम ॥ और विवेकधैर्येआश्रयग्रंथमें श्रीमहाप्रभुजीनें आज्ञा करीहे सो ॥ श्लोक ॥ अविश्वासोनकर्तव्यः सर्वथा बाधकस्तुसः ॥ ब्रह्मास्त्रचातकौभाव्यौ प्राप्तंसेवेतिनिर्मम ॥ १ ॥ जासुं सर्वथा पुष्टिमार्गमें विश्वास राख्यो चहिये ॥ ये सुनके गोवर्धनभट्ट बहुत प्रसन्न भये ॥ और श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ और श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये ॥ और श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन किये और व्रजयात्रा किये बहुत दिन व्रजमें रहे ॥ फेर श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे तब संग आये ॥ श्रीगुसांईजीकु खंभात पधरायलाये और राजाकुं सेवक करायो ॥ फेर एकदिन गोवर्धनभट्टनें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो महाराज मेरेपास पंचायतन पूजाहे सो आपकेपास लायोहुं ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो विष्णुको आयतन नहींहे साक्षात् भूतलपर बिराजेहे ॥ और चारदेवताको आयतनहे सो आयतनकी पूजाको काल नहींहै ॥ श्लोक ॥ कलौदशसहस्राणि विष्णुस्तिष्ठतिमेदिनी ॥ तदर्धजान्हवीतोयंतदर्धसर्वदेवताः ॥ १ ॥ यातें देवता सब पृथ्वीकुं त्याग करगयेहे ॥ विनको नित्य पूजनको काल नहींहे नैमित्य पूजनको कालहै याही तें आवाहन विसर्जनहै और विष्णु भूतलपर स्थितहैं इनको साक्षात् पूजनको कालहै जासुं भगवत्सेवा करो ॥तब गोवर्धनभट्ट ये सुनके

बहुत प्रसन्न भये ॥ और श्रीगुसांईजीके पासतें श्रीठाकुरजी पधरायके भगवत्सेवा करन लगे ॥ और घरके सब मनुष्यनकुं नाम निवेदन करायो ॥ और मार्गकी रीतीप्रमाणें भगवत्सेवा करन लगे ॥ और थोडेदिन पीछेश्रीठाकुरजी अनुभव जतावन लगे ॥ सो वे गोवर्धनभट्टश्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते॥ वार्ता संपूर्ण॥वै०॥२१३॥

श्रीगुसांईजीके सेवक मोरारी आचार्य खंभातमें रहेते तिनकी वार्ता ॥ सो वे मोरारी आचार्य काशी यात्राकुं गामके पटेलके संग गये ॥ सो रस्तामें श्रीगोकुल गये ॥ सो मोरारी आचार्य छ शास्त्र पढे हते ॥ सो श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके दर्शन किये ॥ तब मोरारीआचार्यनें श्रीगुसांईजीसुं पूंछयो ॥ जो जगत सत्य है के असत्य है ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कही जो जगत सत्यहै और संसार जो अहंता ममता सो असत्य है तब मोरारी आचार्यनें कही जो जगत सत्य होवे तो एकचलेजायहैं॥ फेर दूसरे उत्पन्न होवेहैं आगले पदार्थ दीखे नहींहै ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो प्रभूमें अनंतशक्तीहै सो आविर्भाव तिरोभाव शक्तीहुं है ॥जासुं प्रगट होवे सो दीखे॥ और तिरोहित होवे सो न दीखे॥ परंतु जगत जोअसत्य होवें तो ब्राह्मणके जिमायवेको पुण्य क्युं होवे ॥ और सत्कर्म करके सद्गति क्युं होवे ॥ और पापकरके नरकमें क्युं जाय ॥ जगत झूठो होवे तो कृती झूठी चहिये ॥ झूठे पदार्थनको फलहुं झूठो चहिये ऐसे श्रीगुसांईजीके वचन सुनके मोरारी आचार्य श्रीगुसांईजीके सेवक भये॥ और

माला तिलक धरके अपने संगमें भये ॥ मोरारी आचार्यके संग एक पटेल हतो सो खंभातमें रहेतो हतो और द्रव्यपात्र हतो और शैव हतो ॥ वाकुं देखके गुस्सो आयो ॥ और मोरारी आचार्यसुं कही तुमनें ये कहा काम कर्यो है तब मोरारी आचार्यनें कही मैंनें ठीक काम कर्यो है तब मोरारी आचार्य वा पटेलको संग छोडके श्रीगोकुल रहेगये ॥ और श्रीगुसांईजीके पास पुष्टिमार्गके ग्रंथ देखे सो विद्वन्मंडन और सुबोधिनीजी इत्यादिक ग्रंथ देखके बहुत प्रसन्न भये ॥ सो मोरारीआचार्य काशीमें जायके कितनें पंडितनसुं विवाद करके जीते ॥ फेर मोरारी आचार्य श्रीनाथजीके दर्शन करके और श्रीगुसांईजीके पास बिदा होयके और श्रीठाकुरजीकी सेवा पधरायके खंभातमें आये आखोदिन भगवत्सेवा करते ॥ और कोईसुं कछु बोलते नहीं ॥ फेर वा गामके पटेलनें मोरारी आचार्यकी आजीविका बंद करदीनी और लोगनकुं पटेल कहेन लगे ॥ जो एकवार मोरारीआचार्य मेरे पास आवे तो ये कहे जैसे करूंगो ॥ सो एक बनियानें मोरारीआचार्यसुं कही जो तुम एकवार पटेलके घर जावो ॥ सो बहुत आग्रह करके पटेलके घर ले गयो तब पटेल ऊपर बैठो हतो ॥ सो मोरारी आचार्यके आवेकी खबर पडी ॥ तब पटेलनें कही जो मोरारीआचार्य तिलकमुद्रा धोयके आवे तो यासुं बात करुंगो ॥ तब मोरारी आचार्यनें ये बात सुनी ॥ सुनके सो संकल्प कियो या पटेलकी दीनी जितनी वस्तु और जितनी धरती और

घर सो सब कछु मेरे प्रभुलायक नहीं है ॥ ऐसें कहेके मोरारी आचार्य अपनें घर आये॥ और श्रीठाकुरजी घरके वहार पधरायके ब्राह्मणनकुं दे दियो ॥ और एक झांपी करके गामसुं वहार जाय रहे ॥ सो वे मोरारी आचार्य ऐसे टेकके वैष्णव हते ॥ जिननें अन्यमार्गीयकी कछु वस्तु घरमें राखी नहीं ॥ गामपर्यंत त्याग कर दीनो सो मोरारी आचार्य श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २१४ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक माट बनके एक रजपूत- की वार्ता ॥ सो वे रजपूत माट बनतें श्रीगोवर्धन आयो ॥ तब मानसी गंगामें न्हायो॥तब मानसी गंगातें चंदसरोवर गयो॥ चंदसरोवरपर कुंमनदासजीनें एक मालीकेपाससुं आंव लिये हते ॥ सो आंव पेहेले पेहेले आये हते ॥ सो दस रुपैयामें ठरायके लिये हते ॥ तब कुंडपर धोयके और उहां श्रीनाथजीकुं भोग धरे और श्रीनाथजी उनकी गोदमें वैठके आंव अरोगे ॥ फेर टोकरामें धरके मालीकेपाससों आंव उठवाये और कही चलो दस रुपैया देवें ॥ विचार कियो घरमें तो दस रुपैया नहीं है परंतु भेंस और पाडी वेंचके देउंगो ॥ अबी कोईके पास उधार लेके याकुं देउंगो ॥ ऐसो विचार करके वा मालीकुं संग ले चले ॥ तब रस्तामें रजपूत मिल्यो सो वानें पूंछी आंवको कहा लेवेगो तव कुंमनदासजीनें कही दस रुपैयामें हमनें ठेराये है तुमारे चहिये तो लेवो ॥ तब वा रजपूतनें दस रुपैया देके लीनें ॥ कुंमनदासजीको मनोरथ पूर्ण

भये। ॥ तब वा रजपूतनें आंब खाये सो आंब खातमा-त्रही वाके सब दोष निवृत्त भये और शुद्धचित्त होयगयो तब कुंभनदासजीसुं पूंछ्यो या संसारसें भगवत्प्राप्ती कैसें होवे ॥ तब कुंभनदासजीनें कही जो श्रीगुसांईजीके शरण जावो तो भगवत्प्राप्ती होवेगी ॥ तब वे रजपूत गोपालपुरमें जायके श्रीगुसांईजीको सेवक भयो ॥ और श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन किये ॥ तब वा रजपूतके मनमें ऐसी आई जो श्रीनाथजीकुं छोडके कहुं जानो नहीं ॥ तब श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी ॥ जो कृपाकरके मोकुं सेवा बतावें तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुम हथियार बांधके और घोडापें अस्वार होयके श्रीनाथजीकी गायनके संग जावो ॥ और गायनमें सिंघ और लियारी आवेहैं गायनकुं मार डारेहैं विनकी रक्षा करो ॥ और अनसखडी महाप्रसाद संग लेजावो ॥ तब वा रजपूतनें वैसें ही कियो ॥ सो नित्य गायनके संग जाते ॥ फेर थोडे दिन पीछे गायनके संग वाकुं श्रीनाथजी दर्शन देवे लगे ॥ कोई समय तो श्रीनाथजी वासुं बोले और कोई समय श्रीनाथजी वा रजपूतके घोडापर अस्वार होवे ॥ सो ऐसे श्रीनाथजी विनके संग अनेक प्रकारकी क्रीडा करन लगे ॥ एकदिन वा रजपूतको बेटा बुलावे आयो तब वा रजपूतनें कही ॥ जो तूं ऐसें जान जो मेरो बाप मरगयो है मैं ऐसें जाणुंगो मेरो बेटा जन्म्यो नहीं है ऐसें कहेके वा बेटाकुं पाछो पठायो ॥ परंतु श्रीनाथजीके चरणारविंद छोडके कहुंगये नहीं सो कुंभनदासजी-

की कृपातें वे रजपूत श्रीगुसांईजीको दृढ सेवक भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २१५ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव गुजरातमें

रहेते तिनकी वार्त्ता ॥ सो एकसमय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे ॥ सो वे वैष्णव सेवक भये हते और श्रीठाकुरजी-की सेवा पधरायके पुष्टिमार्गीय परिणालिका प्रमाणे सेवा करन लगे ॥ और वा वैष्णवके उहां वैष्णव आवते जा-वते हते ॥ और एकसमय शीतकालके दिन हते ॥ सो वाके घर वैष्णव बहुत आये सो बिछोना और ओढवेकुं सब दिये और आप आखीरात लंगोट मारके बैठे रहे ॥ ठंडके मार्‍ये नींद नहीं आई ॥ और भगवन्नाम लिया करे तब श्रीठाकुरजी मंदिरसुं बहार पधारके वाकुं कही जो तूं क्युं ठंडमें बैठोहै ॥ तोकुं ठंड लगेहैं जासुं हमकुंनींद नहीं आवेहें ॥ हमकुं कांपेहें सो श्रीगुसांईजीनें व्रतच-र्यामें कह्योहैसो श्लोक ॥सखिनिर्भरानुरागात्प्राप्तोयंत्रि-खिलगोपिकैकात्म्यं ॥ तदयंतच्छीतोत्त्यासकंपपुलकःस्व-यंचासीत् ॥ १ ॥ तब वा वैष्णवनें हाथ जोडके कही जो ये आपके दास मेरेघर पधारेहें इनकुंजो ठंडलगी होती तोइं आपकुं नींद न आवती ॥ जासुं आपके जागवेको और श्रमको अपराधमेरेमाथे पड्यो सो मैं भुकुंगो॥और वैष्णवकुं ठंड लगती तो आपके जागवेको अपराधया वै-ष्णवनकुं लगतो॥जासुं वैष्णवनके बदले मोकुं दुःखहोवेगो और अपराध भुकुंगो तो चिंता नहीं है ॥ ये सुनके श्री ठाकुरजी हंसे और आज्ञा करी तेरे जैसे वैष्णवनके नाम

लीयेसुं लोगनके अपराध जायंगे तो तोकुं अपराध कैसे स्पर्श करेगो ॥ जासुं में तेरेपर प्रसन्नहुं कछु वर माग ॥ तब वा वैष्णवनें माग्यो जो मेरो स्नेह वैष्णवनके उपर दिनदिन अधिकी रहे जिनके प्रतापसुं आप मेरेसंग बोले हैं ॥ तब श्रीठाकुरजीनें आज्ञा करी ऐंसेही होयगो ॥ ये सुनके वे वैष्णव बहुत प्रसन्न भयो तब जलदी न्हायके उत्तम सामग्री करके श्रीठाकुरजीकुं भोग धरी ॥ और वैष्णवनकुं महाप्रसाद लिवायो वा दिनतें नित्य श्रीठाकुरजी वा वैष्णवसों बोलते ॥ और जो चहिये सो मागते सो वे गुजराती वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २१६ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक निष्किंचन वैष्णवकी०

सो वे निष्किंचन वैष्णव श्रीगुसांईजीको सेवक गुजरातमें भयो ॥ तब वा वैष्णवनें ऐंसो मनोरथ विचार्यो जो मेरे पास द्रव्य होवेतो व्रजयात्रा जाउं ॥ श्रीनाथजीकुं और सात स्वरूपनकुं सामग्री अरोगाउं॥ और सब कुंडनमें स्नान करुं ऐंसे मनोरथ विचारके लोगनके आगें बात करे ॥ तब वा गाममें एक चुन्नीलाल शेठ हतो ॥ सो चुन्नीलालशेठके पास द्रव्य बहोत हतो ॥ सो ये बात चुन्नीलालशेठनें जाणी ॥ तब वा निष्किंचन वैष्णवकुं बुलाये और कह्यो ॥ जो तूं मनोरथ विचारेहै सो में तोकुं द्रव्य देउं ॥ तूं मनोरथ कर परंतु पुण्य सब मेरो ॥ वा निष्किंचन वैष्णवनें हा कही ॥ और जितनो द्रव्य चहिये इतनो दियो ॥ और द्रव्य लेके व्रजमें जायके सब

मनोरथ किये॥ और सब व्रजयात्रा करी ॥ और एकवर्षप-र्यंत गोपालपुरमें रह्यो और श्रीनाथजीकी सेवा दर्शन किये। फेर वो निष्किंचन वैष्णव अपनें देशमें आयो तब लोग-ननें कही यानें यात्रा करी तो कहा भयो पुण्यतो सब चुन्नीलाल शेठको है ॥ तब एक वैष्णव बोल्यो ॥ चुन्नीला-ल शेठपासे बैठो हतो सुनतो हतो हमारे पुष्टिमार्गमें तो पुण्य चहिये नहीं ॥ कछु फलकी अपेक्षा नहींहै॥ फल सब शेठ भले लेजाय परंतु यां वैष्णवनें या देहसुं टेहेल करी और नेत्रनसुं दर्शनको सुख लियो ॥ ये सुखतो चुन्नीलाल कैसे ले सकेगो॥ये बात सुनके वा चुन्नीलाल शेठके मनमें ऐसी आई जो मैंहुं वैष्णव होउंतो बहोत आछो ॥ फेर वा निष्किंचन वैष्णवकुं बुलायके और वा वैष्णवके संग व्र-जयात्रा गयो ॥ और श्रीगोकुलमें जायके श्रीगुसांईजीके दर्शन किये ॥ सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये॥ तब वा चुन्नीलालशेठनें वीनती करी महाराज मोकुं शरण ल्यो॥ तब कृपाकरके श्रीगुसांईजीनें श्रीनवनीतप्रिया-जीके संनिधान नामनिवेदन करायो ॥ फेर वा निष्किं-चन वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी ॥ जो महाराज जो कोई आछो काम करे और दूसरेको द्रव्य खर्चे याको पुण्य करवेवालेको कै द्रव्यखर्चवेवालेको ॥ तब श्रीगुसां-ईजीनें आज्ञा करी ॥ जो पुष्टिमार्गमें सकामकर्म अ-नित्य धर्मनमें गणेहैं ॥ और अनित्य धर्मकरे तो वेद-विरुद्ध बाधक होवे ॥ जासुं पुष्टिमार्गमें निष्काम कर्म करे चहिये और फलकी आशा मनमें राखनी नहीं जो राखे

तो वेदविरुद्ध बाधक होवे ॥ ये सुनके वे निष्किंचन वैष्णव प्रसन्न भयो ॥ और चुन्नीलालशेठ बोल्यो जो महाराज मेरे रोमरोम कासनासुं भन्येहें आप कृपाकरेंगे तो निष्काम अंतःकरण होएंगे॥ वाको उपाय आप कृपाकरके बतावे तो मेरो कारज सिद्ध होवे ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी श्रीठाकुरजीकी सेवा करो तब चुन्नीलालनें कही जो मैं सेवाकी रीतीमें समझुं नहींहुं आप कृपाकरें तो समझण पडे ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी या वैष्णवके पास सब मार्गकी विधी सीखो ॥ तबाँवा चुन्नीलालनें वीनती करी जो ये वैष्णव निष्किंचन है ॥ याकुं आप आज्ञा करे जो जन्मसूधी मोकुं छोडके कहुं नहीं जाय ॥ तो मैं सेवा पधरावुं और मेरे घरमें सब हुकुम याहीको राखुं ॥ तब श्रीगुसांईजीनें वा निष्किंचन वैष्णवकुं चुन्नीलालके पास राखदियो ॥ और श्रीठाकुरजी पधराय दिये ॥ और दोनो मिलके सेवा करन लगे ॥ तब श्रीगुसांईजीसुं बिदा होवन लगे ॥ तब वा निष्किंचन वैष्णवनें कही जो मैं याके पास रहुंगो परंतु वर्षमें एक वार व्रजमें आवुंगो ॥ और श्रीनाथजीकी और श्रीनवनीतप्रियाजीकी झांकी करुंगो ॥ ये चुन्नीलालकुं आप आज्ञा करें मोकुं यामें प्रतिबंध न करें ॥ तब चुन्नीलालनें कही सब द्रव्य और घर तुमारोहे मैं काहेकुं प्रतिबंध करुंगो॥ तब वे दोनो बिदा होयके गुजरातमें आये और हिलमिलके सेवा करन लगे ॥ और जन्मपर्यंत चुन्नीलाल शेठ वा निष्किंचन वैष्णवकी आज्ञामें रह्यो ॥ सो वे निष्किंचन

वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २१७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक रसखान पठाण दिल्ली

में रहेते तिनकी वार्ता ॥ सो वा दिल्लीमें एक साहुकार रहेतो हतो ॥ सो वा साहुकारको बेटो बहुत सुंदर हतो ॥ वा छोरासों रसखानको मन बहुत लग गयो ॥ वाहीके पाछें फिऱ्या करे और वाको झूठो खावे और आठ पहेर वाहीकी नोकरी करे ॥ पगार कछु लेवे नहीं दिनरात वाहीमें आसक्त रहे ॥ दूसरे बडी जातके रसखानकी निंदा बहुत करते हते ॥ परंतु रसखान कोईकुं गणते नहीं हते॥ और अष्टपहेर वा साहुकारके बेटामें चित्त लग्यो रहेतो ॥ एकदिन चार वैष्णव मिलके भगवद्वार्ता करते हते॥ करते करते ऐसी वात निकसी जो प्रभूमें चित्त ऐसो लगावनो ॥ जैसे रसखानको चित्त साहुकारके बेटामें लग्योहै ॥ इतनेमें रसखान ये रस्ता निकस्यो विननें ये वात सुनी ॥ तब रसखाननें कही जो तुम मेरी कहा वात करोहो ॥ तव वैष्णवननें जो बात हतीसो बात कही॥ तव रसखान बोले प्रभूको स्वरूप दीखेतो चित्त लगाईये ॥ तव वा वैष्णवनें श्रीनाथजीको चित्र दिखायो ॥ सो देखतहि रसखाननें वो चित्र लेलियो और मनमें ऐसो संकल्प कऱ्यो जो ऐसो स्वरूप देखनो जब अन्न खानो उहांसुं घोडापर बैठके एकरात्रमें वृंदावन आयो ॥ और आखोदिन सब मंदिरनमें वेष बदलायके फिऱ्यो॥और सव मंदिरनमें दर्शन किये और वैसे दर्शन नहीं भये तब गोपालपुरमें

गयो ॥ और वेष बदलायके श्रीनाथजीके दर्शन करवेकुं गयो ॥ तब सिंघपोरियानें भगवदिच्छासुं वाके चिन्ह बडीजातवालेके पहेचाण्ये ॥ तब वाकुं धक्का मारके काढ दियो ॥ सो जायके गोविंदकुंडपर पडरह्यो ॥ तीनदिन सूधी पड रह्यो ॥ खावेपीवेकी कछु अपेक्षा राखी नहीं ॥ तब श्रीनाथजीनें जानी ये जीव दैवी है ॥ और शुद्धहै और सात्विक है मेरो भक्तहै याकुं दर्शन देउं तो ठीक॥ तब श्रीनाथजीनें दर्शन दिये ॥ तबवे उठके श्रीनाथजीकुं पकडवे दौऱ्यो ॥ सो श्रीनाथजी भाग गये फेर श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीसुं कही ये जीव दैवी है ॥ और म्लेच्छ योनिकुं पायो है ॥ जासुं याके ऊपर कृपा करो याकुं शरण लेउ ॥ जहांसूधी तुमारो संबंध जीवकुं नहीं होवे तहांसूधी मैं वा जीवकुं स्पर्श नहीं करुंहुं वासुं बोलु नहींहुं ॥ और वाके हाथको खावुहुं नहीं जासुं आप याको अंगिकार करो ॥ तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीके वचन सुनके गोविंदकुंडपें पधारे और वाकुं नाम सुनाये ॥ और साक्षात् श्रीनाथजीके दर्शन श्रीगुसांईजीके स्वरूपमें वाकुं भये ॥ तब श्रीगुसांईजी विनकुं संग लेके पधारे और उत्थापनके दर्शन कराये ॥ महाप्रसाद लिवायो ॥ तब रसखानजी श्रीनाथजीके स्वरूपमें आसक्त भये ॥ तब वे रसखाननें अनेक कीर्तन और कवित्त और दोहा बहोत प्रकारके बनाये ॥ जैंसे जैंसे लीलाके दर्शन विनकुं भये॥वैंसेही वर्णन किये॥सो वे रसखान श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ जिनको चित्रके दर्शन करत-

सात्रहीसंसारमेंसुं चित्त खेंचायके और श्रीनाथजीमें ल-ग्यो इनके भाग्यकी कहा बडाई करनी ॥ वार्ता संपूर्ण ॥
॥ वैष्णव ॥ २१८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक एक रजपूतकी वार्ता॥

एकसमय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे ॥ मारवाडमें एक गाममें डेरा किये ॥ उहां एक रजपूत वा देशके राजाकी तरफसुं हांसल उघरावतो हतो ॥ सो श्रीगुसांईजीके डेरा देखके उहां आयो सो श्रीगुसांईजीके दर्शन किये ॥ सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये ॥ तब साष्टांग दंडवत करी ॥ तब वे रजपूत श्रीगुसांईजीको सेवक भयो ॥ और वाको गाम उहांसुं दशकोश दूर हतो ॥ तब उहां वीनती करके ॥ श्रीगुसांईजीकुं पधराये ॥ और घरके सब सेवक कराये और वीनती करी जो महाराज मेरो मन बहुत दुष्ट है सो आप कृपा करेतो मेरो मन पवित्र होवे ॥ और कछु पुष्टिमार्गमें लगे ॥ तब श्रीगुसांईजीनें वा रजपूतकुं श्रीठाकुरजी पधराय दिये और मार्गकी रीती शिखाई ॥ तब वे रजपूत सेवा करन लग्यो ॥ सो एकदिन वा रजपूतनें जुवार हरी शेकके श्रीठाकुरजीकुं धरी ॥ तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयके अरोगे ॥ तब श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीकुं आज्ञाकरी जो तुमारे सेवक रजपूतनें जुवार धरीहै ॥ सो बहुत सुंदर है ॥ और मैं प्रसन्न होयके अरोग्योहुं ॥ ये वात सुनके श्रीगुसांईजी वा रजपूतके ऊपर बहुत प्रसन्न भये ॥ तब चाचाहरिवंशजीकुं बुलायके श्रीगुसांईजीनें वा रजपूतके गाम पठाये॥ और आज्ञा करी

जो देखी आवो॥तब चाचाजी कितनें एक दिनमें पहोंचे सो वा रजपूतनें चाचाजीकु श्रीगुसांईजीके निजसेवक जानके बहुत आदर कर्‍यो और गदगद कंठ होयगयो ॥ और कहेन लग्यो मेरो बडो भाग्यहै के तुम जैसे भगवदीयननें मेरो घर पवित्र कियो ऐसे कहेके चाचाजीकुं उतरवेको ठेकाणो दियो ॥ तब चाचाजीनें कही जो श्रीठाकुरजीको कहा समयहै ॥ तब वा रजपूतनें कही हमसे जैसे जीवनकुं समय पूछवेकी अपेक्षा होवे है॥ और आप जैसे भगवदीयतो श्रीठाकुरजीको स्वरूपहै ॥ और हम जैसेनकुं न्यारे न्यारे दीसतहैं ॥ जासुं आप भीतर पधारो ॥ तब चाचाजी भीतर जायके टेरा खोल्यो ॥ और वाई समय राजभोग आये हते ॥ तब चाचाजी देखेतो श्रीठाकुरजी अरोगेहैं ॥ चौकीहै सो सिंघासनसुं बहुत दूर धरी हती ॥ और श्रीठाकुरजीकुं नमनमेंके लेनो पडतो॥ तब चाचाजीनें वा रजपूतकुं कही चौकी सिंघासनके पास धरो ॥ तब वा रजपूतनें कपडा पेहेरे हते तब चौकी सरकाई ॥ तब श्रीठाकुरजी आछीरीतीसुं अरोगनलगे ॥ तब चाचाजी टेरा देके बाहेर आये ॥ तब चाचाजीनें रसोई करके भोग धरके महाप्रसाद लियो॥ तब कितनेकदिन रहेके चाचाजी श्रीगोकुल आये ॥ और श्रीगुसांईजीकुं सब समाचार कहे ॥ और कही जो उहां महाप्रसाद मैनें नहीं लियो तब श्रीगुसांईजीनें पूंछयो क्युं नहीं लियो ॥ तब चाचाजीनें कही अनाचार बहुत हतो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो स्नेहमें आचा-

रको काम नहीं है ॥ जिनके अंतरमें भगवत्स्नेह छाय गयोहै तिनको आचार विचार नहीं रहे ॥ ये सुनके चाचाहरिवंशजी बहुत प्रसन्न भये ॥ और वीनती करी जो आपकी कृपातें ऐसे महत्पुरुषके दर्शन भये ॥ मैं विनको स्वरूप जान्यो नहीं ॥ सो वे रजपूत श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २१९ ॥ ❀ ॥

॥श्रीगुसांईजीके सेवक शैवके बेटाकी वार्ता ॥

सो एक क्षत्री श्रीमहाप्रभूजीको सेवक हतो और नवनीतप्रियाजीके जलघरकी सेवा करतो हतो ॥ नवनीतप्रियाजी वाकुं अनुभव करावते हते॥फेर कोईदिन अपराध पड्यो तव वाकी देह छूटी ॥ वानें शैव ब्राह्मणके घर आयके जन्म लियो परंतु कछु बोले नहीं ॥ रोवे नहीं चुप करके पडयो रहे ॥ जब दूध प्यावें जव पीवे ऐसे करते १२ महिना वीते ॥ जब वाकी वर्षगांठ आई और ज्ञाती भोजन भयो तव ज्ञाती भोजनमें वो वोल्यो ॥ श्रीवल्लभाचार्यजी इतनें अक्षर ॥ फेर दूसरे वर्षमें वर्षगांठको दिन आयो जब दो नाम लिये ॥ ज्ञातीसभामें वो वोल्यो श्रीवल्लभ श्रीविठ्ठल ॥ ऐसे तीसरे वर्षमें तीन नाम लिये॥चोथे वर्षमें चार नाम लिये ॥ पांचमें वर्षमें पांच नाम लिये ॥ तव वाके पितानें पूंछी जो तूं नित्य क्युं नहीं वोलेहें ॥ तव वानें कही जो मोकुं श्रीगोकुल लेजावो तव वोलुंगो ॥ तव वाको पिता श्रीगोकुल ले गयो ॥ तव श्रीगोकुलमें जायके वा छोरानें वाके पितासुं कही जो तुम श्रीगुसांईजीके सेवक होय जाओ मोकुं सेवक करावो॥तव वाको

पिता श्रीगुसांईजीको सेवक भयो ॥ और वा छोराकुं सेवक करायो तब श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन करते वाके नेत्र भरआये ॥ तब श्रीनवनीतप्रियाजी वा छोराको हाथ पकडके आपकी लीलामें लेगये ॥ तब वाको पिता विद्वान हतो ॥ कह्यो जो याको धन्य भाग्य है याके संगतें मोकुं श्रीगुसांईजीके दर्शन भये हैं ॥ और मैं वैष्णव भयोहुं सो वे शैवको बेटा श्रीगुसांईजीको ऐंसो कृपापात्र हतो ॥ जाकुं पूर्व जन्मकी बात याद रही हती ॥ और देहसहित भगवल्लीलामें गयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वै०॥२२०॥

श्रीगुसांईजीके सेवक तीनवैष्णवकी वार्ता ॥

एक साहुकारको बेटा वाको नाम मोहनदास हतो ॥ और वजीरकी बेटी वाको नाम गोपीबाई हतो ॥ और एक वनिया वाको नाम निहालचंद हतो ॥ सो वे तीनोजनें एक पाठशालामें पढते हते ॥ सो एकसमय श्रीगुसांईजी वा गाममें पधारे ॥ सो वे तीनोजनें श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ और मोहनदासको और गोपीबाईको स्नेह विशेष भयो ॥ और तीनोजनें श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करनलगे ॥ और वे मोहनदास नित्य गोपीबाईके घर जाय और भगवद्वार्ता वांचते ॥ जादिन न जाय वा दिन गोपीबाई प्रसाद न लेती ॥ एकदिन वा गामके राजाके मनुष्यननें वाकुं गोपीबाईके घर जातो दिख्यो ॥ तब राजाकुं खबर करी॥ तब राजा वेष बदलायके फिरवे निकस्यो ॥ और दोचार दिन छिपके मोहनदासकी और गोपीबाईकी चेष्टा देखी राजाकुं इतनो तो निश्चय भयो ॥ विनके

स्नेहमें विकार नहींहे परंतु लोगनमें वहुत चर्चा होवेहे सो ये चर्चा वंध करी चहिये ॥ तव वा राजानें मोहनदासकुं पकऱ्यो ॥ और कही राज्यसें चलो जव मोहनदासकुं राज्यमें लेगये और कही रातकुं कैदमें रहो नहीं तो जामिन देवो ॥ तव मोहनदासनें मावापसों कही जामिन पडो तव मावापनें कही हम जामिन नहीं पडेंगे तव कोई जामिन भयो नहीं ॥ तव वह निहालचंद जामिन भयो ॥ तव वाकुं छोडयो ॥ फेर दूसरे दिन राज्यके आदमी वाकुं लेगये ॥ तव राजानें हुकुम कऱ्यो याकुं गामवहार लेजाओ ॥ और उहां याकुं मारडारो ॥ परंतु मैं आवुंगो हुकुम देउंगो जव मारो ॥ फेर वाकुं गामवहार लेगये ॥ और उहां तमासा देखवेके लीयें वहुत भीड भई ॥ तव वा गोपीवाई पुरुषको वेष पहेरके घोडापर वैठके आई ॥ जव राजा आयो तव वा गोपीवाईनें तलवार खेंचके राजाके मनुष्यनकुं भगायो ॥ मोहनदासकुं घोडापर चढाय लियो ॥ तव राजानें पहेचानी ॥ तव मनुष्यनकुं हुकुम दियो ॥ दूर जावो याकुं कछु मति कहो ॥ और प्रधानकुं कही ये तेरी वेटी है याकुं छुडाय लेजाय है ॥ मैंनें परीक्षालीनी है यामें कछु विकार नहीं है भगवन्नाम लेवे हें ॥ जासुं इनको आपसमें विवाह करे तो ठीक ॥ ये वात प्रधाननें कवूल करी ॥ घरमें जायके ऐसो ठराव कऱ्यो या मोहनदासकुं विवाह देनी तव वा मोहनदासनें और गोपीनें प्रधानसुं कही जो हमारो वहेनभाईको संवंध है ॥ और हम एक दूसरेकुं भाईवेहेन वोले हैं ॥ जासुं

हमारो विवाह नहीं होवेगो ॥ ये सुनके प्रधान बहुतप्रसन्न भयो और कही जो अब विवाह तुमारो इनसुं नहीं करुंगो ॥ और तुम एक दूसरेके घर जावो आवो यामें प्रतिबंध नहीं करुंगो ॥ और कोई निंदा करेगो तो मैं जवाब देउंगो ॥ वे तीनोजनें ऐसे टेकके वैष्णव हते ॥ जिननें शीष देनो कबूल कऱ्यो ॥ परंतु स्नेह नहीं छोड्यो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २२१ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक ब्रजवासी रावलमें

रहते तिनकी वार्ता ॥ सो वे ब्रजवासी गाय चरावतो हतो ॥ सो एकदिन श्रीगोकुलमें जायके श्रीगुसांईजीकुं वीनती कीनी जो महाराज मोकुं शरण लेउ ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके नामनिवेदन करवायो ॥ तब वह ब्रजवासी गाय चरावन गयो ॥ सो एकदिन चिंताहरणघाटसुधी गयो उहां जायके देखे तो अबीर गुलाल चोवाचंदन केशर बूको गोरो मृगमद जखकरदम घनसार जवाद शाख ऐसे अनेक सुगंधीनकी वर्षा होय रही हती ॥ सबमेंसुं थोडो थोडो लेके जूदी जूदी गांठ बांधके श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीकुं दिखावे आयो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कृपाकरके सब देख्यो ॥ और वाकुं कही ये कहांसुं लायो ॥ जब वानें सब समाचार कहे ॥ तब श्रीगुसांईजी पधारे सो वानें जायके जगा देखाई ॥ तब श्रीगुसांईजीने निश्चय कियो जो श्रीठाकुरजी होरी खेलते इहांसुं आगें पधारे है ॥ तब श्रीगुसांईजी आगें जायके देखें तो श्रीठाकुरजी होरी खेलेहैं ॥ और अनेक यूथ ब्रजभक्तनके हैं ॥ तब श्रीगु-

सांईजी दूर ठाडे रहे ॥ तब श्रीठाकुरजी हाथ पकडके भीतर लेगये ॥ और अपने संग खिलाये ॥ ब्रजवासी दूरसुं देखत रह्यो फेर श्रीगुसांईजी खेलके पधारे ॥ तब वा व्रजवासीनें पूंछी जो महाराज ये कोन हते और ये हजारें लुगाई कहांसुं आई हती ॥ मोकुं कछु समझण पडी नहीं ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कृपाकरके वा व्रजवासीकुं दिव्य नेत्र दिये ॥ तब श्रीठाकुरजीके दर्शन सब लीला सहित होंवे लगे ॥ ऐसे दोघडी पर्यंत वा व्रजवासीकुं दर्शन भये ॥ फेर वा व्रजवासीकुं संगलेके श्रीगुसांईजी गोकुल पधारे सो वे व्रजवासी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते जिनकुं याही देहतें लीलाको अनुभव भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २२२ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव जव्हेरचंद

गुजरातमें रहेते तिनकी वार्ता–सो जव्हेरचंद श्रीगोकुल गये ॥ और श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये ॥ और सातस्वरूपनके मनोरथ किये ॥ और श्रीनाथजीके वागावस्त्रनको सामग्रीको मनोरथ कियो ॥ और वालक तथा वहु बेटीनको मनोरथ कियो ॥ फेर श्रीगुसांईजीसुं वीनती कीनी जो मेरे हजार वैष्णवनकुं भोजन करावनकीइच्छा है ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी एक मरियादीकुं कराय द्यो तो हजार आय गये ॥ तब जव्हेरचंदनें वीनती कीनी ॥ जो हजार मरियादीकुं भोजन कराउंगो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी एक स्नेही जाकुं भगवद और भगवदीयमें स्नेह होवे ऐसें एककुं करायदे तो हजार म-

रियादी होजायंगे ॥ तव वानें कही हजार प्रेमीकुं लेवाऊं तो कैसे ॥ तब आपनें कहां एक आसक्तीवानकुं करावे॥ तो हजार प्रेमी आय जायंगे ॥ तब वानें कही हजार आसक्तिवानकुं लीवाउंतो कैंसे तव आपनें आज्ञा करी एक व्यसनवानकुं करावे तो सब आयजायंगे तब वानें कही जो हजार व्यसनवानकुं भोजन करावुं तो कैंसे तव श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो व्यसनवान हजार कहासुं मिलेंगे ॥ व्यसन अवस्थातो गजनधावनकुं सिद्ध भईहै॥ और आसक्ती कुंभनदासजीकुं सिद्ध भईहै और कहांसुं लावेंगो तव वा जव्हेरचंदने पूछी जो व्यसन अवस्थाको स्वरूप कहा है और आसक्तिवानको स्वरूप कहा॥ तव श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी स्नेहीके देखेविना ज्वर चढ आवे ॥ व्याकुल मन होजाय ग्लानी होवे उद्वेग होवे उन्माद होवे शोचहोवे ॥ हर्ष होवे रुदन करे ॥ ऐसे अनेक प्रकार क्षणक्षणमें होयाकरें॥जिनकुं बुद्धिमान व्यभिचारीभाव कहेंहैं ॥ सो विप्रयोगमें होवेंहैं ॥ याको नाम व्यसन अवस्था हैं और आसक्तिवानकुं ग्रहके कार्यमात्रमें अरुची होवेंहैं अष्टपहेर देखवेमें मन रहेंहैं व्यसन अवस्थासुं ये उतरती अवस्थाहै जासुं पीछे व्यसन सिद्ध होवेंहैं श्रीमहाप्रभुजीनें आज्ञा करीहै भक्तिवर्धिनी ग्रंथमें॥ ॥ सो श्लोक ॥ स्नेहाद्रागविनाशःस्यादासक्त्यास्याद्ग्रहारुचिः ॥ गृहस्थानांबाधकत्वमनात्मत्वंचभासते ॥ यदास्याद्व्यसनंकृष्णेकृतार्थस्यात्तदैवहि ॥ १ ॥ यारीतसुं श्रीमहाप्रभुजीनें आज्ञा करीहै जासुं ऐसी अवस्थावालेतो

नहीं मिलेंगे परंतु हजारको नेम छोडदे त्यागीनकुं लीवा वो तो तेरो कल्याण होवेगो ॥ और श्रीठाकुरजी प्रसन्न होवेंगे ॥ ये सुनके जव्हेरचंदनें वैसेही कियो ॥ सो वे जव्हेरचंद श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २२३ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक दामोदरदास और विनकी दोय स्त्रीनकी वार्ता ॥ सो वे दामोदरदास जे कोई वैष्णव घरमें आवते तिनकुं बडे आदरसुं प्रसाद लेवावते और चाहे जैसो वैष्णव आवतो विनके ऊपर अभावनहीं लावते ॥ ये बात एक ईश्वरदास वैष्णव हतो वानें सुनी॥ तब वे दामोदरदासकी परीक्षा करवेके लीयें वा गाममें आये ॥ और आयके बावडीपर सोय रहे ॥ तब दामोदरदास नित्य बावडीपर आये गये वैष्णवकी खबर काढवेकुं जाते हते ॥ सो देखेंतो वैष्णव सूतोहै वाके गलामें कंठी देखके वाकुं जगाये ॥ तब वो ईश्वरदास गारी देन लग्यो ॥ तब वाकौ हाथ पकरके घरमें लाये ॥ और न्हवाये और महाप्रसाद लेवेकी वीनती कीनी ॥ तब ईश्वरदासनें कही हम महाप्रसाद नहीं लेवेंगे ॥ तब दामोदरदासनें हाथ जोडके कही तुम क्युं नहीं ल्यो ॥ तब ईश्वरदासनें कही तुमारो घर और द्रव्य और स्त्री सब हमकुं देवें तो लेवेंगे ॥ तब दामोदरदासनें कही तुमकुं दियो ॥ तोहुं लेवे न बैठो ॥ तब ईश्वरदासनें कही तुम घरमेसुं निकस जावो तब दामोदरदासजी श्रीठाकुरजी पधरायके निकसवेको विचार कियो जब

न्हायके श्रीठाकुरजीकी झांगी करन लगे तब श्रीठाकुरजी बोले जो वे वैष्णव प्रसाद नहीं लेवे तो इनकी मर्जी ॥ परंतु तूं मोकुं काहेकुं पधरावेंहें ॥ तब दामोदरदास बोले हे प्रभु हे दीनबंधु इतने दिन आप कोईदिन बोले नहींहो जब वैष्णव कुपित भयेहे तब आप बोलेहो जिनके कोपको फल इतनो भयो तो विनकी प्रसन्नताको फल तो अनिर्वचनीय होवेगो ॥ जाकुं मेंतो इहांसुं जाउंगो और ये प्रसन्न होयके प्रसाद लेवेंगे ॥ तब मेरो चित्त प्रसन्न होवेगो तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयके बोले जो ये वैष्णव तेरेपर प्रसन्नहें और हमहुं प्रसन्नहें जासुं तुम कछु मागो॥ तब दामोदरदासनें माग्यो जो मेरे उपर कोईदिन वैष्णव अप्रसन्न न होवें ॥ और मोकुं अभाव न आवे ये मागुहुं ॥ तब श्रीठाकुरजीनें आज्ञा करी जो ऐंसेही होयगो तब दोनों वैष्णवननें मिलके महाप्रसाद लियो तब ईश्वरदासनें कही में तुमारी परीक्षा लेवेके लीयें आयोहुं॥सो मेरे अपराध क्षमा करो ॥ सो वे दामोदरदास ऐसे कृपापात्र हते॥ जिनकुं कोईदिन वैष्णवके उपर अभाव नहीं आवतो ॥ विनसों श्रीठाकुरजी बोलते चालते बातें करते विनकी कहा बडाई करें ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २२४ ॥ ❁ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक कबूतर कबूतरीकी वार्ता

एकसमय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे हते॥ तब महीनदी पूर आई हती ॥ उहां श्रीगुसांईजीके डेरा भये ॥ जंगल हतो ॥ उहां सामग्री भई ॥ तब भोजनको समय भयो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें भोजन न करे ॥ तब चाचाहरिवंशजी

नें वीनती करी जो भोजन क्युं नहीं करे तब श्रीगुसांई-
जीनें आज्ञा करी आज कोईजीव शरण नहीं आयो है ॥
कम्तीसो कमती दो जीव नित्य शरण आये चहीये ॥ ह-
मकुं श्रीठाकुरजीकी आज्ञाहै॥ यातें भोजन नहीं करेंगे॥
तब चाचाजी जायके एक वृक्षपेंसुं कबूतर कबूतरीकी जोड
लाये ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कृपाकरके विनकुं नामसुना-
यो ॥ तब वे उहां वैठ रहे और श्रीगुसांईजीनें भोजन
किये ॥ और विनकुं जूठन धरी विन कबूतर कबूतरीनकुं
ज्ञान भयो ॥ फेर वे कबूतर कबूतरनी उहांसुं उडके जहां
वैष्णव रहेते हते वा गाममें एक वृक्षके ऊपर घोसला बां-
धके दोनो रहे ॥ जहां भगवद्वार्ता होवे तहां सुनवे जाएं॥
वैष्णवनकी गोदमें वैठते ॥ वैष्णवके पास फिऱ्यो करे ॥
और भगवद्वार्ता होयचुके तब उडके ठेकाणे जाते ॥ वा
गामको एक राजा हतो ॥ सो वाकुं कोढ भयो तब उपाय
बहुत कऱ्ये ॥ कोढ मिटे नहीं ॥ सो वा राजाकुं एक स-
र्पनें वरदान दियों हतो ॥ जो पशु पक्षी आपसमें बात क-
रेंगे सो तूं समझेंगो सो राजा समझतो हतो ॥ तब एक
वैद्यनें कही जो कबुतरनकी रुधिर लावे तो मैं औषध दे-
उंगो तो मिट जायगो ॥ तब राजानें हुकुम कऱ्यो ॥
कबूतर पकडले आवो तब एक मनुष्य भगवन्मंडलीमें
कबूतर आवेहैं ऐसे जाणतो हतो सो कंठी तिलक करके
वा कबूतर कबूतरीकुं पकड लायो ॥ और राजाकुं दिये॥
तब राजानें पींजरामें रखाये॥ और आपनें पास पींजरो
रखायो ॥ तब कबूतरी बोली कबूतरसुं हमकुं क्युं पकड

राखेहे तब कबूतरनें कही जो राजाकुं कोढ भयोहै सो आपणेकुं मारके आपणी लोही लगावेगो तब कोढ मिटेगो ॥ ऐसे वैद्यनें राजासुं कहीहै ॥ तब कबूतरनी बोली जो वैद्य बडो मूर्खहै हमारी विठ लगावे तो कोढ तुर्त मिटजाय और लोही लगावें तो महिना दो महिनामें मिटेगो ॥ सो यें वात राजानें सुनी ॥ राजाकुं बोली समझवेको वरदान हतो ॥ जासुं झट समझ गयो ॥ तब राजानें अपनें हाथनसुं विनकी विठ लगाई ॥ तब तुर्त कोढ मिट गयो ॥ तब राजानें वाही घडी विनकुं छोड दियो ॥ तब वे कबूतर कबूतरनी जायके भगवद्वार्ता सुने॥ सो वे कबूतर कबूतरनी ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनके लीयें श्रीठाकुरजीनें राजाकुं पेहेली वरदान दिवायो हतो जिनके भाग्यको पार नहीं ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥२२५॥

श्रीगुसांईजीके सेवक विठलदासकी वार्ता ॥

सो वे विठ्ठलदास आगरेमें रहेते हते ॥ और जरीको वेपार करते हते ॥ सो जरीके बहुत वस्त्र एकठे कर्ये ॥ बालक और बहु बेटीनके लायक सो गांठ बांधके श्रीगोकुलमें लेगये ॥ और श्रीगुसांईजीकुं वीनती कीनी ये अंगिकार करें ॥ तब श्रीगुसांईजीनें वे सब वस्त्र यमुनाजीमें पधराय दिये ॥ तब वे विठ्ठलदास बहुत उदास भयो तब श्रीगुसांईजीनें विठ्ठलदासके मनकी जानी ॥ सो विठ्ठलदासकुं आप संग लेके रमणरेती पधारे उहां दिव्य नेत्र दिये ॥ तब रासके दर्शन भये ॥ रासमें श्रीठाकुरजी और व्रजभक्त और श्रीस्वामिनीजी वही जरीके वस्त्र पेहेरे हते ॥

सो विठ्ठलदास दर्शन करके बहुत प्रसन्न भये ॥ और मनमें जान्यो जो मेरो बडो भाग्य है॥ और श्रीगुसांईजीकी कृपा बिना ऐंसे दर्शन कोन करावे ॥ दर्शन करके अपनो जन्म सुफल मान्यो ॥ फेर श्रीगोकुल आयके श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन कर्ये ॥ उहां जरीके वस्त्रनके दर्शन भये ॥ फेर श्रीनाथजीके दर्शन करे ॥ उहांहूं वाही जरीके दर्शन भये ॥ तब विठ्ठलदासनें मनमें विचार कियो ॥ जो जरी तो थोडी हती सब ठेकाणे वाही जरीके वस्त्रनके दर्शन होवे हें ॥ जासुं श्रीगुसांईजी और यमुनाजी और श्रीठाकुरजी तीनो स्वरूप एक है ॥ सो ऐंसो अनुभव विठ्ठलदासजीकुं भयो ॥ सो श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २२६ ॥ ❋ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक रत्नावती राणीकी वार्ता

सो रत्नावती आमेरमें रहेती हती ॥ मानसिंगराजाके भाई माधोसिंघकी राणी हती ॥ सो वा रत्नावतीके पास खवासनी रहेती ॥ सो खवासनी श्रीगुसांईजीकी सेवक हती ॥ अनन्य वैष्णव हती जब वा खवासनीकुं जंभाई आवती छीक आवती जो कछु विस्मय जैसो होतो ॥ तब वे खवासनी श्रीकृष्णसंबंधी भगवानके नाम लेती॥ कबहुं नंदकिशोर कबहुं नंदकुमार कबहुं वृंदावनचंद कबहुं गोकुलचंद कबहुं यशोदानंद ऐंसे नाम लेके खवासनीके नेत्रमें जल भरी आवते ॥ ऐंसे क्षणक्षणमें होयाकरे तब खवासनीकुं रत्नावतीराणीनें देखी ॥ तब रत्नावतीराणी बोली जो तुम घडीघडी कहा नाम लेउ हो॥ और

क्युं तुमारे नेत्र भर आवेहें ॥ और शरीरकी शुद्धी भूल-जाओहो ॥ तब वा खवासनीनें कही ये मार्गतो ताप क्लेशको है ॥ तुम सुखीलोक यामें काहेकुं पडोहो ॥ तब वा राणीनें बहुत आग्रह कियो ॥ तब वा खवासनीनें कही जो परमभगवदीय जो स्नेहीहैं विनकी कृपा होवे तब विरह उत्पन्न होवेहे ॥ तब ये शरीर ये दुःख सहिशके विरह दुःख तब सह्यो जाय ॥ तब राणीनें कह्यो जो तुम मोकुं समझावो तो तुम कहो तैंसे करुंगी ॥ तब वा खवास-नीनें पुष्टिमार्गकी रीती बताई ॥ तब वा राणीनें वा खवासनीसुं टेहेल छुडायके भगवन्नाम सुनायवेको ऐंसो ठराव करदियो ॥ तब वो खवासनी आखो दिवस वा राणीकुं पुष्टिमार्गीय भगवत्स्वरूप और गुरुको स्वरूप और वैष्णवको स्वरूप समझायो करे ॥ फेर कोईदिन श्रीगुसांईजी उहां पधारे ॥ तब रत्नावतीराणी सेवक भई ॥ तब रत्नावतीको बेटा प्रेमसिंघ हतो वाकुं सेवक करायो ॥ तब इंद्रनीलमणीको श्यामस्वरूप सिद्ध करा-यके पुष्टिकरायके सेवा करन लगी ॥ तब धीरेधीरे भाव-बढवे लग्यो ॥ अनेक प्रकारकी सामग्री और पकवान भोग धरे ॥ और श्रीठाकुरजीकुं लाडलडावे और शृंगार करते भगवत्स्वरूपमें निमग्न होयजाय अंग अंगमें माधु-र्यता भरायगई ॥ तब वा खवासनीसुं पूंछो जो प्रगट स्व-रूप कैंसे मिले तब वा खवासनीनें कही जो ये मेहेलके पास एक दूसरो मेहेल बनाओ और वामें वैष्णव आयके उतरें तब वैष्णवनकुं आप प्रसाद लेवावे ॥ तब श्रीठाकु-

रजी प्रगट होयके दर्शन देवें ॥ तब भगवत्कृपा संपूर्ण होवे ॥ तब दूसरो मेहेल करायो और गाम बहार चौकी बैठाई और जो वैष्णव व्रजजात्रा जाय विनकुं लायके मेहेलमें उतारे और महाप्रसाद सब अनसखडीको वैष्णवनके लीयें पठाय देवे॥ और वैष्णव लेवे तब राणी चिकडारके पडदामें बैठके वैष्णवनके दर्शन करती ॥ एकदिन वैष्णवकीमंडलीमें श्रीठाकुरजीके दर्शन वाकुं भये ॥ तब खवासनीसुं कहेके राणी पडदा छोडके बहार निकसके मंडलीमें जाय बैठी॥ और हाथ जोडके वैष्णवनकुं भगवत्स्मरण करे और वीनती करी जो मेरे मनमें बहुत दिनसुं अभिलाष लागरहीहे॥ जो तुम प्रसन्न होयके आज्ञा द्यो तो मैं हाथनसुं वैष्णवनकुंप्रसाद धरुं॥ तब वैष्णवननें हा कही ॥ तब सोनाको थार लेके सब वैष्णवनकुं परोसके और महाप्रसाद लिवायो॥ और चंदन लगायो ॥ और वीडी खवाई ॥ तब भगवद्वार्ता करन लगी ॥ सो बहुत आनंद भयो तब गाममें खबर परी राणी पडदा छोडके बहार आईहे ॥ तब आखो गाम देखवे आयो ॥ और गाममें खूब धामधुम मची ॥ तब राजा कहुं दूसरे गाम गयो हतो ॥ तब राजाके दिवाननें पत्र लिखके मनुष्य पठायो ॥ तब वा मनुष्यनें राजाकुं जायके पत्र दियो ॥ सो पत्र वांचके राजाकुं क्रोध भयो ॥ वाई समय वा राणीको बेटा प्रेमसिंघ काका मानसिंघराजाकुं तिलक माला करके सलाम करवे आये॥ तब राजा बोल्यो आवो मोडीके ॥ ये सुनके प्रेमसिंघ ठाडो रह्यो ॥ और

राजा क्रोध करके उठके भीतर गयो ॥ तब प्रेमसिंघनें लोगनसुं पुंछो जो काकानें मोकुं कहा कही है ॥ तब सब लोगननें वाकी माके सब समाचार कहे ॥ तब अपनें डेरामें आयके विचार कियो ॥ सभामेंकाकानें मोडीको कह्यो ॥ जासुं ये बातको स्वांग पूरो करनो चहीये ॥ तब माजीकुं पत्र लिख्यो जो सभाके बीच मोकुं काकानें मोडीको कह्यो है ॥ जासुं अब तुम ये स्वांग पूरोकर दिखावो ॥ अब मैं मोडीको रहुं तो ठीक ॥ प्राणतो एकवार जायंगे ॥ सो पत्र मनुष्यनें प्रेमसिंघकी माता रत्नावती राणीकुं जायके दियो ॥ जो पडदासुंवाहर निकसी हती वाहीकुं दियो तब राणी पत्र बांचके बहुत प्रसन्न भई ॥ और श्रीठाकुरजीकी और वैष्णवनकी आज्ञा लेके माथो मुंडाय डार्‍यो ॥ धणी जीवतो हतो तो पण भगवद्धर्मनकुं मुख्य मानके संसारमें असक्ती छोडवेके लीयें माथो मुंडाय डार्‍यो तब श्रीठाकुरजी वैष्णव उतरते हते ॥ वाही मेहेलमें पधराय लाई और कीर्तन करे ॥ नाचे और गावे आनंद करन लगी ॥ और श्रीठाकुरजीकुं लाडलडावन लगी ॥ फेर पुत्रकुं पत्र लिख्यो ॥ तब मनुष्यननें जायके वाको पुत्र प्रेमसिंघ हतो वाकुं पत्र दियो ॥ तब प्रेमसिंघको ऐसो नेम हतो ॥ जहांसूधी मोडीको नहोउं तहांसूधी अन्न नहीं खाउंगो फलाहार करुंगो ॥ जब वाकुं पत्र पहोंच्यो तब माथेपर चढायलियो ॥ और नोबत बैठाई ॥ और वधाई बांटवे लग्यो ॥ बडी खुशी करी ॥ तब राजा मानसिंघजीकुं ख-

वर भई ॥ तव मानसिंघजीकुं लोगननें कही ॥ जो तुमनें सभामें कही हती सो स्वांग प्रेमसिंघजीनें कर दिखायो है ॥ मोंडीको वन गयो है ॥ ये सुनके राजा मानसिंघ वहुत उदास भयो और ऐंसो विचार कियो ॥ जो भाईकी वहुंको मराय डारनो परंतु लोगनमें निंदा न होंवे और पृथ्वीपतीकुं ऐंसी खवर न परे ॥ जो मानसिंघ राजानें स्त्री मराई है ॥ ऐंसो नाम वदनाम न होंवे ऐंसी रीतीसुं मराई डारनी ॥ ये विचार करके राजानें तैयारी करी ॥ ये खवर प्रेमसिंघजीकुं भई तव प्रेमसिंघ वोल्यो॥ जो राजालोग धरतीके लीयें माथों कटावे हैं तो भक्तीपर माथो कटावे यामें कहा चिंता है ॥ तव राजा घर गयो और गामके वडे वडे आदमी मिलवेकुं आये ॥ तव राजानें विनसुं कही जैसे अपनी निंदा न होवें और कारज सिद्ध होवें वैंसो उपाय करो जैसें वने तैंसे वा रत्नावतीकुं मराय डारो ॥ परंतु अपनो नाम न होवे ॥ तव एक मनुष्यनें ऐंसो विचार वतायो ॥ जो ऐसी वंदोवस्ती करो पींजरामें सिंघहै सो छोड देवो सव मनुष्यनकुं वहार काढ देवें और कमाडलगाय देवें ॥ भीतर जायके रत्नावतीकुं सिंघ मार डारेगो और फेर सिंघ पकड लेवेंगे ॥ तव वात दव जायंगी ॥ ऐंसो विचार सवकों आछो लग्यो ॥ वैंसे सिंघ छोड दिये रत्नावतीके पास सिंघ गयो॥ तव वो खवासनी वैठी हती और राणी श्रीठाकुरजीकुं श्रृंगार करती हती ॥ तव वा खवासनीनें सिंघकुं देखके जयजयकरकें ठाडी भई ॥ श्रीनृसिंहजी पधारे हैं मेरे मा-

ग्यहै ऐसे कहेनलगी ॥ और जायके सिंघपर हाथ फेरन लगी और तिलक कऱ्यो और फूलनकी माला पहेराई और हाथ जोडके ठाडी रही ॥ तब वाकी भावनाकी सचाई देखके श्रीठाकुरजी वा सिंघमें प्रवेश करके वा खवासनीकुं चाटन लगे ॥ जैसे नृसिंहजीनें प्रल्हादजीकुं चाट्यो हतो ॥ सो श्रीमहाप्रभुजीनें पुरुषोत्तम सहस्रनाममें लिख्योहै ॥सो नाम॥ भक्तांगलेहनोधौतक्रोधपुंजःप्रशांतधीः॥ फेर सिंघ पीछे फिरके मेहेलनसुं बहार कूद पड्यो और बहिर्मुख लोग ठाडे हते॥ राजाकी फोज सैंकडनकुं मारडारे गाममें हाहाकार पडगयो ॥ और बहोत त्रास पडगयो बडो हाहाकार भयो ॥ तब राजा मानसिंघ बहोत डरप्यो और तुर्त दौडके भाईकी बहुकें पावन पऱ्यो ॥ और साष्टांग दंडवत करके पडरह्यो ॥ कछु उठवेको भान रह्यो नहीं तब रत्नावती बोली ॥ उठो उठो श्रीठाकुरजीके दर्शन करो ॥ अब श्रीठाकुरजीनें सिंघरूप मिटायके दूसरे रूपसुं दर्शन देवेंहें ॥ अब तो उठो तब राजानें उठके दर्शन किये॥ फेर राणीसुं कही जो तुम हमारी रक्षा करो ॥ हम तुमारी शरण आयेहैं ॥ ये सब राज्य और धन तुमारोहै॥ तुमनें संसारको लोभ छोडके माथो मुंडायोहै जैसे तुमारी इच्छा होवे तैसे तुम वरतो ॥ तब मानसिंघराजा घरगयो और खजानचीकुं हुकुम कियो ॥ महिनेके महिने दशहजार रुपैया वा राणीकुं पहोंचायद्यो ॥ और अधकी रुपैया जितनें मागे इतनें मोकुं पूंछके देणे ॥ एकदिनकी ढील करनी

नहीं ॥ तब वो खजानची महिनेके महिने दशहजार रुपैया पहोंचावतो ॥ सो सब रुपैया सामग्रीमें खर्च डारती सो वे रत्नावतीराणी श्रीगुसांईजीकी टेककी कृपापात्र हती ॥ और मानसिंघराजा वा रत्नावतीके श्रीठाकुरजीके दर्शन कन्ये विना जल नही लेती वे राणी और खवासनी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव ॥ २२७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक दक्षणको राजा तिन०

सो वा राजाके एकसों आठ राणी हती ॥ परंतु कोई राणीकुं संतान न भई ॥ जासुं वा राजाको मन बहुत उदास रहेतो हतो ॥ तब वा दुःखसुं राजा यात्रा करवे गयो ॥ और श्रीजगन्नाथरायजीके दर्शनकुं गयो ॥ उहां श्रीगुसांईजीके दर्शन भये ॥ सो साक्षात पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये ॥ तब वो राजा श्रीगुसांईजीको सेवक भयो ॥ तब श्रीगुसांईजीसुं वीनती कीनी जो महाराज मेरे संतान नहीं है ॥ जासुं मेरो चित्त लौकिकमें बहुत लग्यो है ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तुम भगवत्सेवा करो ॥ तब वह राजा श्रीठाकुरजी पधरायके भगवत्सेवा करन लग्यो ॥ अपनें देशमें आयो ॥ फेर राजानें एक और राणी करी ॥ सो तेलीकी बेटी हती ॥ सो वा राणीनें राजासुं कही जो मोकुं भगवत्सेवा करन द्यो ॥ तब राजानें कही तुम श्रीगोकुल जायके श्रीगुसांईजीके सेवक होय आवो मनुष्यनकुं संग लेके श्रीगोकुल गई ॥ और जायके श्रीगुसांईजीकी सेवक भई ॥ और श्रीनवनीत-

प्रियाजीके दर्शन किये ॥ और श्रीनाथजीके दर्शनकिये॥ फेर अपनें देशमें आई ॥ और राजासुं सब समाचार कहे ॥ तब वह राणी सेवामें न्हायवे लगी ॥ सो अनेक प्रकारकी सामग्री करे॥और अनेक प्रकारके वागा वस्त्र करे ॥ और श्रीठाकुरजीकुं प्रसन्न करे ॥ ऐसो भाव देखके राजा वा राणीके ऊपर बहुत प्रसन्न भयो ॥ और नित्य वा राणीके पास राजा आवे ॥ भगवद्वार्ता कहे॥ सेवाकी रीती समझावे और समझे तब वा राजाके एक बेटा भयो सो बहुत गुणवान भयो ॥ तब राजानें श्रीगोकुलमें वीनती पत्र लिखके श्रीगुसांईजीकुं पधरायके वीनती करी ॥ जो महाराज या बेटाकुं सेवक करो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें वाकुं नाम निवेदन करायो ॥ तब वा राजानें श्रीगुसांईजीसुं वीनती कीनी ॥ जो निवेदनतो तादृशी भगवदीयके संग मिलके विचार्यो चहिये॥सो कोइ इहां मिले नहीं हें ॥ जब मैं कोनको सत्संग करूं ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो इहां अद्भुतदास आवेंगें विनको सत्संग करो ॥तब वे राजा अद्भुदासको सत्संग करनलगे॥ तब श्रीठाकुरजीन वा राजाकुं अनुभव जतायो ॥ राजाकी बुद्धि निष्काम भई सो वह राजा श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २२८ ॥ ❀ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक खुशालदासकी वार्ता॥

वैष्णव खुशालदासनें बहुत द्रव्य कमायो औरसब द्रव्य श्रीगुसांईजीके पास लेगयो ॥ वाई समय श्रीगुसांईजीकुं खबर कराई ॥ वाईसमय श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीको शृं-

गार करत हते ॥ तब सुनके चुप कर रहे ॥ और आप सेवासुं पहोंचके राजभोग पीछे वहार पधारे ॥ तब वा खुशालदासनें श्रीगुसांईजीके दर्शन किये और तीनलाख रुपैयाको द्रव्यसामग्री सामान लायो हतो ॥ सो सब श्रीगुसांईजीके आगें धर्‍यो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ये द्रव्य कामको नहीं है ॥ तुम पीछे ले जावो ॥ इच्छा आवे सो करो ॥ तब वा खुशालदासनें पूछोजो मेरो कहा अपराध है ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तेरो अपराध नहीं है ॥ येद्रव्य ऐंसोही है ॥ हम शृंगार करत हते ॥ वाई समय या द्रव्यकी खबर भई ॥ तब दो चित्त हमारे होयगये ॥ याद्रव्यनें आवतमात्रही सेवा-मेसुं चित्त काढ डार्‍यो ॥ सो द्रव्य भंडारमें रहेगो तो कहा नहीं करेगो ॥ यासुं ये द्रव्य हमारे नहीं चहिये तब वा खुशालदासनें मनमें ऐंसो विचार कियो ॥ ये द्रव्य मेरे उपयोग आवेगो तो मेरी बुद्धीको भ्रष्ट करेगो ॥ तब खुशालदासनें वह द्रव्य उठायके सब लुटाय दियो सो वा खुशालदासकुं श्रीगुसांईजीके वचनपर ऐंसीदृढता हती ॥ और संपूर्ण विश्वास हतो ॥ एक पैसाहुं राख्यो नहीं ॥ सो वे खुशालदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २२९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव गोकुलदास

हतो जानें गुप्तभेट करी तिनकी वार्ता॥ सो गोकुलदासके पास द्रव्य बहुत हतो ॥ एकलाख रुपैयाकी हुंडी लिखायके श्रीगोकुल गयो ॥ और वैष्णव संग बहुत हते ॥ सो सबनें

श्रीगुसांईजीके दर्शन किये ॥ सब वैष्णवननें भेट करी ॥ और गोकुलदासनें कछु भेट नहीं करी ॥ और सब लोग निंदाकरन लगे ॥ गोकुलदास पैसावालो होयके कछु भेट नहीं करी ॥ खाली दंडवत करी ॥ तब गोकुलदासनें छाने छाने गादीके नीचे कागद धर दियो ॥ सो धरत खवासनें देख्यो सब वैष्णव गये ॥ तब खवासनें श्रीगुसांईजीसुं वीनती कीनी ॥ जो एक वैष्णव छानो-छानो कागद धरगयोहै ॥ तब श्रीगुसांईजीनें वे कागद भंडारमें पठायदियो ॥ सो बहुत दिन सूधी वे संग श्रीगोकुल और श्रीजीद्वारमें रह्यो ॥ सो कोईदिन ये बात गोकुलदासनें प्रगट करी नहीं ॥ आपकी निंदा करायो कर्ये सो वे गोकुलदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २३० ॥ ❀ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक नरसिंहदासकी वार्ता॥

सो वह नरसिंहदास रस्तामें जातो हतो ॥ औररस्तामें भील मिल्यो ॥ सो वा भीलको ऐसो नियम हतो ॥ मनुष्यनकुं मारडारके गांठडी लेतो॥तब वा नरसिंहदासकुं भील मारवेकुं दौडयो॥ तब नरसिंहदासको स्वरूप सिंह-जैसो दीखवे लग्यो॥ तब वो भील डरप्यो तब नरसिंहदास बोले क्युं डरपे हैं आव मेरे पास ॥ तब वो भील बोल्यो तुम मनुष्य होके सिंहहो ॥ मोकुं खबर नहीं पडे है ॥ तब वानें कही तेरे जैसेनकुं शिक्षा करनेके लीयें मैं सिंघहुं अब तोकुं नहीं छोडुंगो ॥ ऐसे कहेके वा भीलकुं थपड मारके हथीयार खोस लिये ॥ तब भील बोल्यो मेरे

हथीयार देउ ॥ अब तुमकुं नहीं मारुंगो ॥ तब वो नरसिंहदासनें कही जो तेरे घरमें पूछ जो मेंने जितनी हत्त्या करी हैं सो पाप कोनके ऊपर है तब वो भील घरमें पूछवे गयो ॥ तब घरके मनुष्यननें कही हमारे माथे हत्त्या नहीं है हमनें ऐसी कही नहीं ॥ जो मनुष्य मारके खवाव ॥ तब वा भीलनें आयके नरसिंहदाससुं कही जो मेरे घरके आदमी तो हत्त्यामेंसुं पाती नहीं राखे हैं॥ तब नरसिंहदासनें कही तूं क्युं पापमें पडे हैं ॥ चल मेरे संग तेरो कल्याण श्रीप्रभुजी करेंगे ॥ तब वो भील वा नरसिंहदासके संग चल्यो ॥ सो जायके श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और कृपापात्र भयो ॥ सोवे श्रीगुसांईजीके सेवक नरसिंहदास ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनके संगसुं भील वैष्णव भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २३१ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक रूपमंजरीकी वार्ता ॥

सो वे रूपमंजरी पृथ्वीपतीकी दासी हती हिंदुराजाकी बेटी हती ॥ पृथ्वीपतीकुं परणी हती ॥ पादशाहको स्पर्श नहीं करती हती ॥ वो कहेती हती जो मेरो स्पर्श करोंगे तो मेरे प्राण छोड देउंगी ॥ विनको रूप बहुत सुंदर हतो॥ सो पृथ्वीपती वाको रूप देखके राजी रहेतो हतो ॥ सो वे बाई रातकुं आकाशमें उडके नित्य नंददासके पास आवती हती ॥ वाके पास एक गुटका हतो सो वा गुटकामें इतनी सामर्थ हती जे कोई मनुष्य मोढामें राखे सो जहां कहे उहां पहोचायदेवे सो वा रूपमंजरीके पास गुटका हतो ॥ सो नित्य गुटकाके बलतें उडके नंददास-

जीके पास आवती हती ॥ ऐंसे करते बहुत वर्ष बीते॥एक दिन पृथ्वीपतीके आगें कोई मनुष्यनें पद गायो सो पद देखोदेखोनागरनट ॥ निरततकालिंदीकेतट ॥ यापदकी छेलीतुकमें आवेहे नंददास गावे तहां निपटनिकट ॥ सो ये पद पृथ्वीपतीनें सुन्यो ॥ और कही जो ऐसे हते परमेश्वरके पास बैठके गाते तब वाईसमय कोईनें कही जो जिननें यह पद बनायोहै वे तो अवहीं हाजर हैं ॥ गोपालपुरमें रहेहे ॥ श्रीगुसांईजीके सेवकहे ॥ तब पृथ्वीपतीनें विचार कियो जो आपणें व्रजमे जानो और नंददासजीकुं मिलनो तब पृथ्वीपती सहकुंटुब व्रजमें आये गोवर्धनमें डेरा किये और नंददासजीके पास बीरबलकुं पठाये और कही जो नंददासजीकुं पूंछआवो ॥ अब हम तुमकुं मिलबे आवें के तुम हमकुं मिलवे आवोगे ॥ तब नंददासजीनें कही हम परसूंके दिन मानसीगंगास्नान करवेकुं आवेंगे सो उहां पादशाहकुं मिलेंगे ॥ तब नंददासजी दूसरे दिन बिलछुकुंडपें नाहायवे गये ॥ उहां रूपमंजरीको डेरा हतो ॥ और रूपमंजरीनें राजभोग धर्‍यो हतो ॥ और श्रीगोवर्धननाथजी साक्षात् अरोगते हते ॥ तब नंददासजीनें देख्यो तब वृक्षकी ओटके पास ठाडे रहे ॥ तब श्रीनाथजीनें रूपमंजरीसुं कही ॥ जो नंददासजी वृक्षकी ओटमें ठाडे हैं विनकुं बुलावो तब नंददासजीकुं बुलाये तब नंददासजीनें गोवर्धननाथजीके दर्शन किये तब श्रीगोवर्धननाथजीनें आज्ञा दीनी ॥ जो तुम ये महाप्रसाद लेउ तब नंददासजीनें महाप्रसाद लियो॥और

रूपमंजरीसुं विदा होयके नंददासजी गोपालपुर गये ॥ फेर दूसरे दिन मानसीगंगा नाहायवेकुं गये उहां पृथ्वीपतीकुं मिले ॥ तव नंददासजीकुं एकांतमें लेजायके पूंछी जो तुमनें ये पद गायो सो कैसे ये वात सुनके नंददासजीनें विचार कियो जो अन्यमार्गीयसुं कैसे बात करी जाय सो नंददासजीनें उंचो देखके देह छोड दीनी॥ पादशाहतो विस्मय होयगयो ॥ वहुत उदास भयो सो पृथ्वीपतीकी रीत हती ॥ जव उदास होय तव रूपमंजरीको सुख देखवेकुं आवे सो भीतर जायके रूपमंजरीके सन्मुख ठाडोरह्यो॥और रूपमंजरीसुं वात करी॥जो परम भगवदीय नंददासजीसुं मैंनें ऐसे पूंछ्यो तव नंददासजीनें कछु कही नहीं ॥ और विनकी देह छूट गई यातें मेरो चित्त वहुत उदास है ॥ ऐसें पृथ्वीपतीकी वाणी रूपमंजरीनें सुनी तव रूपमंजरीकुं विप्रयोग उत्पन्न भयो ॥ ऐसें विरहतें रूपमंजरीनें देह,छोड दीनी ॥ सो देखके पृथ्वीपती बहुत उदास होय गयो ॥ सो वे रूपमंजरी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र हती ॥ जिनसों विप्रयोग घडीएक सह्यो न गयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २३२ ॥ ❋ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक कल्याणभट्ट खंभाळीयामें रहेते तिनकी वार्ता ॥ एकसमय श्रीगुसांईजी द्वारकातें खंभालियामें पधारे ॥ तव कल्याणभट्टजी श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ और श्रीगुसांईजीके पास ग्रंथ पढे और ग्रंथ सब हृदयारूढ भये और संसारमेंसुं आसक्ती निकस गई ॥ तव कल्याणभट्टजीके चित्तमें ऐसी आई ॥

जो श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन करूं तो ठीक ॥ सो कल्याणभट्ट श्रीगुसांईजीके संग गये ॥ और श्रीगोकुलमें श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये ॥ फेर श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन किये ॥ तब विचार कियो जन्मपर्यंत इहां रहेनो तब आन्योरमें रहेवेको घर कियो ॥ सो वे कल्याणभट्टजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥१॥ सो एकसमय श्रीगोवर्धननाथजीके दूध घरीयानें दोय कसेडी दूध कमती लियो ॥ जब रातकुं श्रीगोवर्धननाथजी उठे ॥ और सोनाको कटोरा लेके आन्योरमें गये ॥ सो दश पंदर वर्षको छोराको रूप धरके गये ॥ सो कल्याणभट्टजीकी बेटी देवका हती ॥ सो घरमें दूध बहुत होतो हतो सो वेच देती हती तब श्रीगोवर्धननाथजीनें पूंछी तेरेपास दूध है ॥ तब वा देवकानें कही जो है साडाचारपैसा शेरके लेउंगी तब श्रीनाथजीनें साडाचार पैसा कबूल करे ॥ और कटोरामें वे देवकासों दूध लियो ॥ और शेरभरके कटोरामें डार्‍यो तब श्रीनाथजी दूध पीवे लगे॥ तब फीको लग्यो तब श्रीनाथजीनें पूंछी तेरे घर खांड है वानें हा कही ॥ तब वाधुं चार आनाकी खांड लीनी ॥ और चारशेर दूध लियो ॥ और खांड डारके पान कियो तब वा देवकानें पैसा मागे ॥ तब श्रीनाथजीनें कही मेरो कटोरो घरमे धरराख ॥ काल्ह कटोरा लेजाउंगो और पैसा दे जाउंगो तब श्रीगोवर्धननाथजी पोढे फेर सवारे श्रीगुसांईजी शृंगार करत हते ॥ जब देखे तो कटोरा नहीहै ॥ तब सब भीतरीया ढूंढवे लगे ॥ तब श्रीगोवर्धन-

नाथजीनें श्रीगुसांईजीसुं कही जो दूधघरीयानें दूध ओछो राख्यो हतो तब मैं देवकाके पास दूध और खांडवेचाती लेके पी आयोहुं ॥ और कटोरा गहने राख आयो हुं तब ये बात श्रीगुसांईजीनें कल्याणभट्टसुं कही ॥ तब कल्याणभट्ट सुनके बहुत प्रसन्न भये ॥ तब घरजायके देवकासुं पूंछी जो काल तेरे पास कोई कटोरा धरके दूध लेगयो है ॥ तब देवकानें कही एक छोरा लेगयो है ॥ और कटोरा धरगयोहे तब कल्याणभट्टजीनें कही ये तो श्रीनाथजी हते ॥ तब कटोरा देखे तो सोनाको है ॥ तब कल्याणभट्टजी लेके श्रीगुसांईजीकुं दियो ॥ तब श्रीगुसांईजी देवकाकी सराहना करन लगे ॥ और कही जो याके भाग्यकी कहा बडाई करनी और दूध घरीयाकुं बुलायके उराहनो दियो ॥ और आज्ञा करी जो कोईदिन दूध कमती राखेगो तो तेरी सेवा छुडाय देउंगो ॥ और जब श्रीनाथजीकी इच्छा होवे तब देवकाके पास दूध दही लेके अरोगते ॥ सो कल्याणभट्टजी श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ एकदिन कल्याणभट्टजीनें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो आपके निकटवर्ती सेवक सेवा करेंहें ॥ कोई जल लावेंहें कोई जलधरेहें ॥ कोई बुहारी करेंहें ॥ कोई तेल लगावेंहें ॥ कोई भंडार करेंहें ॥ कोई रसोई करेंहें ॥ सब ऐंसे करेंहें ॥ हमारो इतनो अंगीकार करेंगे ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ये सबकी भूल है ॥ हमारो सब अंगीकार कियो हे॥हमारो कछु नहीं है ॥ ऐंसे समझो चहिये सो नहीं समझे हे ॥

और अंगीकार करेंगे ऐसो समझेंहैं इनकुं विश्वास संपूर्ण नहीं है ॥ विश्वास होवे तो काहेकुं ऐसे कहे ॥ वस्तु साक्षात् प्रभूनें अंगीकार करी है यामें संदेह काहेकुं चहिये॥ ये सुनके कल्याणभट्टजी बहुत प्रसन्न भये ॥ प्रसंग ॥३॥ और एकसमय कल्याणभट्टनें श्रीगुसांईजीसों वीनती कीनी ॥ जो महाराजाधिराज श्रीप्रभुजीके श्रीपुराणपुरुषोत्तमके उत्तम भगवदीय कृपापात्र होय ॥ सो तिनके लक्षण कैसे है ॥ सो आप कृपाकरके कहिये ॥ तब श्रीगुसांईजीनें कल्याणभट्टसों कही जो उत्तम भगवदीय तिनके लक्षण तो यह है ॥ जो सबके ऊपर सदा कृपा राखे ॥ जो कोई भगवदीय वैष्णवके ऊपर क्रोध नहीं करनो ॥ और तिनको अपराध सहेनो ॥ दुर्वचन बोले तो अपनो कहालेवे ॥ ऐसे समझके विनको अपराध नहीं माननो परंतु तिनके वचन सुनके मन डुलावे नहीं जो करे सो क्षमाही करे तिनको दोऊहाथ जोडीके मधुर वचनसुं बोले ॥ क्षमा राखे जो भगवदीय वैष्णवसों साचो बोले और श्रीप्रभुजीनमें चित्तदेके निर्मल बुद्धि राखे ॥ और सदा सर्वदा उपकारही करे और श्रीप्रभुजीके ऊपर तथा भगवदीय वैष्णवनके ऊपरतें मन बिगाडे नहीं और इंद्रिय जीत रहे ॥ और अपने मनको विचार कोइके जानवेमें नहीं आवे श्रीप्रभुनकी सामग्री करे वामें चित चलायमान न करे आप महाप्रसाद लेवे और अपने अर्थ उद्यम नहीं करनो ॥ और महाप्रसाद न्यून लेनो ॥ और बहुत महाप्रसाद लेवे तो निद्रा आवे ॥ भगवद्भजन न

होवे ॥ तातें न्यून महाप्रसाद लेनो ॥ और रोगादिक होय तब श्रीठाकुरजीकी सेवामें अंतराय होय और मनकुं जीतके वश करे तब श्रीप्रभुजीके भजनमें स्थिर होय रहें हैं ॥ मन वश होय ॥ सदासर्वदा प्रभुके कार्यमें रहे ॥ और इंद्रियनको जीते ॥ विषयमें लगावे नहीं ॥ और कहे जो हम तो श्रीप्रभुजीनके दास हैं ॥ शरण हैं सो ऐसें समझतो रहे ॥ और जहां बहिर्मुख लोग चर्चा करे तो मौनगहिरहे और श्रीप्रभुजीकी सेवामें सदा सावधान रहे ॥ और असावधान नहीं होनो ॥ जो श्रीप्रभुनकी भगवदीय वैष्णवविना रहस्य वार्ता प्रगट नहीं करनी ॥ और धीरज कबहुं नहीं छोडनो सूखतें प्यासतें निद्रातें शीततें उद्यमतें क्रोधतें लोभतें इतने दोषरूप है ॥ सो इनतें डरपते रहें इनके वश नहीं होय ॥ इनको जीतके रहेनो ॥ और अभिमान नहीं करे और सब भगवदीय वैष्णवनको आदर करत रहें जो श्रीप्रभुजीको स्वरूप हैं और श्रीप्रभुजीकी लीलाहैं सो भगवदीय वैष्णवके हृदयमें रहे भगवत्स्वरूप हैं ऐसो वैष्णवको रूप है अनेक नामरूपतें श्रीप्रभुजी लीला करत हैं ऐसें विचार करत रहेनो जो मैं पहेले कोन हतो॥ और श्रीमहाप्रभुजीकी कृपातें कहा मोकों मिल्योहै अपने स्वरूपको विचार करत रहे जिनके ऐसें लक्षण होय तिनकों उत्तम भगवदीय जाननो ॥ ऐसें श्रीगुसांईजीके वचन सुनके कल्याणभट्ट बहुत प्रसन्न भये ॥ तब कहेजो वैष्णवको स्वरूप तो ऐसोहीहै ॥ सो वे कल्याणभट्ट श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें इनकी

वार्ताको पार नहीं तातें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २३३ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥
श्रीगुसांईजीके सेवक एक कायस्थ सूरतमें रहेते तिनकी वार्ता ॥ सो वह कायस्थको नाम मोतीराम हतो और सूरतके सूबाके पास नोकर हतो ॥ और राजनगरमें कोईकामके लीयें आयो हतो ॥ उहां श्रीगुसांईजीको सेवक भयो हतो ॥ फेर कोईदिन सूरतके सुबाके संग आगरे गयो हतो ॥ सो पृथ्वीपतीकुं मिल्यो फेर वा सूबानें आवती वखत गोवर्धनमें मुकाम कन्यो ॥ तब वह मोतीराम गोपालपुरमें श्रीनाथजीके दर्शनकुं गयो ॥ वाई समय श्रीनाथजीके राजभोग होयचुके हते॥ तब वा कायस्थनें श्रीगुसांईजीके दर्शन किये और मनमें विचार कियो जो सूबाको तो जलदी कूचहै और श्रीनाथजीके दर्शन नहीं होवेंगे ॥ तब भंडारीकुं मिल्यो और मिलके कही जो मैं साठहजार रुपैया सेवा करुंगो जो दोयघडी उत्थापन वेग होवें तो ये बात भंडारीनें श्रीगुसांईजीसों वीनत्ती करी तब श्रीगुसांईजीनें दोघडी अवार उत्थापन कराये ॥ सो मोतीराम दर्शनविना सूबाके संग कूचकरगयो तब जायके कुबेरमें डेरा किये फेर दूसरे दिन वा मोतीरामको मोढो उतर गयो सो वा सूबाने देख्यो ॥ तब वा सूबानें पूंछी जो मोतीराम उदास क्युंहे ॥ जब मोतीरामनें सब समाचार कहे ॥ तब सूबानें कही जो तूं दर्शनके लीयें साठहजार रुपैया खर्चतो हतो सो मैं तेरेपर प्रसन्न हुं ॥ सो तुम जायके श्रीनाथजीके दर्शन करआवो

॥ तब वे मोतीरामनें सवारे राजभोगके दर्शन आयके कन्ये ॥ श्रीनाथजीके दर्शन करके बहुत प्रसन्न भये ॥ और महाप्रसाद लियो अत्यंत भाग्यमाने और लाख-रुपैयाको हीरा लेके श्रीनाथजीकुं चिबुक आभरण क-रायो ॥ सो वे मोतीराम वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐसे कृ-पापात्र हते ॥ जिनकी आरति श्रीनाथजी सहि न शके॥ और धनसुं कारज सिद्ध नहीं होवे ये बात दिखाई ॥ केवल भगवत्कृपासुं सब कारज सिद्ध होवेहें ये बात दि-खाई ॥ सो मोतीराम श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २३४ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक जीवा पारेख तथा सहजपाल डोशी तथा दलाल माधवदास तिनकी वार्ता ॥

सो वे तीनो जने आपसमें मित्र हते और चाचाहरिवंश-जीके पास नाम पाये हते और जब श्रीगुसांईजी राजन-गर पधारे ॥ तब वे तीनो जने जायके खंभात पधराय लाये ॥ और कुटुंबसहित श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे ॥ फेर एक-दिन माधवदास दलालनें और सहेजपाल डोशीनें वीनती करी जो महाराज हम वेपारमें झूठ बोलेहें ॥ जो दोष लगेहें के नहीं ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी "नानृता-त्पातकंपरं"इति ॥ झूठ समान पाप नहीं ॥ तब माधवदा-सनें वीनती करी जो मैं दलाली करूंहुं आज पीछे झूठ नहीं बोलुंगो ॥ मेरे गाहकनकुं आछी रीतीसुं माल देवा-ऊंगो ॥ तब सहजपाल डोशीनें कही मैं एक आना नफा

खाउं अधकी नहीं खाउंगो ॥ ऐंसी इच्छा होवे तो ल्यो॥ सो वे तीनोजने सत्यवादी हते ॥ और कोईदिन झूठ नहीं बोलते तब विनको सत्यपणो देखके श्रीठाकुरजी बहुत प्रसन्न भये ॥ और भगवद्गुणगान करते विनके गदगद कंठ होय जाते ॥ और किर्तनके अनेक प्रकारके अर्थ करते ॥ एकदिन माधवदास दलालनें जीवापारेखसुं पूंछी जो अन्याश्रय कहा होवे हें तब जीवापारेखनें कही जो श्रीकृष्णविना अंशावतारके भजनपर्यंत अन्याश्रय होवे है ॥ और सर्वत्र व्यापक मानके जो दूसरे देवकी पूजा करे तोहुं बाधकहै कारण जो अनेक देवरूपी भगवान भये हें ॥ एक एक देवकी पूजा विधी प्रमाणें करे तोहुं पार नहीं आवे ॥ तेतीस कोटी देवता हैं सो इतने तो आवरदा मनुष्यकी नहीं है जो सब देवतानकी पूजा करिसके जासुं सर्व देवके मूळ जो पुरुषोत्तम विनकी सेवा करे तें सब देवकी सेवा होजाय ॥ और कोई वाकुं प्रतिबंध नहीं करशके ॥ जैसे एक वृक्षके अनेक पत्रहें और फूलहें और डारहें विनकुं पोषण मूलसींचनतें होतहे ॥ ऐंसे सब देवको पूजन श्रीपूर्णपुरुषोत्तमकी सेवातें होवे हैं ॥ ये सुनके माधवदास दलाल बहुत प्रसन्न भये ॥ फेर एकदिन चाचा हरिवंशजी खंभात आये ॥ तब वे सहेजपाल डोशीनें पूंछी जो श्रीठाकुरजीनें सात दिनपर्यंत गिरिराजजी क्युं धारण कियो ॥ वाको कारण कहो तब चाचाहरिवंशजी बोले ॥ जो नंदरायजीकुं सात प्रकारको अन्याश्रय हतो॥ सो गिरिराज पूजनतें सात प्रकारको अन्याश्रय मिट्यो॥

सो एकतो मनुष्यमात्रपर देव ऋण होवेहे ॥ और दूसरो ऋषिऋण होवेहे॥और तीसरो पितृऋण होवेहैं॥और चौथो देहके बलको अभिमान होवेहैं ॥ और पांचमो सगानके बलको अभिमान होवेहैं ॥ और छठो या लोगमें जो ये काम नहीं करूंगो तो मेरी निंदा होवेगी॥ये अहंकार होवेहैं ॥ और सातमो ये तीनो ऋण मेरे ऊपर रहेंगे तो मेरो परलोक बिगडेगो ऐसी रीतीसुं जीवमें सात प्रकारके अन्याश्रय रहेहैं ये छुडायवेके लीयें और मनमें निःसाधन होयके भगवदाश्रय दृढ करनो ये बात नंदरायजीकुं जतावेके लीयें श्रीठाकुरजीनें सात दिवससूधी श्रीगिरिराज धार्योहे ॥ ये बात पुष्टिप्रवाह मर्यादा ग्रंथकी टीकामें लिखी है ॥ ये सुनके सहेजपाल डोशी बहुत प्रसन्न भये और फेर जो चाचाहरिवंशजीके संग दर्शन करवेकुं गये ॥ वे तीनो जने श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २३५ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक चांपाभाई अधिकारी०

सो वे चांपाभाई गुजरातमें सेवक भये हते ॥ तब श्रीगुसांईजीनें चांपाभाईकुं आपके पास राखे ॥ फेर नित्य कथा श्रवण करावते ॥ जब चांपाभाईकुं श्रीगुसांईजीविषे संपूर्ण भाव उत्पन्न भयो और चांपाभाईकी ऐसी वृत्ती भई जो श्रीगुसांईजीके ऊपर दोषबुद्धी न आवे ॥ तब श्रीगुसांईजीनें चांपाभाईकी ऐसी दशा देखके अधिकार सोंप्यो तब चांपाभाई अधिकार करन लगे ॥ फेर श्रीगुसांईजीनें वीचार कियो ॥ जो हमारे घरको जो अधिकार

करे तो वाकी बुद्धी फिरेविना रहे नहीं ॥ परंतु चांपाभाईकी बुद्धी जो फिरेगी तो याकी बुद्धीकुं आपण फेर ठेकाणे लावेंगे ॥ ये विचारके आपने अधिकार सोंप्यो ॥ सो एकसमय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे ॥ रस्तामें बीरबल मिले तब बीरबलनें चांपाभाईसुं पूंछी जो श्रीगुसांईजी शीतकालमें क्युं परदेश पधारेहें ॥ तब चांपाभाईनें कही जो करज बहुत है तब बीरबलनें कही जितनो द्रव्य चहिये इतनो तैयार है ॥ श्रीगुसांईजीकुं पाछे श्रीगोकुल पधराय लेजावो ॥ तब चांपाभाईनें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी तब श्रीगुसांईजीनें ऐसो विचाऱ्यो जो चांपाभाईकी बुद्धी फिरगई है हम द्रव्यकेलीयें परदेश पधारें हें ऐसो समजो हैं ॥ और हमारे पधारवेको कारण तो दैवी जीवके उद्धार करवेको है ॥ तब श्रीगुसांईजीनें अर्धरात्रीकुं कूच कऱ्यो॥ बीरबलकुं खबर न करी फेर दूसरे दिन चांपाभंडारीकुं आपनें आज्ञा करी जो तुमारी बुद्धी फिरगई है अब तुम चरणोदक लेउ ॥ और श्रीसर्वोत्तमजीको पाठ करो तब चांपाभंडारीनें वीनती करी जो मैंनें तो आपकी सेवाके लीयें बीरबलकुं बात कीनी हती ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ॥ जो इतनें प्रकारके द्रव्य श्रीठाकुरजी अंगिकार नहीं करें है ॥ एक तो राज्यको द्रव्य एक वेश्याको द्रव्य एक कृपणको द्रव्य और एक हिंसाको द्रव्य एक ठगाईको द्रव्य एक चोरीको द्रव्य एक विश्वासघातको द्रव्य एक कन्याविक्रयको द्रव्य ॥ इतनें प्रकारको द्रव्य श्रीठाकुरजी अंगिकार नहीं करेंहें ॥ जासुं तुम कोईकुं

द्रव्य संबंधी सेवाकी बात करोमती ॥ जिनको अंगिकार प्रभुकर्‍यो चाहेंगे विनको स्वतः सिद्ध होवेगो ॥ महा-त्यागी होवे ॥ और भगवत्पदवीकुं प्राप्त भयो होवे तोहुं दुष्ट अन्न खाय तें वाकी बुद्धी फिरे ॥ ये बात श्रीमहाप्रभू-जीनें भक्तिवर्धिनी ग्रंथमें आज्ञा करीहे सो ॥ श्लोक ॥ लभतेसुदृढांभक्तिंसर्वतोप्यधिकांपराम् ॥ त्यागेबाधकभूयस्त्वंदुःसंसर्गात्तथान्नतः ॥ १ ॥ सो अन्न जो कह्योहे सो अन्न तो कछु दुष्ट होवेही नहींहे ॥ परंतु वह अन्न जैसे द्रव्यसुं खरीद भयो होवे ॥ वैसी अन्नमें दुष्ट पदवी आय जायगी ॥ जासुं दुष्ट अन्नको और दुःसंगको बहुत बचाव राखनो ॥ ये बात सुनके चांपाभाई बहुत प्रसन्न भये ॥ और ऐसो नेम राख्यो ॥ जो कोईको द्रव्यसंबंधी सेवाकी बात कर-णी नहीं ॥ सो वे चांपाभाई श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २३६ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक तानसेनकी वार्ता ॥

सो तानसेन बडीजातवाले हते ॥ और गानविद्याको अ-भ्यास बहुत सुंदर हतो ॥ सो दिल्लीमें पृथ्वीपतीके पास रहेते हते ॥ और सब गवय्यानमें तानसेनजी मुख्य हते ॥ और पृथ्वीपर जे कोई राजा और बडे आदमीहते ॥ विनके पास तानसेनजी गावे जाते हते ॥ सो लाखन रुपैया इनाम लावते ॥ पृथ्वीपतीके कलावत जानके सब डरपते ॥ एकदिन तानसेन श्रीगुसांईजीके पास गायवेकुं आये ॥ सो गाये तब तानसेनकुं श्रीगुसांईजीनें दशह-जार रुपैया इनामके दिये ॥ और एक कौडीदीनी ॥ तब

तानसेननें पूंछ्यो जो दशहजार रुपैयातो ठीक परंतु कौडी कैसी है ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुम पादशाहके कलावत हो जाके दशहजार रुपैया है और तुमारे गावेकी कीमत हमारे गवयनके आगें कौडी है ॥ तब तानसेननें कही जो ये बात मैं कैसेमानुं तब श्रीगुसांईजीनें गोविंदस्वामीकुं आपके पास बुलाये ॥ और आज्ञा करी एक पद गावो ॥ तब गोविंदस्वामीनें एक सारंग रागमें गायो ॥ सो पद ॥ श्रीवल्लभनंदनरूपअनूपस्वरूपकह्योन-हिंजाई ॥ सो ये पद सुनके तानसेन चकित होयगये और गोविंदस्वामीको गान सुनके विचार कऱ्यो जो मेरोगान इनके आगें ऐसेहै जैसे मखमलके आगें टाटहै ऐसे है ॥ सो ये कौडीकी इनाम खरी ॥ तब गोविंदस्वामीसुं तान-सेनने कही जो बावासाहेब मोकुं गान सिखावो ॥ तब गोविंदस्वामीनें कही हमतो अन्यमार्गीयसुं भाषणहुं नहीं करें ॥ तब तानसेन श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ और पचीसहजार रुपैया भेट करे ॥ और गोविंदस्वामीकेपास गायनविद्या सीखे ॥ और श्रीनाथजीके पास कीर्तन गा-यवे लगे ॥ जब तानसेन महिनामें एकवार पादशाहके पास जाते और बहुधा करके महाबनमें रहते ॥ फेर राजा आसकरणकुं मिले सो बात आसकरणजीकी वार्तामें लि-खीहै ॥ फेर एकदिन तानसेनजी श्रीनाथजीकेपास की-र्तन करत हते ॥ तब श्रीनाथजी सुनके मुसकाये ॥ तब वा दिनतें तानसेननें पादशाहके इहांसुं जायवो आयवो छोडदियो ॥ और श्रीगुसांईजीके पास रहे आये ॥ जि-

नसुं श्रीनाथजी बोलते हंसते श्रीगुसांईजीकी कानतें तानसेनकुं श्रीनाथजी सब अनुभव करावते ॥ सोवे तानसेनजी ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥२३७॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक ब्राह्मण और वाकी स्त्री तिनकी वार्ता ॥ सो वे ब्राह्मण पूर्वमें रहेतो हतो ॥ सो श्रीगुसांईजी पूर्वदेशमे पधारे तब वे सेवक भये और श्रीठाकुरजी पधरायके दोनों जने सेवा करन लगे ॥ तब वे दोनोको भगवत्सेवामें मन बहुत लग्यो ॥ दिवसकुं भगवत्सेवा करते और रात्रकुं भगवद्वार्ता करते ॥ सोसेवाके प्रतापतें विनदोनोनकुं विषयनकी वृत्ती भूलगई दिवसरात्र भगवत्स्वरूपको विचार कर्‍यो करते॥ ऐसे करते बहुत दिन वीते ॥ फेर ऐसो विचार कियो जो अब मैं श्रीनाथजीके दर्शन जाउं तो ठीक ॥ सो उहांतें चले सो थोडे दिननमें श्रीजीद्वार आय पहोंचे सो श्रीनाथजीको संध्या आरतीको समय हतो ॥ तब भीड बहुत हतीऔर वे स्त्री दुर्बल बहुत हती सो भीडमें वाकुं दर्शन न भये ॥ तब वाकुं बहुत विरह भयो ॥ और नेत्रनमेंसुं जल आवे लग्यो वाकी ये दशा देखके श्रीनाथजी वाकुं हाथ पकडके निजमंदिरमें लेगये ॥ तब देहसहित लीलामें प्रवेश भई ॥ तब वो ब्राह्मण अपनीस्त्रीकुं ढूंढवे लग्यो ॥ बहुत ढूंढी पण कहुं मिली नहीं ॥ तब वा ब्राह्मणनें श्रीगुसांईजीसुं वीनती कीनी जो मेरी स्त्री दीखत नहींहै मैं बहुत ढूंढीहे ॥ तब श्रीगुसांईजीनें सुनके आज्ञा कीनी जो तेरी स्त्री भगवल्लीलामें गईहै तब वानें वीनती कीनी जो भग-

वल्लीलामें तो लोग देह छोडके जायहें ऐसे ग्रंथनमें लिखेहें ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी प्रेममें कछु नेम नहींहै ॥ श्रीठाकुरजी प्रेमके वशहें और प्रेम कछु निर्वल वस्तु नहींहै ॥ जहां लाज कान अभिमान सब छूट जायहें ॥ ये बात सुनके वा ब्राह्मणनें वीनती कीनी जो में एकवार वाकुं देखूं तब अन्न जल लेउं ॥ तब श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मणकुं संग लेके परासोली पधारे ॥ उहां रासको चोतरा हतो सो उहां श्रीगोवर्द्धननाथजी रास करत हते॥ सो वा ब्राह्मणकुं श्रीगुसांईजीनें कृपा करके दिव्यदृष्टि दीनी तब रासके दर्शन भये ॥ और रासमें वाकी स्त्री दिखाई तब वह देखके मनमें बहुत प्रसन्न भयो ॥ और विचार कियो याके भाग्य ऐसे उदय भये ॥ और मेरे न भये ऐसे करके मनमें बहुत पश्चात्ताप करन लग्यो ॥ फेर देखे तो कछु नहीं हतो ॥ फेर श्रीगुसांईजीके पास आयके दंडवत करी और महाप्रसाद लियो तब वा ब्राह्मणकुं अत्यंत विरह भयो ॥ और मुखमें तें ज्वाला निकसी तब वा ब्राह्मणकी देह छूट गई सो तत्काल भगवल्लीलामें प्राप्त भयो सो वे ब्राह्मण स्त्रीपुरुष श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनकुं भगवल्लीलामें जातें विलंब न लगी॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २३८ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक ध्यानदास तथा जगन्नाथदासकी वार्ता ॥ सो वे ध्यानदास श्रीगुसांईजीके पास रहेते हते॥और जगन्नाथदास श्रीगुसांईजीके पास आयके रहे॥ सो वे जगन्नाथदासके हाथमें पद्मको चिन्ह हतो॥

सो जा वस्तुमेंसुं एक काढते और एक वढजाती ॥ और दोय काढते सो दोय बढजाती ॥ परंतु घटती नहीं हति जगन्नाथदास भोरे बहुत हते विनकुं या बातकी खबर नहीं पडती ॥ एकदिन श्रीगुसांईजीकी भेटके पैसा जगन्नाथदासकेपास हते ॥ तब बहुत भिखारी मागवेकुं आये ॥ तब जगन्नाथदास काढ काढके सबकुं एक पैसा दो पैसा देते गये ॥ तब ध्यानदासनें श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी जो जगन्नाथदास सबकुं देवेहें सो कहांसुं काढेहें ॥ तब ध्यानदासकुं श्रीगुसांईजीनें उत्तर दियो जो जे कोई सत्कर्म करवेकुं मन करेहें ॥ ताकी सहायता प्रभु आप करे हें ॥ और विनके लीयें सब पेहेलेसुं बनाय राखेहें ॥ विनकुं कछु कार्य करवे नहीं परेहें ॥ विनके कारज श्रीठाकुरजी स्वतःसिद्ध पहिलेसुं बनाय राखे हें जासुं तुमकुं कोईको अभाव नहीं लायो चहिये ॥ वैष्णवतो निर्दोष हें और निर्दोष वस्तूमें जो दोषारोपण करेहें ॥ सो आप दूषित होवेंहें ॥ जासुं तुम तो वैष्णव हो और दोषरहित हो काहेकुं कोईके ऊपर दोषारोपण करोहो ॥ ये सुनके ध्यानदास बहुत प्रसन्न भये ॥ और ऐसो नेम लियो आज पीछें भगवद्द्यान छोडके कोईके दोष नहीं देखूंगो ॥ जन्मपर्यंत विननें कोईके दोष देखे नहीं ॥ भगवद्द्यानहीं करत रहे ॥ सो वे ध्यानदास तथा जगन्नाथदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनकुं तुर्त निर्दोष ज्ञान होयगयो ॥ सो वे ऐसे वैष्णव हते ॥ वार्ता सं० ॥ वै० ॥ २३९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गोपालदासकी वार्ता ॥

सो वे गोपालदासकुं नामनिवेदन भयो ॥ तब गोपालदासनें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी ॥ जो महाराज अब मेरेकूं कहा करणो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ॥ तुम गोपिनाथको सत्संग करो ॥ तब गोपालदास गोपीनाथके पास जायके रहे ॥ और विश्वास ऐंसो राख्यो जो गोपीनाथविना विचाऱ्यो कछु काम करे नहीं हे ॥ और गोपीनाथ कैंसे हते साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम श्रीनाथजी जिनके पाछें फिऱ्योही करते ॥ सो कोईदिन गोपीनाथ कछु कार्यार्थ व्रजमेंसुं दिल्हीगये ॥ तब गोपालदासहुं संग गये ॥ रस्तामें जंगलमें रातपडी ॥ जहां कोई मनुष्य नहीं हतो सो एक वृक्षके नीचे डेरा कऱ्यो ॥ सो गोपालदासतो थाके हते सो सोयगये ॥ और गोपीनाथतो श्रीसर्वोत्तमजीको जप करवेकों बैठगये ॥ जब रात सवापहेर गई तब एक सर्प आयो ॥ सो गोपालदासके गलामें काटवे लग्यो ॥ तब गोपीनाथनें लकडीसों उठायके सर्पकुं दूर कऱ्यो ॥ फेर सर्प आयो फेर गोपीनाथनें फेंक्यो ॥ ऐंसे करके १०० सो वार फेंक्यो और १०० वार आयो॥ तब वो सर्व बोल्यो जो तु मोकुं कहां सुधी फेंकेगो ॥ याको और मेरो रिणानुबंध ऐंसोही लिख्यो है एक जन्ममें ये मेरे गलाको लोही पीवेंहे और एक जन्ममें याके गलाकी लोही मैं पियुंहुं सो यामें तुम क्युं आडे आवोहो ॥ गोपीनाथ बोल्यो अब तो गोपालदासको छेलो जन्म है मैं याकु काटवे नहीं देउंगो ॥ तब सर्प बोल्यो याकी लोही पिये विना नहीं रहुंगो ॥ तब गोपीनाथनें कही तूं बैठ

याके गलेकी लोही तोकुं प्यायदेउंगो तव सर्प बैठ रह्यो॥
तव गोपीनाथनें छुरी और कटोरि काढी नीचे कटोरी
धरके और वाके गलामेंतें लोही काढवे वैठ्यो तव गोपा-
लदासकी नीद खुली तव वोले कोन है ॥ तव गोपीनाथ
वोल्ये मैंहुं तव गोपालदासकुं सर्पकी खवर नहीं हती ॥
तो हुं मनमें ऐसी आई जो गोपीनाथ करते होयंगे सो
ठीकही करते होएंगे ॥ ऐसे समझके चुप कररहे ऐसी म-
नमें न आई जो जंगलमें लायके मोकुं मारेंहे ॥ और
कछु जानतेही न हते और कछु पूछीहुं नहीं ॥ तव गोपी
नाथनें वा सर्पकुं लोही प्यायके विदाकऱ्यो ॥ और गो-
पालदासकुं मलमपट्टी लगायके फेर गोपीनाथ सोयगये
सवारे उठके दोनो चले फेर गोपीनाथनें सव वात गोपा-
लदासशुं कही तव दोनोजणे श्रीगोकुल आये तव गोपी-
नाथनें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो गोपालदासको
मैंनें गला काटयो तोहुं कछु नहि वोले तव श्रीगुसांईजीनें
आज्ञा करी जो गोपालदासनें विश्वास राख्यो तो याको
सव कार्य भयो और मृत्युसों बचे और वैष्णवके संगतें
जन्म जन्मके संकटसों छूटे ऐसो विश्वास चहिये सो वे
गोपालदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिनके
विश्वासकी सराहना श्रीगुसांईजी घडिघडि करते॥ वार्ता
संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २४० ॥ ❋ ॥ ॥ ॥ ॥

**श्रीगुसांईजीके सेवक पृथ्वीसिंघजी बीकाने-
रके राजा कल्याणसिंहजीके बेटाकी वार्ता॥** सो वे पृथ्वी-
सिंघजी कविता बहुत करते और कवित्त सवैया छंद दोहा

चौपाई ऐंसे अनेक प्रकारकी कविता रचि हती ॥ और रुक्मिणीवेल और स्यामलता इत्यादिक भाषाके बहुत ग्रंथ जिननें बनाये ॥ और दिवसरात्र श्रीठाकुरजीकीसेवा करते जिनको चित्त श्रीठाकुरजीके चरणारबिंद छोडके और ठिकाणें लागतो नहीं हतो ॥ और विनको संसारके विषयमें चित्त लागतो नहीं हतो ॥ और वे ऐंसे हते ॥ जब आपनी राणीकुं देखते तब पहेचानते न हते ॥ जो ये कौ-नहे ऐंसो चित्त विनको श्रीठाकुरजीमें हतो ॥ और पृथ्वी-सिंघजी परदेश गये तब मानसी सेवा करते ॥ एकदिन बीकानेर ऊपर शत्रु चढआये ॥ तब तीन दिन सूधी ल-डाई भई और दूसरे शत्रु दूसरी आडी आये ॥ तब श्री-ठाकुरजीनें तीन दिन सूधी लडाई करी और राजको काम चलायो और मंदिरमें दर्शन कोईको दिये नहीं ॥ और मंदिरके कमाड भीतरसुं बंद होय गयें ॥ कोईसों खुले नहीं ॥ चौथे दिन कमाड खुले जब पृथ्वीसिंघजी परदेशमें मानसि सेवा करते ॥ जब उहां खबर पडी जो तीन दिन सूधी श्रीठाकुरजीनें दर्शन नहीं दिये ॥ सो पृथ्वीसिंघजीके मनमें ऐंसे दर्शन भये ॥ तब ये बात बी-कानेरमें लिख पठाई सो साची निकसी सो पृथ्वीसिंघजी ऐंसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ फेर पृथ्वीसिंघजीनें ऐंसो नेम लियो जो ब्रजमें वास करनो ब्रजमें देह छो-डनी या बातकी खबर पृथ्वीसिंघजीके शत्रुनकुं पडी सो विननें दिल्लीपतीकुं सिखायो ॥ याकुं कहुं दूर पठावें तो ठीक तब दिल्लीपतीनें पृथ्वीसिंघजीकुं काबलकी मुहिमपर

पठायो सो उहां बहुत मुलुक जीते ॥ तब उहां पृथ्वीसिंघजीको काल आयो तब पृथ्वीसिंघजीनें कालतें कही में व्रजमें देह छोडुंगो तब काल हट गयो ॥ तब पृथ्वीसिंघजी सांडनीपें बैठकर उहांसों चले ॥ सो दो दिनमें मथुरा आये और बीचमें नदी और पर्वत बहुत हते परंतु कोई ठिकाणे पृथ्वीसिंघजीकुं प्रतिबंध न भयो ॥ और काबुल ६०० कोस मथुराजीसों है सो दोय दिनमें आय गये ॥ व्रजमें आयके श्रीनाथजीके दर्शन करके यमुनापान करके देह छोड दीनी ॥ सो वे पृथ्वीसिंघजी श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र हते ॥ जिनकुं कालनें प्रतिबंध न कऱ्यो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २४१ ॥ ❀ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक दुर्गावती राणी तिनकी

वार्ता ॥ एकसमय श्रीगुसांईजी दक्षिण पधारे हते ॥ दक्षिणतें तैलंग ब्राह्मणज्ञातिके या देशमें रहेवेके लीयें लाये सो रस्तामें घडा गाममें नर्मदा किनारे मुकाम कियो ॥ और उहां एक आदमी आंच लेवे गयो सो दक्षिणी हतो सब ठिकाणे इस्तु इस्तु पूछे सो वा देशमें कोई इस्तु समझतो नहीं हतो ॥ सो बहुत ठिकाणें फिरके पाछें आयो तब श्रीगुसांईजीसों कही जो इहां आंच नहीं मिले ॥ तब श्रीठाकुरजीकुं बहुत अवार होयगई हती ॥ जासुं श्रीगुसांईजीनें खीजके कहि या गाममें सब आंच बुझ जाउ ॥ तब श्रीठाकुरजीनें श्रीगुसांईजीकी वाणी सत्य करवेके लिये वा गाममें सब ठिकाणे आंच बुझाय दीनी तब गाममें बहुत पुकार भई तब गामके लोगननें दुर्गावतीरा-

णीको राज हतो ॥ सो वाकुं खबर दीनी ॥ तब आखा गाम रसोई विना भूखन मरेहे गाममें हाहाकार होय रह्योहे दक्षिणके ब्राह्मण आयेहैं विनने सब ठिकाणे आंच बुझाय दीनीहै ये सुनके दुर्गावती राणी श्रीगुसांईजीके डेरापर गई ॥ और जायके श्रीगुसांईजीसों वीनती करी॥ और महिना पेहेले एक सूरजग्रहण गयो हतो ॥ तब दुर्गावती राणीनें एकसों आठ गामको संकल्प कर्‍यो हतो॥ सो वे गाम श्रीगुसांईजीकी भेट करे ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी हमतो कोईको दान नहीं लेवें हें ॥ तब दुर्गावती राणीनें कही अब मैं दान कर्‍या पीछे कैसे लेउं ॥ आपकी इच्छा आवे सो करो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें दुर्गावतीके हाथनसुं विन तैलंग ब्राह्मणनकुं गाम बटवाय दीये ॥ सो अबसूधि वे गाम खावेंहें फेर श्रीगुसांईजीकी ऐसि सामर्थ्य देखके दुर्गावती राणी श्रीगुसांईजीकी सेवक भई॥ और श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो सदैव आप मोकों दर्शन देवो तब तलावकेपास पर्वत ऊपर श्रीगुसांईजीके डेरा हते सो उहां बैठक कराई और उहां श्रीगुसांईजीनें सप्ताहपारायणकरी और उह दुर्गावती राणीकुं नित्य दर्शन होते फेर श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलपधारे और दुर्गावतीराणी उहां नित्य श्रीगुसांईजीके दर्शन करती॥ साक्षात् श्रीमद्भागवतको पाठ करते॥ ऐसे दर्शन होते सो वे दुर्गावती राणी श्रीगुसांईजीकी ऐसि कृपापात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव॥ २४२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक भगवानदास तिनकी

वार्ता ॥ सो वे भगवानदासजी सारस्वत ब्राह्मण रामरायजी श्रीमहाप्रभुजीके सेवक हते ॥ सो विनके यजमान हते ॥ विनके सत्संगतें भगवानदासजीकी बुद्धि निर्मल भई हती ॥ एक दिन भगवानदासजी वृंदावनमेंसुं चले सो रामरायके संग गोपालपूरमें जन्माष्टमीके दर्शन करने गये ॥ श्रीगुसांईजीके दर्शन किये ॥ सो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तमके दर्शन भये ॥ तव भगवानदासजीनें रामरायजीसुं कही मोकुं श्रीगुसांईजीके सेवक करावो तव रामरायजीनें कही तुम गोविंददेवजीके सेवक भये हो ॥ तव भगवानदासजीनें कही इनमें और गोविंददेवजीमें कछु भेद नही है गोविंददेवजीकी कृपातें तुम मिलेहो और तुमारी कृपातें श्रीगुसांईजीके दर्शन भयेहैं ॥ जासुं मोकुं अवीके अवी वीनती करके सेवक करावो ॥ तव रामरायजीनें श्रीगुसांईजीसुं वीनती करके भगवानदासजीकुं नामनिवेदन करायो ॥ तव भगवानदासजी श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन करे सो भगवानदासके हृदयमें भगवल्लीलाकी स्फूर्ती भई ॥ सो जन्माष्टमीके दिन सांझको समय हतो ॥ वाईदिन सूखे हते ॥ जासुं सांझकुं नामनिवेदन भयो ॥ फेर वाईसमय श्रीनाथजीके सन्निधान एक नयो पद करके गायो ॥ सो पद ॥ श्रवणसुनुसजनीवाजेमंदिलराआजनिसलागतपरमसुहाई ॥ अतिआवेशहोततनमनमें श्रीगोकुलवजतवधाई ॥ १ ॥ देदेकानसुनतअरुफूलतरावलकेनरनारी ॥ नंदरानीढोटाजायो हैहोतकुलाहलभारी ॥ अतिउंचेचढिटेरसुनावतपसरि-

उठेजेग्वाल ॥ गैयांबगदावोरेमैयांभयोनंदकेलाल ॥ ३ ॥ आनंदभरिअकुलायचलीसबसहजसुंदरीगोपी ॥ प्राड्डर्भावजसोदासुतकोतामैंतनमन ओपी ॥ ४ ॥ चंचलसाजशृंगारचंदमुखिचंचलकुंडलहारा ॥ हाथनकंचनथारविराजतपदनूपुरझनकारा ॥ ५ ॥ वरखतचकुसुमन शोभितगलिदरसचोंपजियमाई ॥ गावतगीतपुनीतकरतजगजसुमतिमंदिरआई ॥ ६ ॥ धन्यदिवसधन्यरात्रआजकीधन्यधन्ययहसबगोरी ॥ स्यामसुंदरचंदेलिखतमानोअखियांत्रिषितचकोरी ॥ ७ ॥ शोभायुतआईकीरतिअपने गृहमानिवधाये ॥ जाचकजनधनघनजोंवरखतभानगोपतहांआये ॥ ८ ॥ आयजुरेसबगोपओपसोंभयो जोमनकोभयो ॥ पंचामृतसीसनतेंढारतनाचतनंदनचायो ॥ ९ ॥ नाचतग्वालबालरसभीनेहरददहींभरराजें ॥ इतनिसानउतभेरिढुंढुभीहरखिपरस्परवाजें ॥ १० ॥ खगमृगद्रुमदिशदिशभवननमेंदेखियतहैंसरसानें ॥ प्राननकेआयेंइंद्रीजोयों व्रजजनहुलसानें ॥ ११ ॥ ध्वजावंदनमालालंकृतनंदभवनमेंसोहें ॥ व्योमविमाननभीरभई लखअमरनकोमनमोहें ॥ १२ ॥ महाराजव्रजराजनंदपेंजोमाग्योसोपायो ॥ जाकेऐंसोपूतभयोताकोन्यायजगतजसछायो ॥ १३ ॥ जिनकोसुखस्मरतब्रह्मादिकयोंहुलसेव्रजगेही ॥ कहिभगवानहितरामरायप्रभुप्रकटेप्राणसनेही ॥ १४ ॥ ये पद भगवानदासजीनें गायो वामें छाप धरी कहेभगवानहितरामरायप्रभु प्रकटेप्राणसनेही ॥ ये पद सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये ॥

और रामरायजीहुं प्रसन्न भये ॥ और भगवानदासजीनें रामरायजीकी कृपा मुख्य मानी जिननें हजारन पद बनाये ॥ परंतु सबमें रामरायजीको नाम बतावते गये वे भगवानदासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ ॥ १ ॥ फेर भगवानदासजी वृंदावनमें रहेते हते सो गोपालपुरतें वृंदावन गये॥ तब गोविंददेवजीके अधिकारीनें सुनी जो भगवानदास श्रीगुसांईजीके सेवक भये हैं ॥ तब गोविंददेवजीके दर्शनकुं न आवे दिये ॥ दर्शन बंद किये तब गोविंददेवजीके शयनभोगमें दूधभात धर्‍यो तब गोविंददेवजीने आज्ञा करी जो भगवानदास श्रीगुसांईजीके सेवक होयके आयेहैं वे दूधभात धरेंगे तब अरोगुंगो ये सुनके हरिदास अधिकारी भगवानदासके घर आयके पावन पडके बुलाय लेगयो ॥ तब श्रीगोविंददेवजीने दूधभात माग लियो वे भगवानदासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ और वृंदावनमें कोई वैष्णव और ब्रजवासि आवतो विनकुं भगवानदासजी बहुत आदर करके महाप्रसाद लिवावते ॥ और द्रव्य देते जैसे बनें तैसे वैष्णवनकुं प्रसन्न करते ॥ फेर एकदिन भगवानदासजीनें सुनी जो श्रीगुसांईजी इहां पधारेंहैं तब स्त्रीसों पूछि जो श्रीगुसांईजी पधारे हैं आपणे कहा भेट करेंगे तब स्त्रीनें कही जो एक धोती तुम पेहेरो और एक धोती मैं पेहेरुंगी ॥ और सब भेट करेंगे ॥ अपने दोनो घरसुं बहार चले जाएंगे ॥ ये बात सुनके भगवानदासजी बहुत प्रसन्न भये और स्त्रीकी सराहना करन लगे ॥ यामें

सोसों अघकी धर्महै ये धन्यहै ये कहेंगी जैसे करूंगो ऐसे कहेके ब्रजवासीके संग यमुनापार श्रीगुसांईजीके डेरा हते जहां गये दंडवत करके वृंदावनमें पधरायवेकी वीनती करी तब श्रीगुसांईजीकुं खबर पडी जो ये सर्वस्व भेट करेंगे ॥ तब श्रीगुसांईजी वृंदावन न पधारे पीछें श्रीगोकुल पधारे ॥ फेर भगवानदासजी उदास होयके पाछें वृंदावन गये ॥ फेर भगवानदासजीके घरमें चोरी भई तब द्रव्य गयो ॥ सो भगवानदासजीकुं द्रव्य गयो वाकी उदासी तो न भई ॥ और श्रीगुसांईजी न पधारे वाकी उदासी रहिआई ॥ फेर भगवानदासजी आगरे जायके रहे ॥प्रसंग ॥ ३ ॥ फेर आगरामें भगवानदास रहेते ॥ नये नये पद बनावते कबहु महिना पंद्रेदिन श्रीगोकुल आयके रहेते॥ कबहुं गोपालपुरमें जायके रहेते ॥ और कबहुं अपनें घरमें श्रीठाकुरजीकी सेवा करते ऐसे करके भगवानदासजीने हजारन पद बनाये ॥ और सब पदनमें ॥ कहत भगवानहितरामरायप्रभु ॥ या रीतीके कीर्तन विननें बहुत बनाये ॥ और सूजाकी दिवानगिरी करते हते ॥ और श्रीगुसांईजीके चरणारबिंदमें जिनको चित्त दिवस रात रहेतो सो भगवानदासको अंतसमय आयो तब अचेत होयगये ॥ तब विनके मनुष्यननें पालकीमें बैठायके विनकुं ब्रजमें लेचले ॥ जब आधे रस्तामें गये तब विनकुं चेत आयो ॥ तब विननें कही हमकुं पाछें लेजावो ये शरीर ब्रजके लायक नहीं है ॥ कारण जो ब्रजमें वृक्षवृक्षमें वेणुधारीहै और पत्रपत्रमें चतुर्भुजहै ॥ ऐसे ठिकाणें ये देह

जैरगी तो श्रीठाकुरजीकुं वास आवेगी ॥ तव उहां पाछें लेगये ॥ सो आगरामें भगवानदासजीकी देह छूटी तव वाही क्षणमें भगवल्लीलामें प्रवेश भये ॥ सो वे भगवानदासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव ॥ २४३ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक चूहडो हतो तिनकी

वार्ता ॥ सो गोवर्धनमें रहेतो हतो सो बिलछूकुंडपर नित्य घास खोदवे जातो हतो ॥ और बिलछूकुंडकेसामें श्रीनाथजीको मंदिर हतो श्रीनाथजी नित्य बिलछूकुंड देखते पीछे एकदिन अधिकारीजीनें भीत कराई तब श्रीनाथजीकुं बिलछू देखवेमें आडी भीत आई तब श्रीनाथजीकुं बिलछू देखवे विना सुहाय नहीं तव श्रीनाथजीनें वा चूहडाकों स्वप्नमें आज्ञा करी॥श्रीगोकुलमें जायके श्रीवल्लभजीसों कहो जो ये भीत पडाय डारे तो में बिलछूकुंडकी सैल करूं तब वा चूहडानें कही वे कैसे मानेंगे श्रीनाथजीनें कही जो तु मारो नाम श्रीगोकुलनाथजीहे ऐसे श्रीनाथजीनें कह्यो है॥ तब वानें सवारे विचार कर्‍यो जो जाउंके नहीं जाउं तवतीन दिनसूधी नित्य वाकुंस्वप्नमें आज्ञा करि वे तीसरे दिन गयो तब जायके पोरीयासोंकही श्रीवल्लभजीसों वीनती करो जो चूहडो वीनती करवे आयोहै तब वा पोरीयानें कही हम ऐसी वीनती नहीं करें तब वा बहारवालानें कही जरूर कामहे॥ तब पोरिया वाकुं हेला करवे लग्यो लोग एकठे होयके दूरदूर करवे लगे ॥ तब ये बातकी श्रीवल्लभजीकुं खबर पडी तव आपनें वाकु बुलायो

और सब बात पूंछी तब वानें कही एकांतमें कहुंगो तब श्रीवल्लभजीनें एकांत करी तब वानें कही स्वप्नमें श्रीनाथजीनें मोसों ऐसें कहीहै तब श्रीवल्लभजीनें तीनवार पूंछी श्रीनाथजीनें मेरो कहा नाम लियो तब वानें तीनवार श्रीगोकुलनाथजी ऐसो नाम बतायो ॥ तब आपके नामकि पेहचान मिली तब आपनें उठके वा भंगीकुं गलेसुं लगायो ॥ और मोटो उत्सव मान्यो ॥ और फेर गोपालपुर आयके वे भीत पडाय डारी ॥ श्रीनाथजीकुं सामे विलछु कुंड दीखवे लग्यो ॥ सो वह चूहडो श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र हतो ॥ जाके कहेतें श्रीवल्लभजीको नाम श्रीगोकुलनाथजी प्रसिद्ध भयो वार्ता सं० वै० २४४

श्रीगुसांईजीके सेवक मधुकरसाहराजाकी०

सो वह मधुकरसाह ओडछानगरको राजा हतो ॥ सो श्रीगुसांईजी कोईएक समय ओडछा पधारें हते ॥ सो वह राजा सेवक भयो ॥ और श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लगे ॥ और जे कोई वैष्णव आवतो वाको बहुत सत्कार करते और जो कोई कंठी बंध आवतो वाके चरणस्पर्श करते ॥ और पाव धोवते ये बात देखके वाके भाईबंद मस्करी करते फेर एकदिन वा राजाके काकानें एकगधा मगायके वाकुं दस वीस कंठी पेहेरायके और तिलक करके वा राजाके पास पठायो ॥ तब वा राजानें वा गर्दभके चरणस्पर्श करे और पगधोयके चरणामृत लियो ॥ वा राजाको शुद्धभाव देखके वाईसमय श्रीठाकुरजी प्रगट होयके और राजाकुं दर्शन दिये और आज्ञा करी जो

कछु मागो तब मधुकरसाहनें माग्यो ॥ जो मेरो भाव वैष्णवनमें ऐंसोही रहे जिनकी कृपातें आपनें मोकुं दर्शन दियेहें तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयके कही ऐंसोही तेरो भाव रहेगो सो वे मधुकरसाह श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपा-पात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २४५ ॥ ❀ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक तुलसीदासजी सारस्वत ब्राह्मण तिनकी वार्ता ॥ सो वे तुलसीदासके पिता श्रीगु-सांईजीके जलघरिया हते और तुलसीदास छोटे हते ॥ तव श्रीगिरिधरजी आदि छे वालक हते तिनके संग खेलवे जाते और श्रीगुसांईजी जब लालजीनकुं बुलावते तव छ-लालजी उठके दौडके श्रीगुसांईजीपास जाते तव तुलसीदा-सहुं संग जाते॥तव श्रीगुसांईजी विनकुं वालक जानके ला-लजी कहते॥ और विनके मातापिता छोटी अवस्थामें भग वच्छरण भये हते॥ तव वे तुलसीदासको पालनपोषण श्री-गुसांईजी करते और तुलसीदास अपनें मनमें यूं जानते जो मैं इनको वालकहुं जब तुलसीदास बडे भये ॥ और श्री-गुसांईजीके वालकहुं बडे भये ॥ तव श्रीगुसांईजीनें सब वालकनके माथे सेवा पधराय दीनी तव तुलसीदास-जीके मनमें ऐंसी आई जो मोकुं श्रीगुसांईजीनें कछु से-वा दीनी नहीं ॥ तव श्रीठाकुरजीनें श्रीगुसांईजीसुं आज्ञा करी जो वे तुलसीदासकुं सेवा पधराय देवें ॥ इन द्वारा कितनेक जीवनको उद्धार होवेगो ॥ ये वालकपनामें अप नें मनमें मैं श्रीगुसांईजीको लालजीहुं ऐंसे जानते हते ॥ तव श्रीगुसांईजी विनकुं बुलायके और श्रीगोपिनाथजी

ठाकुरजी पधराय दिये ॥ और आज्ञा करी जो तुम सिं-
धदेशमें जायके जीवनकुं भक्तिमार्गको उपदेश करो॥और
सबकुं अष्टाक्षरमंत्र सुनावो तब वे लालजी नाम धरायके
और श्रीठाकुरजी पधरायके उहांसुं चले फेर रस्तामें आय-
के विननें रसोई करी॥और भोग धर्‍यो फेर श्रीठाकुरजीसुं
वीनती करी जो तुम ये रूखीरोटी अरोगो ॥ और जो नहीं
आरोगोगे तो मैं श्रीगुसांईजीसुं कहि देउंगो॥ तब श्रीठा-
कुरजी प्रसन्न भये और अरोगे और वासुं कही जो तूं
कोई दिन हमारी कोई वात श्रीगुसांईजीसुं मति कहियो
हम श्रीगुसांईजीसुं बहुत डरपें हैं ॥ तब वे श्रीठाकुरजी
पधरायके सिंधदेशमें आये ॥ और ऐसे भोले हते जो म-
नमें यूं जाणते जो श्रीगुसांईजीसुं श्रीठाकुरजी बहुत डरपें
हैं जासुं जन्म सूधी श्रीठाकुरजीकुं श्रीगुसांईजीको डर
बतायो करते ॥ और श्रीठाकुरजी इनसुं सदैव ऐसे वर्तते
जोमैं श्रीगुसांईजीसुं बहुत डरपुंहुं सो वे तुलसीदास श्रीगु-
सांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ और श्रीठाकुरजीहुं विनकुं
लालजी कहते ॥ और विनके मनमें लालजीपनेकी बुद्धि
सदैव रहेती जासुं विनकुं कितनेंक लालमति कहते॥और
श्रीगिरिराजजी और श्रीयमुनाजी और श्रीगोकुल और
ब्रजभूमी विनमें विनकी दृढ बुद्धि हती॥दुर्लभ मनुष्यदे-
हको लाभ विननें भगवत्सेवा करके लियो ॥ अबिसूधी
सिंधुदेशमें विनके बंशकेहें॥ सो लालजी वाले कहे जा-
यहें ॥ सो वे श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता
संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २४६ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक सौदागर तिनकी०

वह सौदागर आगरामें रहेतो हतो ॥ और गोपालपुरमें श्रीनाथजीके दर्शन करनकुं आये तब श्रीनाथजीके दर्शन करके श्रीगुसांईजीके दर्शन किये ॥सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भयो ॥ तब वह सौदागर कुटुंबसहित श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ तब श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे॥ऐसे सेवा करते॥ एकदिन जन्माष्टमीको उत्सव आयो॥तब वा सौदागरके परोसमें एक बनिया रहेतो हतो सो वा बनियाको बेटा परदेशमें जहाज लेके वेपार करवे गयो हतो ॥ सो जहाज बूड गयो ॥ ऐसी खबर वा बनियाकुं आई हती ॥ तब वे रोवन लग्यो ॥ तब वा सौदागरनें वा बनियाकुं कही जो आज जन्माष्टमीको दिन है रोवो मति तब वानें कही जो बेटा जैसी वस्तु गई ॥ कैसे न रोउं ॥ तब वा सौदागरनें कही तेरो बेटो नहीं मरेगो ॥ तब बनियानें कही जो तीनदिनसूधी नहीं रोउंगो ॥ तुम वैष्णव साचे होवोगे तो मेरो बेटा आवेगो ॥ तब श्रीठाकुरजीनें वा सौदागरकी बात सत्य करवेके लीयें जहाज बुडती वखत एक पाटियापर जीवतो राख्यो हतो ॥ सो दो दिनमें पाटिया किनारे लग्यो ॥ तब वानें देशमें कागद लिख्यो तब जन्माष्टमीके दूसरे दिन वाको कागद आयो ॥ तब वो बनिया जायके सौदागरके पावन पर्‍यो ॥ और कही जो तुमारी बात सत्य भईहै ॥ तब वा बनियाकुं सौदागरनें कही ॥ ये सब श्रीगुसांईजीको प्रतापहै ॥ तब वो बनिया बेटाकुं संग लेके और वा सौदा-

गरकुं संग लेके गोपालपुरमें आयो ॥ तब वो वानिया सौदागरके संगसुं सेवक भयो॥ और फेर वा सौदागरनें श्रीगुसांईजीसुं पूंछी जो श्रीनाथजीके चरणारविंद खेलके दिननमें काहेकुं ढांकेहे ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो व्रजभक्त खेलवेकुं आवेहें ॥ तब चरणारविंदके दर्शन करेहें ॥ तब चरणारविंदमें दास्यभक्ती है सो व्रजभक्तनकुं स्फुरित होवेहैं ॥ तब दासत्व हृदयमें लायके श्रीठाकुरजी सन्मुख हाथ जोडके ठाढे रहेहैं और श्रीठाकुरजी खेले हैं॥ और श्रीठाकुरजीके सन्मुख व्रजभक्त हाथ जोडके नीची दृष्टी करके ठाढे रहेहैं तब श्रीठाकुरजीकुं खेलवेको सुख नहीं परेहैं ॥ तब श्रीठाकुरजी चरणारविंद ढांकके दास्यभक्तीकुं छिपायके सख्यभक्तीकुं प्रगट करेहैं॥ तब व्रजभक्तनकुं सख्यभक्ती उत्पन्न होवेहैं ॥ तब श्रीठाकुरजीके सन्मुख खेलेहैं तब श्रीठाकुरजीकुं खेलको आनंद होवेहैं ॥ याही तें खेलके समय श्रीनाथजीके चरणारविंद वस्त्रसुं ढांकेहैं ॥ ये सुनके वे सौदागर और वैष्णव बहुत प्रसंन्न भये ॥ तबतें वा सौदागरनें श्रीठाकुरजीके चरणारविंद निशदिन हृदयमें राखे॥ इनको ध्यान चुकुंगो तो दासपणो सिद्ध नहीं होवेंगो ॥ याहीतें चरणारविंदको ध्यान दृढराख्यो ॥ वे सौदागर श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २४७ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक हर्षीकेश क्षत्रीकी वार्ता

सोवे हृषीकेश आगरेमें रहेते हते ॥ जब श्रीगुसांईजी आ-

गरे पधारे तब हृषीकेशजी श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥ सो वे हृषीकेशजी घोडानकी दलाली करते हते ॥ एक सौदागर बहुत घोडा लायो ॥ हृषीकेशनें विनके घोडा वेचाय दिये ॥ सो वा सौदागरकेपास एक सरस घोडा हतो ॥ वाके चिन्ह हृषीकेशजी पेहेचानते हते ॥ और कोई पेहेचानतो नहीं हतो ॥ तब वे हृषीकेशनें सौदागरकेपास घोडा माग्यो ॥ तब वा सौदागरनें दलालीमें वह घोडा दियो ॥ तब हृषीकेशनें घोडो श्रीगुसांईजीकुं भेट कर्यो॥ सो वह घोडा देखके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये ॥ फेर हृषीकेशनें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो श्रीमहाप्रभुजीको स्वरूप कृपाकरके मोकुं समझावें ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी सो ॥ श्लोक ॥ सौंदर्यनिजहृद्गतंप्रकटितंस्त्रीगूढभावात्मकंपुंरूपंचपुनस्तदंतरगतंप्रावीविशत्स्वप्रिये ॥ संश्लिष्टावुभयोर्बभौरसमयः कृष्णोहितत्साक्षिकंरूपंतत्तृतयात्मकंपरमभिध्येयंसदावल्लभं ॥ १ ॥ ये ग्रंथ श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तब कृष्णभट्टजी उहां वैठे हते ॥ फेर श्रीगुसांईजी सेवामें पधारे तब हृषीकेशनें कृष्णभट्टजीसुं कही जो ये ग्रंथ मोकुं आछीरीतीसुं समझावो ॥ तब कृष्णभट्टजीनें कही जो श्रीठाकुरजीके हृदयमें श्रीस्वामिनीजी बिराजेहैं और श्रीस्वामिनीजीकेहृदयमें श्रीठाकुरजी बिराजेहैं ॥ जब विप्रयोग उत्पन्न भयो तब दोनोंके हृदयतें वे स्वरूप प्रगट भये ॥ तब श्रीठाकुरजीनें ऐसें मान्यो मैं स्वामिनीजीहुं ॥ और श्रीस्वामिनीजीनें ऐसें मान्यो ॥ हम श्रीठाकुरजीहें ॥ ऐसो अ-

त्यंत विरह दोनोनकुं उत्पन्न भयो ॥ तब दोनोनके मु-
खतें विरहाग्नीकी ज्वाला वहार प्रगट भई ॥ तब श्रीठा-
कुरजीनें दोनो अग्नी संयोगरसमें प्रवेश कराई ॥ तब
तृतीय स्वरूप प्रगट भयो ॥ सो स्वरूप दोनोनके विर-
हकी अग्नी और दोननको संयोगरस ऐंसो तृतीयात्मक
भयो ॥ ऐंसो स्वरूप श्रीठाकुरजीकुं सदा वल्लभ परमो-
त्कृष्ट वा स्वरूपको सदा ध्यान करवे योग्यहै ऐंसो स्व-
रूप श्रीमहाप्रभुजीको है ॥ विनकी कृपाविना संयोगरस
और विप्रयोगरसको अनुभव न होंवे ॥ ये बात सुनके
हृषीकेशजी ये स्वरूप हृदयमें राख्यो ॥ और भगवत्स्व-
रूपको दर्शन लीलासहित हृदयमें होंवे लग्यो ॥ जेंसीली-
लासहित दर्शन करते तेंसे पद करके गावते ॥ सो एक
दिन चाचाहरिवंशजी हृषीकेशके घर आये ॥ तब श्रीगु-
सांईजीकेपास श्रीमहाप्रभुजीके स्वरूपको ग्रंथ शीखे हते॥
सो चाचाजीसुं कह्यो तब चाचाजीनें श्रीमहाप्रभुजीको
स्वरूप नामात्मक श्रीसर्वोत्तमजीमें है ॥ और रूपात्मक
वल्लभाष्टकमें है ॥ और गुणात्मक स्फुरितकृष्ण प्रेमामृ-
तमें है ॥ इन ग्रंथनमें वर्णन है॥ सो तीनो ग्रंथनको समा-
वेश वा एक श्लोकमें कर दिखायो ॥ तब हृषीकेशके हृद-
यमें श्रीमहाप्रभुजीको स्वरूप स्थिर भयो ॥ क्षणक्षणमें
विचार करन लगे कोईसमय तो श्रीकृष्णास्यं कृपानिधी॥
ऐंसे स्वरूपको विचार करें और कोईसमय वैश्वानर ऐंसे
स्वरूपको विचार करें ॥ और कोईसमय ॥ तत्सारभूत-
रासस्त्री भावपूरितविग्रहः ॥ ऐंसे स्वरूपको विचार करें ॥

और कोईसमय ॥ वस्तुतःकृष्णएव ॥ ऐंसे स्वरूपको वि-
चार करें ॥ और कोईसमय श्रीभागवतप्रतिपदमणिव-
रभावांशुभूषितामूर्तिः ॥ ऐंसे स्वरूपको विचार करें ॥
सो हृषीकेशकुं श्रीमहाप्रभुजीके स्वरूपको ऐसो अनुभव
होवे लग्यो ॥ तब हृषीकेशकुं श्रीमहाप्रभुजीको ऐसो स्व-
रूप दृढ भयो ॥ सो वे हृषीकेश श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपा
पात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २४८ ॥ ❀ ॥　॥

श्रीगुसांईजीके सेवक कान्हदास राजनगरमें

रहेते तिनकी वार्ता॥एकसमय श्रीगुसांईजी राजनगर प-
धारे हते ॥ तब कान्हदास श्रीगुसांईजीके सेवक भये ॥
और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे ॥ तब का-
न्हदासकी स्त्री और बेटा सब सेवामें नाहाते हते ॥ और
कान्हदासके बेटाकी वहु हती ॥ सो भोळी वहुत हती ॥
और कछु आचार विचारमें नहीं समझती हती ॥ तब
वाकुं सेवामें नहीं नाहावे देते हते ॥ तब वो वहु जो वैष्णव
आवतो वाकी जूठन उठावती और पोतना करती और
वैष्णवके पांव दाबती और पंखा करती और नव्हावती
और घरमें बुहारीकरती ॥ ऐंसे काममें वा वहुकुं लगाय
राखी हती ॥ परंतु वाकुं भोळी जाणके श्रीठाकुरजी वासुं
आयकें बातें करते ॥ और सब प्रकारकी लीला जतावते॥
एकदिन कान्हदास श्रीठाकुरजीकुं शृंगार करते हते ॥
और मनमें ऐंसी आई जो आज जोडा लावनो है और
मोचीके घर जानो है ऐसो मनमें विचार करन लगे ॥
तब कोईएक मनुष्य कान्हदासकुं बुलायवे आयो॥तबवाने

बेटाकी वहूसुं पूंछी तुमारो सुसरो कहांहै ॥ तब वहूनें कही सोचीके घर जोडा लेवे गये हैं ॥ सो ये बात सुनके कान्हदास बहार आयके वहूके पांवन परे॥और कहेन लगेवैष्णवनकी सेवाके प्रतापतें तेरे हृदयमें भगवत्स्वरूप उदय भयो है ॥ जासुंतुं मेरे मनकी सब बात जानगई है ॥ और श्रीठाकुरजी तेरे ऊपर प्रसन्न है ॥ और मैं बहुत मूरख हुं सो तेरो स्वरूप मैंनें जाण्यो नहीं ॥ अब नित्य सेवा तुम करो ॥ और शृंगार तेरी इच्छा आवे सो ठाकुरजीकुं धरावो ॥ और सामग्री तेरी इच्छा आवें सो धरावो॥ तब वा दिनतें वहू सेवामें नाहावे लगी ॥ और घरके मनुष्य सब वहूकुं पूंछके सेवा करन लगे ॥ सो वे कान्हदास और कान्हदासके बेटाकी वहू ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २४९ ॥ ❀

श्रीगुसांईजीके सेवक एक मथुरादास तिनकी

वार्ता॥सो वे वैष्णव गोपालपुरमें रहते हते॥एकदिन मथुरादासनें श्रीगुसांईजीसों पूछ्यो जो आपकी सृष्टीमें और श्रीमहाप्रभुजीकी सृष्टीमें कितनो तारतम्य है ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी हमनें तेरो त्याग कियो है ॥ उहां दशपंदरें वैष्णव बैठेहते॥विननें त्यागकरवेकी बात साची मानके मथुरादाससों भगवत्स्मरण करनो छोडदियो ॥ और सब गाममें बात फेलायदीनी कोई वासुं भगवत्स्मरण न करे ॥ और कोई वाके पासहूं न बैठे ॥ तब मथुरादासनें ऐसो विचार्‍यो जो जंगलमें जायके कोईकुं खबर न पडे ऐसे ठेकाणे देह छोडदेनी और अन्नजल त्याग

दियो ॥ ऐसे तीन दिन बीतगये ॥ चौथे दिन वे मथुरादास वहासुं जंगलमें देह छोडवेके लीयें चल्यो तब रस्तामें दोकोसपर एक गाम हतो॥ उहां श्रीमहाप्रभुजीकी सेवक एक डोकरी रहेती हती जमनाबाई वाको नाम हतो॥ तब मथुरादासनें विचाऱ्यो जो जमनाबाईकुं मेरे त्याग करवेकी खबर न होयगी ॥ यासुं याकुं भगवत्स्मरण करतो जाउं तब मथुरादास जमनाबाईके घर गये और जायके भगवत्स्मरण किये ॥ तब जमुनाबाईनें कही तुम इहां प्रसाद लेके जावो ॥ तब मथुरादासनें कही मोकुं श्रीगुसांईजीनें त्याग कऱ्यो है ॥ और वैष्णवननेंहुं त्याग कियो है में देह छोडवे जाउंहुं ॥ तब जमनाबाईनें कही तुम बावरी बात करोहो ॥ श्रीगुसांईजी कोईकुं त्याग करें नहींहि ॥ और श्रीठाकुरजीनें श्रीमहाप्रभुजीकुं ऐसो वचन दियोहे जिनकुं तुम ब्रह्मसंबंध करावोगे हम विनकुंत्याग नहीं करेंगे ॥ और विनके दोष रहेंगे नहीं ॥ सिद्धांतरहस्यग्रंथमें कह्योहे सो ॥ श्लोक॥ ब्रह्मसंबंधकरणात्सर्वेषांदेहजीवयोः ॥ सर्वदोषनिवृत्तिर्हिदोषाः पंचविधाःस्मृताः ॥ १ ॥ और अंतःकरणप्रबोध ग्रंथमें कह्योहै ॥ सोवाक्य ॥ सत्यसंकल्पतोविष्णुर्नान्यथातुकरिष्यति ॥ अन्यच्च ॥ लौकिकप्रभुवत्कृष्णोनद्रष्टव्यः कदाचन ॥ और श्रीमहाप्रभुजीनेंहुं निबंधमें कह्योहै जो हमारे मार्गमें आवेंगे और अधर्म करेंगे और वेदनिंदा करेंगे तोहुं नरकमें न जाएंगे और हीन योनीमें जन्म लेवेंगे ॥ श्लोक ॥ अत्रापिवेदनिंदायामधर्मकरणात्तथा ॥ नरकेनभवेत्पातः किंतुहीने-

घुजायते ॥ १ ॥ और श्रीठाकुरजीनें श्रीगीताजीमें कह्यो है सो ॥ श्लोक ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज ॥ अहंत्वांसर्वपापेभ्योमोक्षयिष्यामिमाशुचः ॥ १ ॥ ऐसेअनेक ठेकाणे कह्यो है सो श्रीगुसांईजी कैसे त्याग करेंगे तेरी बात में साची नहीं मानुहुं॥तुम इहां बैठो दर्शन करो महाप्रसाद ले मेंहुं प्रसादलेके तुमारे संग श्रीगुसांईजीके पास चलुंगी ॥ तब मथुरादासनें न्हायके महाप्रसाद लियो ॥ फेर वे जमनाबाई मथुरादासकुं संगलेके श्रीगुसांईजीके पास आई ॥ तब वा मथुरादासकुं देखके श्रीगुसांईजीनें कह्यो वैष्णव तूं चार दिनसुं कहां गयो हतो ॥ तब जमनाबाईकी बात सत्य करवेके लीयें और मार्गकी स्थिरता राखवेके लीयें और सृष्टिको तारतम्य जणायवेके लीयें श्रीगुसांईजीनें मथुरादासकुं ऐसी लीला दिखाई सो वे मथुरादास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २५० ॥ ❀ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक माधवेंद्रपूरीकी वार्ता ॥

सो वे माधवेंद्रपूरी मध्व संप्रदायकेसंन्यासी हते और अडेलमें रहेते हते ॥ विनकेपास श्रीगुसांईजी पढवे जाते हते ॥ और नित्य पुस्तक श्रीगुसांईजी विनकेपास धरी आवते ॥ और घरमें आयके भगवत्सेवा करते ॥ फेर एकदिन माधवेंद्रपुरीनें श्रीगुसांईजीसुं कही जो तुम पुस्तक इहां धर जावोहो और कछु गोखो नहींहो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तुम कहो सो बताउं ॥ तब माधवेंद्रपुरीनें जो स्थल पूंछ्यो सो सब श्रीगुसांईजीनें स्पष्ट

करके बतायो ॥ सो ऐंसो बतायो जैंसे माधवेंद्रपूरीकुं आवतो ॥ जासुं दशगुणो विशेष बतायो ॥ तब माधवेंद्रपूरीकुं बडो विचार भयो ॥ जो ये कहा कारण होयगो ॥ इतनो कहांसों शीखे होयंगे तब अनेक प्रकारको विचार करन लगे ॥ सो बहुत मनमें विस्मय जैंसे होय गयो ॥ तब विचार करते रातकुं सूते तब श्रीठाकुरजीनें माधवेंद्रपूरीकुं स्वप्नमें कह्यो ॥ जो मैं श्रीगिरिराजजीमें प्रगट भयोहुं ॥ और मेरी सेवा मेरेविना कोई जाने नहीं है ॥ जासुं मेरी सेवा शिखायवेकेलीयें मैं दूसरो रूप धरके श्रीविठ्ठलनाथजी प्रगट भयोहुं ॥ सो तेरे मोकुं प्राप्त होवेकी इच्छा होवेतो इनकी शरण जाओ ॥ तब माधवेंद्रपूरीकी नींद उडगई ॥ फेर आखीरात विचार कर्‍यो कब दिन होवेगो और कब श्रीगुसांईजी पढवे आवेंगे ॥ फेर दूसरे दिन श्रीगुसांईजी पढवे पधारे तब माधवेंद्रपूरीनें श्रीगुसांईजीसुं कही जो आप पूर्णपुरुषोत्तम होयके हमजेंसेनकुं मोह करवेकेलीयें पढोहो अब मोकुं गुरुदक्षणा द्यो ॥ आपके माथे श्रीनाथजी विराजे हैं ॥ जासुं मोकुं थोडे दिन सेवा करवेकी आज्ञा देउ और आप मोकुं सेवक करो ॥ तब श्रीगुसांईजीनें माधवेंद्रपूरीकुं कही हम तुमारेपास विद्या पढे हैं हम तुमकुं सेवक नहीं करेंगे ॥ तुमकुं हम उपदेश कैंसे देवें ॥ तब माधवेंद्रपूरी बहुत उदास भये ॥ फेर श्रीगुसांईजीकुं उत्थापनके समय श्रीनवनीतप्रीयाजीनें आज्ञा कीनी जो माधवेंद्रपूरीकुं आप सेवक करो॥ तब श्रीगुसांईजीनें माधवेंद्रपूरीकुं मान निवेदन करायो॥

और व्रजमें संग लेपधारे और श्रीनाथजीकी सेवामें राखे और बंगाली लोग माधवेंद्रपूरीकेपास राख दिये ॥ तव माधवेंद्रपूरी श्रीनाथजीकी सेवा करन लगे परंतु माधवेंद्रपूरी संन्यासी हते ॥ जो कछु श्रीनाथजीकी भेट आवती सो सबबंगाली ब्राह्मणनकुं दे देते कछु राखते नहीं ॥ और श्रीगुसांईजी उनकुं कछु कहेते नहीं ॥ तब बहुतदिन ऐंसे बीतगये फेर श्रीनाथजीकी इच्छा वैभव बढायवेकी भई ॥ तब श्रीनाथजीनें माधवेंद्रपूरीसुं कही तुम दक्षिणमें जायके मलयागरपर्वतमेंसुं चंदन लावो ॥ तब माधवेंद्रपूरी चंदन लेवेकुं गये ॥ तब पाछेसुं कृष्णदासजीनें बंगालीनकुं काढे ॥ ये बात श्रीनाथजीके प्राकट्यमें लिखीहै जासुं इहां नहीं लीखी ॥ फेर माधवेंद्रपूरी मलयागर चंदन लेवेकुं गये ॥ तब हिमगोपालजीके दर्शन कर्‍यो ॥ तब हिमगोपालजीनें आज्ञा करी जो तुम हमकुं इहां चंदन लगावो व्रजमें मत जावो ॥ तब माधवेंद्रपूरीनें उहां चंदन समर्प्यो ॥ और उहां भगवल्लीलाकुं प्राप्त भये ॥ सो वे माधवेंद्रपूरी श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २५१ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक जाडा कृष्णदासकी वार्ता ॥ सो विनकुं सब व्रजवासी चाचा जाडा कहेते और बडे चतुर हते ॥ और सब संतमहंतनकी परीक्षा लेते फिरते हते ॥ एकदिन श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीकी परीक्षा लेवेकुं आये ॥ वाई समय श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियाजीकुं पालना झुलावते हते ॥ तब जाडा कृष्णदासने

दर्शन करे कोई समय तो श्रीगुसांईजी झुलावे और श्री-नवनीतप्रीयाजी झूलें॥और कोई समय श्रीगुसांईजी झूलें॥ और श्रीनवनीतप्रियाजी झुलावें ॥ तव जाडाकृष्णदास देखके चकित भये ॥ और मनमें संदेह भयो ॥ जो ये श्रीठाकुरजी होयंगे केये श्रीठाकुरजी होयंगे ॥ अत्यंत संदेह भयो ॥ तव श्रीगुसांईजी राजभोग धरके बहार पधारे॥तव जाडाकृष्णदासकुं श्रीगुसांईजीके रोमरोममें श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन भये॥तव श्रीगुसांईजीकुं दंड-वत करके और वीनती करी ॥ जो मैं बहुत दुष्टहुं आप-की परीक्षा लेवेकुं आयोहुं ॥ परंतु आपनें मेरी परीक्षा लीनी और कृपाकरके आपनें मेरो संदेह मिटायो ॥जा-सुं आप मोकुं शरण लेवे ॥ तव श्रीगुसांईजीनें कृपाकर-के विनकुं नामनिवेदन करायो ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ फेर थोडे दिवस उहां रहेके वृंदावनमें आये और रूपसनातन-जीकुं मिले तव रूपसनातजीसुं कही जो श्रीठाकुरजीकहा करेहें ॥ तव रूपसनातनजीनें कही जो श्रीठाकुरजी भो-जन करेहें तव जाडाकृष्णदासजीनें कही जो श्रीठाकु-रजीकी तो सब लीला नित्यहै ॥ एककालावच्छिन्न सब लीला करेहें और तुमनें भोजन करेहें ॥ ऐसी कही सो कारण कहा ॥ जब रूपसनातनजीने कही ऐसेदर्शन तो श्रीगोकुलमे श्रीगुसांईजीके इहां होवे हैं ॥ और श्रीगुसां-ईजी जिनकुं करावें विनकुं होवेंहें ॥ ये बात सुनके जाडा कृष्णदास बहुत प्रसन्न भये पाछे जाडाकृष्णदास सब व्रजमें फिर्‍यो करते सो भगवद्गुणानुवाद गायो करते ॥

सो इंद्रकोपको चरित्र बनायो ॥ और रासपंचाध्याई बनाई ॥ और माधवरुक्मिणीकेलीगाई ॥ और सुंदर रीतसुं भोजनके पद नये बनायके गाये ॥ और जिनजिनसों विनको प्रसंग पड्यो विनके अंतःकरणकी जडता मिट गई ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ एकदिन जाडाकृष्णदास द्वारका जात्रा करवेकुं गये ॥ सो रस्तामें एक गाम आयो ॥ सो उहां देवीको देवल हतो सो देवीके देवलमें जायके सूते सवारके समय एक मनुष्य बकरा लेके देवीपर चढायवे आयो ॥ तब जाडाकृष्णदासनें कही सब लोग बकरा चढावेहैं ॥ कोई सिंघ नहीं चढावेहैं ॥ तब वो मनुष्य बोल्यो जो सिंघ कैसे पकडे जायं ॥ तब जाडाकृष्णदासनें कही मैं तोकुं सिंघ पकड-देउंहुं ॥ तब तुम बकरी छोडद्यो ॥ तब वानें छोड दीनी ॥ फेर जाडाकृष्णदास जंगलमें जायके सिंघ पकडलाये ॥ वा सिंघकुं देखके सब मनुष्य भागगये ॥ और जाडाकृष्णदासके पांवन पडवे लगे ॥ तब जाडाकृष्णदासनें विनकुं ऐसे कह्यो तुमारे आज पीछें जीवहिंसा नहीं करनी ॥ सो वे ऐसे पराक्रमी हते जिनकी कीर्ती आखा जगतमें फैली हती ॥ सो वे जाडाकृष्णदास ऐसें पराक्रमी हते ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ फेर एकदिन जाडाकृष्णदासजी चाचाहरिवंशजीकुं मिले ॥ तब जाडाकृष्णदासनें पूंछी जो या पुष्टिमार्गमें कौनसे शास्त्रके वचन प्रमाण है ॥ तब चाचाहरिवंशजीनें कही जो वेद और श्रीकृष्णके वाक्य और व्याससूत्र और श्रीमद्भागवतमें तीन भाषा है एक

लौकिक भाषा ॥ और दूसरी स्मृति भाषा ॥ और तीसरी समाधी भाषा ॥ सो वेद और श्रीकृष्णके वाक्य और व्याससूत्र और समाधीभाषा और धर्मशास्त्र ये प्रमाण हैं ॥ इनसुं मिलते पुराणके वाक्य और स्मृतीके वाक्यहुं प्रमाणहे इनसुं विरुद्ध है सो प्रमाण नहीं है ॥ सो श्रीमहाप्रभुजीनें निबंधमें कह्यो है सो ॥ श्लोक ॥ वेदाःश्रीकृष्णवाक्यानिव्याससूत्राणिचैवहि ॥ समाधिभाषाव्यासस्यप्रमाणंतच्चतुष्टयं ॥ १ ॥ उत्तरंपूर्वसंदेहवारकंपरिकीर्तितं ॥ अविरुद्धंतुयत्त्वस्यप्रमाणंतच्चनान्यथा ॥ एतद्विरुद्धंयत्सर्वनतन्मानंकथंचन ॥ फेर जाडाकृष्णदासनें पूंछी जो अनेकप्रकारके देवपूजन और अनेकप्रकारके व्रत और अनेकप्रकारके शास्त्र बहुत दिनसुं प्रमाण चले आवे हैं ॥ सो विनको विचार कहा करनो ॥ तब चाचाहरिवंशजीनें कही ये निर्णयतो श्रीमहाप्रभुजीनें निबंधशास्त्रार्थमें लिख्यो है सो ॥ श्लोक ॥ बुद्धावतारेत्वधुनाहरौतद्वशगाःसुराः ॥ नानामतानिविप्रेषुभूत्वाकुर्वंतिमोहनं ॥ १ ॥ अयमेवमहामोहोहीदमेवप्रतारणं ॥ यत्कृष्णंनभजेत्प्राज्ञः शास्त्राभ्यासपरःकृती ॥ तेषांकर्मवशानांहिभवएवफलिष्यति ॥ २ ॥ याको अर्थ जब श्रीठाकुरजीने जीवनकुं मोह करवेके लियें और आपको भजन छुडायवेकेलीयें विचार कर्‍यो तब बुद्धावतार लियो ॥ तब श्रीठाकुरजीकी ऐंसी विपरीत इच्छा जानके सब देवता श्रीठाकुरजीके वश रहेहैं ॥ सो ब्राह्मणनके घर आयके जन्म लिये ॥ और अनेक मत चलायवेके लीयें अनेक शास्त्र

वर्णन करे ॥ और ये बातको कछु विचार न कऱ्यो॥ जो ये श्रीठाकुरजी मोह करेहैं ॥ और ठगाई करेहैं ॥ ऐंसो बुद्धिवाननने विचार न कऱ्यो ॥ ऐंसे वचन सुनके लोगनने श्रीठाकुरजीकी सेवा छोडदीनी॥ पंडितहते तोहूं कर्मवश होय गये ॥ ऐंसे कर्मवशनकुं संसारही फलहोवें हैं॥ और फल नहीं होवें हैं ॥ ये सुनके जाडाकृष्णदास बहुत प्रसन्न भये और कहेन लगे ॥ जो तुमारेबिना कोई मेरो संदेह भागायवेकुं समर्थ नहींहे ॥ और सब लोग मनमें ऐंसे जाने हें जो श्रद्धा अनेक प्रकारकी लोगनमें होवेंहै ॥ परंतु खरी श्रद्धा कहा होवेंहैं ॥ तब चाचाजीनें निबंधको श्लोक कह्यो सो ॥ श्लोक ॥ ज्ञाननिष्ठातदाज्ञेयासर्वज्ञोहियदाभवेत् ॥ कर्मनिष्ठातदाज्ञेयायदाचित्तंप्रसीदति॥१॥ भक्तिनिष्ठातदाज्ञेयायदाकृष्णः प्रसीदति ॥ निष्ठाभावेफलंतस्मान्नास्त्येवेतिविनिश्चयः ॥ २ ॥ याको अर्थ ॥ ज्ञाननिष्ठा साची कब जाननी जब जीव सर्वज्ञ होवे ॥ कर्मनिष्ठा साची कब जाननी जब अनेकप्रकारको कष्ट पडे दुःख होवे तोहूं चित्त प्रसन्न रहे ॥ चित्तप्रसन्न न होवे तो सब करे कर्म व्यर्थ जाएं ॥ और भक्तिनिष्ठा साची कब जाननी जब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होवें ॥ और निष्ठाविना कछु फल नहीं होवेंहैं ॥ ये सुनके जाडाकृष्णदासजी बहुत प्रसन्न भये ॥ और गोपालपुरमें गये ॥ जन्मपर्यंत श्रीनाथजीकी सेवा करतरहे ॥ वे जाडाकृष्णदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २५२ ॥

॥ इति श्रीगुसांईजीके सेवक दोसौबावन वैष्णवकी वार्ता संपूर्ण ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

॥ अथ श्रीपुष्टिदृढावोलिख्यते ॥

जाकों पुष्टिअंगीकार होयगो सो जानेंगो ॥ जीवकों उद्यम करनों ॥ उत्तमभगवदीयकी संगती मिलनों ॥ अरु वाके करेको विश्वास राखनों ॥ जब विश्वास उपजे ॥ तब जानियें जो श्रीजीनें कृपाकरी ॥ अपनो कियो उत्तम भगवदीयकी संगतीतें श्रीजी प्रसन्न होयके अंगीकार कियो ॥ अपनो आनंद देवेके लीयें तब स्वरूपनेष्टा उपजे ॥ तब जानीये जो श्रीप्रभुजीने अपनों आनंद दियो वैष्णव तासों कहिये ॥ जाकों स्वरूप ऊपर अनन्यता उपजे ॥ तब तासों वैष्णव कहिये ॥ जीवकों विवेकविचार करनों॥ जीवको चोंरासीलाख योनी मिले तामें मनुष्यदेह उत्तम है॥ सबगुण जानेंहै सत्कर्म तथा बुरेकर्म करवेकों जीवको सामर्थ्य है ॥ जीवको और सामर्थ्य कोऊ नहीं है ॥ तातें जीभसों भगवद्गुण गावे और हाथनसों सेवा करे॥ काननसों भगवद्गुण सुनें ॥ नेत्रनसों दर्शन करे ॥ अग्यारह इंद्रिय भगवदर्थ लगावे ॥ जो सत्संग होय तो ऐसे करे ॥ कदाचित लौकिककी संगती होय तो तातें तैसोही होवें ॥ संगतिके वश मन हैं ॥ मनके वश देह है ॥ ज्यों चलावे त्योंही चले ॥ ज्यों बुलावे त्योंहि बोले ॥ हाथ पांव सब मनके दास हैं ॥ ज्यों कहें त्योंही करेंहैं॥ परि वचन फेरें नहीं ॥ देहको राजा सो मन है ॥ राजासों ऊंच संगति होवै तो राजबढे ॥ अरु नीच संगति होवै तो राज्य

जाय ॥ तातें मनकों ऊंचसंगति मिलावनों ॥ वैष्णवकों पहिले तो पढनों ॥ पढिके श्रीमत् भागवत सुननों ॥ ता मार्ग चलनों ॥ श्रीवल्लभाचार्यजीनें टीका करीहै॥ टीका करिके भाव लिख्यो है ॥ सो सुनियें तो श्रीठाकुरजी हृदयमेंतें दूर न होवे ॥ और श्रीआचार्यजीनें वेद तथा शास्त्रमथिकें दोहन करके ताको नवरत्नग्रंथ कियो है ॥ जो आपके अंगीकृत हैं॥ तिनकुं मार्ग दिखाववेको कीनो हैं ॥ पहिलें श्रीप्रभुजीके सदासर्वदा अंगीकृत हैं ॥ तिनको जनम जनम छोडत नहींहैं॥ आप श्रीवल्लभराय अब अवतार लेके अपनें दासनकुं जुदे किये संसाररूपी समुद्रमें सब बूडत हते ॥ सो भगवत्स्वरूपरूपी नावमें बैठायके पार उतारे हैं ॥ ताको नामरूपी नावमें बैठे हैं ॥ परि जाकों पूर्व जैसी दशा हती॥ तैंसीही पावेंगे॥ सो श्रीठाकुरजी कलियुगमें प्रकट प्रमाण हंसते खेलते बोलते चालते सो श्रीवल्लभाचार्यजीके घर दर्शन देत हैं॥ परि पूर्व जो अंगीकृत जीवहैं सो जानत हैं ॥ और हैं सो आसुरी हैं ॥ देखेंगे परि विश्वास न आवेगो जैसें आंधरो सूर्य उगे परि देखे नहीं ॥ परि वे वैष्णव हृदयकी आंखि नसों देखें तो देखे ॥ अब विन आंखनको बल क्यों कर होइ ॥ अब सो उपाय कहतहें ॥ जो तादृशी वैष्णवनकी संगति करे तो आंखिनको पडदो खुल जाय ॥ तब श्रीव्रजमंगल ब्रजाधिपती ब्रजके ईश्वर दृष्टि परें ॥ तब वा स्वरूपकी अनन्यता राखे ॥ जैसें हनूमानजीनें श्रीरामचंद्रजीको स्वरूप हृदयमें राख्यो ॥ शरीरमें भगवदावेशतें

समुद्र उलंघ्यो ॥ सो सीताजीकी शुध लाये ॥ वाग उखारि डान्यो ॥ अरु लंका जराय राख करी ॥ अरुपर्वत उठाय लाये ॥ सो सब भगवदावेशतें करे और असमर्पित नखाय तो सुबुद्धि होवे ॥ प्रथम नामग्रहण करिये ॥ उपरांत तादृशी वैष्णवसों मिलिये ॥ तो स्मरण उपजे ॥ तब स्मरण किये उपरांत श्रीजुगुलकिशोरकों लाडलडाईये ॥ उत्तम सामग्री करके समर्पिये ॥ सो महाप्रसाद वैष्णवनकों लिवाइये ॥ जब वैष्णव लेंही तब यों जानिये ॥ जो श्रीजी प्रेमसुं अरोगेहें ॥ श्रीजी प्रसन्न भए पाछें अपनें कर बुलावें ॥ जब कहें ये जीव हमारो हैं तब जीवकों कहा चहिये ॥ सब मनोरथ सिद्ध भये ॥ परि यह जीव अन्याश्रयछोडे तब अपनें करें ॥ अन्याश्रयहोंनदे नहीं ॥ जैसे स्त्री अन्यपुरुषको संग करे वाके पतीको मृत्युप्राय दुःख होवे तब सामर्थ्य होवे तो पत्नीको त्याग करे ता पुरुषकों वा स्त्रीको मुख देख्यो भावे नहीं तैसे वैष्णवकों अन्याश्रय होनों नहीं और अन्याश्रय करे तो विमुख जानियें ॥ तातें अन्याश्रय सर्वथा न करनों ॥ और असमर्पित न लेनों असमर्पित और अन्यसमर्पित लेवे तो दुर्बुद्धि आवे ॥ श्रीजी हृदयमें न पधारे ॥ तातें प्रथम अपनो हृदय शुद्धकरिये ॥ तब हृदयकी आंखिनसों देखिये ॥ जो मेरेमें कितनो दोष है ॥ खरी दृष्टिसों देखिये तो दीसे ॥ एक तो जीवमें अभिमान है ॥ सो तो चांडाल है यूं जानत है जो मैं करतहूं भलीही करतहूं और सब मूर्ख हैं ॥ मोमें कछु विषय नहीं ॥ और सब विषयी

हैं तातें श्रीठाकुरजी उनको अंगिकार कबहूं न करें ॥ एक मनमें अभिमान आवतहे ॥ तातें सबनकी निंदा करत हैं ॥ ताकों चांडाल जाननों ॥ श्रीजीकी लीला अतिबडी अरु महा आनंदरूप है ॥ तैसो आनंदरूप हृदयमें राखनों तो महालीलाको सुख देखिये ॥ सो देखिके दोष उपजे तो महापतित होई और जो स्नेह उपजे तो श्रीठाकुरजी अपने रसात्मक स्वरूपको दर्शन देहिं ॥ अरु दास करि राखें ॥ तातें सखीभाव राखनो ॥ जैसें पुरुषकी पतिव्रता टेक राखे ॥ तासों कहा कहिये ॥ पुरुषतो एक पुरुषोत्तम है अरु तिनके ऊपर जे रसिकहैं तिनकों स्त्रीही जाननें ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ संपूर्ण ॥ अथ द्वितीय प्रसंग ॥ जो भगवदीय है सो श्रीजीको स्वरूप है ॥ भगवदीयके वचन सो श्रीजीके वचन जाननें भगवदीयके हृदयमें आयके प्रभुजी बोलतहैं ॥ भगवदीयकुं ऐसो जाननो सो तो भाव ऊंडो है विचार देखिये तब जानिये ॥ ऐसे वैष्णव क्यों-करि पहिचानिये ॥ ताऊपर कहत हैं एक तो चिंता न करे ॥ दूसरे असमर्पित न खाय ॥ तीसरे विषयमें लीन न होई ॥ चौथे जो कछु होयसो भगवदिच्छा करमानें ॥ पांचमें अभिमान न करे ॥ छटें तो वैष्णवनके दासनको दास व्हे रहे ॥ सातवें तो भगवद्गुण गान करें ॥ आठवें तो मनमें प्रसन्न रहें ॥ नवमें तो भगवदीय वैष्णव देखके मन प्रफुल्लित होवे ॥ दशमें तो लौकिकसंग छोडि वैष्णवनको संग करे ॥ ऐसो भगवदीय होई ॥ तापर भरभाव घणो राखिये ॥ भगवदीयके मनकी बात जाननी ॥

वाकी देखादेखी न करनी भगवदीयके मनकी बात तो श्रीजी जाने ॥ परि वैष्णवके वचनको विश्वास राखनो॥ ऐसे भगवदीयको मन प्रसन्न करिये तो श्रीजी प्रसन्न होवें ॥ यह तो भाव ऊंडोहै ॥ तादृशी होयगो सो जानेंगो ॥ तातें तादृशीको संग करनो ॥ जो कदाचित स्वार्थ करे तो महा पतित होय ताके लीयें विवेक धैर्याश्रय ग्रंथ श्रीआचार्यजीनें कियो है सो विचारनों ॥ और जीवकुं अंगीकार अदृष्ट है दीखवेमें नहीं आवेहै ॥ दुःखरूपहै ॥ परि श्रीआचार्यजीके मार्गमें चलें तो सुखरूप होय जीव जानत है ॥ जो मैं करत हुं सो कोई जानत नहीं है ॥ परि श्रीजी मनकी वार्ता जानतहैं ॥ तिनतें कछु छिपी नहीं है ॥ जो जीव ऐसे जाने हे सो देखेहैं ॥ और जीव हैं सो विपर्ईहैं ॥ उनको मन रातदिन विषयमें रहत हैं ॥ ताको वह गुण करि मानेंहैं ॥ वाकों कोउ बुरो कहे ॥ तापर क्रोध करेंहैं ॥ ऐसी प्यारी वस्तुहै ॥ तातें ऐसो प्यार जो वैष्णवपर होई तो कृतार्थ होय ॥ परि जीवकों विषयरूपी जो चोर तापेंडेंमे मिलतहैं सो पापी आगें होतहैं ॥ वा चोर ऊपर वहार करिये ॥ तो चोर भाग जाय ॥ अरु सुखसों ठिकाणे पोहोंचिये ॥ ताऊपर फेर कोऊ कहेगो जो वहार क्युंकर करिये ॥ ताऊपर कहतहैं ज्ञान करके मन राखिये तो मन रहे ॥ कारण सबको मनहै ॥ कोऊ एक कहेगो जो नामग्रहण कियो होई ॥ फेर अनन्यताको संबंध बराबरहे के अधकी ओछी हे ॥ ताऊपर कहतहैं ॥ श्रीकृष्णावतारमें जो गोपिकानको सुख भयो ॥ सो तो औरनको

न देहि ॥ ताऊपर कहतहैं ॥ जो औरको नाम ग्रहण करावेंहैं ॥ सो पूर्व अपनें न होएंगे ॥ ताऊपर कहतहैं ॥ पूर्वजाको जैसो संबंध हैं ॥ तैंसोई ताको सुख पावतहैं ॥ जो श्रीकृष्णचंद्रनें रासलीला करी ॥ तहां वृक्षन ऊपर पक्षी बैठे हते ॥ तिननें देख्यो परि मनमें सुख न पायो ॥ सवारो भयो तब उडगये ॥ तैंसे श्रीकृष्णचंद्रजीके दर्शनको सुख देख्यो ॥ या दृष्टांततें येनिश्चयभयो जाकों स्वरूपमें नेष्टा उपजे ताकों श्रीजीनें आनंदको सुख दीनो ॥ ताको दृष्टांत ॥ जब श्रीप्रभुजी हृदयमें आवें तब आनंद उपजे ॥ अरु भगवदावेश आवे ॥ फिर कोऊ कहेगो जो श्रीकृष्णावतारमें एक स्वरूपसों दर्शन देत हते ॥ अब अनेक स्वरूपनसों दर्शन देतहैं ॥ सो कोनसे स्वरूपकों भजिये ॥ ताऊपर कहतहैं ॥ श्रीवल्लभकुल सब पुरुषोत्तम स्वरूपहैं ॥ परि जा स्वरूपको स्मरण कियो होय ॥ ता स्वरूपकों भजिये अरु वाकी अनन्यता राखनी ॥ जैंसे हनुमानजीनें मुक्ताफलको हार फोरडाऱ्यो ॥ जो श्रीरामचंद्रजीको वामें नाम नहीं हतो ॥ तातें हार डारदीनो॥ तैंसे अपने श्रीप्रभुजीके गुणानुवाद गान न होत होवें ॥ तहांतें उठिजैये ॥ ऐंसो पतिव्रताको धर्म है ॥ तैंसे वैष्णवनकों पतिव्रताकी न्याईटेक राखनी ॥ जैंसे मीराबाईके घर कीर्त्तन होत हते ॥ तहां श्रीआचार्यजीके पद गावत हते ॥ तब मीराबाई बोलीं ॥ जो अब श्रीठाकुरजीके पद गावो तब रामदास वैष्णवनें कही जो दारीरांड ये कोनके पद गावतहैं ॥ जा तेरोमुख न देखूंगो ॥ तब सब

अपनो कुटुंब लेके और गांमगयो ॥ फेर मीरावाईको सुख न देख्यो ॥ वैष्णवकुं ऐसी टेक राखनी ॥ परि वैष्णवकुं फेर हंसको गुण लेनो ॥ मुक्ताफलविना चांच भरे नहीं ॥ तातें वैष्णवकुं अपनें प्रभुविना मन धरनो नहीं॥ जैसे नरसिंघ मेहेतानें अपनी टेक न छोडी ॥ मरण आदऱ्यो ॥ जब राजामंडलीक तरवार लेके सन्मुख ठाडो रह्यो ॥ कहि जो श्रीकृष्ण हार देंगे नहीं तो में तोकुं मारुंगो ॥ तोहूं नरसिंघमेहतानें अपनी टेक न छोडी मरण आदऱ्यो ॥ तब श्रीठाकुरजीनें हार दियो ॥ नरसिंघमेहेतापर कृपा करी ॥ राजामंडलीक म्लेच्छ भयो ॥ वैष्णवनें अपनी टेक पतिव्रताकीसी राखनी ॥ अपनें श्रीप्रभुजीकुं हृदयमें राखें ॥ ताकुं वैष्णव कहिये ॥ दृष्टांत ज्या स्त्रीको अपनो धनी होवे सो होवे ॥ और लौकिक स्वार्थमेंहुं अपने खसमकुं छोडिके औरको भजन नहीं करे ॥ जो कोउ कछु कहे ताकों गारी देन लगे ॥ जासों एक जन्मको संबंधहे ॥ और इहांतो अनेक जन्मके धनी है॥ तो इन ऊपर घणो स्नेह क्यों न राखिये ॥ यह ऐसी वात है अरु वैष्णव सो कोन ॥ अरु स्मार्त सो कोन ॥ ता ऊपर कहत हैं ॥ जाको स्वरूपनेष्टा आई नहीं ॥ सो स्मार्त जाननो जब स्वरूपनेष्टा आवे तब वैष्णव होय ॥ तब वैष्णवको कहा करनो ॥ सो कहतहैं ॥ के तो जुगलकिशोर श्रीप्रभुजीकों भजिये ॥ के अपने श्रीप्रभुजी दर्शन देतहें ॥ वें सो स्वरूप अपने मनमें धरकें सेवा करनी ॥ जो निवेदनी वैष्णव समर्पे सो सर्वथा श्रीजी अरोगें॥फिर

कोई कहेगो ॥ जो श्रीगुसांईजी द्विजरूप प्रगट भएहैं॥ सो शूद्रके हाथको कैसे अरोगत होएंगे ॥ ताऊपर कहतहैं जो समर्पण देके द्विजरूप करतहैं ॥ ब्राह्मणकों जनेऊको अधिकार है ॥ जनेऊ सूतकी त्रिसरी करेंहैं तैंसे वैष्णवके गरेमें त्रिसेरी माला लेके घालतहैं ॥ ऐंसे करके ब्राह्मण करतहैं ॥ तब वाके हाथको आप अरोगतहैं ॥ पाछें सो प्रसाद लीजिये तो आत्मा शुद्ध होई ॥ अरु वैष्णवता आवे ॥ पाछें वैष्णवकों पथ्थरकी टेक राखनी ॥ अरु संसाररूपी समुद्रमें पाषाण प्रगट होतहैं ॥ संसाररूपी जल भऱ्यो है ॥ तामें ये पथ्थर होके रहें ॥ तो भीतर जल स्पर्श न करे तो भीतरकी अग्नीको बचाव होवे ॥ परि पूर्व वैष्णव हैं ॥ तातें जल भेदत नहीं हैं ॥ हृदयमें श्रीआचार्यजी वसतहैं ॥ श्रीआचार्यजी अग्निरूपहैं सो वैष्णव हृदयमें राखतहैं ॥ ताकों श्रीआचार्यजीको खरो भरोसो है॥ ऐंसे उत्तम वैष्णवको संग कीजे तो सुगम पडे ॥ सो श्रीआचार्यजी अग्निरूप हैं सो अग्नि उंचो है ॥ तापर धरिये तो परिपक्क करे ॥ अरु नवनीत जैंसो स्वभाव कोमलहै॥ श्रीआचार्यजी अग्निरूपहैं ॥ तातें उनको आसरो होई तो माखन मिटके घी होई आपनो रूप फिरे तैंसे लौकिक मिटके वैष्णव होई ॥ जैंसे एक बिगरी वस्तु सबको स्वाद बिगारे ॥ तैंसे लौकिक है तामें स्वाद कछू नहीं ॥ फिर वैष्णवको तक्रको गुण लेनो ॥ जैंसे मथिये तैंसे नवनीत देई ॥ अरु आपमें जल मिले ताकों मिटायके तक्र करे ॥ अरु आप जल न होई ॥ तैंसे लौकिक छोडे ताको वैष्णव

करें ॥ तैंसे तादृशीकों मिले तो दोऊनके मन एक होवें और प्रवाहि मिले तो एक मन न होवें काहू कारण एक होवें तो मन एक करे नहीं ॥ ताको दृष्टांत ॥ जैंसे कुंदनमें कुंदन मिल जाय ॥ और वाको बहुत रीण देई तो मिल जाय ॥ और ताप आकरो दीजिये तो जुदो होय जाय ॥ सो फिर मिले नहीं ॥ तैंसे मनको अग्निको स्वभाव है ॥ तातें मनकों भगवत्स्वरूपके विषें लगावे ॥ भगवत्स्वरूप कैंसो है ॥ महा आनंदरूप है ॥ द्वापरयुगमें श्रीवसुदेवदेवकीजीके उदरमें तें प्रकट भयेहें ॥ तव व्रजभक्तनकुं प्राकट्य प्रमाण लीला दिखाई ॥ बहुत चरित्र दिखाए ॥ पाछें कलियुगमें श्रीवल्लभाचार्यजीके घर प्रकट होयके अक्काजीके उदरतें बहुत स्वरूपनकरिके दर्शन देत हें ॥ जैंसे कृष्णावतारमें व्रजभक्तनकुं सुख दीनो ॥ तातें अधकी सुख देतहें ॥ दोनो अवतारनको सुख देत हैं ॥ पहिलें श्रीकृष्णावतारमें मन होवें तो श्रीनाथजीकुं देखिये ॥ ये स्वरूप सो साक्षात् श्रीकृष्णजी है ॥ और श्रीविठ्ठलेश तो प्रकट प्रमाण है ॥ बोलत चालत हंसत खेलत दर्शन देतहें ॥ और पूर्व विमुख असुर हें॥ तिनकुं विश्वास नहीं आवत हें ॥ वैष्णवकी काहूकुं चटक लागे तो वैष्णव होवे ॥ जैंसे कीटकों भ्रमरीके काटेको ध्यान रहतहें ॥ सो कीटपणो मिटके भ्रमरी होवें ॥ तैंसे तादृशी वैष्णव भगवद्वार्ता करे ते एकचित्तसुं वाको ध्यान करे तो वैष्णव होय ॥ फिरि वैष्णवकों वैष्णवपनेकी टेक राखनी॥ पपैयाकी तऱ्हें जैंसे घनबूंदतो तो लेई परिभूमिको पऱ्यो

नलेई ॥ और सीप समुद्रमें रहतहे ॥ परि स्वातीबूंद लेई॥ परि समुद्रके जलको पान न करे ऐसी टेक राखी चहिये॥ जीवकी आस श्रीजी पूरे हैं ॥ तैसेही जगदीश ऊपर टेक राखें तो जगदीश कहा न पूरे ॥ परि मनुष्यकेविषें दोष अन्याश्रयको हैं ॥ जो करेहें सो प्रतिष्ठाके लीयें करतहें॥ वैष्णवनको धन लेके लौकिक राखेहें ॥ प्रतिष्ठाके काजें करत हैं ॥ परि मन स्थिर नहीं राखे हैं ॥ वैष्णवनकोधन है सो श्रीजीको है ॥ सो श्रीजीकोही जाननो॥ मन स्थिर देखेंतो श्रीजी याको मनोरथ पूरणकरें ॥ मन तो स्थिर रहे जो तादृशी वैष्णवको संग करे ॥ जो वह अपनें ऊपर रीसकरें तो शिक्षा करके मानें ॥ जो मेरे भलेकुं कहतहें ॥ ताकी वैष्णवता दृढ होई ॥ ताको दृष्टांत जानियें ॥ जैसे दूध है सो तो वैष्णव है अरु जमावन हें सो तादृशी वैष्णव है ॥ सो दोऊ इकठोरें होवें ॥ तो भीतर तें नवनीत उपजे॥ नहीं तो दूध बिगडे ॥ अरु रीसरूपी रईकें घमरके उलटे सुलटे सहे तो नवनीत जुदो होई ॥ तब नवनीत अग्निसों तावे तो घी होई बिगरे नहीं ॥ संगति बिना दूध बिगरे तैंसे भगवद्वार्त्ता बिना वैष्णवता बढे नहीं ॥ परि पूर्व-जाको जैसो संबंध होवे तैसोही होवे ॥ तैसीही संगति मिलेहें एक तो यों कहतहें ॥ जो नरसिंह मेहेतानें बिहार गायो ॥ अरु परमानंदजीनें बाललीला गाई ॥ ताको का-रण कहा ॥ ता ऊपर कहत हैं ॥ जो श्रीकृष्णजीनें बिहा-रलीला खेल कियो ॥ श्रीवृंदावनमें व्रजभक्तनसों मिलके जब उनकों बहुत बिरह भयो ॥ तब श्रीकृष्णजीनें कही

उद्धवजी तुम श्रीगोकुल जाइ ॥ पाछें उद्धवजी श्रीगोकुल आए ॥ नंदजूके घर जायके उतरे ॥ तब गोपीजननें नंदजूके घर रथ देख्यो ॥ तब वे देखवेकों आई ॥ तब उद्धवजीकुं एकांत बुलायके पूछ्यो ॥ जो हमकुं श्रीकृष्णजी कबहूं संभारतहैं ॥ तब उद्धवजीनें कह्यो जो मोकों तो तुमारे पास पठायो है ॥ पाछें गोपीजननें श्रीठाकुरजीके संग जे जे खेल किये हते ॥ ते ते उद्धवजीकुं सब कहे ॥ कछु गुप्त न राख्यो ॥ तब उद्धवजीनें सब विहारको प्रकार जान्यो सो हृदयमें राख्यो ॥ सो उद्धवजीनें विदुरके आगें सब बात कही ॥ सो विदुर नरसिंहमेहेता होयकें अवतार लियो ॥ नरसिंहमेहेतानें महादेवकी उपासना करी ॥ पाछें महादेवजी प्रसन्न भए ॥ तब कहे जो मागो ॥ तब नरसिंहमेहेतानें कही तुमकों जो प्यारी वस्तु होई सो मोकुं देहु ॥ तब महादेवजी नरसिंहमेहेताकों श्रीवृंदावन लेगए ॥ सब रमणलीला दिखाई ॥ सो नरसिंहमेहेतानें जैसी लीला देखी तैसी गाई ॥ और श्रीदामा ग्वालको अवतार परमानंद स्वामी भए ॥ तिननें बाललीलागाई ॥ तातें जैसेकुं मिलिये तैसेही दिखावे जैसे देखिये तैसीही बुद्धि आवे ॥ तातें यत्न करनों ॥ तब यत्नकरतमें कोई दुर्बुद्धि उपजे तो चरणामृत लेइतो दुर्बुद्धि न आवे ॥ चरणामृतकी महिमा काहूसों लिखि न जाय ॥ श्रीशुकदेवजीनें राजा परीक्षितसों कहीहे ॥ जा पात्रमें चरणामृत धर्‍यो होई सो पात्र सातबेर जलसों धोवे ॥ सातही वेरको जल गंगोदक समानहै ॥ ताके

लीयें चरणामृतकी महिमाको पार नहीं ॥ फेर कोऊ कहे ज्यो क्यों करि राखिये ॥ ता ऊपर कहतहैं ॥ व्रजभूमीकी मृत्तिका अरु श्रीयमुनाजीको जल अरु अपनें श्रीठाकुरजी श्रीप्रभूजीको चरणामृत ॥ ये तीनो एकत्र करि राखिये ॥ देश परदेशनमें लीजिये ॥ तातें अधिक महिमा जानियें ॥ एक तो श्रीयमुनाजीको जल ॥ दूसरें चरणामृत ॥ तीसरो श्रीव्रजभूमिको दर्शन कीजिये ॥ तातें सर्वथा चरणामृत लीयेंविना जल न लीजिये ॥ जैसे श्रीआचार्यजीके सेवक त्रिपुरदास कायथ नें चरणामृत प्रसाद विना जल न लीनो ॥ पाछें श्रीठाकुरजीनें जानी याकी देह गिरेगी ॥ परि यह जल न लेगो ॥ तब श्रीठाकुरजी बरस दशके बालकको रूप धरकें थेली दोय एक तो चरणामृतकी ॥ एक महाप्रसादकी देगए ॥ रसोईयासों कही जो ये थेली त्रिपुरदासनें दीनी है ॥ पाछें रसोईयानें रसोई करी भोग सरायके त्रिपुरदासको बुलायवे पठायो ॥ तब त्रिपुरदासनें कहि जो मैं चरणामृत विना प्रसाद न लेऊंगो ॥ तब रसोईयानें कही जो थेली दोय ॥ बरस दशको लरिका देगयो है ॥ वे कहेन लग्यो ॥ जो ये थेली त्रिपुरदासनें पठाई है ॥ पाछें त्रिपुरदासनें चरणामृत प्रसाद लियो ॥ परि अपनें मनमें बहुत खेद पाए ॥ मैं बहुत बुरि करी जो मैंनें हठकियो ॥ जो श्रीठाकुरजीकों बहुत श्रम भयो ॥ तातें अब चरणामृत घटे तो बढाल लीजिये ॥ तातें चरणामृत प्रसादको माहात्म्य त्रिपुरदासनें जान्यो ॥ और वैष्णव तो वैष्णव-

को भाव लीजिये ॥ ताको दृष्टांत ॥ जैंसो गंगाजीमें और जल मिले ॥ तो गंगोदक समान होवे ॥ तैंसे वैष्णवके मिलापतें वैष्णव होय ॥ जुदो रहे तो वैष्णव नहीं ॥ तामे वैष्णव कारणरूपहे ॥ सो श्रीकृष्णजीको चरणामृत माथें चढावत हे ॥ जानियो अक्षरको भेद हे ॥ श्रीकृष्णजीसो पुष्टिनाम हें ॥ जो श्रीकृष्ण है सो दोय अक्षरको नामहें ॥ श्रीकृष्ण नाम तहां माथे चढावत हें ॥ इतने वैष्णव भये ॥ पाछें श्रीवल्लभाचार्यजीनें अपने मनको एक अक्षर आगें कीनो तब वैष्णव भयो ॥ तातें वैष्णव ऐंसो नाम है ॥ सो भगवन्नाम है ॥ खरी दृष्टसों जो देखेंगो सो समझेगो ॥ वैष्णवननें वैष्णवको द्रोह न करनो ॥ वैष्णवहै सो भगवत्स्वरूपहे ॥ जो श्रीठाकुरजीको अपराध कियो होई तो कदाचित छूटिये ॥ परि वैष्णवके अपराध तें क्यौंहूं न छूटिये ॥ वैष्णवसो लोहको गोलाहै ॥ जैंसे अग्निके बलतें गोला तप्त होय ॥ सो अग्निहूतें तातो होई ॥ कदाचित अग्नि हाथमें लियोजाय ॥ परी वह गोला हाथमें न लियो जाय ॥ तैंसे वैष्णवको अपराध न छूटे ॥ फेर जो प्यारी वस्तू होई ताकी हानी होई ॥ और श्रीठाकुरजी हृदयमें न आवे ॥ जो स्त्री प्यारी होई तो स्त्रीकी हानी होई ॥ जो लक्ष्मी प्यारी होई तो लक्ष्मीकी हानि होई ॥ जो पुत्र प्यारो होय तो पुत्रकी हानि होय ॥ ताको दृष्टांत जैंसे दुर्योधननें पांडवपर द्रोह कीनो ॥ तातें कौरवकुल नाश भयो ॥ धन गयो ॥ राज्य गयो ॥ तातें वैष्णवको द्रोह न करनो ॥ वैष्णवको द्रोह करे ताको सर्वस्व नाश होय

जाय ॥ तातें वैष्णवकों वैष्णवसों स्नेह राखनो यों जानि-
ये ॥ जो हमसों जुदे मति होवे ॥ ताको दृष्टांत जैसें मो-
हनदास और हरिदास वे श्री आचार्यजीके सेवक हते ॥
तातें उनमें जैसी प्रीति हती तैसीही राखनी ॥ एकसमय-
हरिदासके घर मोहनदास पाहुने आये ॥ सो दिन एक
तथा दोय रहे ॥ पाछें मोहनदास कहन लगे ॥ जो सवारें
में चलुंगो ॥ तब हरिदासनें मोहनदाससों कही जो प्या-
रेजी अबहीतों रहो ऐंसे करिके फेर दिन तीनताई राखे ॥
तब हरिदासनें अपनी स्त्रीसों कह्यो ॥ जो मोहनदास तो
सवारे जाएंगे ॥ तब वा स्त्रीनें कही जो दिन एक तथा
दोय औरहु राखिये तो भलों हैं ॥ तब हरिदासनें अपनी
स्त्रीसों कही जो कछु उपाय करिये तो रहे तो रहे ॥ तब
हरिदासनें कही जो अपनें बरस सातको यह बेटा है ॥
ताकों विष दीजिये ॥ अरु यह मरे तब हमारो शोक दे-
खिकें दिन एक रहें तो रहें ॥ तब स्त्रीनें कही जो भलें ॥
ऐंसेही दिन एक रहेतो राखिये ॥ तब हरिदासनें वा बा-
लककों विष दीनो ॥ तब वह बालक मरगयो ॥ तब मो-
हनदासनें जानी ॥ जो रातिको तो नीको हतो अरु अब-
ही मरगयो सो कहा जानिये ॥ न जानिये ॥ जो कहूं
सांपनें खायो होयगो ॥ तब दीपक लेके देह देखी परि
सांपकी डाढतो कहुं देखी नहीं ॥ तब मोहनदासनें जानी
जो मेरे राखिवेके लीयें इननें बालककुं विष दीनोंहे ॥ तब
मोहनदासनें तो वा बालकके मुखमें श्रीजीको चरणामृत
दीनो ॥ तब वह उठि बैठो ॥ तब हरिदास बहुत रोवन

लाग्यो ॥ मेरे घरतें वैष्णव जायगो ॥ तब मोहनदास कहन लागे ॥ जो मैं तुह्मारे पास निरंतर रहुंगो ॥ पाछें अपनो गांव छोडिके हरिदास पास आय रहे ॥ तातें वैष्णवपर ऐंसो प्यार राखनो ॥ फेर वैष्णवको भेख लेके एक ठग आयो ॥ तब वह ठग दोऊ हाथ जोडिके जय श्रीकृष्ण कह्यो ॥ तब वा वैष्णवनें बहुतही वाकी आगतस्वागत करी ॥ तब वैष्णवनें कही जो तुमनें हम ऊपर बहुतही कृपाकरी ॥ जो दर्शन दीनें ॥ अब तुम कोईकदिन इहां रहो तो गोष्टी वार्त्ता करिये ॥ तब उन ठगनें कही जो भलें ॥ तुह्मारी इच्छा होयगी तो महिनादोयचार रहेंगे ॥ पाछें वा वैष्णवके घर ठग रह्यो सो कितनेक दिन रहतें रहतें भये ॥ तब एकदिन वा वैष्णवके लरिकानें गहनो बहुत पेहेंन्यो हतो ॥ तब वा ठग वा वैष्णवकी स्त्रीसों बोल्यो ॥ तब वह रसोई करत हती ॥ वासों कही जो मैं तुह्मारे लरिकाकों बागमें खिलाय लाउं ॥ तब वा स्त्रीनें कही जो भलें ॥ तब ठगनें लरिकाकों बागमें लेजायके फासी दीनी ॥ तब गहनो लेके भाग्यो ॥ तब इन बैष्णवनें जान्यो ॥ तब इननें कही जो ये हमकों मिले तो धन बहुत देवें ॥ मति याको हमारो डर लाग्यो होई ॥ यह हमारे घरतें सूख्यो क्यों गयो ॥ तामें हमकों बुरी लागतहे तब वह वैष्णव वा ठगकों खोजन चल्यो ॥ सो थोरीसी दूर जायके पहुंचो ॥ तब ठगसों कही ॥ जो तुम हमारे घरतें भूखे गए सो क्यों ॥ हमारो अपराध कहा है हमारे अपराधकी और देखो मति ॥ तातें आवोप्रसाद

लीजिये तब ठग मनमें डरप्यो ॥ जो अपनें घर लेजाय-
के मोकों मारेगो ॥ तब वाकों वैष्णव अपनें घर लेगयो॥
तातो पानी करिके वाकुं न्हवायो ॥ तब स्त्रीनें वैष्णवसों
कही जो वा लरिकाकुं बुलाय लावो ॥ तब वा वैष्णवनें
कही जो लरिकाकों तो निद्रा आईहै ॥ तब वा वैष्णवकुं
प्रसाद लिवायो ॥ तब वा वैष्णवनें ठगसों कही जो तुम
लरिकाको पुकारो तब वा ठगनें लरिकाकों पुकाऱ्यो ॥
तब वह लरिका आलस्य मोरिके उठि ठाढो भयो ॥ तब
वह लरिका कहन लाग्यो ॥ जो मोकों तो निद्रा आई
हती ॥ तब ठग उठिके वा वैष्णवके पांवन पऱ्यो ॥ तब
कहन लाग्यो जो मैंनें तो तुह्मारे बालककों फांसी दीनी
हती ॥ मारिके गहनो उतार लीनो हतो ॥ परि तुमनें
बडो धीरज राख्यो तो श्रीठाकुरजीनें तुह्मारो लरिका
जिवाय दीनो ॥ तातें अब मोकों वैष्णव करो ॥ तब उन
वैष्णवनें वाकों भलो वैष्णव कियो ॥ तातें उत्तम भगव-
दीयको वचन माननों ॥ ताको दृष्टांत कहतहैं ॥ एक
राजा हतो सो वह मरन लाग्यो ॥ तब अपनें बेटाकुं वा
राजानें राज दियो अरु बेटासों कही जो अपनें घर एक
वैष्णव आवेहै ॥ सो वाको तुम बचन मानियों ॥ तब
बेटानें कही जो भलें मांनुगो ॥ तब राजातो मर गयो
बेटा राज करन लग्यो ॥ तब एकदिन राजा सांटो छी-
लत हतो ॥ सो छुरिसों वाकी अंगुरिया कटि गई ॥ तब
वा राजानें वा वैष्णवसों कही जो मेरी अंगुरिया कटि
गई ॥ तब वा वैष्णवनें कही जो भली भई ॥ तब कित-

नेक दिनपीछे वाकी राणी मरि गई॥ तब वा वैष्णवसों कही जो मेरी राणी मरि गई॥ तबहूं वानें कही जो भली भई॥ तब वा राजाके मनमें बहुत क्रोध भयो॥ जो ये तो मेरो बुरो वांछित हैं॥ तब राजा कहन लाग्यो जो याकों ठौर मारो॥ तब चांडाल बुलाए॥ तब कहे जो वह वैष्णव पाछली राति पानी भरनको जातहै॥ सो तूं याको मारि डारियो॥ तब दूसरे दिन चांडाल तरवार लेके वाटवांधि करि बैठे॥ तब वैष्णव जलभरन निकस्यो॥ इतनेंहि मनमें आई॥ जो आज दूसरे कूवातें जल लाउं तो श्रीठाकुरजी प्रेमसों अरोगे॥ तब वह दूसरी वाट चल्यो॥ तब वाके पांव ऊपर एक ढेल टूटपड्यो॥ तातें वाको पांव टूट्यो॥ सो खाटमें डारिके घर लेआए॥ तब राजानें समाचार वैष्णवकुं पूंछे॥ जो वैष्णव तुह्मारो पांव टूट्यो॥ सो बुरी भयी॥ तब वैष्णवनें कही जो बहुत भली भई॥ श्रीठाकुरजी बुरी करेंहूं नहीं तब राजा अपनें मनमें सोच्यो॥ तब कहन लाग्यो॥ जो मैं तुह्मारे मारनके लीयें चांडाल राखे हते॥ और तुम और-कूवापें गये॥ तातें तुह्मारे पांव टूट्यो॥ पांवतो फेरहूं नीको होयगो॥ परि मरिजाते तो फेर न जीवते॥ पाछें राजा वा वैष्णवके पांवन परके अपने घर गयो॥ यह राजा बत्तीस लक्षणो हतो॥ और एक राजा उनतें बडो हतो॥ तातें एक तलाव खुदायो हतो॥ परि वा भीतर जल रहे नहीं॥ तब पंडित बुलायके पूंछे॥ जो या तलावमें पानी क्यों नहीं रहत है॥ तब उन पंडितननें कही

जो या भीतर बत्तीस लक्षणी राजाको वध करे तो पानी रहे ॥ तलाव तब भरे इतनेही एक ब्राह्मण बोल्यो ॥ जो वह राजा बत्तीस लक्षणोहै ॥ तब वा राजानें कही जो वाकुं बुलावो ॥ सो कटक वा बत्तीस लक्षणके गांव पर चढि गयो ॥ तब वा बत्तीस लक्षणनें वा वैष्णवसों पूंछी॥ जो अब कहा करनो ॥ तब वा वैष्णवनें कही जो जैसे बैठेहो तैंसेही उठ जावो ॥ तब वह तैंसी उठी गयो ॥ सो बडे राजाके पास जायके वाकी सभामें ठाढो भयो॥ तब वा बडे राजानें पंडितनसों कही जो तुम कहत हते सो आयोहै ॥ तब पंडितननें वाको शरीर देख्यो ॥ तब पंडितननें कही जो याकी तो अंगुरिया खंडित है ॥ तब वा बत्तीस लक्षणेसों पूछी जो तेरे बैहरलरिका कहांहै ॥ तब इननें कही जो बैहर लडका हते सो सब मरगये ॥ तब पंडितननें वा बडे राजासों कही जो यहतो अपुत्रिक है॥ और याके स्त्री नहीं ॥ याकी अंगुरिया खंडितहै ॥ तातें याको वध किये तें तलाव भरेगो नहीं ॥ तब बडे राजानें वाकों बिदा दीनी ॥ तब वह बत्तीस लक्षणो बोल्यो जो मोहूंकों वह तलाव दिखाओ ॥ सो जब इननें तलावकी ओर देख्यो ॥ तबहीं तलाव भरगयो ॥ तब वा बडे राजानें वाकों अपनी बेटी देके व्याह करदियो ॥ वाकुं जवाई कियो ॥ तब वाकों बहुत धन देकें बिदा कियो ॥ तब वह बत्तीस लक्षणो गाजत बजावत अपने घर आयो॥ सो आयके प्रथम वा वैष्णवके पांवन पर्‍यो ॥ तब वा वैष्णवसों कही जो श्रीठाकुरजी करत होएंगे सो भलोई

करत होएंगे ॥ अंगुरिया कटीसो भलो भयो ॥ और बैद्यर मरिसो भलो भयो ॥ नहीं तो मेरो तलावमें वध करते ॥ तातें अब वा राजानें अपनी बेटी व्याहीहे सो बहु तेरे पुत्र होएंगे ॥ तातें वैष्णवके वचन श्रीठाकुरजीके वचनकरि जाननें॥उत्तम वैष्णव होई तो मानिये तह कहतेंहैं॥जो उत्तम और कपटी कैंसे जानिये ॥ जाको वैष्णव प्यारो न होई तासों न मिलियें॥ उत्तम भगवदीयमें स्नेह होय तासों मिलिये॥ तातें बडो कोई नहीं॥ताको दृष्टांत कहत हैं॥सबनते बडी धरतीजामें सब समायो है ॥ तातें बडो समुद्र जो सगरी धरतीसों लपटानोंहे ॥तातें बडे अगस्त्यमुनी जिननें समुद्र एकअंजुलीमें पियो हो॥तातें बडो ब्रह्मांड जामें अगस्त्यको तारो उदेहू दीसे नहींहै॥ता ब्रह्मांडतें श्रीप्रभुजी बडे ॥ जिन सगरो ब्रह्मांड एक पांव कियो॥ तिनतें बडे वैष्णव जिननें ऐसें जगदीश अपने हृदयमें राखे ॥ तातें वैष्णवतें बडो कोई नहीं ॥ तातें वैष्णवनके दासनको दास होय रहिये ॥ परि वैष्णवकी बराबरी न करिये ॥ जो बराबरी करे तो नीच होवें ॥ श्रीमद्भागवतमें षष्ठ स्कंधमें लिख्योहे ॥ तामें चित्रकेत राजा चक्रवर्ती हतो तिननें विचाऱ्यो ॥ जो महादेवजी वैष्णवहैं तिनके दर्शनकुं कैलास जाउं ॥ सो तब कैलास गयो ॥ सो तहां श्रीमहादेवजीके उत्संगमें पार्वतीजी बैठे हते ॥ और महादेवजीतो ध्यानमें मग्न हते ॥ सो देखिके राजा चित्रकेतकों रीस चढी॥ तब पार्वतीनें शाप दीनो ॥ जावुं राजा राक्षस होहु ॥ तब श्रीमहादेवजी सावधान भए

पायलागे ॥ तब पार्वतीसों कहेके खीजे ॥ कहेजो पहिलें तो मेरोही अपराध हतो ॥ तें शापक्यों दीनों ॥ तब फेर जायके चित्रकेत वृत्रासुरको अवतार भयो ॥ सो मरती-बेर श्रीभगवान प्रसन्न भए ॥ तब कहेजो मांग ॥ सो श्लोक ॥ कहेके मांगे ॥ वासुदेवस्ययेभक्ताःशांतास्तद्गतमानसाः ॥ तेषांदासस्यदासोहंभवेजन्मनिजन्मनि ॥१॥ जो भगवदीयके घर दास होई ॥ ताके दासनको दास होई॥ ताके घर जन्मजन्मदासपनो पाऊं॥भगवदीयपनो हतो तो महादेवजीकी बरोबरी करी ॥ दासपनो विचाऱ्यो नहीं ॥ तो राक्षस भयो ॥ तातें दासपनों मागतहूं ॥ दासकों रीस न घटे पहिलें जीव श्रीपुरुषोत्तमकुं भजे तब जीव सर्वथा मुक्त होई ॥ श्रीपुरुषोत्तमकी आज्ञा श्रीमहादेवजीनें शंकराचार्यजीको अवतार धऱ्यो ॥ तिननें जीवको आसुरभाव भांतिभांतिके मार्ग दिखाये ॥ नवीन मत करिके जीवकों हरितें विमुख कीनें ॥ वाममार्गीय असुर सारिखे भए ॥ जीवकों कलियुगकी संगती करी ॥ भ्रष्ट करे वे पतित भये ॥ अरु पतितपावन श्रीपुरुषोत्तमहें ॥ तातें अपनें जीवनके उद्धार निमित्त प्रगट भएहें श्रीवल्लभाचार्यजीनें आपने जीवकों करुणादृष्टि देखके सब जीवनकों अपने करे ॥ श्रीविठ्ठलनाथजी रूप श्रीगुसांईजी प्रगटे ॥ महारसात्मक जो मार्ग जाको नाम पुष्टिमार्ग ॥ श्रीप्रभुजीनें महावाक्य कह्यो हे ॥ जीवकों वरण करेहें ॥ ते वाणी निश्चय कियो ॥ जीवके कानमें कहतहें ॥ महावाक्य जाके लीयें ॥ जीवको पुरुष भागहे॥

तहां कृपाकरके श्रीपुरुषोत्तम अंगिकार करतहैं ॥ और निवेदनमें तुलसी हाथमें लेके अपनें जीवके हाथपर मेलतहैं ॥ देके फिरि पाछीलेतहैं ॥ जो नवरत्नके तथा एकादशकें श्लोक श्रीठाकुरजी अपने मुखसों कहत हैं ॥ तैंसोई नवरत्नमें कह्योहे ॥ श्लोक ॥ चिंताकापिनकार्या निवेदितात्मभिः कदापीति ॥ भगवानपिपुष्टिस्थोनकरिष्यतिलौकिकिंचगतिं ॥ १ ॥ ऐंसे कहिके जानें निवेदन लीनो ताकुं चिंता न करनी ॥ चिंतासो सकल दोष की माताहे ॥ जहां जाकी माता होई ॥ तहां सकलदोषहोई ॥ और तुलसी देके फिर पाछें लेतहैं ॥ तुलसीसों वरणकरतहैं सो वृंदाको स्वरूपहे ॥ वृंदासो महापतिव्रताहे ॥ सो कैंसीहे जो पुरुषभावरूप होई ताको मुख न देखे ॥ या वृंदाको अंगिकार श्रीपुरुषोत्तमनें सब अंगनसु कीनोंहै ॥ ऐंसे भावसों तुम रहियो ॥ अरु अन्य पुरुषको संग मत करियो ॥ पति जो धनी ताको व्रत आचरण करे सो पतिव्रतासो कहा ॥ सो पुरुषोत्तमसंबंधी सकल सुख पावेंगे ॥ तुलसीदलको यह भावहे ॥ जब जीव नाम पावे ॥ तब वैष्णव होई ॥ वैष्णवसो कहा ॥ जो विष्णुकीसेवा जोग्य भयो होई सो वैष्णवसो कहावे ॥ ऐंसे वैष्णव सुख देहैं ॥ श्रीनारायण सो श्रीपुरुषोत्तमके नीचे रहतहैं ॥ ताकेभजनयोग्य भयो॥ताको नाम वैष्णव ॥ फेर वा वैष्णव को भाव हृदयमें भक्ति आवे श्रवण कीर्तन नाभिकमलमें प्यारो लागे ॥ तब जानियेंजो वैष्णवता आई ॥ फेर उत्तम वैष्णवको मिलाप रहे ॥ दीनतापूर्वक दासव्हैरहे ॥ तब जानिये जो वैष्णवता आई॥नारायण भजन योग्य

भयो ताको नाम दास अव नारायणकोनसे ॥ जलनारायण १ सत्यनारायण २ धर्मनारायण ३ नरनारायण ४ लक्ष्मीनारायण ५ आदिनारायण ६ ये श्रीपुरुषोत्तमके पायतरें रहेंहें ॥ ताके भजन योग्य भयो॥ताको नाम दास दाससो कहा ॥ दाससो कहा दूर ठाढो रहे ॥ घणो सुखपावे ॥ तब दास सो सर्वदा श्रीठाकुरजीको कामकरे कीर्त्तन करे ॥ सदा प्रसन्न रहे ॥ और कछू सुहाए नहीं ॥ तब दासत्व आवे ॥ तव सेवक भयो ॥ सेवकसो कहा जो धनीकेपास रहे ॥ अंगसु सेवा करे ॥ सेवाचोर न होई ॥ जो करे सो श्रीठाकुरजीसों पूछके करे ॥ ताको नाम सेवक ॥ अब सो सेवक॥श्रीठाकुरजीके गुणानुवाद विचारिकें गावें ॥ हरख पावें ॥ रोमांचित होई ॥ अरु नयनतें आँसू आवें ॥ साधु होई॥ साधुसो सूधो ॥ जाकें कपटको नाम नहीं ॥ मनमें तनकहू कपट नहीं ॥ तासों साधु कहिये ॥ ऐसो होई तब सेवक भाव आवे ॥ तव भगवदीय होई ॥ भगवदीय सो कहा ॥ भगवदीयसो श्रीजीको कृपापात्र होवे ॥ भगवदीय सो भगवत्स्वरूपहे ॥ अब फेर पात्रको गुण लेनो ॥ तहां दृष्टांत॥ जैसे सोनेको पात्र है अरु विष भऱ्यो॥सो उत्तम पात्र जानिके लीजिये तो विनाशहोई ॥ अरु माटीको पात्र होई ॥ अरु उत्तम सामग्री होई ॥ सो लीजिये तो परम सुख होय ॥ तातें भीतरको गुण देखकेसंग करणो ॥ ॥ इति श्रीपुष्टिदृढाव ग्रंथ संपूर्ण ॥

दोसोबावन वैष्णवनकी वार्ता और चौरासी वैष्णवनकी वार्ता यह दोनों ग्रंथनको प्रथमसे आश्रय देनेवाले आश्रयदाताओंकी नामावली

१०० श्रीमान शेठजी खेमराज श्रीकृष्णदास श्रीवेंकटेश्वर स्टिमप्रेस ...मुंबई.
१०० श्रीमान शेठजी गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास लक्ष्मीवेंकटेश्वरप्रेस कल्याण.
१०० श्रीपंडित ज्येष्टाराम मुकुंदजी संस्कृत पुस्तकालय कालकादेवी मुंबई.
१०० श्रीयुत पंडित दत्तराम चौबे मानिकचौक पुस्तकालय ......मथुरा.
१०० श्रीयुत पंडित श्रीधरशिवलालजी ज्ञानसागर छापखाना ......मुंबई.
१० श्रीयुत पंडित नारायण मूलजी संस्कृत पुस्तकालय झवेरबाग ...मुंबई.
५ श्रीमान बाबु रंगनाथजी खेमराजजी श्रीवेंकटेश्वर प्रेस.........मुंबई.
५ रा. रा. जनार्दन महादेव गुर्जर बुकसेलर कालकादेवीरोड रामवाडीमुंबई.
५ रा. रा. नारायण चिंतामण आठवले बुकसेलर लीमडीचौक बडोदा.
५ श्रीमहंतजी गोपालदासजी गुरुश्री भगवानदासजी भोलेश्वर श्रीरणछोरजीके मंदिरके मालक .. ..मुंबई.
५ श्रीमहंतजी रघुवीरदासजी गुरुश्रीजयरामदासजी तपोवन मु० नाशिक.
५ श्रीमहंतजी किसनदासजी गुरुश्री खेमदासजी नागदेवी...मुंबई.
५ विद्याभूषण कंपनी भारत मार्तंड पुस्तकालय कालकादेवीरोड...मुंबई.
५ शेठ माधवदास गोकुलदास पास्ता कोट बजारगेट............ मुंबई.
५ शेठ गोकुलदास नेणसी कोट बजारगेट ....मुंबई.
५ शेठ वीरजी वालजी कोट मोदीखाना ....मुंबई.
५ श्रीमतीबाई नाथीबाईते शेठ दामोदर ठाकरसीनी धर्मपत्नी महालक्ष्मीमुंबई.
५ स्वर्गवासी प्रभुराम जीवनराम वेदधर्म सभाना स्थापक ....मुंबई.
५ बुकसेलर झवेरभाई उमेदभाई पटेल रीचीरोड............अमदावाद.
५ पंडित श्रीकृष्ण मोहन शर्मा कातांतीक पुस्तकालय .... मुंबई.
२ ठक्कर वसनजी परमानंद चाहेवाला बुकसेलर कालकादेवीरोड ...मुंबई.
१ स्वामी विश्वस्वरुपाचार्य गुरुश्रीपरमानंदजीबद्रिनारायणका मंदिर दरीयापर ....अमदावाद.

१ महंतजी मथुरादासजी आत्मारामदासजी विश्वामीत्रीना मोटापुलपर स्वस्थान श्रीरामजी मंदिर ……………………………बडोदा.
१ शा. चुनीलाल बापुजी रामजी मंदिरनीसेरीमां ………………खेडा.
१ परी. मंगलदास गोरधनदास. बजारमां ……………………खेडा.
१ महाराज श्रीहंसदासजी गोपालदासजी लेनसर सामें ……भावनगर.
१ महंत श्रीगोकलदासजी कहानदासजीराघोरामजीनु मंदिर …भावनगर.
१ देसाई गोरधन पीतांबर ……………………सावली मेवास.
१ पुरंदरे आणि कंपनी बुकसेलर माधवबाग ………………मुंबई.
१ वैष्णव हीरालाल गोकलदास मंदसोरवाला ……………मंदसोर.
१ चोकसी चुनीलाल व्रजभूषणदास खाराकुवा ………………मुंबई.
१ लक्ष्मीबाई लक्ष्मीनारायणनु मंदिर बचलो भोईवाडो ………मुंबई.
१ ठक्कर जमनादास भीमजी मल्हारराव लेन नं० ८ ……………मुंबई.
१ श्रीमानशेठजी हीरानंदजी अम्रतसरवाले पंजाब ………अम्रतसर.
१ ठक्कर वीठलदास हरीदास जिला सातारा ………वडगांमवाघमारा.
१ वै०मह्लुलाल आत्माराम भूलेश्वर त्रीजो भोईवाडो …………मुंबई.
१ वै० मोहनलाल दुलभदास भूलेश्वर त्रीजो भोईवाडो ………मुंबई.
१ देवीदास वृन्दावनदास ५५ गोरडन ठिकाना महालक्ष्मी ……मुंबई.
१ श्रीपरमहंसजी माधवदासजी खाख चोक श्रीसत्यनारायणका मंदीर पोष्ट सिणोर. ……………………………मालसर.
१ पोष्टमास्तर हरिलाल भाई नडीयादना हाल मु०पोष्ट हाफीस …डाकोर.
१ वैद्यराज मुरारजी भाई नथुजी कोट होलीचकला …………मुंबई.
१ श्रीमहंतराघोदासजी गुरुश्री बजरंगदासजी श्रीरामजीमंदिर …कुरला.